

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ जयसाधनान्यौषधानि ।

आस्येतालजटाथकेतकिदलंशीर्षेथखार्जूरके
मूलेंकस्थइषुर्नलगेन्नसघृतैर्भुक्तैरजीर्णैश्वतैः ॥
कंसार्य्युत्तरमूलिकानिरशनैःपुष्यार्कआत्ताधृता
जग्धावासहतंडुलांबुभिरथोपाठाज्जटापीदृशी ॥ १५२ ॥
अंकोलोलक्ष्मणापुंखासर्पाक्षीशिखिचूलिका ॥
विष्णुक्रांताकाकजंघानीलीदेवीचपाटला ॥ १५३ ॥
भुजास्यमूर्द्धगाभुक्तातज्जटैकाधिवारयेत् ॥
रणेदारुणशस्त्रौघंयावज्जीर्यत्तिनोदरे ॥ १५४ ॥
चक्रमर्दकगोजिह्वाशिखिचूडाजटास्वपी ॥
एकैकाद्यूतजयदापुष्यार्कात्ताऽस्यमूर्द्धगा ॥ १५५ ॥

इति श्रीबृह० मिश्रस्कंधे क्रीडाकौशल्याध्यायेमुहूर्त्तप्रश्नमंत्र यंत्रादिसाधननिरूपणंनामप्रकरणंद्वितीयम् ॥ २ ॥

सं०टीका-अथ भक्ष्यधारणादिनाजयसाधनान्यौषधान्याह—आस्येमुखे तालजटा तालवृक्षमूलं धृतं शतघातजग्धावा सहतंडुलांबु शतघातवारणमित्यग्रेण संबंधः क्रीडायांशरघातस्थलेपदातिघातोविज्ञेयः अथौषधांतरम् केतकीदलं केतकीपत्रं शीर्षेमूर्ध्निधृतं तद्वत्फलं अथान्यत्खार्जूरकेबृहत्खर्जूरसंबंधिमूलर कस्थेक्रोडनिहिते इषुःशरोनलगेत् सघृतैः घृतसहितैः भुक्तैरजीर्णैश्चभुक्तमात्रैस्तैः प्रागुक्तैः तालमूलकेतकपत्रखार्जूरमूलैः साद्भिर्युद्धे आरब्धेशरः नलगेत् कंसारिर्हिंसेति प्रसिद्धालता तस्या उत्तरादिक्स्थामूलिका निरशनैः शनावुपोष्य पुष्यार्कयोगे आत्तागृहीताधृता शरीरेसहतण्डुलांबुभिर्जग्धा खादिताच शरीरे शरवारणाय स्यात् अथ पाठा प्रसिद्धा तन्मूलमपिशरवारणाय स्यात् ॥ १५२॥ अंकोलःप्रसिद्धःलक्ष्मणापुरुषाकारमूलौषधिविशेषः पुंखाशरपुंखा सर्पाक्षीसर्पनेत्राकृतिःपुष्याशिखिचूलिकामयूरशिखाविष्णुक्रांतानीलपुष्पा प्रसिद्धा काकजंघा तदाकारानीलीप्रसिद्धा देवी सहदेवी पाटलाप्रसिद्धैवतज्जटातासा मौषधीनांमूलानितन्मध्ये एकापिजटाभुजेबाहौमूर्ध्निशिरसिधृता आस्येमुखेधृता खादितावारणेसंग्रामेदारुणंशस्त्रौघंतीक्ष्णशस्त्रसमूहंवारयेत् कियत्कालमित्यपेक्षि यावदिति यावत्पर्यंतमुदरेनजीर्यतिभुक्तपक्षेचैतत् धारणपक्षेतुयावद्धारणंजयः ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

॥ १५३ ॥ १५४ ॥ चक्रमर्दकःचकौडइतिभाषायांप्रसिद्धःगोजिह्वा गोभीप्रसिद्धाशिखिचूडामयूरशिखा एतासुमध्येएकैकाजटापुष्यार्कयोगेगृहीता आस्यगामूर्द्धगावान्यूतजयदा ॥ १५५ ॥

भाषा-खेलते समय मुखमें तालवृक्षका मूल १, केवडेका पत्र २, वडीखजूरका मूल ३, पाठा ४ या अंकोलमूल ५, लक्ष्मणामूल ६, शरपुंखामूल ७, सर्पाक्षिमूल ८, मयूरशिखामूल ९, विष्णुक्रांतामूल १०, नीलीमूल ११, सहदेवीमूल १२, पाटलामूल १३, चकौडमूल १४, गोभीमूल १५, ये पंद्रह मूलमेंसे कोई एकभी मूल सविधिसे पुष्यार्कयोगमें लेके मुखमें रक्खेगा यदि भुजामें बांधेगा यदि शिरपर रक्खेगा तो जय होवेगी, विधिविना मूल रक्खे तो कुछ होनेका नहीं ॥ इति चार श्लोकका सारांश कहा ॥१५२॥१५३॥१५४॥१५५॥

इतिक्रीडाध्यायमें मुहूर्तका विचार प्रश्नका विचार मंत्र यंत्र साधनका विचार संपूर्ण भया प्रकरण ॥ २ ॥

अथ त्रिविधद्यूतनामकंपाशकक्रीडनम् ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामिपाशक्रीडनलक्षणम् ॥
षडंगुलप्रमाणेनचतुरस्रंसुशोभनम् ॥ १५६ ॥

अब फांसेसे चौपट खेलनेका निर्णय उसमें चौपट कैसा करना चाहिये सो लक्षण कहता हूं- छः अंगुलप्रमाणसे चतुरस्र सुंदर कपडेका बनायके ॥१५६॥

मध्यभागेप्रकुर्वीतचतुर्दिक्षुततःपरम् ॥
अंगुलद्वयमानेनजिनकोष्ठकसंयुतम् ॥ १५७ ॥

उसके चार दिशामें दो अंगुलका एक कोष्ठक ऐसे चौवीस कोष्ठकका एक पट्ट ॥ १५७ ॥

चतुःपट्टंप्रकुर्वीतहंसपादैस्समन्वितम् ॥
षण्णवत्यत्रकोष्ठानिहंसपादाश्चषोडश ॥ १५८ ॥

ऐसे चार पट्ट उस चतुरस्रमें जोडे पीछे उन चारपट्टोंके ऊपर हंसपाद चार चार करै हंसपादको चिलेका घर कहते हैं ऐसे कोष्ठक छान्नवें चीले हंसपाद सोलह करै ॥ १५८ ॥

कार्यंवस्त्रमयंपट्टंपाशकादंतसंभवाः ॥
अथवारत्नखचिताःस्वर्णरौप्यादिनिर्मिताः ॥ १५९ ॥

और फांसे हाथीदांतके अथवा रत्न हीरे मानिकजडेहुये सुवर्णके अथवा रूपेके अथवा आदिशब्द करके तांबा या पीतल उसके करै ॥ १५९ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पाशकत्रयक्रीडायांवक्ष्येपाशकलक्षणम् ॥
चतुरंगुलदीर्घंचस्थूलमंगुलसंमितम् ॥ १६० ॥

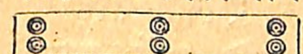
अब फांसेकी क्रीडा दो प्रकारकी है उसमें तीन फांसेकी क्रीडामें जो फांसे रहतेहैं उन फांसोंका लक्षण कहता हूं– फांसा लंबा चार अंगुल और जाडा (मोटा) एक अंगुल चतुरस्र करै ॥ १६० ॥

तस्यपार्श्वचतुष्केतुचिह्नंवैकारयेच्छुभम् ॥
ऊर्ध्वभागेचषट्चिह्नंतदधःशून्यमेककम् ॥ १६१ ॥

उसके ऊपरकी तरफ छः चिन्ह कबूतरके नेत्र सरीखे करै नीचे एक चिन्ह करै ॥ १६१ ॥

तीन फांसेकी क्रीडामें फांसेका चिन्ह

फांसेका ऊपरका भाग



फांसेका डावां भाग



फांसेका नीचेका भाग



फांसेका सीधा भाग



सव्यपार्श्वेपंचचिह्नंवामेचिह्नद्वयंतथा ॥
पाशकद्वयक्रीडायांविशेषंप्रवदाम्यहम् ॥ १६२ ॥

सीधी तरफ पांच, डावीं तरफ दो चिन्ह करना, अब दो फांसेकी क्रीडामें जो फांसा रहता है उसका लक्षण कहते हैं ॥ १६२ ॥

कनिष्ठिकापर्वमात्रंदीर्घविस्तारमादिशेत् ॥
ऊर्ध्वाधोपूर्ववच्चिह्नंवेदचिह्नंतुदक्षिणे ॥ १६३ ॥
वामेशून्यत्रयंकुर्यात्पाशकद्वयलक्षणम् ॥
द्वाभ्यांचक्रीडनंप्रोक्तंतदंतःपातिनोऽपरे ॥ १६४ ॥

वह फांसा कनिष्ठांगुलीका जो पर्व है उसके सरीखा दीर्घ विस्तार चतुरस्र करै उसके ऊपरकी तरफ छः नीचे एक, सीधी तरफ चार, डावीं तरफ तीन ऐसे चिन्ह करै यह दो प्रकारकी क्रीडा दो आदमियोंसे होती है ज्यादा खेलनेको बैठे तो उन दोनोंके पेटेमें बिद्ध होके खेलै जूदे खेलै नहीं ॥ १६३ ॥ १६४ ॥

दोफांसे की क्रीडामें फांसेका चिन्ह

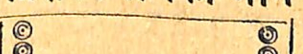
फांसेका ऊपरका भाग



फांसेका डावा भाग



फांसेका नीचेका भाग



फांसेका सीधा भाग



प्रत्येकंचपदातीनामष्टकंपरिकीर्तितम् ॥
स्वाग्रपट्टेचतुष्कंचचतुष्कंसव्यपट्टके ॥ १६५ ॥

दोनोंको नरदां आठ आठ आती हैं उनमें चार नरदां अपने सामनेके पटके ऊपर रक्खे और चार नरदां सीधे हाथके पट्टके ऊपर रक्खै ॥ १६५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पक्ववर्णौसव्यभागेस्वाग्रेऽपक्वःप्रकीर्तितः ॥
पक्ववर्णौरक्तकृष्णौहरित्पीताऽवपक्वकौ ॥ १६६ ॥

पक्का रंग सीधी तरफ और कच्चा रंग अपने पटपर रक्खे लाल और काली नरदोंको पक्का रंगकहते हैं हरी और पीली नरदोंको कच्चा रंग कहते हैं॥ १६६॥

बाजीचत्रिविधाज्ञेयाखेलनेपूर्वसंमता ॥
अष्टबंदिवर्णबंदिबंदिद्वयविवर्जिता ॥ १६७ ॥

इस खेलमें बाजी तीन तरहकी हैं एक अट्ठाबंदि दूसरी रंगबंदि तीसरी खुली ऐसी है. अब अट्ठाबंदि बाजीका लक्षण कहते हैं- अट्ठाबंदि बाजीमें पेटघरमें नरद मरती नहीं है अब रंगबंदि बाजीका लक्षण कहते हैं- रंगबंदि बाजीमें पक्के रंगकी पक्के रंगसे नरदकी तोड़ होवे कच्चे रंगसे नहीं और कच्चे रंगसे भी मरे कब कि, जब सामनेवालेका रंग सई होने आया होवे सई कहते पक्के रंगकी चारों नरदां अपने पटके ऊपर आय गई होवें तो कच्चे रंगसे भी नरद मारके उनका रंगसई होने नहीं देवे पक्के रंगकी तोड़ न हुई होवे तो वे नरदां घरमें जावें नहीं कच्चा रंगभी जावे नहीं पक्का रंग गये बाद कच्चा रंग घरमें जावे और कच्चे रंगकी नरदां जहांतक घरमें होवें तहांतक पक्का रंग घरमें जावे नहीं. अब खुली बाजीका लक्षण कहते हैं- खुलीबाजीमें पेटघरमें भी मरे और कच्चा पक्का रंग दोनों नरदां परस्पर मरें और घरमें कोई भी रंग तोड़ हुये बाद जावे उसको खुलीबाजी कहते हैं ॥ १६७

सव्यभागस्थितंचादौचालयेच्चपदातिनम् ॥
पदातिगमनेसंख्याभेदाविंशतिसंख्यकाः ॥ १६८ ॥

अब खेलनेके आरंभमें पहिले सीधे तरफके पट ऊपरकी नरदां चलावे, बाद कच्चा रंग चलावे नरदां चलानेमें फांसे डालके दांव लेवे उस दांवकी संख्या बीस तरहकी है ॥ १६८ ॥

चिह्नत्रयंसमारभ्यचिह्नाष्टादशकावधि ॥
अष्टसंख्याद्वयंचैवनवसंख्याद्वयंतथा ॥ १६९ ॥

तीन काणेसे लेके तीन छक्के अठारहतकहै आठके दांव और नवके दांव दो दो प्रकारके हैं उनके नाम और चिह्न आगे स्पष्ट दिखाये हैं ॥ १६९ ॥

एकेनवायुगेनापियुगस्यमरणंनहि ॥
चतुःपट्टांतिमेमध्यकोष्ठेचमरणंनाहि ॥ १७० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

नरदोंको मारनेका ऐसा नियम है कि, एक नरदसे अथवा दो नरदोंका युग होता है उस युगसे भी युग मरता नहींहै अकेली नरद होवे तो छुटी नरदसे अथवा युगसे भी मरे और चार पटके अंतिम भागके बीचमेंका जो कोष्ठक है उसको पेटघर कहते हैं वहां नरद एक अथवा युग होवे परंत वहां नरद मरती नहीं है ॥ १७० ॥

युगस्यडावपतनेयुगस्यखेलनंभवेत् ॥
अवशिष्टप्रसंख्यानेचैकस्यगमनंस्मृतम् ॥ १७१ ॥

फासेमें युग चलानेकी रीति दांव लेनेमें ऐसी है कि,कोई भी संख्याकी युग पडी होवे तो उस संख्या मूजब युग चलावे विषम दांव पडा होवे तो युग चलावे नहीं. जैसे छः, दो, आठ ऐसा दांव पडे तो युग चलावे और पांच तीन आठ ऐसा दांव पडे तो एक नरद चलावे युग नहीं चलावे ऐसाही सब बाकी के दांवमें जानना चाहिये ॥ १७१ ॥

पाशक्रीडनकेप्रोक्तानियमादशसंख्यकाः ॥
चतुर्णांचपदातीनांनाशेविंद्यात्पराजयम् ॥ १७२ ॥
इतिपाशकत्रयक्रीडानिरूपणम् ॥

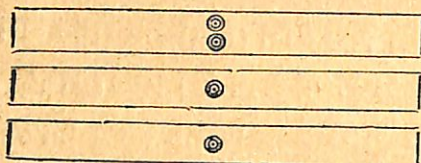
और फांसेके खेलमें नियम दश हैं सो आगे दिखाये हैं. इस खेलमें एक रंगकी चारों नरदां जिसकी मरगई उसे हारा जानै. यहां कोई पुरुष चौपट खेलते समय पौबारहसे नरद मारके जीतनेके वास्ते पौबारहका दांव ईश्वरके पास मांगता है सो किसी कविका कहाहुआ गुजराती भाषामें है (दोहरा) सिंहमूछ भुजंगमणी, कृपणधन सतिनार ॥ मूवा पछे पर हस्त जसे, पड पासा पोबार ॥ १ ॥ डेरु दीठूं देवतुं, दीठा देव मुरार ॥ दर्शन पण परसन नहीं, पड पासा पोबार ॥ २ ॥ हंस गयो सरोवर विषे, दीठो अमृत सार ॥ दीठूं पण चाख्यूं नहीं, पड पासा पोबार ॥ ३ ॥ आंबे केरी झुलरही, केली केलां सार ॥ दीठा पण चाख्या नहीं, पड पासा पोबार ॥ ४ ॥ १७२॥

इति तीन फांसेसे खेलनेकी क्रीडा संपूर्ण ।

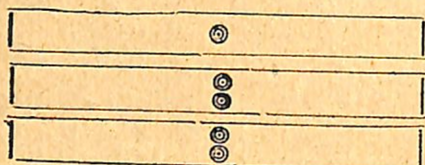
अब दांव लेनेके वास्ते फांसेका चिन्ह और दांवका निर्णय आगे लिखाहै ।

इसको तीन काणे कहते हैं यहां एक घर युग चले. छुटी नरद एक घर चले. १
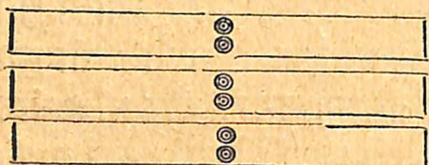
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri



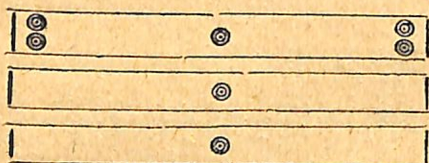
इसको चार काणे कहते हैं यहां युग एक घर या दो घर चले और छुटी नरद दो घर चले. २



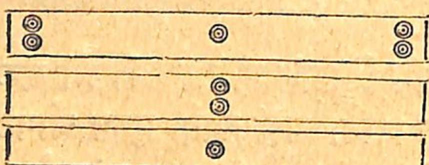
इसको पंजड़ी कहते हैं यहां युग चार घर या दो घर चले और छुटी नरद एक घर चले ३
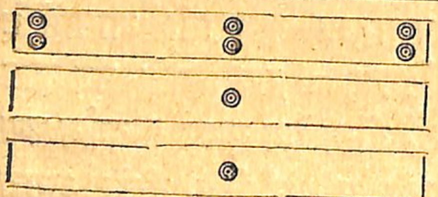


इसको छकडी कहते हैं यहां युग तीन घर या चार घर चले और छुटी चलाना होवे तो छः घर चले. ४
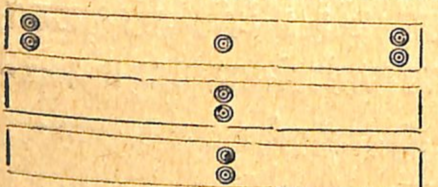


इसको पांच दो सात कहते हैं यहां युग दो घर या एक घर चले छुटी नरद पांच घर चले. ५
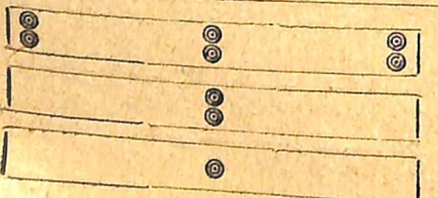


इसको पांच तीन आठ कहते हैं यहां युग न चले केवल छुटी नरद दांवकी संख्या तुल्य चले. ६



इसको छः दो आठ कहते हैं यहां युग दो घर चले छुटी नरद छः घर चले. ७



इसको पांच चार नव कहते हैं यहां युग चार घर चले या दो घर चले छुटी नरद पांच घर चले. ८



इसको छः तीन नव कहते हैं यहां युग नहीं चले छुटी नरद दांवकी संख्या तुल्य चले. ९

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

क्रमाङ्क .... दिनाङ्क ....

इसको छः चार दश कहते हैं यहां युग दो घर या चार घर चले छुटी नरद छै घर चले. १०

इसको दश प्यादि कहते हैं यहां युग पांच घर या दश घर चले छुटी नरद एक घर चले. ११

इसको दश दो बारह कहते हैं यहां युग पांच घर या दश घर चले छुटी नरद दो घर चले. १२

इसको ग्यारह दो तेरह कहते हैं यहां युग नहीं चलता छुटी नरद संख्या तुल्य चलती है. १३

इसको बारह दो चौदह कहते हैं यहां युग छै घर या बारह घर चले छुटी नरद दो घर या चौदह घर चले. १४

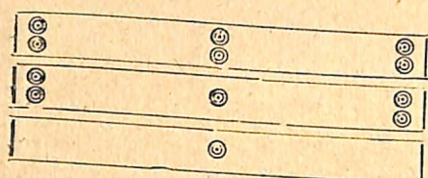
इसको तीन पंजे पंद्रह कहते हैं यहां युग दश घर या पांच घर चले छुटी नरद पांच घर या पंद्रह घर चले. १५

इसको दश छः सोलह कहते हैं यहां युग दश घर या पांच घर चले छुटी नरद छः घर या सोलह घर चले. १६

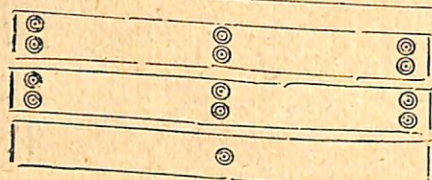
इसको बारह पांच सत्रह कहते हैं यहां युग बारह घर या छः घर चले छुटी नरद पांच घर या सत्रह घर चले. १७

इसको तीन छक्के अठारह कहते हैं यहां युग बारह घर या छः घर चले छुटी नरद छः घर या अठारह घर चले. १८

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri



इसको कच्चे बारह कहते हैं यहां युग छः घर चले छुटी नरद चलाना होवे तो बारह घर चले. १९



इसको पोबारा कहते हैं यहां युग छः घर या बारह चले छुटी नरद एक घर या तेरह घर चले. २०

अब खेलमें दश तरहके नियम कहते हैं.

१ जो खेलते२ एक रंगकी चारों नरदां जिसकी मर जावें तो वह हारा और खेलकी बाजी पूरी हुई.

२ एक रंगकी चारों नरदां फिरकर अपने पट्टके ऊपर आयगई होवें तो वह रंग पक्का हुआ उनको घरमें ले जावे परंतु जिस समय अपना रंग पक्का हुआ उतनेमें सामने वालेने अपनी चार नरदोंमेंसे एक नरदको मारा तो बाकीकी तीन नरदां घरमें जावे नहीं परंतु घरमें एक नरद गई होवे पीछे अपनी नरद सामनेवाला मारे तो फिर बाकीकी नरदांको घरमें जानेका हरकत नही है.

३ जो कभी अपने पक्के रंगकी नरदां सब घरमें गई होवै और सामनेवाले-का रंग पक्का होनेके वास्ते नरद जाती होवे तो घरमेंसे अपनी नरद निकालके सामनेवालेकी नरदको मारके उसके रंगको सई होने देवे नहीं.

४ नरदां बिठानेकी रीति ऐसी है कि, पहिले तो आप अपनी जगह पै बैठी होवे वो इसही है वहांसे दांव लेवे और खेलनेमें जो नरद मरगई पीछे वह नरद बिठाना होवे तो नवके मध्य जितने दांव हैं उन दांवोंसे बैठे नहीं नवके ऊपर के जितने दांवहैं उन सब दांवोंसे नरदां बैठे.

५ कच्चारंग हरेको और पीलेको कहते हैं वह कच्चा रंग आपअपने पटकेऊपर बिठावे और पक्का रंग लालको और कालेको कहतेहैं वह पक्का रंग आप अपने दक्षिण बाजूके पटके ऊपर बिठावे लाल हरा एक लेवे कालापीला रंग एक लेवे.

६ और मरी हुई नरदको बिठाना है तब नवसंख्या आदि जितने दांव हैं उन दावोंके संख्या तुल्य घर खाली होवें तो नरद बैठे अथवा उस घरमें बै-ठने वाली नरदका रंग जो होवे वही रंगकी नरद वहां बैठी होवे तो उसके साथ युग होके बैठे और उस घरमें अपनी नरद दूसरे रंगकी होवे या सामने वालेका युग बैठा होवे तो नरद बैठे नहीं.

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

७ नरदां चलानेमें युग अथवा एक चलानेकी है और दांव पांच, चार, नव, पड़े हैं तब पांचवें घरमें सामनेवालेकी नरद बैठी है अथवा अपनी बेरंगी नरद बैठी है तब सामनेवालेने कहा की पंजा बंद है तब उसने पहिले चारका दांव लेके पीछे पांच लिया तो बंदि कही जाती नहीं है. यह युगका छक्का पंजा बंद कहा जाता है और यही बंदिमें सामनेवालेकी एकली नरद होवे तो वह नरद मार लेवे वह बंदि नहीं है.

८ जो कभी पक्का रंग घरमें आगया होवे और कच्चा रंगभी सई हुआ होवे तो पक्के रंगको कच्चा करके कच्चे रंगको पक्का कर ले कहते घरमें ले जावे.

९ रंग सई हुआ किसको कहै कि, चारों नरदां एकही रंगकी एक पटके ऊपर आय गई होवें.

१० दांव लेते समय एकही दांवमें दो रंगकी नरदां चलें नहीं कोईभी एक रंग चलै. इति खुलासे संपूर्ण भये.

अथ पाशकद्वयक्रीडामाह ।

अतःपरंप्रवक्ष्यामिपाशकद्वयक्रीडनम् ॥
द्वाभ्यांचखेलनंह्येतत्तस्यभेदस्तुपूर्ववत् ॥ १७३ ॥

अब दो फांससे खेलनेकी क्रीडा कहता हूं-यह खेल दो आदमीसे खेला जाता है उसका भेद सब पहिले तीन फांसेके खेलमें कहाहै वही जानना चाहिये ॥ १७३ ॥

चतुर्भिर्वाभवेत्खेलोवाजिबंधनवर्जितः ॥
पदातिगमनेसंख्याभेदाश्चदशसंख्यकाः ॥ १७४ ॥

चार आदमी से खेलना होवे तो खुली बाजीसे खेलै वहां बंद बाजी नहीं है इस खेलमें फांसेके दाँव दश तरहके हैं ॥ १७४ ॥

सप्तचिह्नंद्विधातत्रराम ३ रुद्रं ११ दु १ वर्जिताः ॥
चिह्नद्वयंसमारभ्यचिन्हद्वादशकावधि ॥ १७५ ॥

सातके दाँव दो तरहके हैं और दो चिह्नसे लेके बारह तक दाँव हैं उसमें तीन, एक, ग्यारह, यह संख्या नहीं हैं ॥ १७५ ॥

चिह्नैक्यंपाशयुगलेतदायुग्मस्यखेलनम् ॥
एकस्यापिप्रभवतिशेषेष्वेकस्यखेलनम् ॥ १७६ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दोनों फांसेके ऊपर एकही चिह्न होवे तो नरदका युग चलावे अथवा एक नरद चलावै बाकीके खेलमें नाम दो फांसेमें जुदा जुदा चिह्न होवे तो एक नरद चलावे युग चलता नहीं है ॥ १७६ ॥

द्वादशेदावपतनेद्विवारंपाशकंक्षिपेत् ॥
तत्रापिपुनरर्कंचेत्पुनर्वैपाशकंक्षिपेत् ॥ १७७ ॥

खेलते खेलते बारहका दाँव गिरे तो फांसा दूसरे वार और डालै और दूसरे दाँवके समयभी जो बारह पडें तो और फांसा तीसरी बार डालै ॥ १७७ ॥

तृतीयेद्वादशेपूर्वडावनाशःस्मृतोबुधैः ॥
चतुर्थादिपुनःसंख्याग्राह्याखेलनकर्मणि ॥ १७८ ॥

तीसरी वेरभी जो बारह पडे तो वे तीनों दाँव सब जल गये कहते व्यर्थ गये पीछे चौथे दांवसे संख्या लेवे खेलनेमें ॥ १७८ ॥

पटेस्वेस्वेपदातीनांस्थितिरादौप्रकीर्तिता ॥
मरणानंतरंचैकपतनेस्थितिरीरिता ॥ १७९ ॥

नरदां बिठानेकी रीति ऐसी है कि, अपने अपने पट ऊपर पहिले बैठे और वहांसे दाँव लेते जावे पीछे जब खेलनेमें नरद मर जावे तब जिस समय एक पडे तब नरद बिठावे पो बिना नरद बैठे नहीं पो के दाँव चार हैं छपगडी १ दोमणी १ तुटि चार १ चार पो १ ऐसे हैं ॥ १७९ ॥

रिपोःपदातिमरणेमारणाख्योरसःस्मृतः ॥
तत्रदावंद्विवारंवैहर्षेणप्रक्षिपेन्नरः ॥ १८० ॥

अब मारका रसका निर्णय कहते हैं सामनेवालेके नरदको जिस समय मारे उस समय हर्षसे दूसरी बार और फांसा डालके दाँव लेवे दाँवमेंभी जो सामनेवालेकी नरद मरे तो और तीसरी बार दाँवका फांसा डाले जहांतक मरे वहांतक फांसे डालते जावे नरद न मरे तो पीछे फांसा डालै नहीं उसको मारका रस कहते हैं ॥ १८० ॥

एवमक्षद्वयेनापिक्रीडेयंपरिकीर्त्तिता ॥

ऐसी दो फांसेकी क्रीडा मैंने वर्णनकी

इतिपाशकद्वयक्रीडासंपूर्णा ।

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अब दशतरहके दाँव लेनेमें फांसोंके चिह्न दाँवका निर्णय.

इसको दो मणी कहतेहैं यहां युग दो घर या एक घर चलता है छुटी नरद दो घर चलती है. १

इसको एक तीनसे तूंटि चार कहते हैं यहां युग नहीं चलता छुटी नरद चलती है. २

इसको चार पो पांच कहते हैं यहां युग नहीं चलता एकही चले. ३

इसको तीन तीन छः दो घोडे कहते हैं यहां युग छै घर या तीन घर चलता है छुटी नरद छः घर चलतीहै ४

इसको चार तीन सात कहते हैं यहां युग नहीं चलता छुटी नरद चलती है. ५

इसको छपगडी छः पो सातकहते हैं यहां युग नहीं चलता छुटी नरद चलती है. ६

इसको दो चौक अट्ठा कहते हैं यहां युग चार घर या आठ घर चलता है छुटी नरद आठ घर चलती है. ७

इसको छः तीन नव कहते हैं यहां युग चलता नहीं है छुटी नरद चलती है. ८

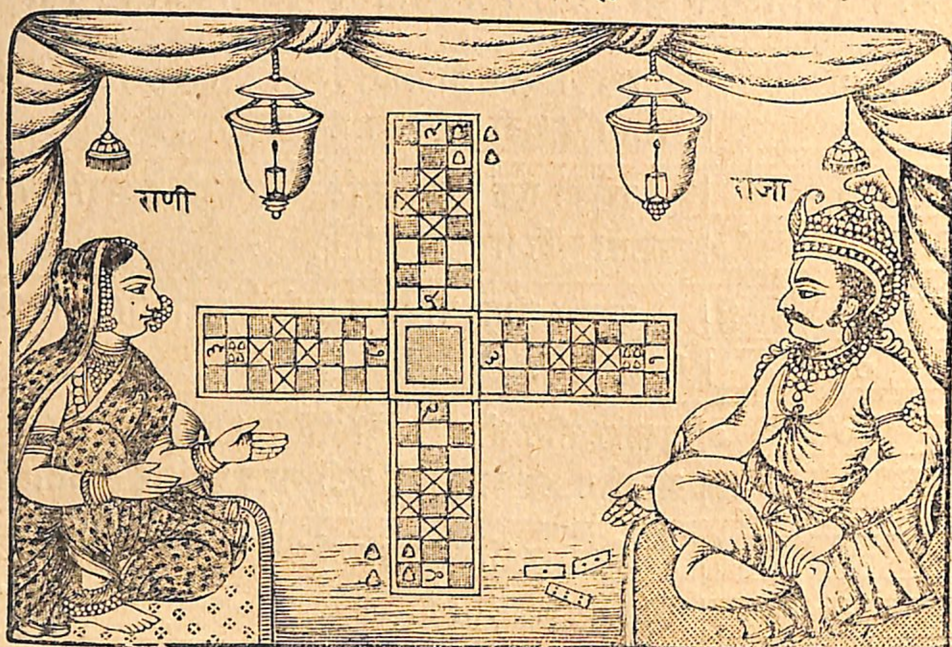
इसको छःचार दश कहते यहां युग नहीं चलता छुटी नरद दश घर चलती है. ९

इसको दो छक्के बारह कहते हैं यहां युग छः घर या बारह घर चलता है छुटी नरद बारह घर चलती है. १०

इसको तीस कहना ३०	इसको पच्चीस कहना २५	इसको चार कहना ४	इसको तीन कहना ३	इसको दो कहना २	इसको दश कहना १०
					

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चौपटखेलनेकाचिन्ह.



अथ कपर्दिकाभिःखेलनमाह ।

अस्मिन्नेवपटेक्रीडातृतीयापरिकीर्तिता ॥ १८१ ॥

इस चौपटके ऊपर तीसरी क्रीडाका भेद कहता हूं ॥ १८१ ॥

कपर्दिकासप्तकेनचतुर्भिःखेलनंभवेत् ॥
पदातिगमनेभेदाःषडेवपरिकीर्तिताः ॥ १८२ ॥

अब कौडियोंसे चौपट खेलनेका निर्णय कहता हूं- सात कौडियोंसे चार जने खेलें इस खेलमें नरदां चलानेको दाँवके भेद छः हैं ॥ १८२ ॥

षड्भिरूर्ध्वमुखैस्त्रिंशत्पंचभिःपंचविंशतिः ॥
चतसृभिस्तुर्यसंख्याद्वयंद्वाभ्यांत्रयस्त्रिभिः ॥ १८३ ॥

सो कहते हैं-छः कौडियोंके मुख ऊपर होवैं और एक उंधीहोय तो उसको तीसका दाँव कहना नरद तीस घरपै जाके रखना ऐसा पांच कौडियोंके मुख ऊपर रहें तो पच्चीस कहना चार कौडियोंके मुख ऊपर रहें तो चार कहना तीनके मुख ऊपर रहें तो तीन कहना दो से दोका दाव लेना ॥ १८३ ॥

एकाचेद्दशसंख्यात्र ग्राह्याखेलनकर्मणि ॥
बहिरष्टौहंसपादास्तत्रचेन्मरणंनहि ॥
अरिघातं विना गेहे स्वकीये गमनंनहि ॥ १८४ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

और एक कौडीका मुख ऊपर और छः कौडियोंका मुख ऊंधा होवे तो उसको दश कहना दशवें घरपै जाके नरद रखना. कितनेक लोग छः कौडीसे खेलते हैं वह रीति दाँवकी यही है, परंतु वहां तीसका दाव नहीं है सो जानना और चार पटके ऊपर दो दो चीले हैं वहां नरदा बैठी होवे तो वह नरदा मरती नहीं है और सामनेवालेकी नरदको मारना उसको तोड़ कहते हैं सो तोड़ हुये बिना नरदा अपने घरमें जाती नहीं है ॥ १८४ ॥

वर्णबंदितदा कार्याद्वाभ्यां क्रीडायदाभवेत् ॥
यस्यादौगमनंगेहे तस्यविद्याज्जयंसदा ॥ १८५ ॥

इति हरिकृष्णवि० बृ० ष० मिश्र० क्रीडाकौशल्याध्याये त्रिविधद्यूतक्रीडावर्णनं नाम प्रकरणम् ॥ ३ ॥

इस खेलमें दो जने खेलें तो रंगबंदी बार्जीसे खेलें. और यहां जिसकी नरदा सब घरमें पहिले जावे उसकी जय जानना. जिसकी नरदा घरमें नहीं गई पट ऊपर रहीं सो हारा जानना ॥ १८५ ॥

इति तीन प्रकारसे द्यूतक्रीडा का भेद पूरा हुआ प्रकरण ॥ ३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ पत्रक्रीडा प्रारभ्यते ।

चंगकांचन गंजीफाकी देहेलीबंदी बाजी सुपेदकी रंगदूसरा पत्तोमें रंगकाला.

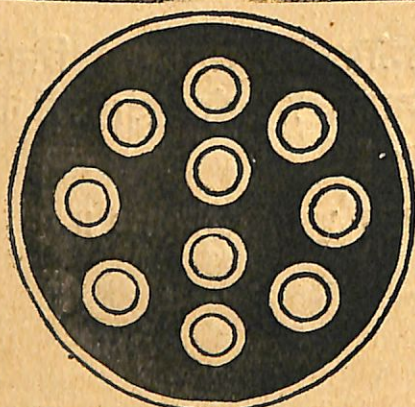
सफेदका मीर



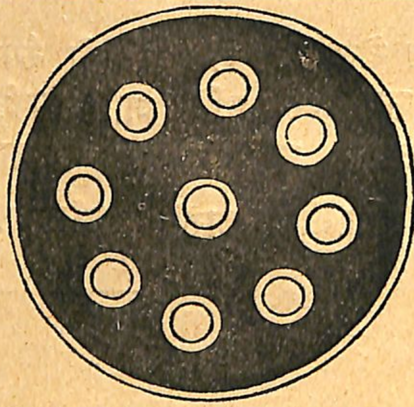
सफेदका वजीर



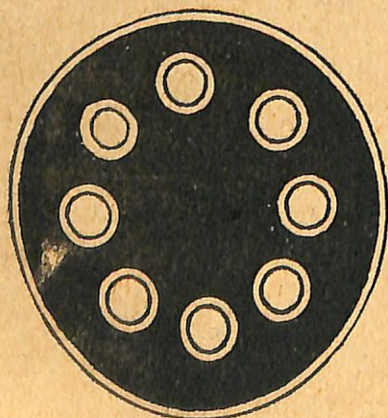
सफेदका दहेला



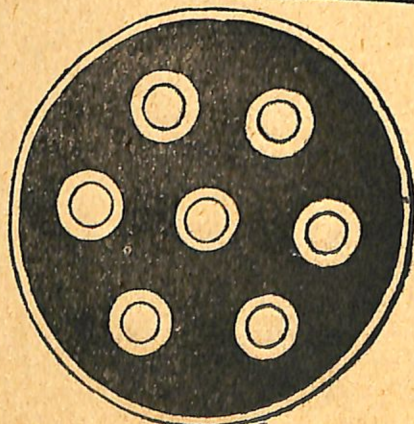
सफेदका नहेला



सफेदका अट्ठा

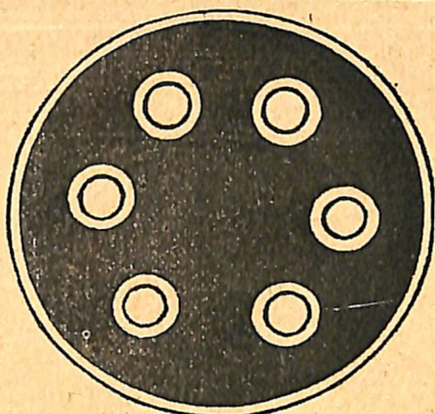


सफेदका सत्ता

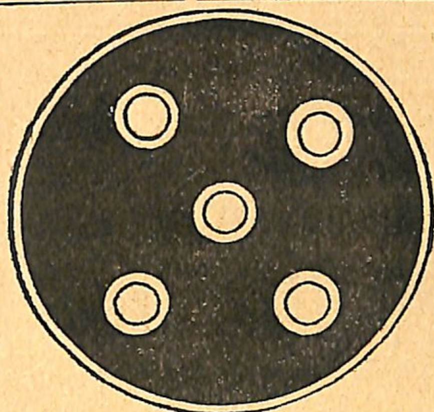


CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

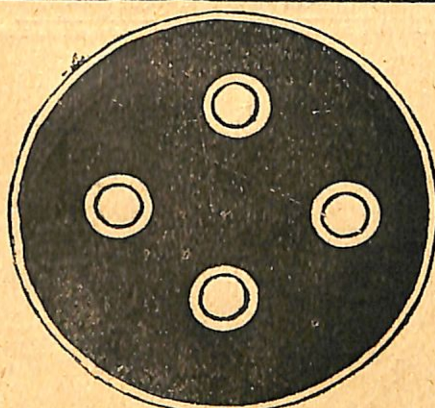
सफेदका छक्का



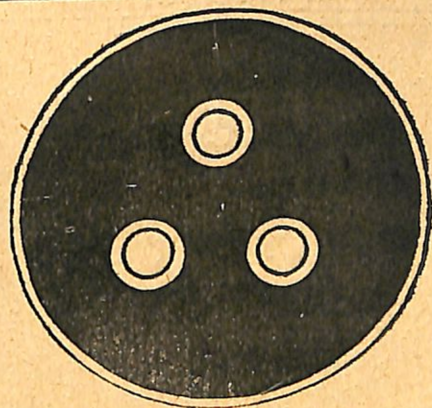
सफेदका पंजा



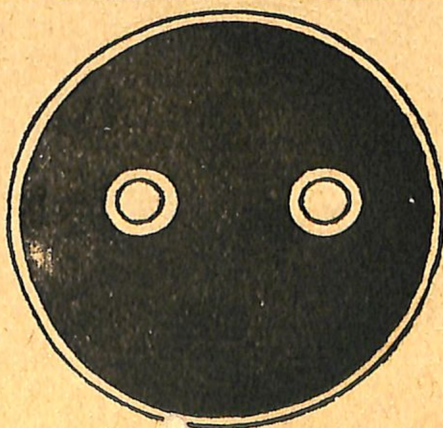
सफेदका चौवा



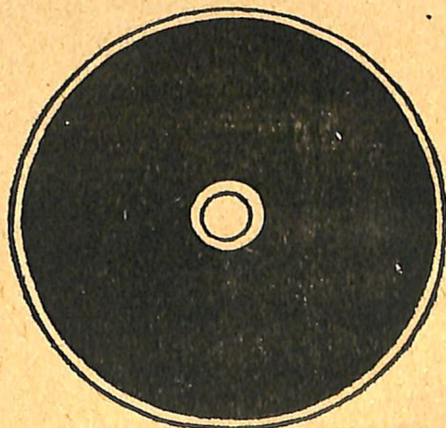
सफेदका तीया



सफेदका दूवा

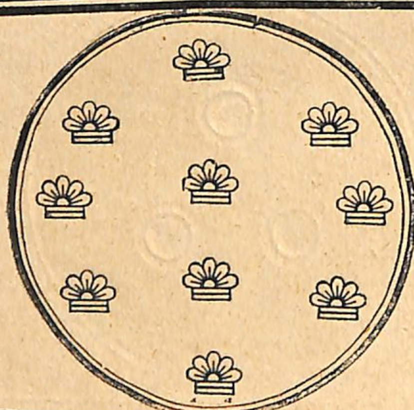
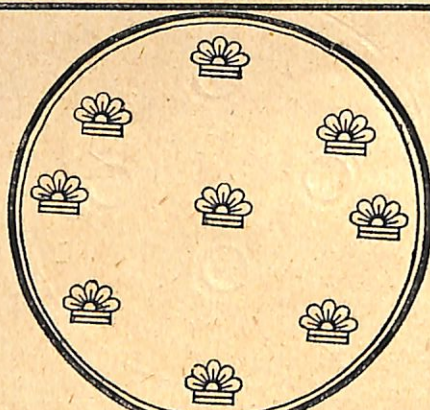
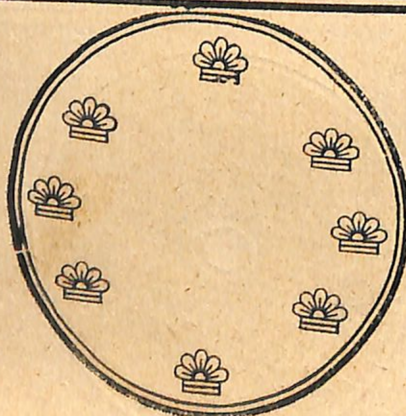
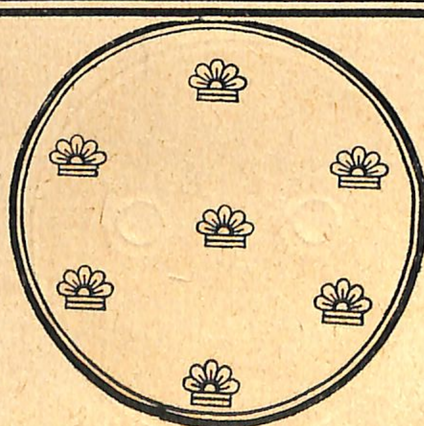


सफेदका एक्का



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

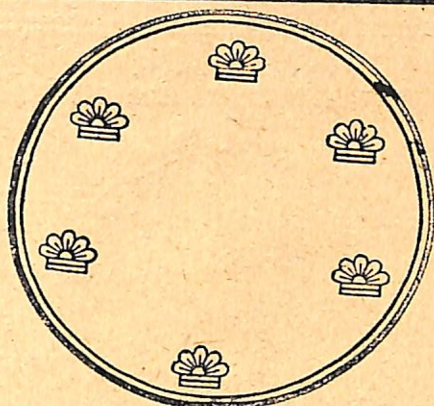
चंगकांचनगंजीफाकी देहेलीबंदीवाजी ताजकीरंगपहिलापत्तोंमें रंगहराथोडीसुर्खी मिला हुआ ।

ताजका मीर	ताजका वजीर
	
ताजका दहला	ताजका नहला
	
ताजका अट्ठा	ताजका सत्ता
	

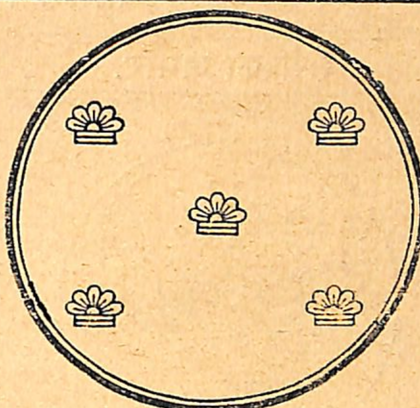
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मण महासम्मेलन ...
दिनाङ्क ...

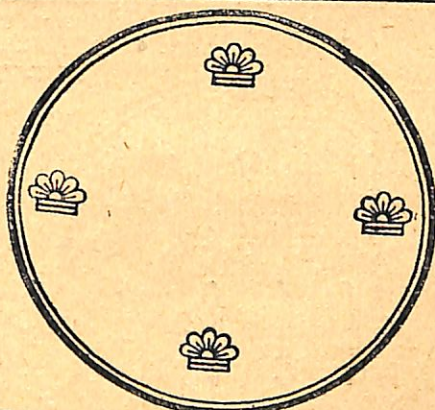
ताजका छक्का.



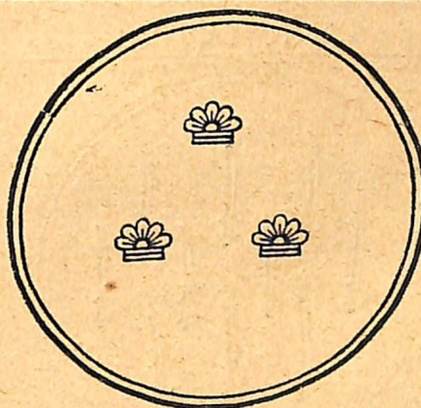
ताजका पंजा.



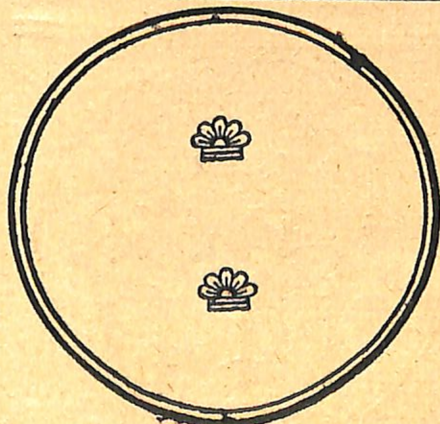
ताजका चौवा.



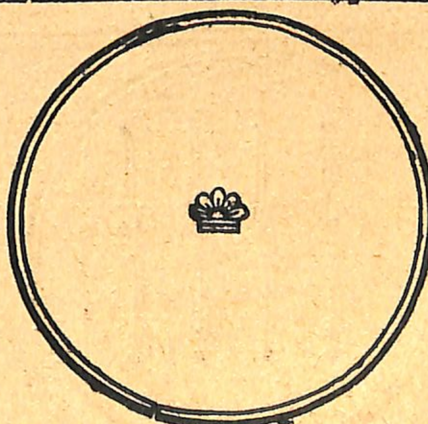
ताजका तीय्म.



ताजका दूवा.

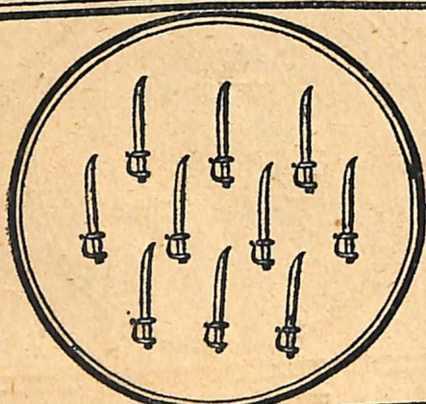
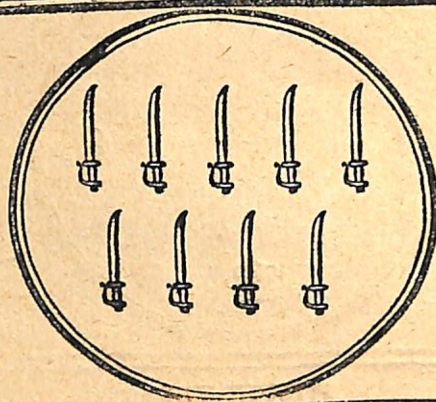
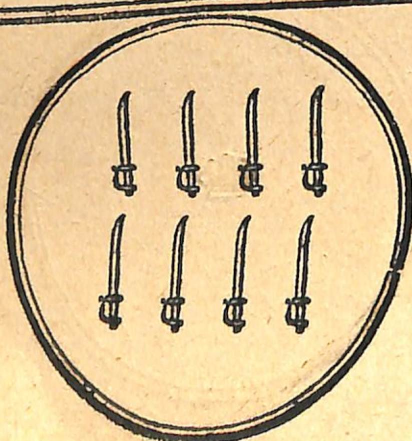
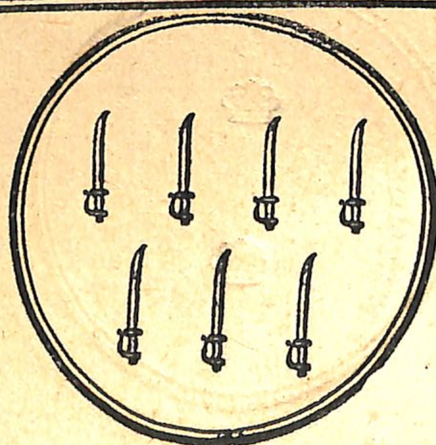


ताजका एक्का.



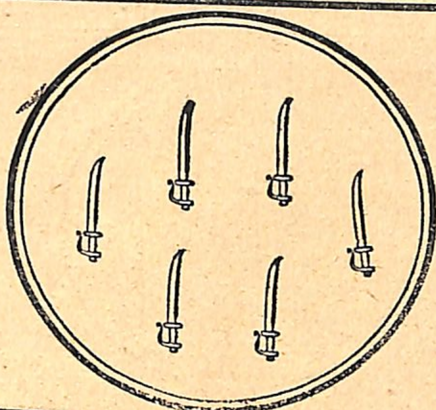
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चंगकांचन गंजीफाकी दहलेवंदीबाजी संसेरकी रंग तीसरा पत्तोंमें रंग लाखी ।

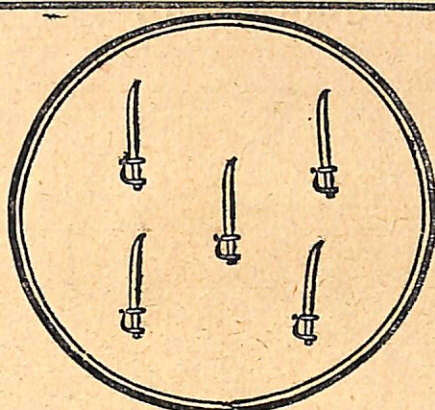
संसेरका अमीर.	संसेरका वजीर.
	
संसेरका दहला.	संसेरका नहला.
	
संसेरका अट्ठा.	संसेरका सत्ता.
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

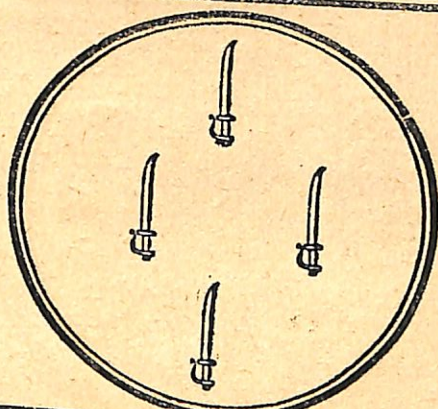
संसेरका छक्का.



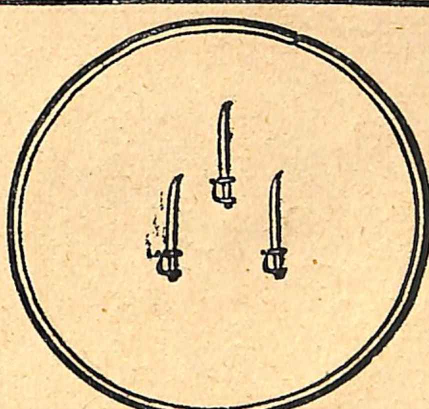
संसेरका पंजा.



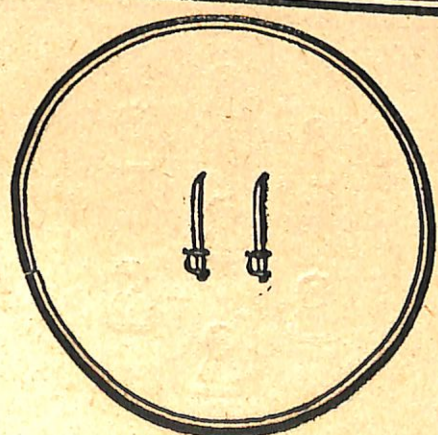
संसेरका चौवा.



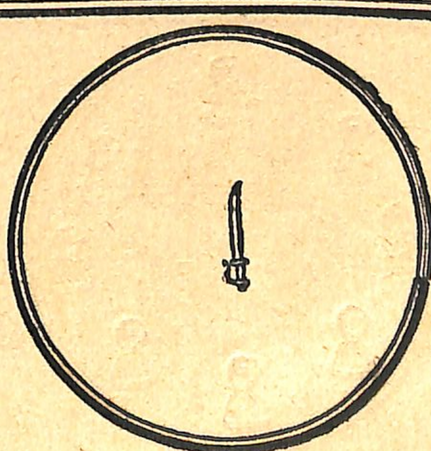
संसेरका तीया.



संसेरका दूवा.

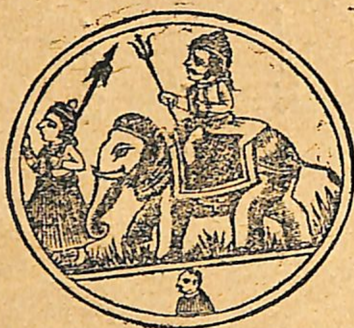
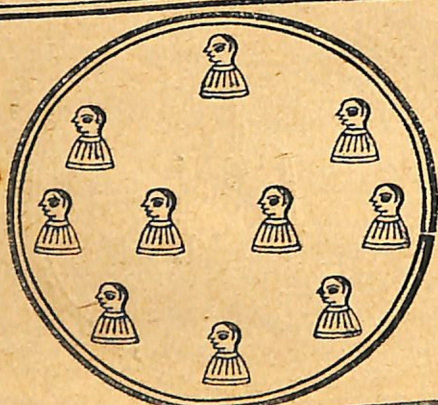
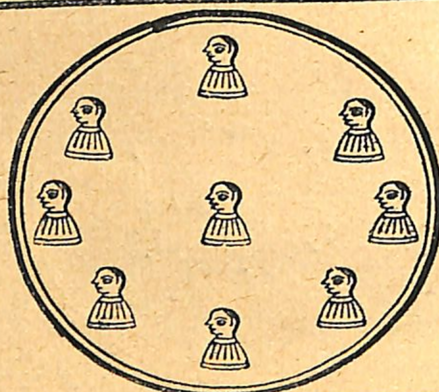
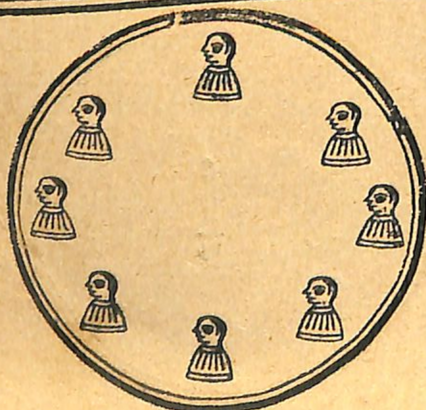
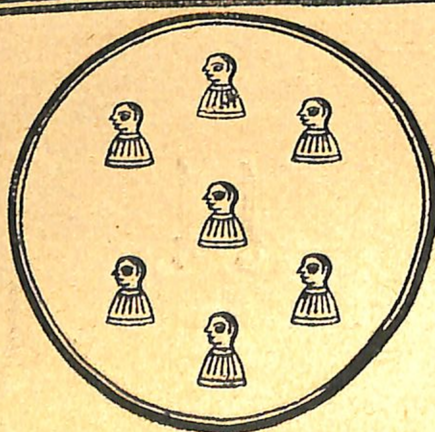


संसेरका एक्का.



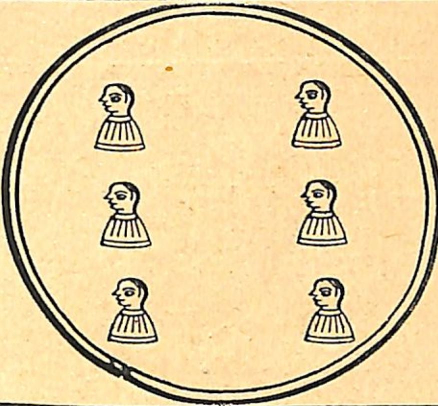
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चंगकांचन गंजीफाकी दहलेबंदी बाजी गुलामकी रंग चौथा पत्तोंमें रंग पीला।

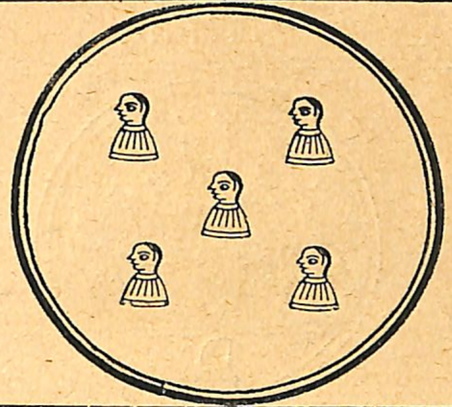
गुलामका अमीर.	गुलामका वजीर.
	
गुलामका दहला.	गुलामका नहला.
	
गुलामका अट्ठा.	गुलामका सत्ता.
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

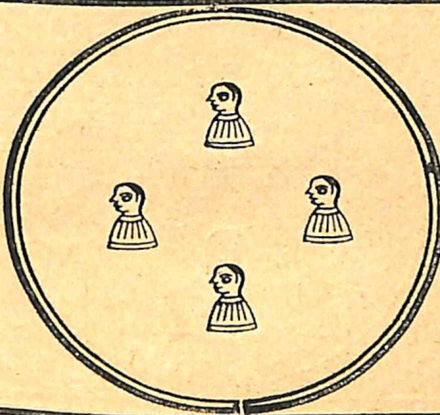
गुलामका छक्का.



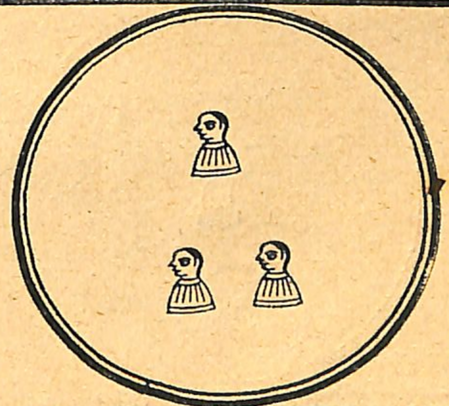
गुलामका पंजा.



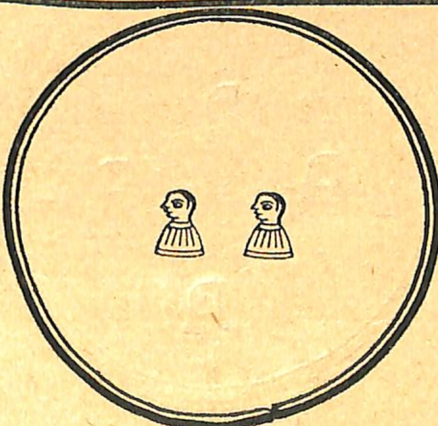
गुलामका चौवा.



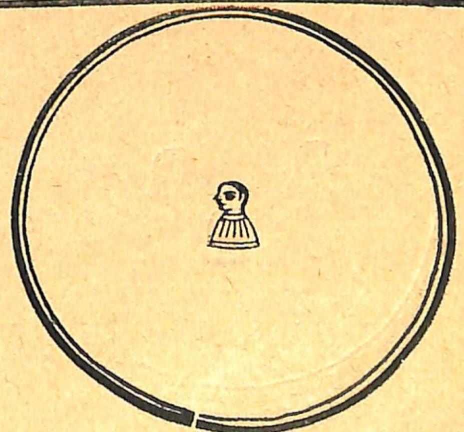
गुलामका तीया.



गुलामका दूवा.

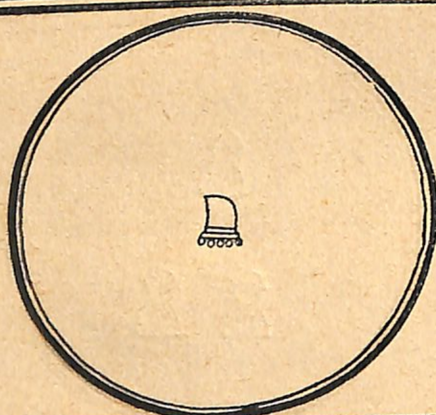
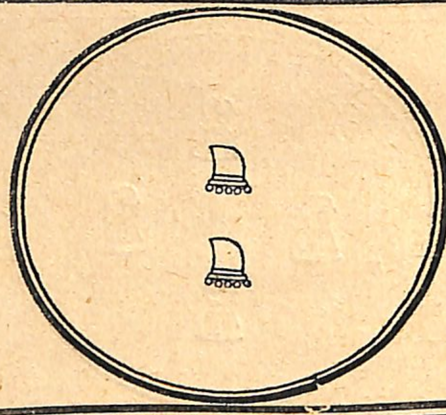
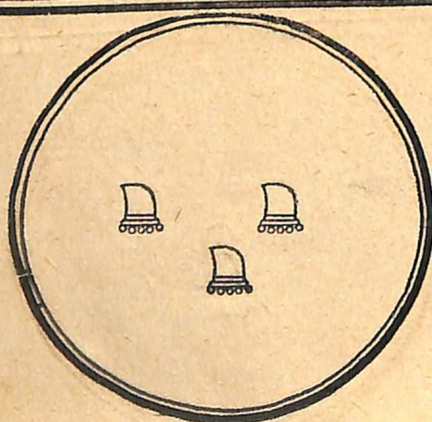
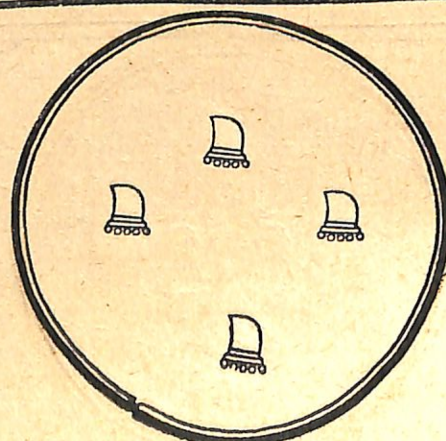


गुलामका एक्का.



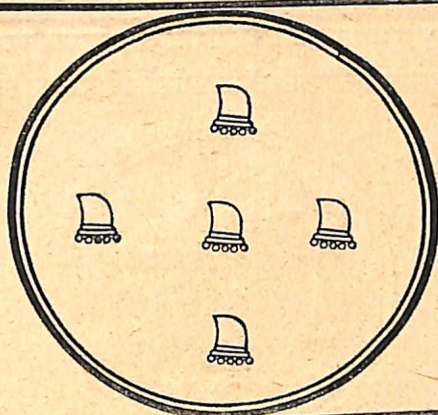
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चंगकांचन गंजीफाकी एक्काबंदीबाजी चंगकीरंग पहिला आदीसे रंग पांचवा पत्तोंमें रंग हरा ।

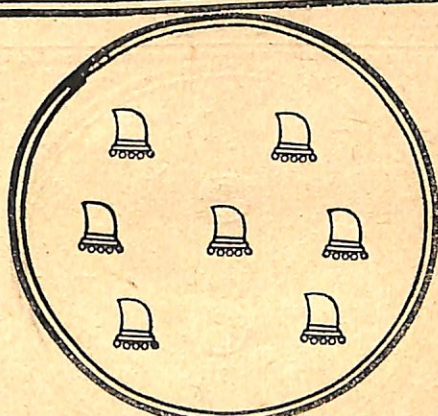
चंगकामीर.	चंगका वज़ीर.
	
चंगका एक्का.	चंगका दूवा.
	
चंगका तीया.	चंगका चौवा.
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

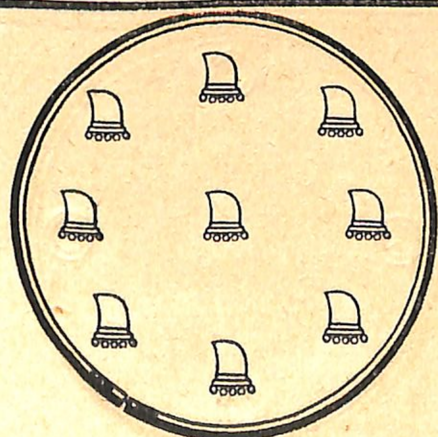
चंगका पंजा.



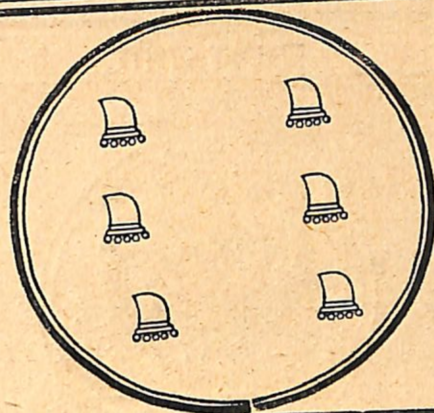
चंगका सत्ता.



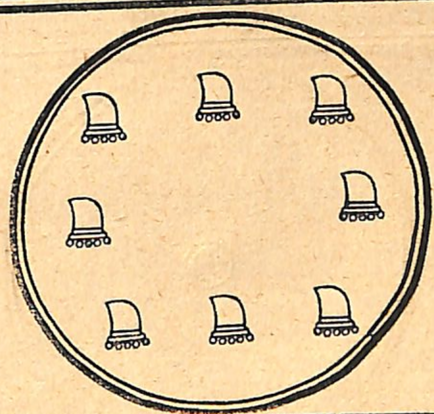
चंगका नहेला.



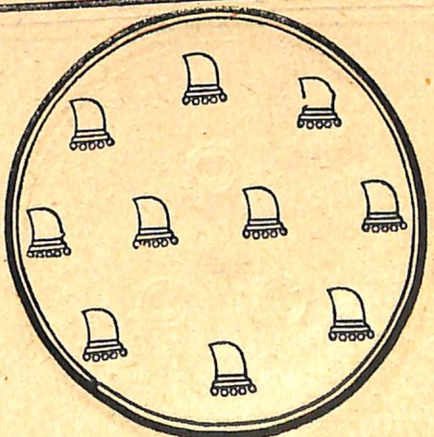
चंगका छक्का.



चंगका अट्ठा.

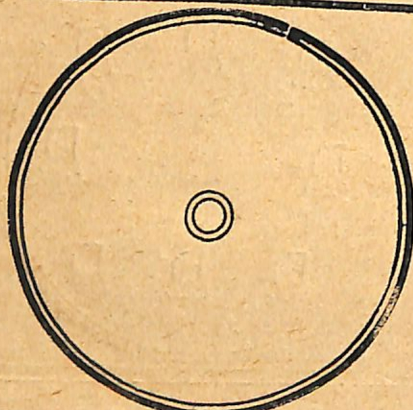
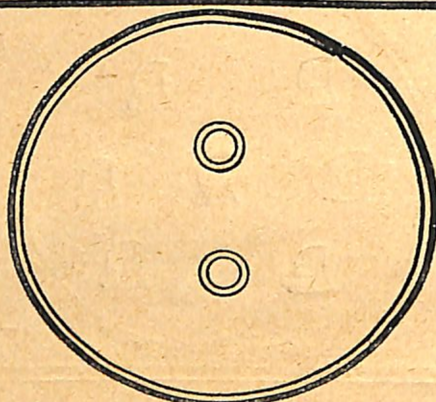
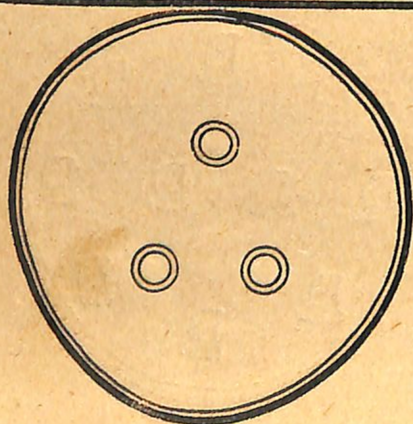
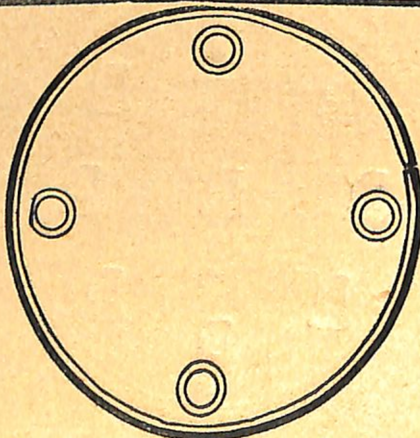


चंगका दहेला.



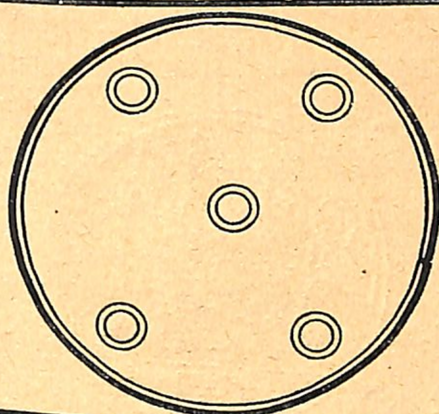
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चंगकांचनगंजीफाकी एक्कावंदीबाजी सुर्ख़की रंगदूसरा पहिलेसे छट्ठा पत्तोंमें रंगलाल ।

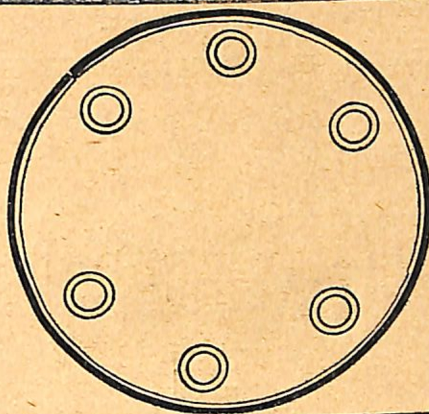
सुर्ख़का अमीर.	सुर्ख़का वजीर.
	
सुर्ख़का एक्का.	सुर्ख़का दूवा.
	
सुर्ख़का तीया.	सुर्ख़का चौवा.
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

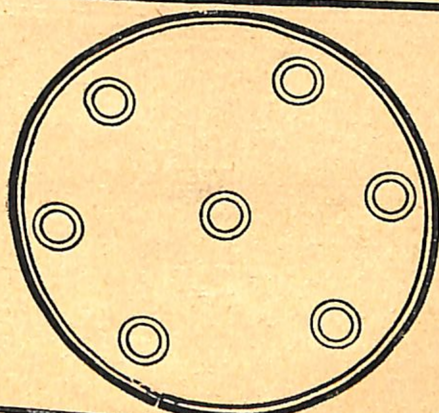
सुर्ख़्का पंजा.



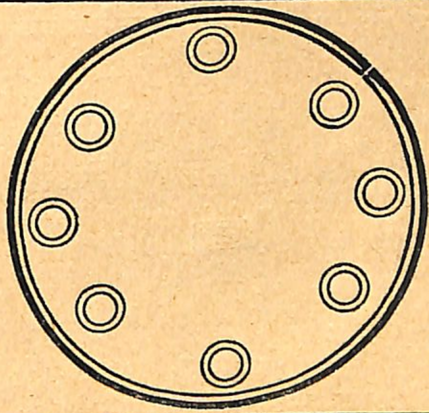
सुर्ख़्का छक्का.



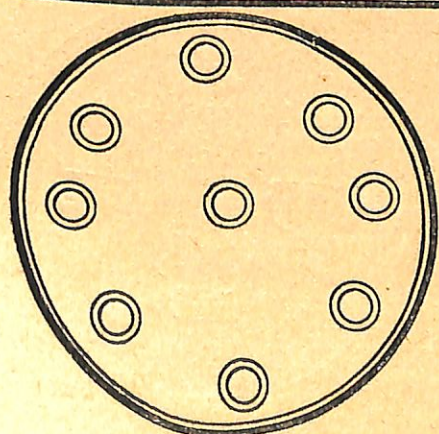
सुर्ख़्का सत्ता.



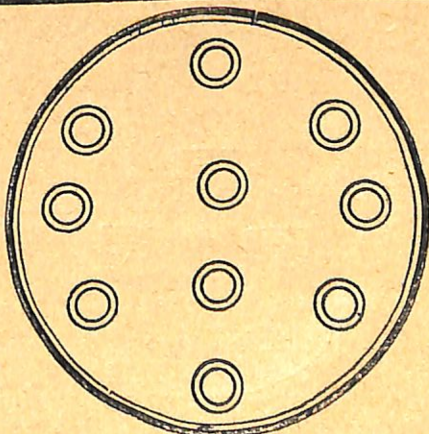
सुर्ख़्का अट्ठा.



सुर्ख़्का नहेला.



सुर्ख़्का दहला.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चंगकांचन गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी बरातकी रंग तीसरा पाहिलेसे रंग सातवां पत्तोंमें रंग लाल ।

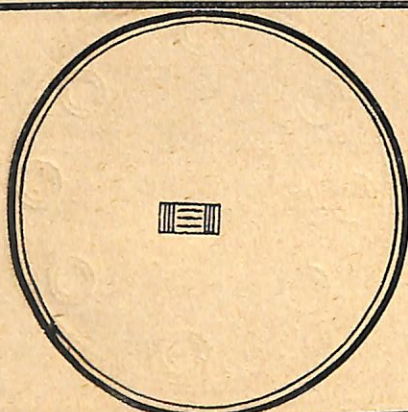
बरातका अमीर.



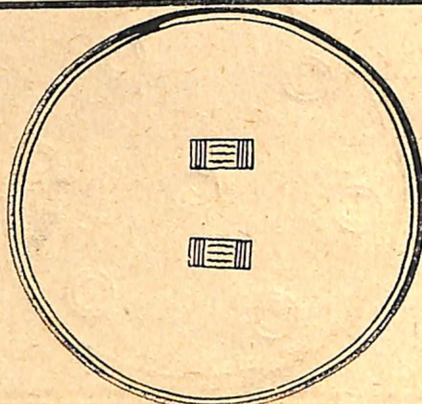
बरातका वज़ीर.



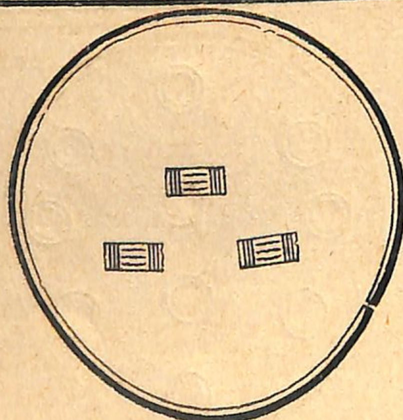
बरातका एक्का.



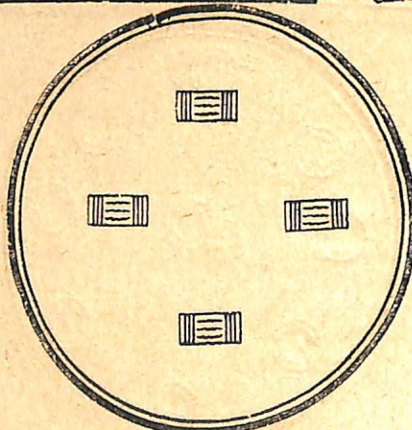
बरातका दूवा.



बरातका तीया.

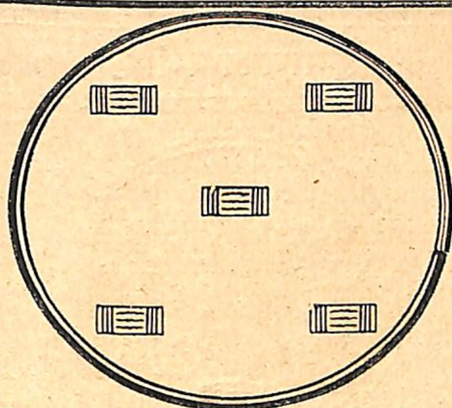


बरातका चौवा.

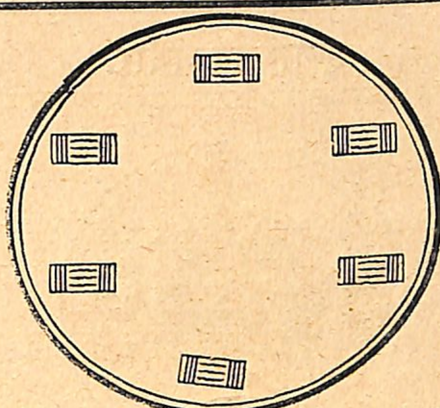


CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

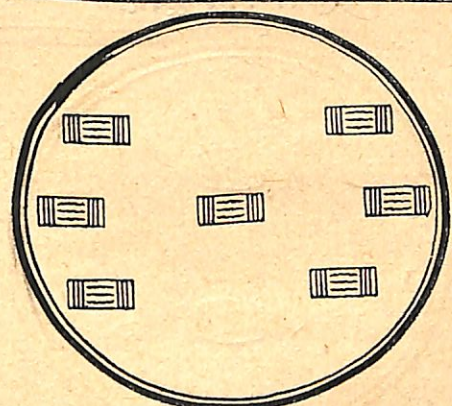
बरातका पंजा.



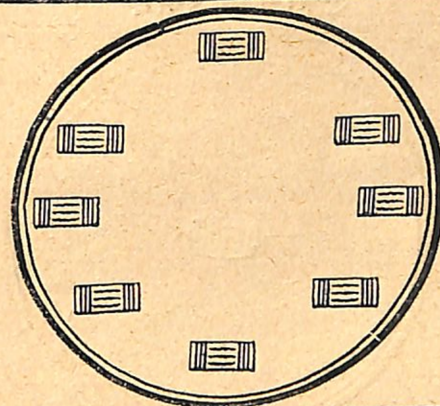
बरातका छक्का.



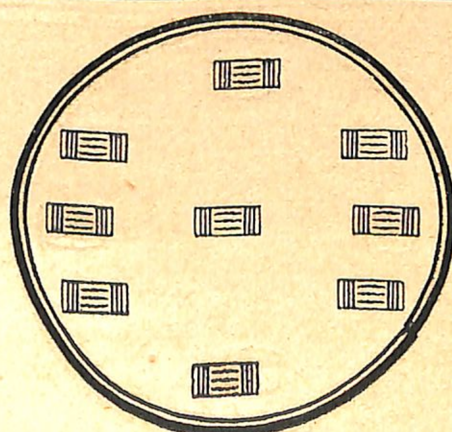
बरातका सत्ता.



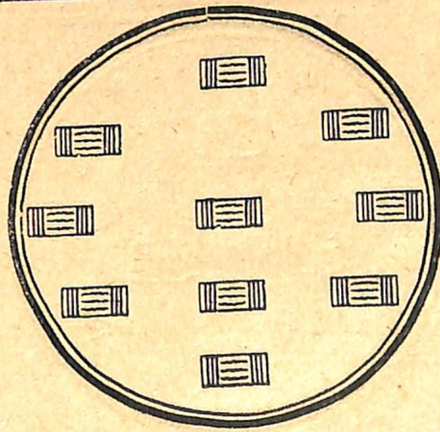
बरातका अट्ठा.



बरातका नहला.

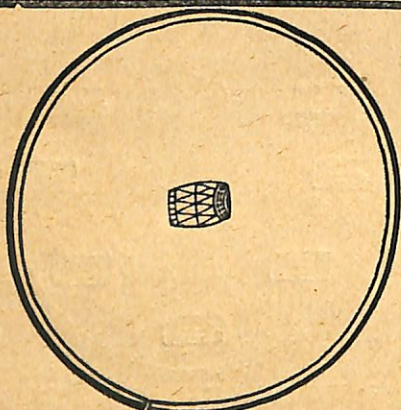
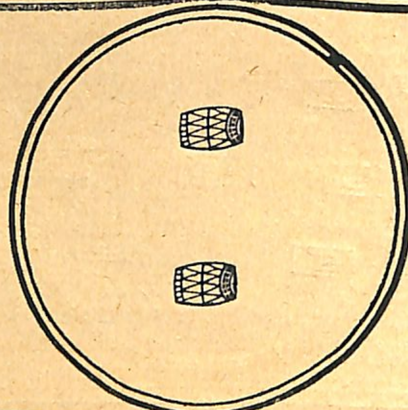
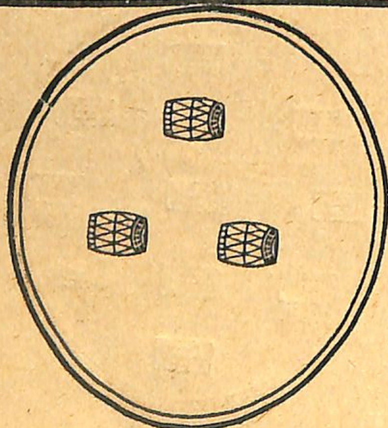
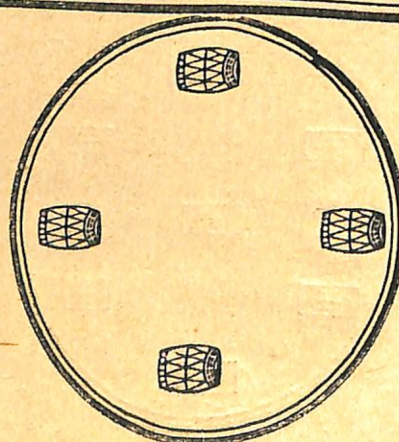


बरातका दहला.



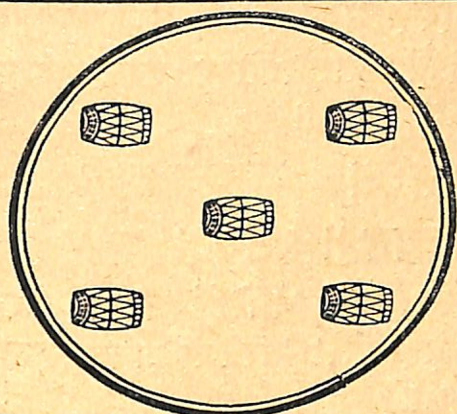
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चंगकांचन गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी कुमाजकी रंग चौथा पहिलेसे आठवां पत्तोंमें रंग पीला ।

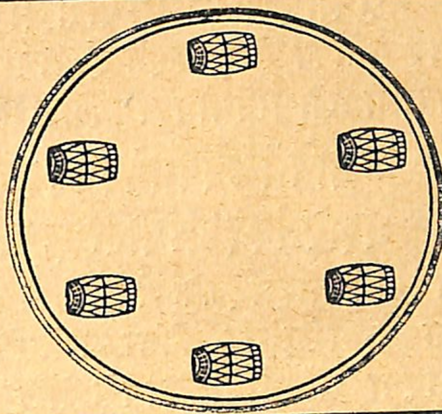
कुमाजका अमीर.	कुमाजका वजीर.
	
कुमाजका एक्का.	कुमाजका दूवा.
	
कुमाजका तीया.	कुमाजका चौवा .
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

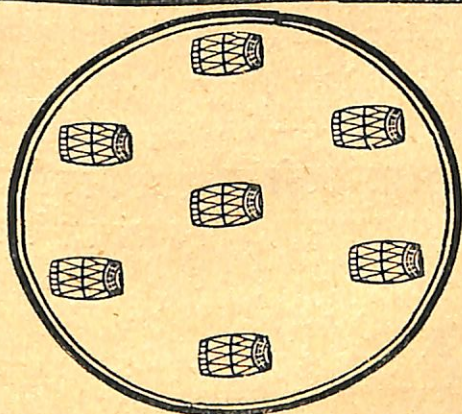
कुमाजका पंजा.



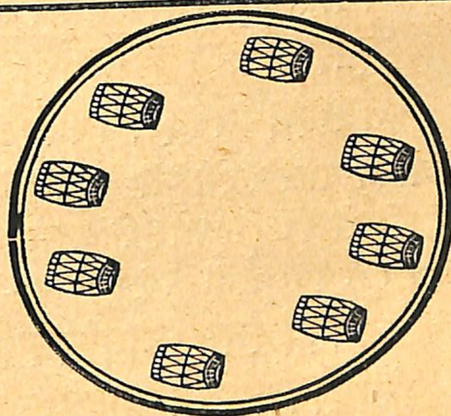
कुमाजका छक्का.



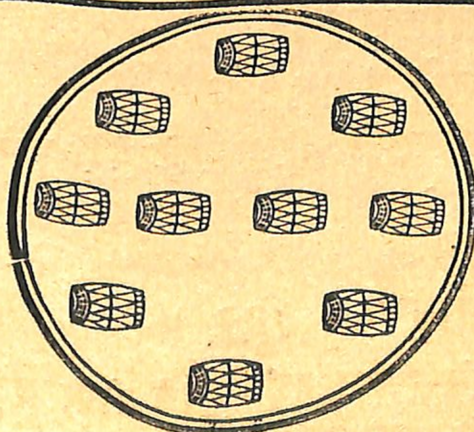
कुमाजका सत्ता.



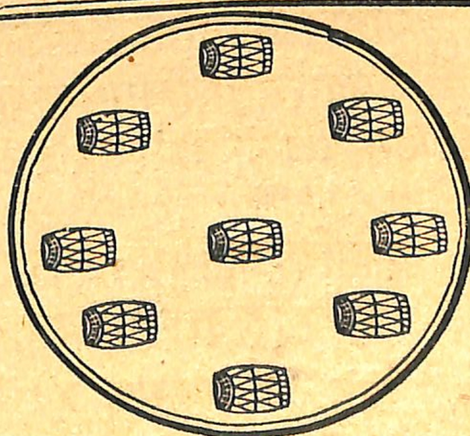
कुमाजका अट्ठा.



कुमाजका नहला.



कुमाजका दहला.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथातःसंप्रवक्ष्यामिपत्रक्रीडांसुशोभनाम् ॥
नृपादिखेलनेयोग्यांसभारंजनकारकाम् ॥ १८६ ॥

अब पत्तोंका खेल कहते हैं–अब राजादिकोंके खेलने योग्य सभामे रंजन करनेवाली शोभायमान पत्रक्रीडा कहता हूं ॥ १८६ ॥

उद्यानेमंडपेवापिस्वगृहेवाविशेषतः ॥
प्रशस्तंक्रीडनंप्रोक्तंभूम्यांनैवकदाचन ॥ १८७ ॥

अथवा विवाहादिकके मंडपमें अथवा अपने घरमें बंगलेमें क्रीडा करना प्रशस्त है, परंतु यह क्रीडा जमीनके ऊपर नहीं खेलै गलीचा अथवा शतरंजी अथवा चाँदनी बिछायके खेलै ॥ १८७ ॥

गंजीफाख्याचयाप्रोक्ताक्रीडासात्रिविधामता ॥
चंगाख्याप्रथमाज्ञेयाद्वितीयाहूणदेशजा ॥ १८८ ॥
तृतीयाविष्णुमूर्त्तीनांस्मरणाल्हादकारिका ॥
तत्राहंप्रथमंवक्ष्येचंगक्रीडनलक्षणम् ॥ १८९ ॥

गंजीफा नाम करके जो क्रीडा है वह तीन प्रकारकी है. एक चंगकांचन, दूसरी इंग्रेजी पत्तेकी, तीसरी दशावतारकी है उसमें पहिले चंग कांचन खेलका लक्षण कहता हूं ॥ १८८ ॥ १८९ ॥

चंगकांचनक्रीडायांपत्राणिषण्णवत्यपि ॥
अष्टौवर्णानिप्रत्येकंपत्राणिद्वादशैवहि ॥ १९० ॥

चंगकांचनके खेलमें पत्ते छान्नवें हैं और रंग आठ ८ हैं और एक एक रंगके पत्ते बारह बारह हैं ॥ १९० ॥

अष्टौवर्णानितन्मध्येखेलनंद्विविधंस्मृतम् ॥
तत्रवर्णचतुष्केनप्रथमाबाजिरुच्यते ॥ १९१ ॥

अब उस आठ रंगमें दो भेद हैं उसमें चार रंगसे पहिली दहेले बंदी बाजी कहते हैं ॥ १९१ ॥

एकादिदशपर्यंतंबलवदुत्तरोत्तरम् ॥
पत्राणिदशमाच्छ्रेष्टोप्रधानश्चततोनृपः ॥ १९२ ॥

एक्केसे दहेले तक बलवान् जानै जैसा एक्केसे दूवा बड़ा, दूवेसे तीया बड़ा, तीयेसे चौवा बड़ा, चौवेसे पंजा बड़ा, पंजेसे छक्का बड़ा, छक्केसे सत्ता बड़ा,

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सत्तेसे अट्ठा बड़ा, अट्ठेसे नहला बड़ा, नहलेसे दहला बड़ा, दहलेसे वजीर बड़ा, वजीरसे नृप कहते अमीर बड़ा ॥ १९२ ॥

अथवर्णचतुष्कानांनामानिप्रवदाम्यहम् ॥
प्रथमस्ताजइत्युक्तआद्योराजाततःपरम् ॥ १९३ ॥

अब दहले बंदीबाजीके चार रंग कहते हैं पहिले रंगको ताज कहते हैं. उसके बारह पत्तोंका निर्णय कहते हैं. पहिले पत्ते पर सिंहासन ऊपर बैठा हुआ राजा निकालै उसको अमीर कहते हैं. दूसरे पत्तेके ऊपर घोड़ेसवार प्रधान निकालै उसको वजीर कहते हैं ॥ १९३ ॥

प्रधानश्चाश्वसंरूढोराजासिंहासनस्थितः ॥
प्रत्येकपत्रेचिह्नानिह्येकादिदशमांतकम् ॥ १९४ ॥

बाकीके दश पत्तोंके ऊपर तीन फकडिका मुकुट सरीखा चिह्न इसप्रकार निकालै कि, पहिले पत्तेके ऊपर एक चिह्न दूसरेके ऊपर दो इसी क्रमसे दशवें पत्ते ऊपर दश चिह्न निकालै ॥ १९४ ॥

चिह्नंमुकुटवत्कार्यंशृंगत्रयसमन्वितम् ॥
हरिद्वर्णानिपत्राणिरक्तवर्णयुतानिच ॥ १९५ ॥

सब बारहपत्तोंमें रंग हरा थोड़ी सुरखी मिला हुआ रंग भरै बाकीके रंग जैसे शोभायमान दीखें वैसे भरै ॥ १९५ ॥

एवमग्रेपिविज्ञेयारीतिःसर्वदलेष्वपि ॥
द्वितीयःश्वेतइत्युक्तःपत्रेषुश्यामवर्णकः ॥ १९६ ॥

ऐसीही आगेभी बाकीकी सात बाजीमें रीति जानना केवल उन्होंमें नाम और चिह्न और रंग फिरता है और दूसरे खेलको सुपेद कहते हैं उसके बारह पत्तोंके भींतर काला रंग भरै ॥ १९६ ॥

श्वेतबिंद्वाख्यकंचिह्नंशेषंसर्वंपुरोदितम् ॥
तृतीयःखड्गइत्युक्तोलाक्षावर्णदलानिवै ॥ १९७ ॥

अमीर वजीर पहिले सरीखे करै और दश पत्तोंमें कबूतरकी आंखों सरीखे सुफेद चिह्न करै. तीसरे खेलको संशेर कहते हैं उसके बारह पत्तोंके भींतर लाख के सरीखा रंग भरै ॥ १९७ ॥

चिह्नानिखड्गरूपाणिशेषंसर्वंपुरोदितम् ॥
चतुर्थोदासइत्युक्तःप्रधानोवृषसंस्थितः ॥ १९८ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अमीर वजीर पहिले सरीखे करै और दश पत्तोंमें तलवारके सरीखे चिह्न करै बाकी रीति सब पहिले सरीखी. चौथे खेलको गुलाम कहते हैं उसमें वजीर बैलके ऊपर बैठा हुआ ॥ १९८ ॥

गजारूढोनृपस्तत्रदलवर्णश्चपीतकः ॥
चिह्नानिनरतुल्यानिशेषंसर्वंपुरोदितम् ॥ १९९ ॥

अमीर हाथीके ऊपर बैठाहुआ निकालै यह वाहनका जो फेरहै उसका कारण यह है कि यह दोनों राजा प्रधान कर्णाटक देशके थे इस देशमें बैलकी सवारी करते हैं और हाथी बहुत होते हैं. पत्तोंके बीच रंग पीला भरै. दश पत्तोंके ऊपर आदमी सरीखे चिह्न करै बाकी सब पहिले सरीखा क्रम जानना चाहिये१९९॥

प्रोक्तेयंदशमावंदीक्रीडाश्वेतनृपात्मिका ॥
एक्कावंदीद्वितीयावैतत्रवर्णक्रमंशृणु ॥ २०० ॥

ऐसी यह दहेलावंदी बाजी कही जिसमें सफेद आफताब है. अब दूसरी जो एक्कावंदी बाजी है उसके रंगका क्रम कहते हैं ॥ २०० ॥

दशमाद्येकपर्यंतंबलवदुत्तरोत्तरम् ॥
पत्राणिप्रथमाच्छ्रेष्ठोप्रधानश्चततोनृपः ॥ २०१ ॥

इन चार रंगोंमें दहलेसे नहला बड़ा, नहलसे अट्ठा बड़ा, अट्ठेसे सत्ता बड़ा, सत्तेसे छक्का बड़ा, छक्केसे पंजा, पंजेसे चौथा, चौथेसे तीया, तीयेसे दूवा, दूवेसे एक्का, एक्केसे वजीर, वजीरसे अमीर बड़ा जानना ॥ २०१ ॥

अथवर्णचतुष्केतुचंगाख्यःप्रथमःस्मृतः॥
प्रत्येकपत्रेचिह्नानिह्येकादिदशमांतकम् ॥ २०२ ॥

अब चार रंगमें पहिला खेल चंगका इसके बारह पत्तोंमें अमीर, वजीर एक, दो, तीन, इत्यादि दश तक पहिले सरीखे करै. वजीर ऊँटके ऊपर बैठा, हुआ निकालै. यह वजीर मरुदेशका था इस वास्ते ऊंट वाहन है ॥ २०२॥

चिह्नंमुकुटवत्कार्यंशृंगैकेणसमन्वितम् ॥
हरिद्वर्णानिपत्राणिशोभायुक्तानिकारयेत् ॥ २०३ ॥

चिह्न एक सींगवाले मुकुट सरीखा करै.पत्तोंमें रंग हरा भरै बीचमें सुनहरी छींटे बुनकी सरीखे देवे ॥ २०३ ॥

शेषंपूर्वोक्तवत्कार्यंरक्तवर्णोद्वितीयकः ॥
रक्तवर्णानिपत्राणिह्यर्कबिंबसमप्रभः ॥ २०४ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

बाकी सब पहिले सरीखा अब दूसरा खेल सुर्खका, उसके पत्तोंमें रंग लाल भरै अमीरका चित्र सूर्य्यके सरीखा निकालै ॥ २०४ ॥

स्वर्णबिंदुसमंचिह्नं सर्वपत्रेषुकारयेत् ॥
एकादिदशपर्यंतं शेषं सर्वं पुरोदितम् ॥ २०५ ॥

दश पत्तोंके ऊपर चिह्न सुन्नेके बिंदुसरीखे एक, दो, तीन इत्यादि क्रमसे करै बाकी सब पहिले सरीखा करै ॥ २०५ ॥

बराताख्यस्तृतीयस्तु खेलः सर्वमनोहरः ॥
रक्तवर्णानिपत्राणिचिह्नंवर्णसमन्वितम् ॥ २०६ ॥

अब तीसरा खेल बरातका उसके पत्तोंमें रंग लाल भरै और चिह्न जो निकालै सो ऐसा कि ॥ २०६ ॥

चतुरस्रंचदीर्घंचशेषंसर्वं पुरोदितम् ॥
कुमाजाख्यश्चतुर्थस्तुपत्रवर्णश्चपीतकः ॥ २०७ ॥

लंबा चतुरस्र निकालके उसमें फारसी हरफ लिखै एक्का दूवा ऐसा बाकी रीत सब पहिले सरीखी अब चौथा खेल कुमाजका—उसके पत्तोंमें रंग पीला भरै ॥ २०७ ॥

मृदंगाकारचिह्नानितत्र कुर्वीतमानवः ॥
एवंवर्णव्यवस्थोक्ता क्रीडाभेदंवदाम्यहम् ॥ २०८ ॥

दश पत्तोंमें चिह्न मृदंग सरीखा एक, दो, तीन इत्यादि क्रमसे करै बाकी रीति सब पहिले सरीखी. ऐसे आठों रंगका बयान करके अब खेलनेका बयान कहता हूं ॥ २०८ ॥

त्रिभिः क्रीडाप्रकर्त्तव्या नन्यूनैर्नाधिकैर्हिसा ॥
प्रत्येकंव्द्यग्निपत्राणि यत्रार्कःसोग्रगःस्मृतः ॥ २०९ ॥

यह खेल तीन आदमी खेलें जास्ती आदमीसे अथवा दो आदमीसे खेला नहीं जाता तीनोंके हिस्सेमें पत्ते बत्तीस बत्तीस आते हैं उसमें जिसके पास आफताब आया होवे वह पहिले खेलै ॥ २०९ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दिवसे रक्तवर्णीयनृपोर्कः परिकीर्त्तितः ॥
रात्रौश्वेतनृपोर्कः स्यान्नैकोगच्छतिक्रीडने ॥ २१० ॥

दिनको खेले तो सुर्ख खेलका जो अमीर उसको आफ्ताब कहते हैं रातको खेले तो सफेदका जो अमीर उसको आफ्ताब कहते हैं जब आफ्ताबका पत्ता डालै तो अकेला नहीं डालै उसके साथ दूसरा कोईभी हलका पत्ता डालै तो जीतके अपने समेत छः पत्ते एक तरफ रक्खै ॥ २१० ॥

किंचार्कक्रीडनपरेणनरेणचादौयद्यत्समाजदलमस्तितदेवसर्वम् ॥
संपाद्यपत्रमखिलंचततःपरंवैदेयंसरंस्वनिकटस्थितपूरुषाय २११

और आफ्ताब खेलने वाला अपने पास देहला बंदीकी अथवा एक्का बंदीकी दोनोंकी अथवा एककी कोईभी बाजी एक सरीखी लगी हुई होवे तो उसका अंतका हलका पत्ता एक रखके बाकीके सब पत्ते वसूल कर लेवे जो कभी भुलावेसे ऐसा नहीं किया तो उस लगी हुई बाजीके पत्ते सब रद्दी हो जावे इस वास्ते जितने रंगकी बाजी बरोबर लगी हुई होवे उतनी बाजी खेल लेवे पीछे खेल दूसरेको देवे उसको सर देना ऐसा कहते हैं ॥ २११ ॥

सरदानविधिंवक्ष्ये यंज्ञात्वाविजयीभवेत् ॥
स्वदलानांबलंकर्तुंत्यजेद्धीनबलंदलम् ॥ २१२ ॥

अब सर देनेकी रीति कहते हैं–जिस बाजीका वजीर अपने पास है उस बाजीमेंसे हलका पत्ता डालै तो सामनेवालेका अमीर उतरे तो फिर अपना वजीर हुकमी होवे ऐसे निर्बली पत्ते डालते जावे और पत्ते हुकूमी करके वसूल करते जावे ॥ २१२ ॥

दक्षिणे निर्बलःप्रोक्तोवामेसबलउच्यते ॥
निर्बलादागते खेले उत्तमाट्टीपउच्यते ॥ २१३ ॥

अब टीप देनेकी रीति कहते हैं–आफ्ताबका जो खेलनेवाला है उसके सीदे बाजूके आदमीको निर्बली कहते जेरदस्त कहै डावे तरफके आदमीको सबल कहते जबरदस्त कहै अब जेरदस्तके तरफसे सर आवें तो उसका जो पत्ता पडा होवे उससे सबल पत्तेसे टीप लेवे टीप कहते जिसकी सर आई होवे उसको एक दूसरा पत्ता ज्यादा ऐसे दो पत्ते डालै ॥ २१३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सबलादागते खेलेहुकमीटीपउच्यते ॥
सरंविनानिर्बलानिदलानि विनियोजयेत् ॥ २१४ ॥

और जो जबरदस्तके तरफसे सर आवे तो हुक्मी टीप लेवे जैसा दहले बंदी बाजीका दहला एक्का बंदी बाजीका एक्का होवे तो टीप लेवे, नहीं तो हुक्मी पत्ता डालके लेव सरविना खरची पत्ते डालते जावे ॥ २१४ ॥

क्रीडारंभेचपत्राणांसमूहत्रितयेत्रिभिः ॥
स्पर्शः कार्यः प्रयत्नेनयोधिकः सतुपत्रदः ॥ २१५ ॥

अब पत्ते बांटनेका निर्णय कहते हैं—पहिले खेलते समय छान्नवे पत्तों को खूब घोलके तीन थेकड़ी करके रक्खै और तीनों जने अपनी अपनी थेकडी को हाथ लगाके पत्ता उचलके देखैं जिसके हाथमें सबल पत्ता आवे उससे बांटना यह रीत पहिले खेलकी जानै पश्चात् यथाक्रमसे बांटते जावै ॥ २१५ ॥

एवंक्रीडामया प्रोक्ताचंगकांचनसंज्ञका ॥
रसिकानांविनोदायद्वितीयांप्रवदाम्यहम् ॥ २१६ ॥
इति क्रीडाकौशल्याध्यायेचंगकांचनक्रीडावर्णनम् ॥

ऐसा रसिकजनोंके आनंदके वास्ते चंग कांचनका खेल मैंने वर्णन किया, अब आगे दूसरा अंग्रेजी पत्तोंका खेल कहता हूं ॥ २१६ ॥

इति चंगकांचनका खेल संपूर्ण ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

लालबदाम.	एक्का	दूवा	तीया	चौवा	पंजा	छक्का	सत्ता	अठ्ठा	नव्वा	दहेला	वजीर	राणी	राजा
इस्पिक.	एक्का	दूवा	तीया	चौवा	पंजा	छक्का	सत्ता	अठ्ठा	नव्वा	दहेला	वजीर	राणी	राजा
चौकट.	एक्का	दूवा	तीया	चौवा	पंजा	छक्का	सत्ता	अठ्ठा	नव्वा	दहेला	वजीर	राणी	राजा
फुलावर.	एक्का	दूवा	तीया	चौवा	पंजा	छक्का	सत्ता	अठ्ठा	नव्वा	दहेला	वजीर	राणी	राजा

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ हूणदेशपत्रक्रीडामाह।

अतःपरंप्रवक्ष्यामिहूणदेशसमुद्भवाम् ॥
क्रीडांवर्णचतुष्काढ्यांद्विपंचाशद्दलान्विताम् ॥ २१७ ॥

अब अंग्रेजी पत्ते खेलनेकी रीति कहते हैं–इस खेलमें रंग चार और पत्ते बावन हैं ॥ २१७ ॥

प्रत्येकवर्णेपत्राणित्रयोदशमितानिच ॥
सर्वपत्राणिश्वेतानिचिन्हेवर्णप्रपूरयेत् ॥ २१८ ॥

एकेक रंगके पत्ते तेरह तेरह हैं पत्तोंका रंग सफेद रक्खे बीचके चिह्नोंमें रंग भरै ॥ २१८ ॥

अथवर्णचतुष्कानांनामानिप्रवदाम्यहम् ॥
रक्तकृष्णेबदामेद्वेद्यारक्तंचतुरस्रकम् ॥ २१९ ॥

अब चार रंगके नाम कहते हैं. लालबदाम एक, कालीबदाम दूसरी, तीसरी चौखटलाल ॥ २१९ ॥

पुष्पाग्र्यंकृष्णवर्णंचचिन्हवर्णावुदाहृतौ ॥
आदौराजाचतत्पत्नीप्रधानश्चैकसंज्ञकः ॥ २२० ॥

चौथा फुलावर काला, ऐसे चार रंगके नाम कहे हैं. अब पत्तोंमें चिह्नोंका वर्णन करते हैं. चारों रंगमें राजा और राणी और वजीर एकी सरीखे निकालै परंतु उसमें अपने अपने रंगका एक चिह्न मुखके सामने रक्खै अब बल निर्बलका लक्षण कहते हैं–राजासे राणी बलहीन, राणीसे वजीर, वजीरसे एक्का ॥ २२० ॥

दशमादिद्वितीयांतंप्रत्येकंनिर्बलंस्मृतम् ॥
क्रीडारंभेहस्तमध्येयद्वर्णोदृश्यतेतदा ॥ २२१ ॥

एक्केसे दहेला, दहेलेसे नौवा, नौवेसे अट्ठा, अट्ठेसे सत्ता, सत्तेसे छक्का छक्केसे पंजा, पंजेसे चौवा, चौव्वेसे तीया, तीयेसे दूवा निर्बल ऐसा जानना चाहिये अब खेलनेके पहिले बाजीका पत्ता उठाते समय पहिले जो रंग हाथमें आवे वह रंग ॥ २२१ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सएवबलवाञ्ज्ञेयःसर्वपत्रोपरिस्थितः ॥
त्रिभिःक्रीडाप्रकर्तव्याचतुर्भिर्वाविशेषतः ॥ २२२ ॥

उस खेलमें सब पत्तोंके ऊपर बलवान् जानै उसको हुकमी रंग कहते हैं. दूसरी बाजीके पत्ते बरोबर नलगे होवें और हुकमी पत्ता बहुत होवें तो वह सब बाजी हुकमी पत्तोंसे जीत लेने यह क्रीडा तीन आदमीसे खेली जाती है अथवा चार आदमीसे ॥ २२२ ॥

नद्वाभ्यांनाधिकैस्तत्ररसोत्पत्तिर्नजायते ॥
चतुरस्राणिपत्राणिकिंचिद्दीर्घाणिकारयेत् ॥ २२३ ॥

दो आदमी अथवा ज्यादा आदमीसे नहीं खेली जाती और जो कभी खेलेंतो क्रीडाका आनंद नहीं होनेका. सब पत्तोंका आकार चौड़ा कुछ थोडा लंबा करै ॥ २२३ ॥

खेलनंचंगवत्कार्यमितिसर्वंप्रकीर्त्तितम् ॥
रसिकानांविनोदायतृतीयांप्रवदाम्यहम् ॥ २२४ ॥
इतिक्रीडाकौशल्याध्यायेहूणदेशीयपत्रक्रीडावर्णनम् ॥

अब इसके खेलनेकी जो रीत है सो चंग कांचन सरीखी जाननी. परंतु यहां इतना विशेष है कि इस खेलकी दहलेबंदी बाजी है लेकिन एक्का सबसे बडा है सो जानना. ऐसा यह खेलका निर्णय रसिक लोगोंके वास्ते वर्णन किया. अब आगे तीसरी गंजीफाकी क्रीडा कहते हैं ॥ २२४ ॥

इतिअंग्रेजी पत्तोंका खेल संपूर्ण भया ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ दशावतारी खेलमाह।



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी मच्छकी रंग पहिला पत्तोंमें रंग लाल ।

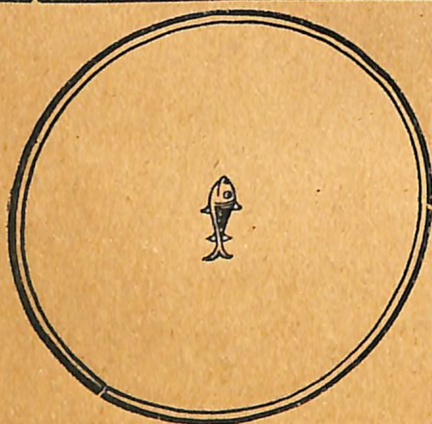
मच्छका मीर.



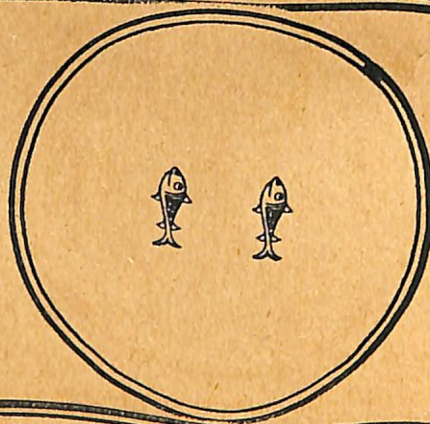
मच्छका वजीर.



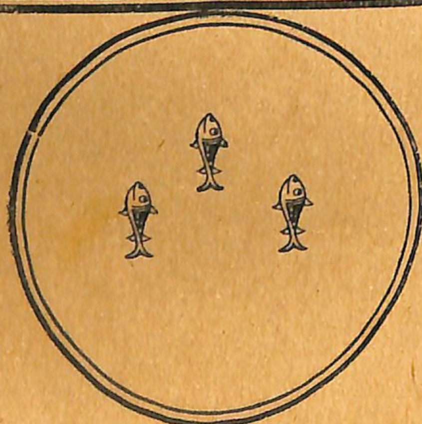
मच्छका एक्का.



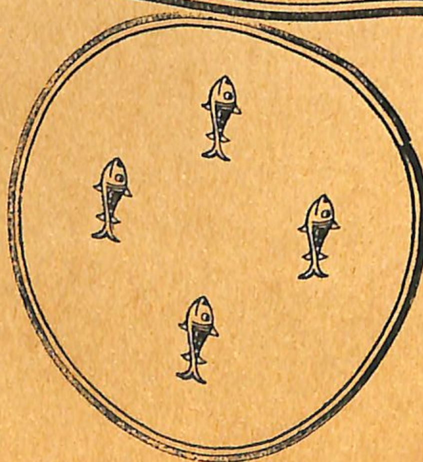
मच्छका दूवा.



मच्छका तीया.

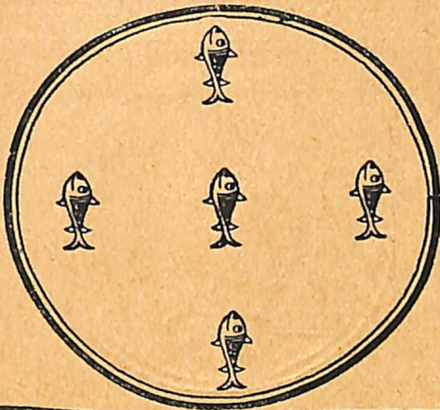


मच्छका चौवा.

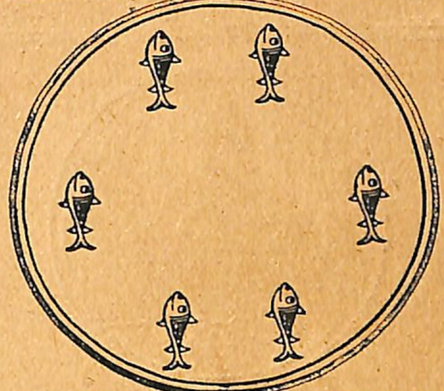


CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

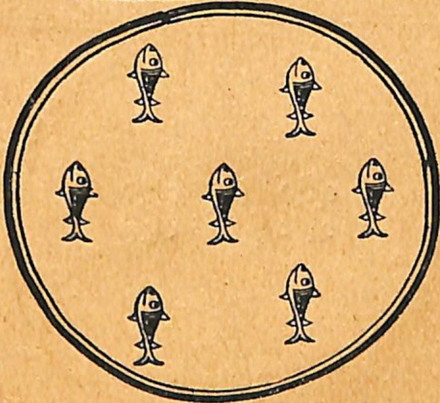
मच्छका पंजा.



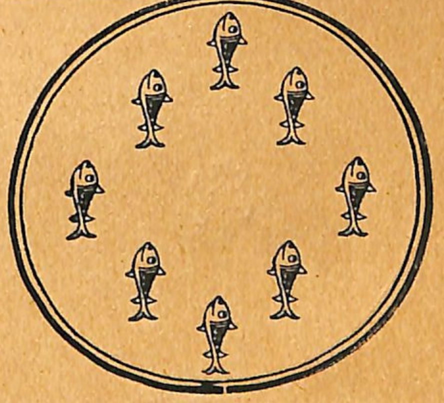
मच्छका छक्का.



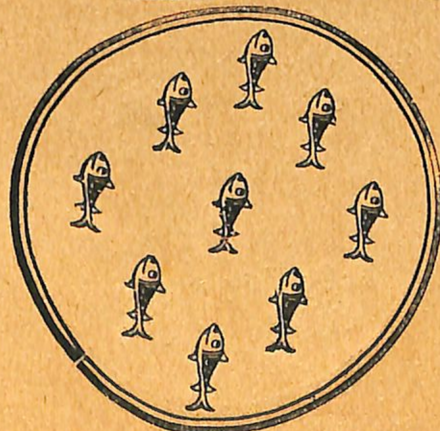
मच्छका सत्ता.



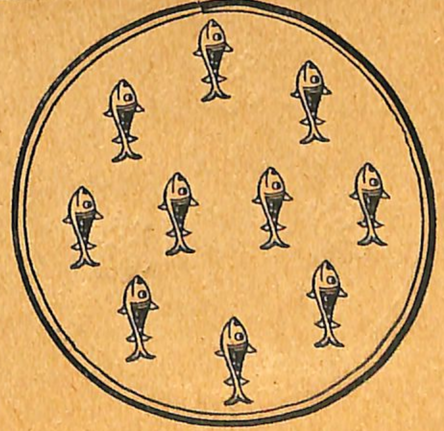
मच्छका अट्ठा.



मच्छका नेहेला.

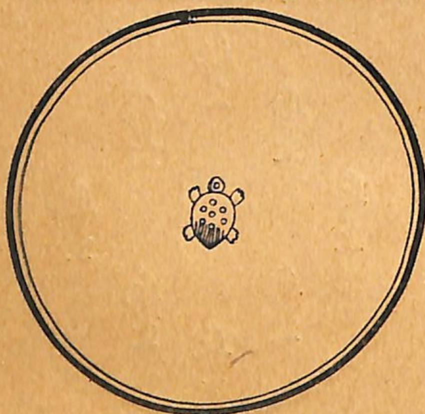
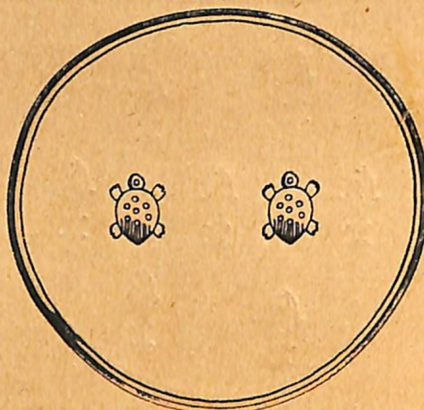
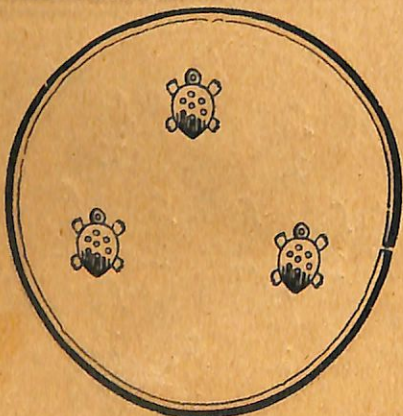
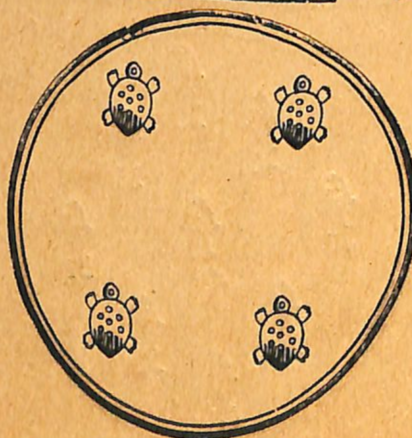


मच्छका देहेला.



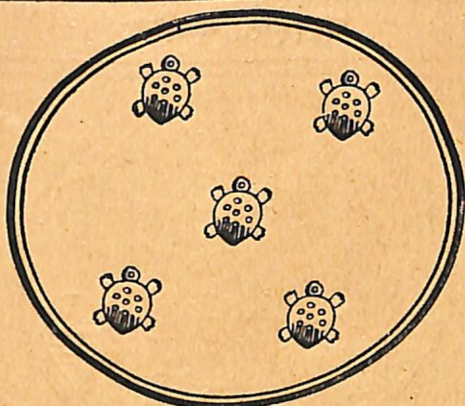
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी कूर्म्मकी रंग दूसरापत्तोंमें रंग लाल.

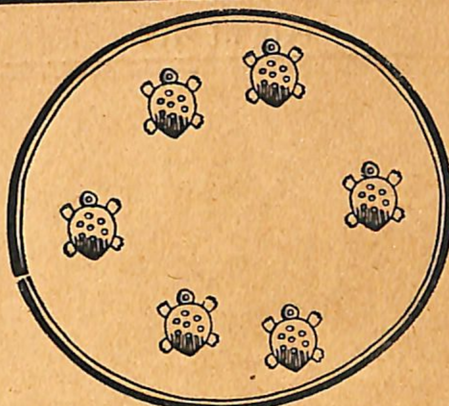
कच्छका मीर.	कच्छका वजीर.
	
कच्छका एक्का.	कच्छका दूवा.
	
कच्छका तीया.	कच्छका चौवा.
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

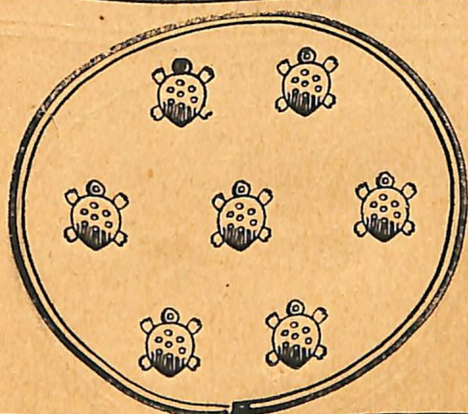
कच्छका पंजा.



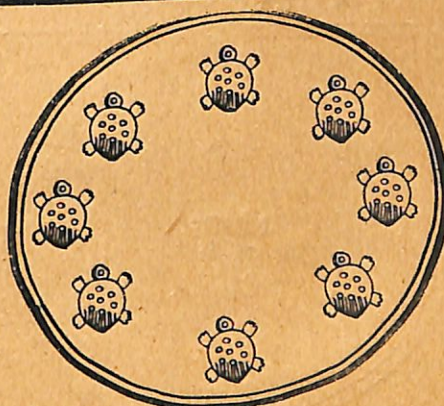
कच्छका छक्का.



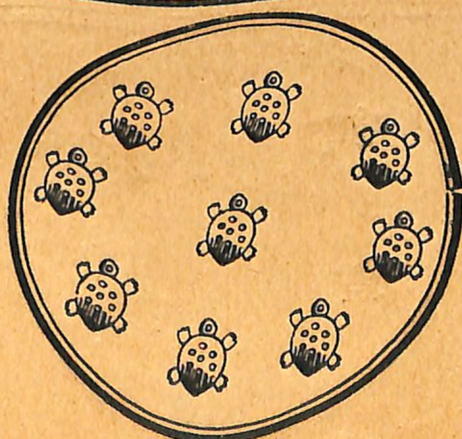
कच्छका सत्ता.



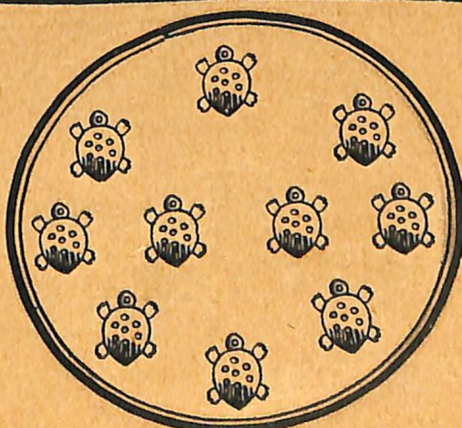
कच्छका अट्ठा.



कच्छका नेहेला.

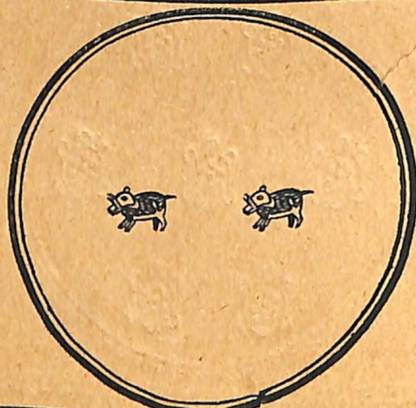
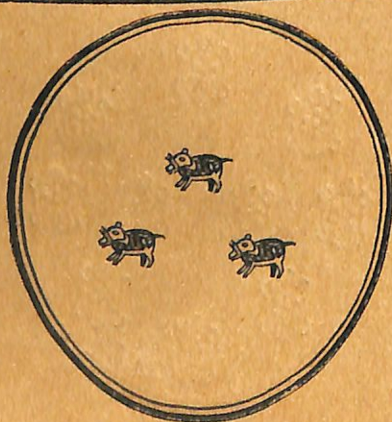
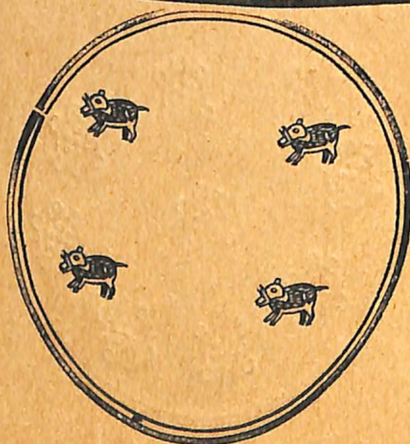


कच्छका देहेला.



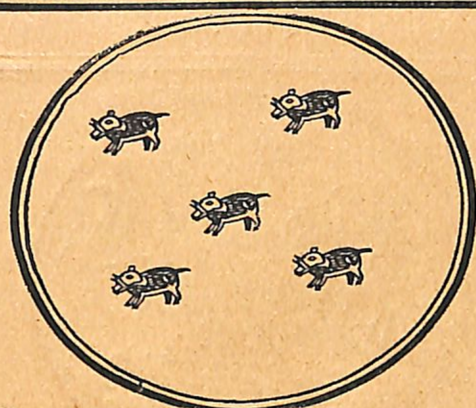
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी वराहकी रंग तीसरापत्तोंमेंरंगरुपेरी.

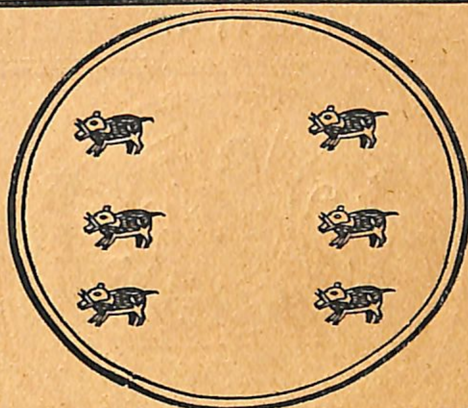
वराहका मीर.	वराहका वजीर.
	
वराहका एक्का.	वराहका दूवा.
	
वराहका तीया.	वराहका चौवा.
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

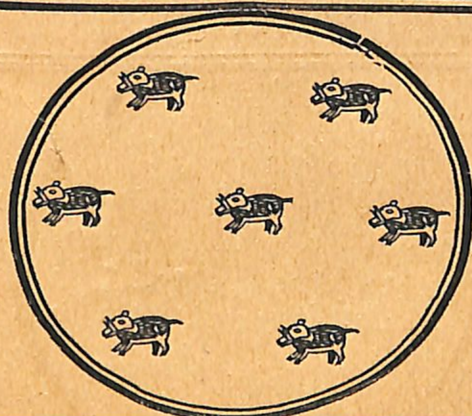
वराहका पंजा.



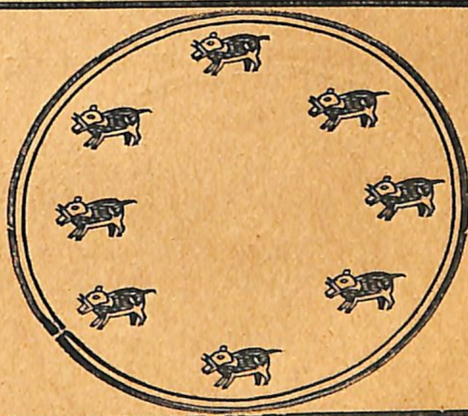
वराहका छक्का.



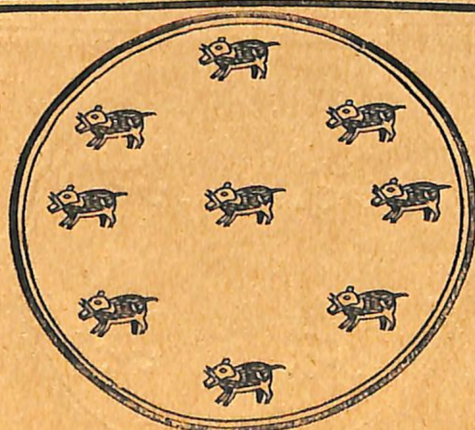
वराहका सत्ता.



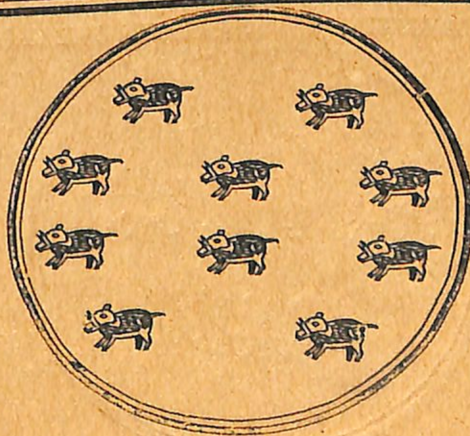
वराहका अट्ठा.



वराहका नेहेला.

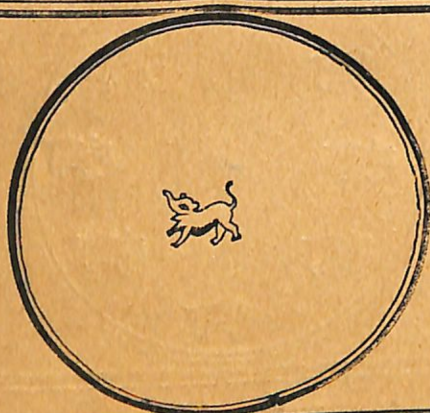
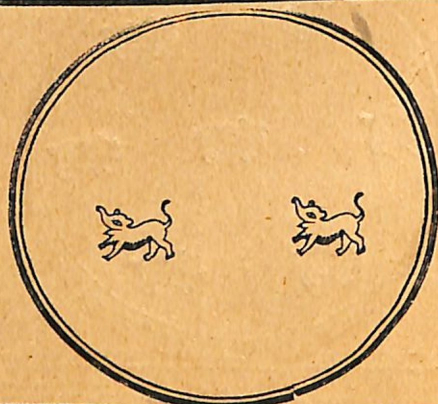
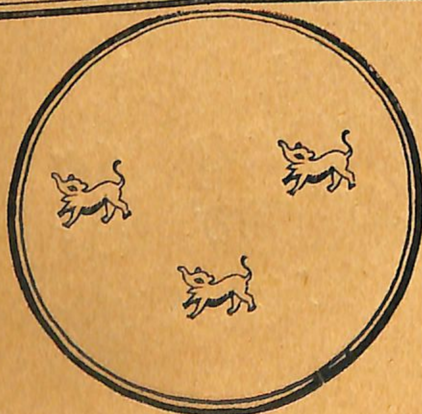
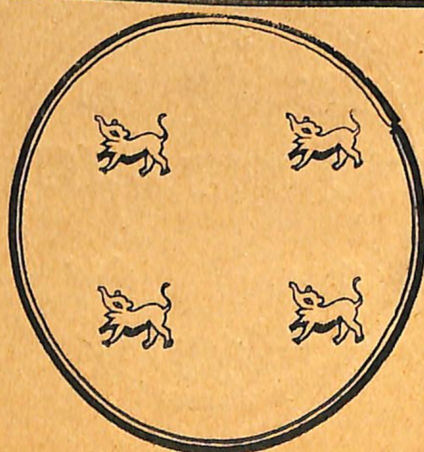


वराहका देहेला.



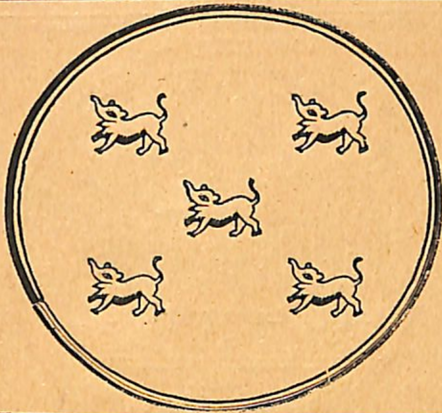
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी एक्कावंदी बाजी नरसिंहकी रंग चौथापत्तोंमें रंग लाखी.

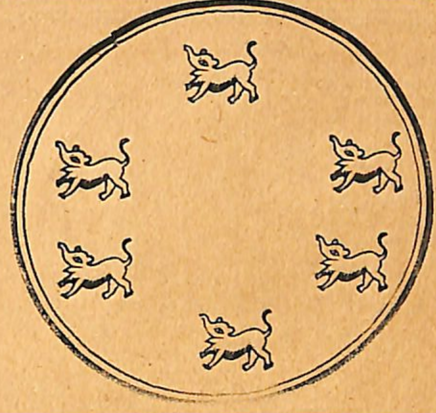
नरसिंहका मीर.	नरसिंहका वजीर.
	
नरसिंहका एक्का.	नरसिंहका दूवा.
	
नरसिंहका तीया.	नरसिंहका चौवा.
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

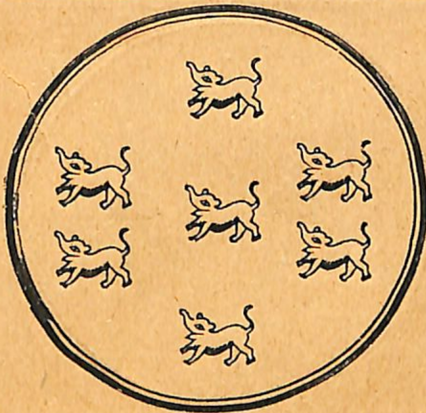
नरसिंहका पंजा.



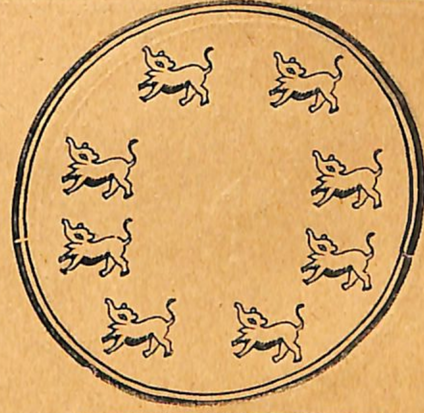
नरसिंहका छक्का.



नरसिंहका सत्ता.



नरसिंहका अट्ठा.



नरसिंहका नेहेला.



नरसिंहका देहेला.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी एक्काबंदी बाजी वामनकी रंगपांचवा पत्तोंमेंरंग लाखी.

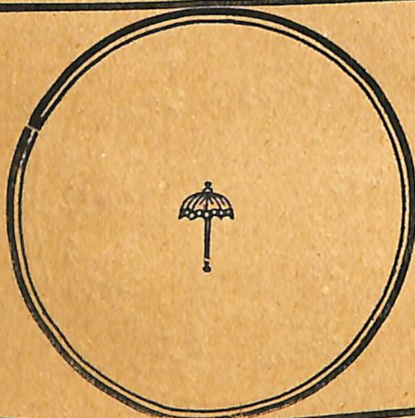
वामनका मीर.



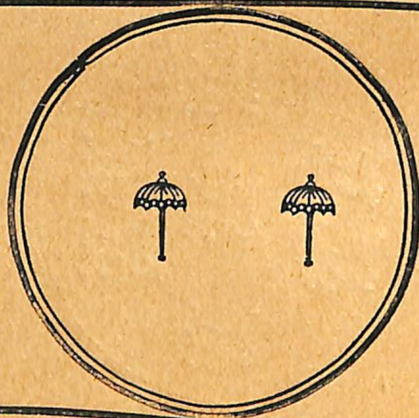
वामनका वजीर.



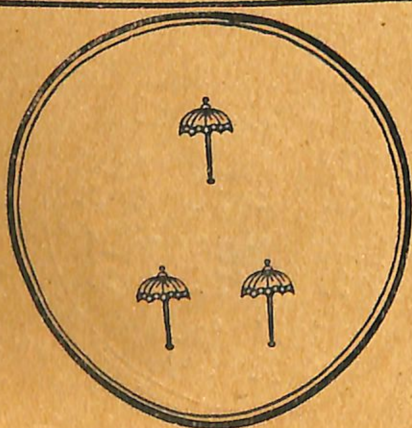
वामनका एक्का.



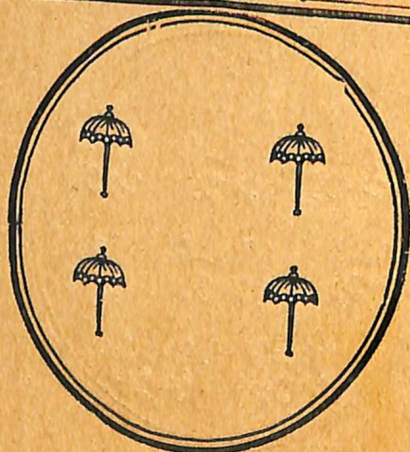
वामनका दूवा.



वामनका तीया.

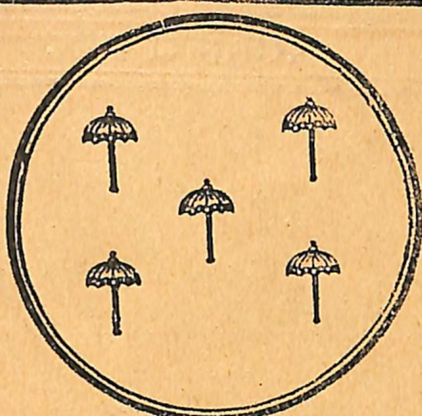


वामनका चौवा.

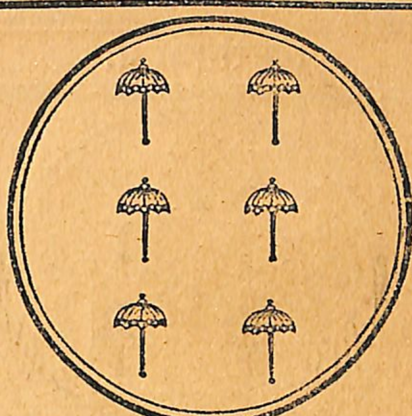


CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

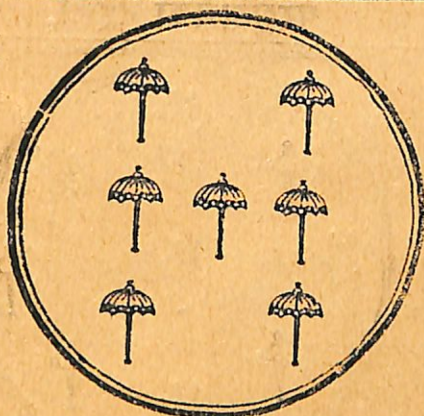
वामनका पंजा.



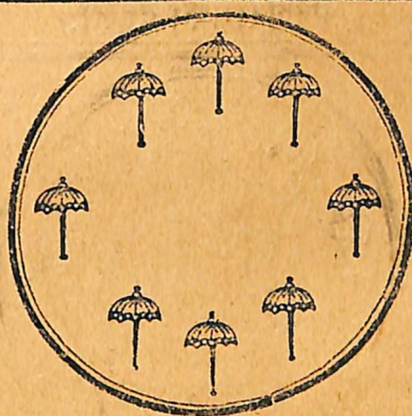
वामनका छक्का.



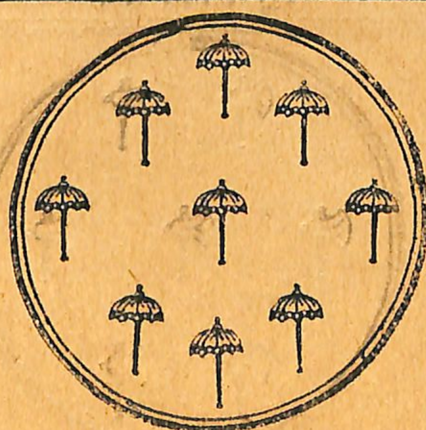
वामनका सत्ता.



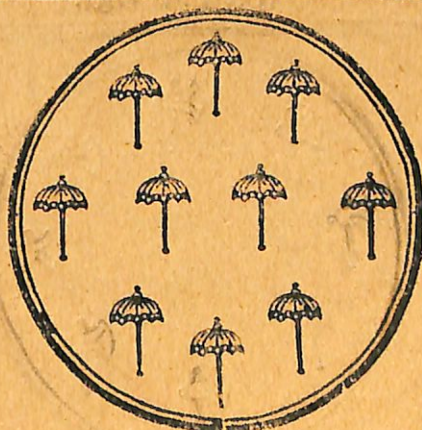
वामनका अट्ठा.



वामनका नेहला.



वामनका देहेला.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफा देहेलाबंदी बाजी परशुरामकी रंगछट्टापत्तोंमें रंग लाल।

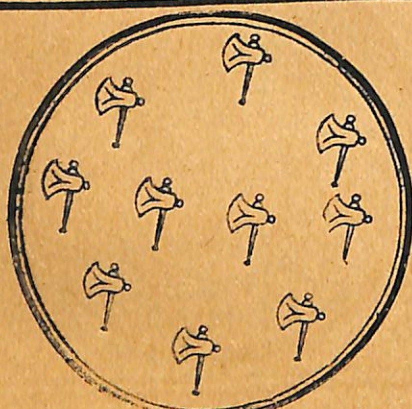
परशुरामका मीर.



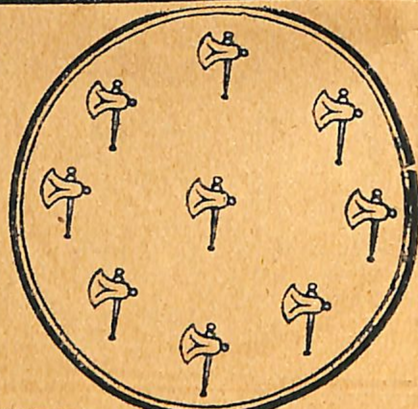
परशुरामका वजीर.



परशुरामका देहेला.



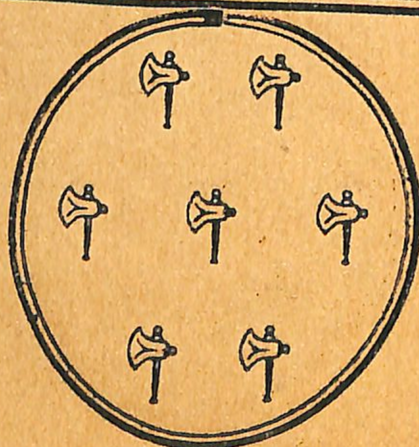
परशुरामका नेहेला.



परशुरामका अट्ठा.

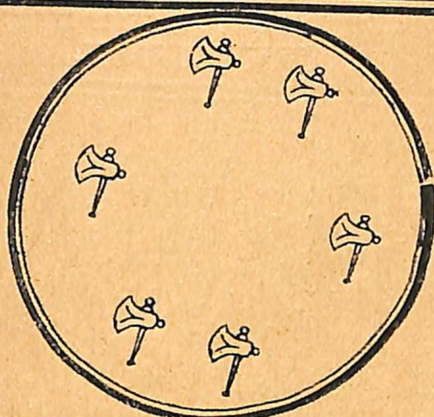


परशुरामका सत्त .

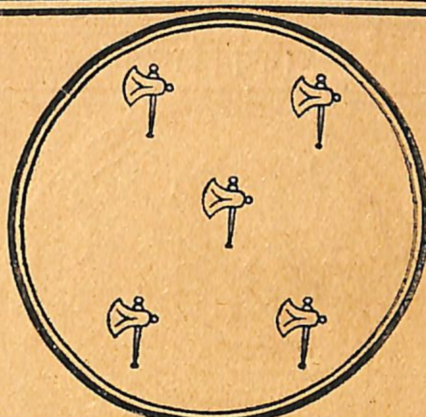


CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

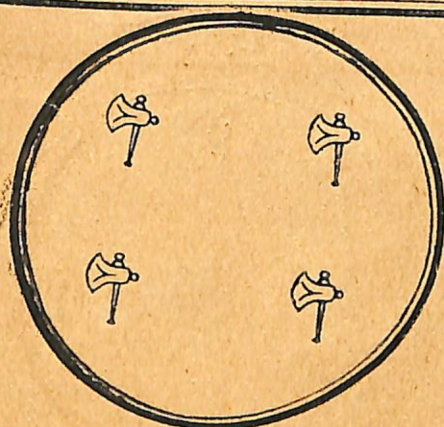
परशुरामका छक्का.



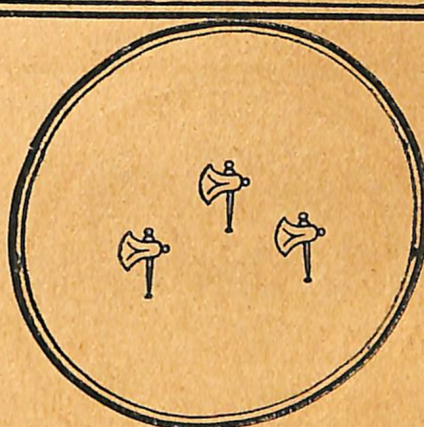
पशुररामका पंजा.



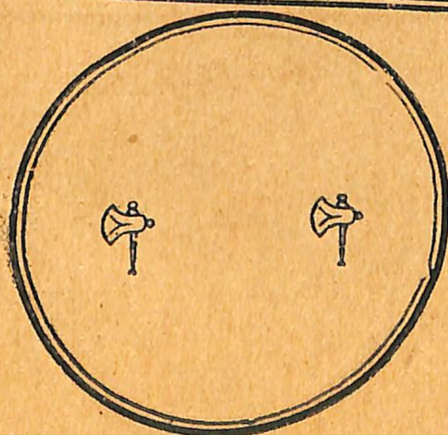
परशुरामका चौवा.



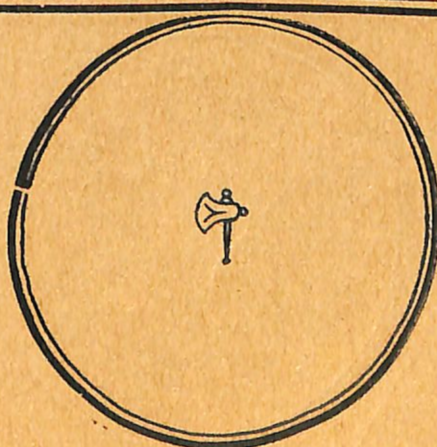
परशुरामका तीया.



परशुरामका दूवा.



परशुरामका एक्का.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी देहेलेबंदी बाजीरामचंद्रकी रंग सातवापत्तोंमें रंगसिंगरफीलाल ।

रामचंद्रका मीर.



रामचंद्रका वजीर.



रामचंद्रका देहेला



रामचंद्रका नेहेला



रामचंद्रका अट्ठा.

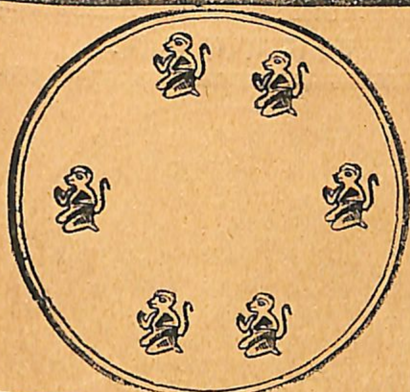


रामचंद्रका सत्ता.

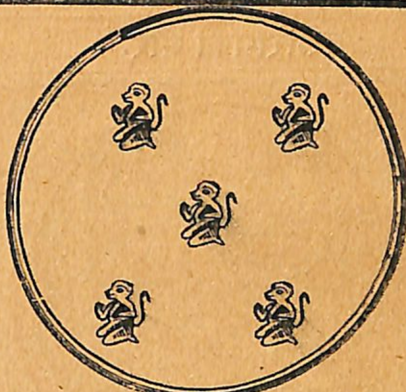


CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

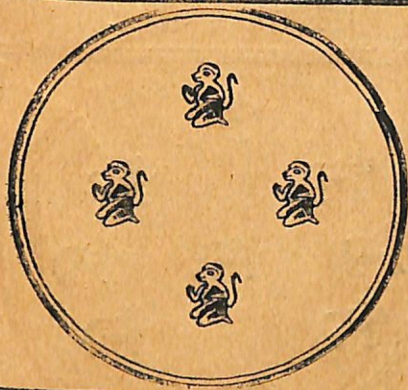
रामचंद्रका छक्का



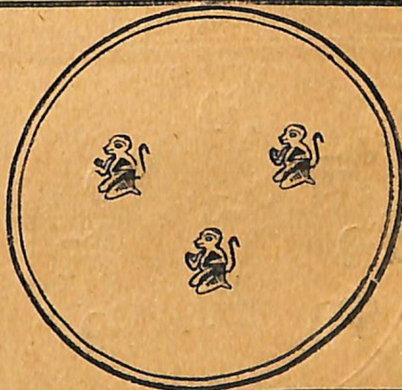
रामचंद्रका पंजा.



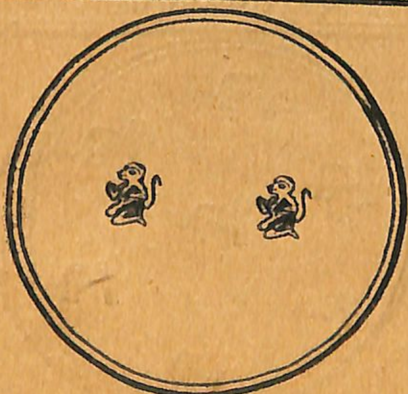
रामचंद्रका चौवा.



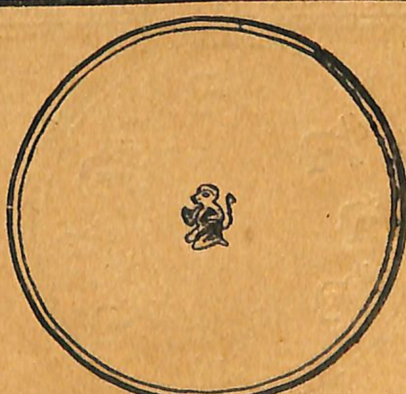
रामचंद्रका तीया.



रामचंद्रका दूवा.



रामचंद्रका एक्का



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी देहेलेबंदी बाजी बलीरामकी रंग आठवा पत्तोंमें रंग हरालाखी ।

बलीरामका मीर.



बलीरामका वजीर.



बलीरामका देहेला



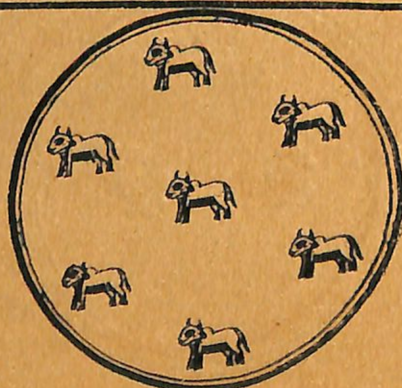
बलीरामका नेहेला.



बलीरामका अट्ठा.

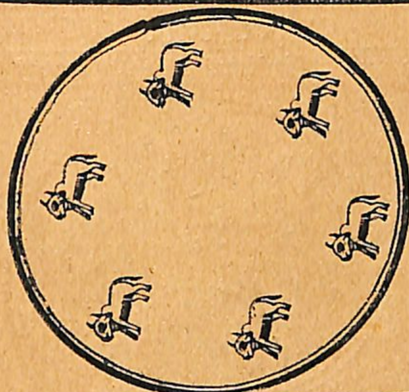


बलीरामका सत्ता.

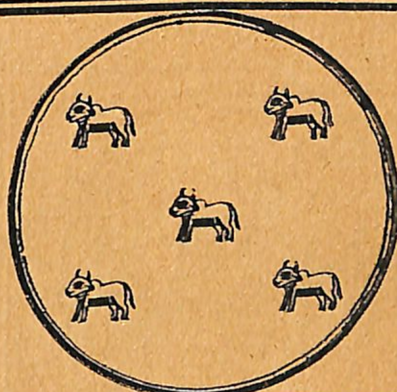


CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

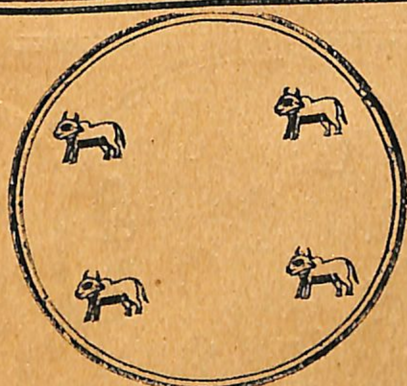
बलीरामका छक्का.



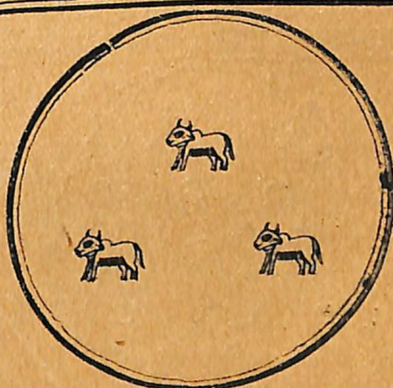
बलीरामका पंजा.



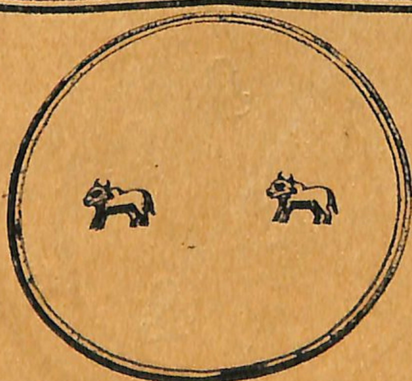
बलीरामका चौवा.



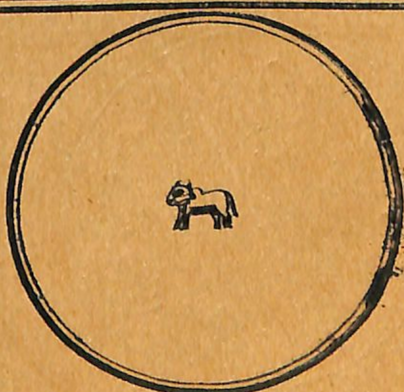
बलीरामका तीया.



बलीरामका दूवा.



बलीरामका एका.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी देहेलेबंदीबाजी बौद्धकी रंग नवमा पत्तोंमें रंग लाखी

बौद्धका मीर.



बौद्धका वजीर



बौद्धका देहेला



बौद्धका नेहेला.



बौद्धका अठ्ठा.

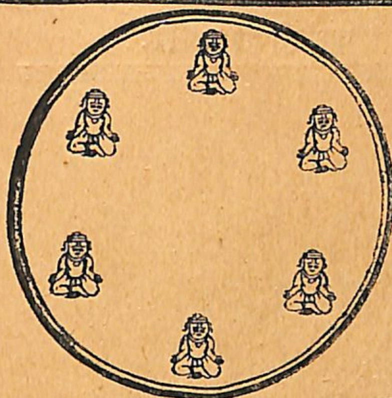


बौद्धका सत्ता.

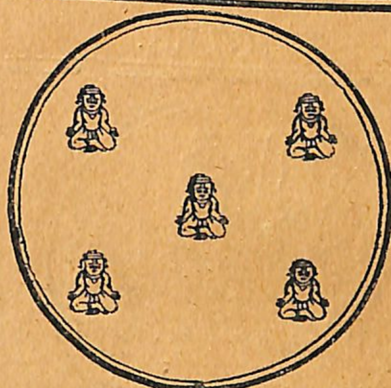


CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

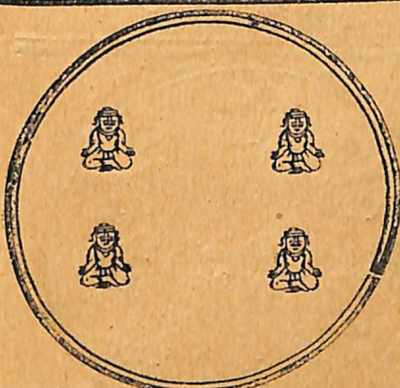
बौद्धका छक्का.



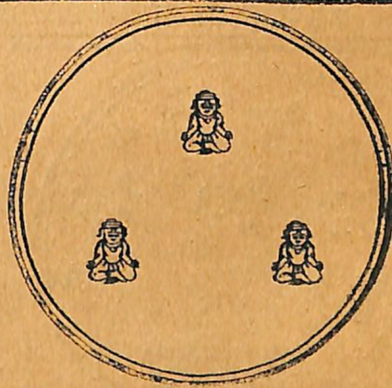
बौद्धका पंजा.



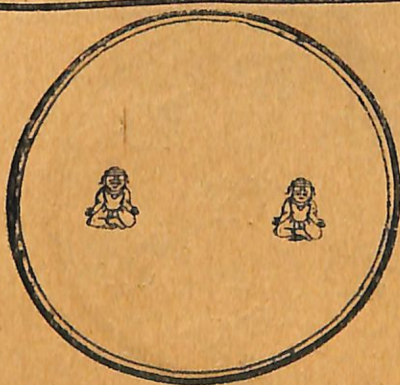
बौद्धका चौवा.



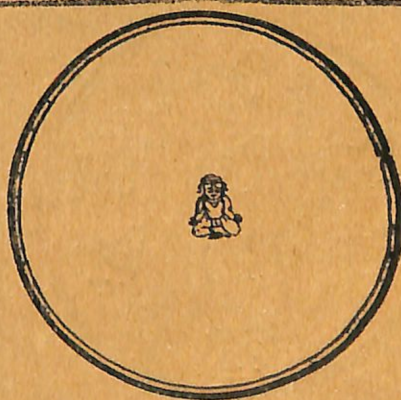
बौद्धका तीया.



बौद्धका दूवा.



बौद्धका एक्का



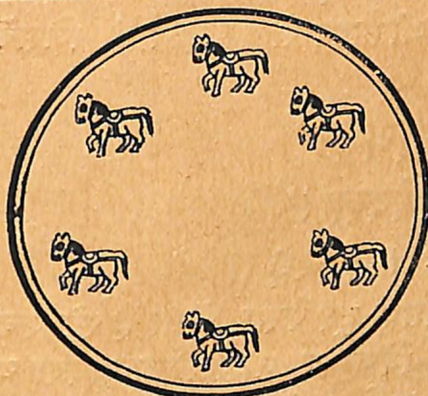
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशावतारी गंजीफाकी देहेलेबंदी बाजीकलंकीकी रंग दसवां पत्तोंमें रंग काला।

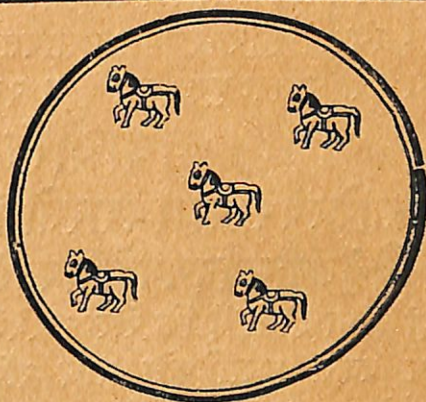
कलंकीका मीर.	कलंकीका वजीर.
	
कलंकीका देहेला.	कलंकीका नेहेला.
	
कलंकीका अट्ठा.	कलंकीका सत्ता.
	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

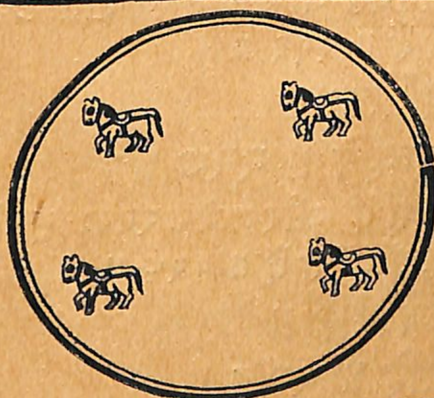
कलंकीका छक्का.



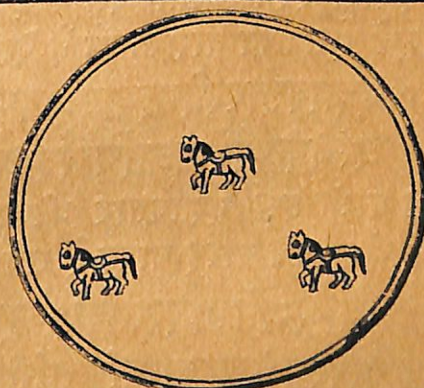
कलंकीका पंजा.



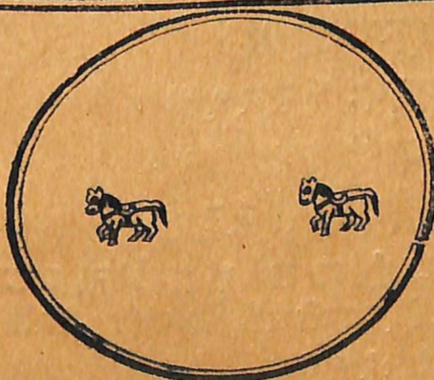
कलंकीका चौवा.



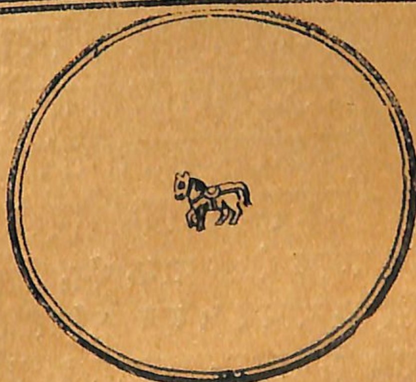
कलंकीका तीया.



कलंकीका दूवा.



कलंकीका एक्का.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अतःपरंप्रवक्ष्यामिविष्णुस्मरणखेलनम् ॥
यस्यखेलनमात्रेणनाशमायातिपातकम् ॥ २२५ ॥

अब आगे विष्णु स्मरणरूप दशावतारी गंजीफाका खेल कहता हूं. जिसके खेलने मात्रसे पातक दूर होता है ॥ २२५ ॥

तथाचोक्तंश्रीभागवते

सांकेत्यंपारिहास्यंवास्तोभंहेलनमेववा ॥
वैकुंठनामगृहणमशेषाघहरंविदुः ॥ २२६ ॥

यहां शंका होती है कि खेल करनेसे पातक दूर कैसा होता है सो वचन सांकेत्य कहते पुत्रादिकके नाम संकेतसे विष्णुका नाम लेना अथवा थट्ठे विनोदमें अथवा स्तोभ कहते गीत आलाप पूर्ण करनेमें अथवा हेलन कहते तुम्हारे विष्णुने वैसा किया, हमारे शिवने ऐसा किया, तुम्हारा मत्स्य हार गया, हमारा वराह जीता, ऐसे कोई भी निमित्तसे जो भगवत् का नाम लेवे सो संपूर्ण पातकका नाशकारक है ऐसा कहते हैं ॥ २२६ ॥

दशावतारक्रीडायादशवर्णाःप्रकीर्तिताः ॥
प्रत्येकंचार्कपत्राणिविंशोत्तरशतान्यपि ॥ २२७ ॥

इस वास्ते इस दशावतार क्रीडामें रंग दश हैं और प्रत्येक रंगके सूर्यके समान गोल पत्ते बारह बारह हैं सब पत्ते एकसौ वीस हैं ॥ २२७ ॥

त्रिभिःक्रीडाप्रकर्तव्यान्यूनाधिकनरैर्नहि ॥
परस्परंस्वपत्राणांवृत्तांतंकथयेन्नहि ॥ २२८ ॥

यह क्रीडा तीन आदमियोंसे खेली जाती है कम जास्तीसे नहीं. अपने अपने पत्तोंका वृत्तान्त दूसरेके सामने कहै नहीं ॥ २२८ ॥

प्रत्येकवर्णनामानिचिन्हानिचवदाम्यहम् ॥
मत्स्यकूर्मौवराहश्चनारसिंहोथवामनः ॥ २२९ ॥
एकावंदिस्मृताबाजीपंचानांप्रथमाहिसा ॥
जामदग्न्योरामचंद्रोबलरामस्तृतीयकः ॥ २३० ॥

अब प्रत्येक रंगके नाम, रंग, चिह्न कहता हूं मच्छ १, कूर्म २, वराह ३ नारसिंह ४, वामन ५ इन पांचोंकी एकावंदीबाजी पहिली कही जाती है ॥ परशुराम १, राम २, बलराम ३, ॥ २२९ । २३० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

बौद्धःकल्कीतिपंचानांदिग्वंदीसाद्वितीयका ॥
दशवर्णीयपत्रेषुराजासिंहासनस्थितः ॥ २३१ ॥

बौद्ध ४, कलंकी ५, इन पांचोंकी देहलाबंदी दूसरी बाजी कही जाती है अब दशरंगके जो राजा हैं उनको सिंहासनपै बिठावै ॥ २३१ ॥

प्रधानश्चाश्वसंरूढःलेखनीयःस्वचिह्नयुक् ॥
एकादिदशपर्यंतंक्रमवृध्योत्तरोत्तरं ॥ २३२ ॥

और प्रधानोंको घोडोंके ऊपर बिठावै अपने अपने अवतारका चिह्न करै और एक्केसे दहले तक क्रमवृद्धिसे ॥ २३२ ॥

स्वस्वचिन्हानिकुर्वीतशतपत्रेषुबुद्धिमान् ॥
मत्स्येमत्स्यंप्रकुर्वीतकूर्मेकच्छपमादिशेत् ॥ २३३ ॥

अपने अपने चिह्न सौ पत्रके ऊपर करै जैसे मच्छके खेलमें मच्छ करै कूर्मके खलेंमें कछुवा निकालै ॥ २३३ ॥

वाराहोसूकरंविद्यान्नारसिंहेतुसिंहकम् ॥
छत्राकारंवामनेतुपरशुंजामदग्न्यके ॥ २३४ ॥

वराहके खेलमें सूकर निकालै नारसिंहके खेलमें सिंह निकालै वामनके खेलमें छत्र अथवा कमंडलु निकालै परशुरामके खेलमेंफरस शस्त्र निकालै १३४

रामेवानरचिन्हानिगोचिन्हंबलरामके ॥
बौद्धेबौद्धस्वरूपाणिकल्किखेलेऽश्वचिन्हकम् ॥ २३५ ॥

रामके खेलमें वानर अथवा धनुर्बाण निकालै बलरामके खेलमें गायोंका स्वरूप अथवा गेंद निकालै बौद्धके खेलमें बुद्धावतारस्वरूप अथवा शंख निकालै कल्किके खेलमें घोडेका स्वरूप अथवा तरवार निकालै ॥ २३५ ॥

दिवसेखेलनेराजारामचंद्रःप्रकीर्तितः ॥
रात्रिक्रीडनवेलायांबलरामोनृपःस्मृतः ॥ २३६ ॥

दिनको खेले तो राजा रामचंद्र जानना रात्रिके खेलमें राजा बलराम जानना ॥ २३६ ॥

तमेवकृष्णमित्यन्येप्रवदंतिमनीषिणः ॥
चंगकांचनवत्सर्वखेलनंचात्रनिर्दिशेत् ॥ २३७ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

कितनेक लोग बलरामके ठिकाने पर कृष्ण कहते हैं. अब इस दशावतारका खेल कैसे खेले कहे, तो जैसा पहिले चंगकांचनके खेलमें मार्ग बताया है उसी रीतिसे यहांभी मार्ग जानना चाहिये ॥ २३७ ॥

तस्माद्विशेषंयत्किंचित्तत्स्पष्टंक्रीयतेमया ॥
नृपखेलनकस्तस्यदक्षिणेसबलःस्मृतः ॥ २३८ ॥

चंगकांचनके खेलसे यहां इतना जास्ती है कि दुकलु खेलमें डावी तरफ सबल और सीधि बाजू निर्बल ऐसा मतांतर है बाकी राजाके खेलमें सीधी भी बाजू सबल कहा है ॥ २३८ ॥

वामभागेनिर्बलश्चटीपमार्गस्तुपूर्ववत् ॥
अत्रापिनियमास्संतिखेलनेदशसंख्यया ॥ २३९ ॥

डावींतरफ निर्बल कहा है और टीप कैसी लेना उसका भेद चंगकांचन खेलमें कहा है उसीरीतिसे जानना चाहिये और इस खेलमें दश तरहके नियम हैं सो आगे कलमबंदीसे कहते हैं ॥ २३९ ॥

नियमःप्रथमोमीरश्चुतारिद्वितियःस्मृतः ॥
याचनंद्विविधंप्रोक्तंदुकलुसंज्ञकस्ततः ॥ २४० ॥

इति श्रीहरीकृष्णविनिर्मितेबृहज्ज्योतिषार्णवे षष्ठे मिश्रस्कंधे
क्रीडाकौशल्याध्याये त्रिविधपत्रक्रीडावर्णनं
नाम प्रकरणम् ॥ ४ ॥

अब दश प्रकारके जो नियम हैं उनमें मुख्य चार हैं उनके नाम मीरखेल१ उतारीखेल २, मागनीकाखेल ३, दुकलुखेल आदि आगेस्पष्ट है ॥ २४० ॥

अथ दशावतारी खेलके नियम १० कहते हैं.

१ मीरकी सर दिये विना दूसरे पत्तोंका खेल होतानहीं है.

२ पहिलेकी उतारी हुये विना औंधे पत्तोंका खेल होता नहीं है.

३ इस खेलमें जो पत्ते हारेगा वह उसने पहिले जबरदस्तको पत्ते देना पीछे जेरदस्तको देना पत्त कितनेभी देना हों हारने वालेके पाससे चौंतीस पत्तेतक लेना जादा लेनेके रहें तो वो खेल पूरा करके नवा खेल शुरू करना पीछेका लेना देना रखना नहीं.

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

४ खेलके अखिरके ऊपर तीनों आदमीके पास एकही रंगके पत्ते हाथमें होवें तो ओ बाजीखेल की पूरी भई लेना देना पीछेका रखना नहीं परंतु जिस आदमीको पत्ते दोनोंके ऊपर अगर एकके ऊपर लेनेके होवें और उसके पास बलवान् पत्ता होवे देनोंके पास वही रंगका निर्बल पत्ता होवे तो बाजी पूरी नहीं भई और देनेवालेके पास वही रंगका सबल पत्ता होवे तो बाजी पूरी भई.

५ दुकलु खेलका निर्णय ऐसा है कि बाजी लगी हुई होवे राजा प्रधान एक्का अथवा दहेलेसे लेके बरोबर बाजी होवे तो वो पत्ते वसूल करलनेको दुकलु खेल कहते हैं.

६ उतारी खेलका निर्णय सर देनेकुं अपने पास उतरने सरीखा दूसरा पत्ता न होवे तो मीर उतरके और दूसरेभी उतरना उसको उतारी खेल कहते हैं.

७ मांगनीका खेलका निर्णय उतारीका खेल हुवे बाद उसी अदमीने अपने हाथमें औंधे पत्ते लेके सामनेवालेको कहेना "मांगो" तब वह ऐसा मांगे कि दो जायके या पाँच जायके एक पत्ता छोडो तव वह उस पत्तेको बीचमें डाले पछि उस पत्तेसे जिसने सबल पत्ता डाला वह लेजावे निर्बल डाले तो वही लेजावे.

८ मांगनी खेलका दूसरा भेद ऐसा है कि कोईभी रंगके पत्ते अपनेको हुक मी करना होवें और उस रंगमेंके बीच बीचके पत्ते सामनेवालेके पास होवें तो एक हलका पत्ता डालके कहे कि इस रंगका बंद सब डालदेव जब वह डाले तो आप कोईभी दूसरे रंगके पत्ते भरतीमें डालना.

९ नातवानी तवानी खेलका निर्णय. इस खेलका भेद महाराष्ट्र देशमें प्रसिद्ध है. अपने पास एक्का है दूसरेके पास दूवा है और तीसरेके पास तीया है तो ती ये वाला एक्के वालेको पहिले सर देवे उस्को नातवानी कहते हैं और दूसरी वार दूवेको सर देवे उसको तवानी कहते हैं. दहले बंदीको उलटा जानना

१० हरदू खेलका भेद कहते हैं. अपने पास तीया है. दूसरे आदमीके पास एक्का और दूवा है तो तीये वाला सर देवे उसको हरदू खेल कहते हैं. इति श्री तीन प्रकारका गंजीफेका खेल संपूर्ण भया प्रकरण ॥ ४ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथज्ञानपट्ट खेलनमाह

महाराष्ट्रेपुरायोगीज्ञानेश्वरमुनीश्वरः ॥
संसारतापदग्धानांकिंचिद्विश्रांतिहेतवे ॥ २४१ ॥
ज्ञानपट्टाभिधंखेलंनिर्ममेऽतिमनोहरं ॥
पंचाशीतिप्रकोष्ठानिसर्पाणांनवकंतथा ॥ २४२ ॥
सोपानद्वयसंयुक्तंद्व्यधिकैःखेलनंभवेत् ॥
कपर्दिकासप्तकेनसंख्याचोर्ध्वमुखास्मृता ॥ २४३ ॥
जन्मस्थानादिमोक्षांतंयथासंख्यंप्रपूरयेत् ॥
सोपानेनोर्ध्वगमनंसर्पतुंडादधस्थितिः ॥ २४४ ॥
सत्कर्मादूर्ध्वगमनंकुच्छितेऽहिमुखंस्मृतम् ॥
समाधियोगाद्वैकुंठमन्यथोर्ध्वभ्रमःस्मृतः ॥ २४५ ॥
इतिबृ०क्रीडाकौशल्याध्यायेज्ञानपट्टखेलनम् ॥

अब ज्ञानपट्ट खेल कहते हैं–यह खेल महाराष्ट्र देशमें ज्ञानेश्वर साधुने संसारतापसे दग्ध भये हुये लोगोंको विश्रांति होनेकेवास्ते ज्ञानचौपट बनाया. यह खेल दोसे किंवा चार जनोंसे खेलते बनता है. जितने खेलनेवाले होवें उतने रंगकी जुदी२ नरदां अथवा फलादि अन्य पदार्थ सब पहिले घरमें रक्खै पीछे हाथमें७ कौडी लेके जमीन पर दांव डाले. जितनी कौडियां सीधी गिरें उस संख्या मुताबिक दांव पडा ऐसा समझके खेलनेवाले अपने २ प्यादे संख्या मूजब अनुक्रमसे आगे आगे चलाते जावें जिस घरमें प्यादा रखनेका होवे उस घरमें जो सर्पका मुख होवे तो प्यादेको सर्पका पुच्छाग्र जहां होवे उस घरमें रक्खे. जैसा १४ वें घरमें रखनेका होवेतो पांचवेघरमें रक्खे इसप्रमाणसे १९।२२।२५।४२।७२ ।७३।७५।४०।५६। इन घरोंमें प्यादे आये तो अनुक्रमसे १८। १५।१२।११।२१।२४।१८।१३।८० घरोंमें रक्खे या ५६ वें घरसे प्यादा ८० वें वैकुंठ घरमें पहुँचा तब आगे जो एक दाँव पडातो मोक्ष घरमें जाता है एकसे जियादः पडे तो सीधे हाथपै ८४ पर्यंत घरगिनके देवे दाँव समाप्त न होवे तो पुनः ८० पर्यंत गिनते जावे पुनः जब ८० वें घरमें दाँव पूरा होके प्यादा वहांही रहा तो एक जब पडे तो मोक्षको गया नहीं तो पुनः ८० से ८४ पर्यंत ८४ से ८० पर्यंत भ्रमण करताहै. इस खेलमें उत्पन्न हुवा जीव

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

मोक्षको जाता है इस हेतु करके मोक्ष जानेको बीचमें कितने स्थान हैं यह सूचना की है- अविवेक १ द्वेष २ दुष्टमोह ३ ज्ञानमोह ४ अहंकार तामस ५ अहंकारराजस ६ क्रियाशक्ति ७ अहंकार ८ शिश्नभोग ९ इसमें आया तो महापातक १ क्रोध २ समुद्र ३ संसार ४ क्रोध ५ शून्य ६ सुखसंग ७ स्थूलदेह ८ हर्ष ९ इसमें आता है और जिसको समाधि सिद्ध हुई वह वैकुंठको जाता है वहांसे मोक्ष न भया तो ब्रह्मलोकादिकमें फिरता है. और कर्मयोगसे स्वर्गको, ज्ञानयोगसे वैकुंठको जाता है॥२४१॥२४२॥२४३॥२४४॥२४५॥इति ज्ञानचौपटका खेल समाप्त ॥

अतःपरंप्रवक्ष्यामिकर्मपट्टंसुशोभनम् ॥
संसारिणांसुबोधार्थंकर्मपाकप्रसूचकम् ॥ २४६ ॥

अब आगे संसारी मनुष्योंको बोध होनेके वास्ते कर्मविपाकपट्टखेल कहता हूं ॥ २४६ ॥

केनकर्मविपाकेनकीदृशंफलमश्नुते ॥
तत्सर्वंज्ञायतेयस्यखेलनान्नात्रसंशयः ॥ २४७ ॥

कौनसा कर्म करनेसे कौनसा फल प्राप्त होता है? इसका ज्ञान इस पट्टखेलनेसे होता है इसमें संशय नहीं है, परंतु अपनी नरद जिस स्थानपर बैठे उस स्थानका ध्यान रक्खै ॥ २४७ ॥

पंचशतंकोष्ठकानांकुर्यादत्रसुबुद्धिमान् ॥
तदूर्ध्वंविष्णुलोकश्चशिवलोकश्चतत्रहि ॥ २४८ ॥

इस पट्टके पाँचसौ कोष्ठक करै उन कोष्ठकोंके ऊपर दक्षिणोत्तर भागमें विष्णुलोक,शिवलोक निकाले ॥ २४८ ॥

तयोरुपरिगोलोकेमोक्षस्थानंतदेवहि ॥
सोपानादूर्ध्वगमनंसर्पतुंडादधस्तथा ॥ २४९ ॥

और दोनों लोकोंके ऊपर मध्यभागमें गोलोक निकाले गोलोकको मोक्षस्थान कहते हैं. अब इस पट्टमें जिस कोष्ठकमें सीढीका पाँव आवे वहांसे चढके जहां अग्रभाग होवे उस कोष्ठकमें नरद रक्खै सर्पके मुखमें आवे तो नीचे पुच्छाग्रके घरमें रखना चाहिये ॥ २४९ ॥

षड्भिःकपर्दिकाभिश्चखेलनंपरिकीर्तितम् ॥
जन्मस्थानंमानवस्यप्रथमंपरिकीर्तितम् ॥ २५० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

यह खेल छःकौडीयोंसे दो अथवा चार आदमी खेलैं. पहिला घर मनुष्यका जन्मस्थान वहाँ खेलनेवाले अपनी नरदां रक्खैं पश्चात् जैसा दांव पडे वैसा चलें. दांवके समय जितनी कौडियां चित्त ऊर्फ सीधी पडें उतनी संख्या लेवे जो आदमी खेलते खेलते शिवादिक लोकोंमें नहीं गया और पाँचसौ कोष्टक पूरे हो गये तो ऐसा जानै कि ऊपरके सात लोकमें फिरता रहा है. खेलनेकी अवधि शिवलोक, विष्णु लोक, मोक्ष, गोलोकप्राप्ति पर्यंत जानना ॥ २५० ॥

ततोमोहमयीसृष्टिःसप्तप्रकृतयस्तथा ॥
चतुर्दशात्रलोकाश्चवायूनांदशकंतथा ॥ २५१ ॥
इंद्रियाणिचतन्मात्राभक्तिज्ञानादिकंतथा ॥
यथावकाशंविलिखेत्कर्मपाकौविशेषतः ॥ २५२ ॥

अब पाँचसौ घरोंमें नाम लिखनेका भेद कहते हैं– मोहसृष्टि, सप्तप्रकृति, चौदह लोक, दशवायु, दश इंद्रिय,विषय, भक्ति,ज्ञान, वैराग्यादिक इनके नाम जहां स्थान मिलै वहां लिखै कर्मके और पाकके नाम विचार करके परस्पर संबध देखके लिखै ॥ २५१ ॥ २५२ ॥

केवलंनाममात्राणिलिखामिकर्मपाकयोः ॥
संशयश्चेत्तदामूलग्रंथेद्रष्टव्यमादरात् ॥ २५३ ॥

कर्मपाकोंके केवल नाम पट्टमें लिखता हूं श्लोकोंका प्रमाण नहींलिखता कारण कि ग्रंथ बडा हो जावेगा और जो कभी पट्टमें लिखे हुये कर्मविपाकके नाम पर किसीको संशय होवे तो मूल ग्रंथमें प्रमाण देख लेवे ॥ २५३ ॥

दृष्ट्वाकर्मविपाकार्कपुराणंगारुडंतथा ॥
शातातपस्मृतिंमात्स्यंश्रीमद्भागवतादिकम् ॥२५४॥
कृतोमयाकर्मपट्टोहरिकृष्णेनधीमता ॥
सत्कर्माणिप्रवृत्त्यर्थंत्यागार्थंचकुकर्मणाम् ॥ २५५ ॥

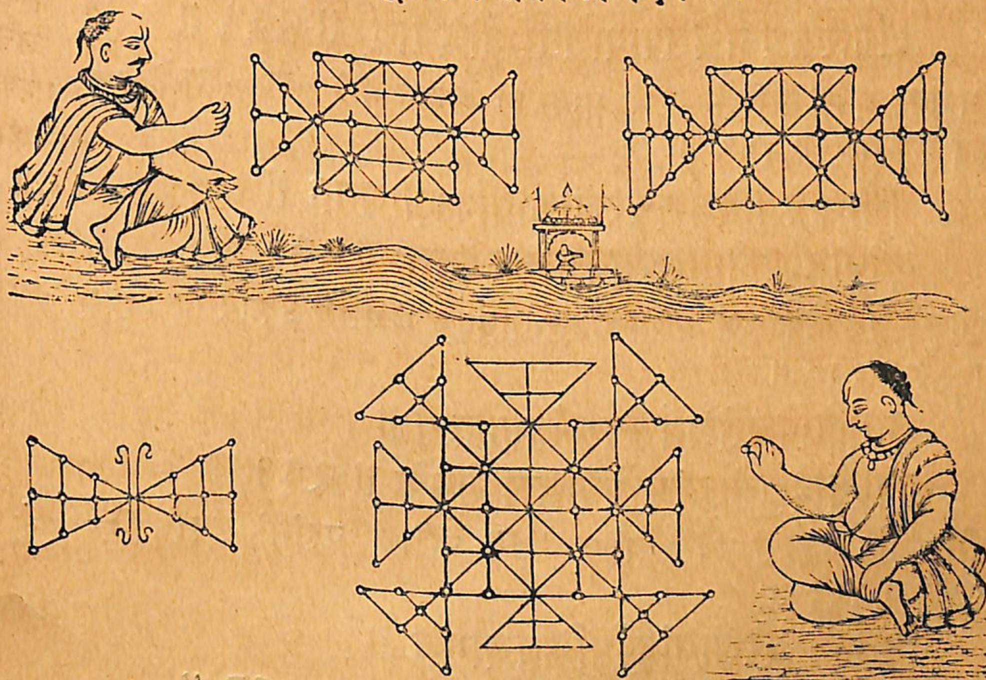
इति बृ० मिश्रस्कंधेक्रीडाकौशल्याध्यायकर्मविपाक पट्टखेलनं नाम पञ्चमं प्रकरणम् ।

मैंने कर्मविपाकार्क गरुडपुराण मत्स्यपुराण श्रीभागवत शातातपस्मृति आदि ग्रंथ देखके लोगोंको सत्कर्ममें प्रवृत्ति होनेके लिये और कुकर्मोंका त्याग करनेके लिये कर्मविपाक पट्ट बनाया है. इस कर्मविपाकके पट्ट खेलनेसे जीवात्माको पुण्य पापका नित्य सहज स्मरण रहता है ॥ २५४ ॥ २५५ ॥

इति कर्मविपाकपट्टखेलनं नाम पंचमं प्रकरणम्।

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथश्मशानद्यूतकंकरीक्रीडाभेदवर्णनं ॥



अतःपरंप्रवक्ष्यामिरसेंदुशर्कराभिधम् ॥
क्रीडनंत्रिविधंतेषांरीतिरेकैववर्तते ॥ २५६ ॥

अब श्मशान चौपटका खेल कहते हैं—सोलह कंकरीका खेल तीन प्रकारका है परंतु सबोंकी रीति एकही है ॥ २५६ ॥

श्मशानेवावनेवापिक्रीडोपस्करवर्जिते ॥
स्थलेवैकारयेत्क्रीडानगृहेषुकदाचन ॥ २५७ ॥

यह क्रीडा श्मशानमें अथवा बनमें जहाँ दूसरे खेलनेके पदार्थनहीं रहते वैसी जगहमें खेलै घरमें नहीं खेलै ॥ २५७ ॥

प्रमादाद्यदिकुर्याच्चेदशुभंतस्यनिर्दिशेत् ॥
अथतस्यप्रवक्ष्यामिक्रीडनस्यविधिंशृणु ॥ २५८ ॥

जो कोई यह क्रीडाघरमें खेलेगा तो उसको अशुभ होवेगा अब उसकी विधि कहते हैं ॥ २५८ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

आदर्शसदृशेचाश्मस्थलेयंत्रंसमालिखेत् ॥
अंगारकेणवाश्वेतपाषाणेनसुबुद्धिमान् ॥ २५९ ॥

बरोबर दर्पण सरीखी जहां पत्थरकी चटान होवे वहां कोयलेसे अथवा सफेद कंकरीसे ॥ २५९ ॥

पंचोर्ध्वंपंचतिर्यक्चरेखाकार्याःसुशोभनाः ॥
एवंषोडशकोष्ठानितीर्यग्रेखाद्वयंततः ॥ २६० ॥

सोलह घर निकालके आग्निकोनेसे वायुतक नैऋतसे ईशानतक आडी दो रेखा करे ॥ २६० ॥

कुर्याद्विदिक्षुसंलग्नंचतुरस्रंततःपरम् ॥
पूर्वादिदिक्षुसंलग्नंमध्येषोडशकोष्ठके ॥ २६१ ॥

पीछे और चतुरस्र पूर्वसे दक्षिण वहांसे पश्चिम वहांसे उत्तर फिर पूर्व ऐसा करे ॥ २६१ ॥

तद्बहिर्मध्यरेखायांपूर्वपश्चिमभागके ॥
त्रिकोणमंडलंकार्यंचतुःकोष्ठकसंयुतम् ॥ २६२ ॥

फिर षोडश कोष्ठकके बाहर पूर्व दिशाको पश्चिम दिशाको त्रिकोण मंडल मध्य रेखासे मिलाके करे उसमें चार कोष्ठक होवें ऐसा रेखायुक्त स्वस्तिक करनेसे बत्तीस ग्रंथि होती हैं. उनमें सोलह कंकरीका खेल खेला जाता है ॥ २६२ ॥

षट्कोष्ठसंयुतंवापिह्यष्टकोष्ठमथापिवा ॥
बृहच्छ्मशानद्यूताख्यंक्रीडनंपरिकीर्तितम् ॥ २६३ ॥

और उन्हीं दोनों त्रिकोणोंमें छः कोष्ठक किये से उन्नीस कंकरीका खेल खेला जाता है. और उन्ही दोनों त्रिकोणोंमें आठ कोष्ठक किये से बाईस कंकरीका खेल खेला जाता है ऐसी यह बडी श्मशान द्यूत नामकी क्रीडा कही । २६३ ॥

द्वात्रिंशद्ग्रंथयश्चात्रह्यष्टत्रिंशमथापिवा ॥
चतुश्चत्वारिंशकावाग्रंथयस्थानरूपकाः ॥ २६४ ॥

इस क्रीडाके यंत्रमें ग्रंथि कहिये कंकरी रखनेके स्थान,बत्तीस अथवा अठतीस अथवा चवालीस हैं ॥ २६४ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पदातयश्चतावंतःशुक्लार्द्धारक्तवर्णकाः ॥
शुक्लाह्येकेनसंग्राह्यारक्ताऽन्येनवरानने ॥ २६५ ॥

जितनी ग्रंथि हैं उतनी जगह पर पैदल कहिये कंकरियाँ रक्खै सो एक तरफ लालरंगकी दूसरी तरफ सफेद रंगकी. कंकरी रखना एक मनुष्य लालकी तरफ बैठे दूसरा सफेदकी तरफ बैठे ॥ २६५ ॥

मध्येरेखास्थितग्रंथिपंचकेरणभूमिका ॥
युद्धारंभंततःकुर्यात्क्रीडारूपंविचक्षणः ॥ २६६ ॥

बीचमें जो पाँच ग्रंथि खाली रहीं वह रणभूमि खेलनेकी जगह कहते हैं वहां खेलनेके वास्ते दोमें से एक पहिले कंकरी सीधे हाथके अंतकीग्रंथिकी जगह पर रक्खे ॥ २६६ ॥

पुरुषद्वयसंसाध्याक्रीडेयंपरिकीर्तिता ॥
न्यूनाधिकस्यसंवेशोविद्यतेनकदाचन ॥ २६७ ॥

यह क्रीडा दो आदमियोंसे खेली जातीहै कम जियादह नहीं होते ॥२६७॥

यदागच्छतियुद्धार्थेपदातिःसन्मुखंरणे ॥
तदास्वपृष्ठभागेवैग्रंथिंशून्यांनकारयेत् ॥ २६८ ॥

परंतु खेलते समय कंकरी जो शत्रुके सामने रक्खे तब उसके पीछेकी जगह खाली नहीं रक्खै और अपना जो सामनेवालेकी कंकरीको मारै सो अपने अधर बीचमें नहीं बैठना. और शत्रुको अपने ऊपरसे उडके बैठनेकी जगह नहोवे ऐसे स्थानमें बैठे यदि अपनी तरफकी कंकरी होवे उसके पास जायके बैठे अपनी कंकरीकाघर पीछेका सूना नहीं रक्खे ॥ २६८ ॥

शून्याचेन्मृत्युमाप्नोतितस्माद्यत्नेनसंविशेत् ॥
क्रीडेयंद्वंद्वयुद्धाख्यापार्ष्णिग्राहाज्जयोभवेत् ॥ २६९ ॥

सूना रक्खे तो कंकरी मरजावे इस वास्ते बहुत बिचार करके शत्रुके सामने जावै. इस क्रीडाको द्वंद्वयुद्धक्रीडा कहते हैं पीछे कोई दूसरा पार्ष्णिग्राह कहिये सहाय होवे तो जय होवे ॥ २६९ ॥

लौकिकेपितथाज्ञेयमितिसर्वंनिवेदितम् ॥
रसेंदुशर्कराक्रीडाप्रोक्तान्यंनवसंज्ञकम् ॥ २७० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

लोकमें भी ऐसा है कि जिसके तरफचार भाई रहें उसका जय होता है ऐसा सोलह कंकरीका भेदवर्णन किया अब नव कंकरीका भेद कहतेहैं॥२७०॥

त्रिकोणद्वयसंलग्नंडमरूवाद्यसन्निभम् ॥
लघुश्मशानद्यूताख्यंक्रीडनंचद्वितीयकम् ॥ २७१ ॥
लघुद्यूतेमध्यग्रंथौरणभूमिःप्रकीर्तिता ॥
कोष्ठानिद्वादशैवात्रग्रंथयोऽष्टादशैवहि ॥ २७२ ॥

दो त्रिकोण करके एक ठिकाने मिलावे डमरू वाद्यका जैसा आकार है वैसा यंत्र निकाले वह दोनों त्रिकोणमें मिलके बारह कोष्ठक अठारह ग्रंथि होती हैं इसको लघु श्मशानद्यूत नवकंकरीका खेल कहते हैं. दो त्रिकोणोंके बीचकी ग्रंथि को खेलनेके वास्ते रणभूमि कहते हैं ॥ २७१ ॥ २७२ ॥

पदातयश्चतावंतोनवरक्ताश्चशुभ्रकाः ॥
प्रत्येकग्रंथिषुस्थाप्यास्ततःक्रीडनमारभेत् ॥ २७३ ॥

इस क्रीडामें अठारह पैदल कहिये कंकरी हैं, नव लाल हैं नव सफेद. सो प्रत्येक गाँठके ऊपर रखके खेलनेका आरंभ करना परंतु इस क्रीडामें पहिले दांवको दोनो तरफकी एक एक कंकरी मरती है पीछे जिसकी बुद्धि ऊपर लिखे मूजब से चलेंगी तो वह जीतेगा ॥ २७३ ॥

प्रयागप्रांतदेशेप्रसिद्धंक्रीडनंचयत् ॥
तत्सर्वंपूर्ववज्ज्ञेयंविशेषंप्रवदाम्यहम् ॥ २७४ ॥

अब अट्ठाईस कंकरीका खेल कहते हैं. यह खेल प्रयागके जिलेमें बोहुत करके खेलते हैं. इसकी रीति सब पहिले सरीखीहै ॥ २७४ ॥

द्वात्रिंशद्ग्रंथिकेखेलयोसौयंत्रःप्रकीर्तितः ॥
तस्यकोणचतुष्केतुतथायाम्योत्तरेलिखेत् ॥ २७५ ॥
त्रिकोणंमंडलंरम्यंचतुष्कोष्ठकसंयुतम् ॥
षट्पंचाशद्ग्रंथयस्तुभवंत्यत्रविशेषतः ॥ २७६ ॥

विशेष यह है कि सोलह कंकरी सरीखा यंत्र निकालके उसके चारों कोणोंके ऊपर और उत्तर दक्षिणकी बीचकी रेखाके ऊपर त्रिकोणमंडल चार कोष्ठक सहित निकालना. इस यंत्रमें छप्पन ग्रंथि होती हैं ॥२७५ ॥ २७६ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

उभयोःखेलनार्थंवैशेषेषुयुद्धभूमिका ॥
याम्योत्तरौत्रिकोणौद्वौतत्रयुद्धंसमारभेत् ॥ २७७ ॥

सो दोनोंने अठाईस अठाईस कंकरियोंसे खेलना. उत्तर दक्षिणके त्रिकोणकी और बीचकी पांच ऐसी सतरह ग्रंथिकी जगहको युद्ध भूमि कहिये हैं खेलनेकी जगह है ॥ २७७ ॥

खेलनंपूर्ववत्कुर्यान्न्यूनाधिक्यंनचात्रहि ॥ २७८ ॥

यहां भी खेलना पहिले सरिखा जानना ॥ २७८ ॥

अथप्रकारांतरेणगुर्जरदेशप्रसिद्धंनवकंकरीखेलनमाह।
आसमंताच्चतुष्कोणंवप्रत्रयसमन्वितम् ॥
यंत्रंकुर्याद्विशेषेणखेलनार्थंसमेस्थले ॥ २७९ ॥

अब गुजरात देशमें जो नवकंकरियोंसे खेलते हैं उसको बयान करते हैं कि चार कोनेका तीन प्राकार सहित यंत्र निकालना ॥ २७९ ॥

वप्रत्रयेणसंलग्नांरेखांदिक्षुचतुर्षुच ॥
वप्राणांमध्यभागेचभूमिर्द्व्यंगुलसंमिता ॥ २८० ॥

और तीनों वप्रसे लगी हुई रेखा चार चार दिशाओंमें करना वप्रके बीचमे दो अंगुल भूमि छोडना ॥ २८० ॥

ग्रंथयोद्वादशैवात्रकोणाश्चतावेदवहि ॥
खेलनार्थपदातीनांसंख्याष्टादशसंमिता ॥ २८१ ॥

जितने कोने हैं उनही ठिकानोंको ग्रंथि कहते हैं वे ग्रंथि दोनों तरफकी मिलके अठाराह हैं और बाकीके दक्षिणोत्तरकी जो छः ग्रंथि हैं सो खेलनेकी खुली जगह है और नरदां अठारह हैं ॥ २८१ ॥

शुक्लारक्ताश्चप्रत्येकंनवसंख्याःप्रकीर्तिताः ॥
द्वाभ्यांक्रीडाप्रकर्तव्यानवकंकरीसंज्ञका ॥ २८२ ॥

उसमें नव सुपेद रंगकी और नवलाल रंगकी प्रत्येक दोनो जनोंने नव नव लेना यहक्रीडा दो आदमियोंसे होती है ॥ २८२ ॥

भरद्धरणयोगेनघातयेत्परपक्षगम् ॥
यत्रकुत्रास्थितंतंचभरणस्थोननश्यति ॥ २८३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

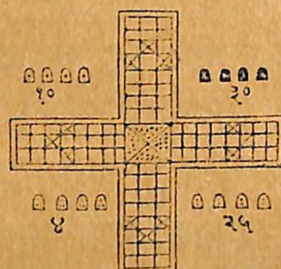
इसमें अपनी नरदोंका भरत भरना ऐसे हुवा तो सामनेवालेकी बिना भरतकी नरद उठालेनाको कहते हैं मार लेना.और भरतमें बैठी हुई नरदां मरती नहीं है और पहिले जिनने कंकरीके खेल कहे उनमें कंकरी पहिले सब रखके खेलै ऐसा है और इसमें तो दोनों जने जैसा अपनां भरत सिद्ध होवे उसी रीतिसे कंकरी रखते जावें ॥ २८३ ॥

त्रयाणामेकरेखायांमिलनंचयदाभवेत् ॥
भरणंतंविजानीयात्स्वबुद्ध्याप्रतिपादयेत् ॥ २८४ ॥

भरत उसको कहते हैं कि अपनी नरदें तीन एक रेखाके ऊपर बराबर आवें तो भरत सिद्ध हुवा जानना ॥ २८४ ॥

इति श्मशान द्यूतका भेद पूरा भया प्रकरण ६ संपूर्ण ॥

अथ हस्त्यश्वाजगवांक्रीडा ॥ १४ ॥



अस्मिन्नेवपटेक्रीडाहस्त्यश्वाऽजगवांस्मृता ॥
कपर्दिकासप्तकेनद्वाभ्यांक्रीडनविदैः ॥ २८५ ॥

(अब हस्ती अश्व गाय बकरीका खेल कहते हैं) पहिले द्यूत क्रीडा करनेका जो पट्ट है उसी पट्टके ऊपर चारों रंगकी नरदां रखके दो आदमी सात कौड़ियोसे खेलें ॥ २८५ ॥

त्रिंशद्वावेगजोग्राह्यःपंचविंशेतुरंगमः ॥
गौर्ग्राह्यादशसंख्यायांचतुःसंख्येत्वजास्मृता ॥ २८६ ॥

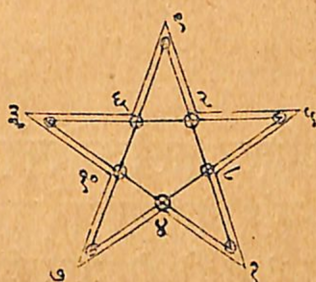
जिसके तीस ३० का दांव पडे वह हाथी लेवे पच्चीस पडे तो घोड़ा लेवे दश पडे तो गाय लेवे चार पड़े तो बकरी लेवे ॥ २८६ ॥

गजाश्वगोजवर्णाःस्युःकृष्णरक्तौचपीतकः ॥
हरिद्वर्णइतिप्राज्ञैःक्रीडेयंबालखेलने ॥ २८७ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

जिस नरदका काला रंग है उसको हाथी, लाल रंगकी नरदाको घोड़ा, पीले रंगकी नरदाको गाय, हरे रंगकी नरदाको बकरी कहते हैं यह बालकोंके खेलनेका खेल है ॥ २८७ ॥

अथसाक्षिक्रीडाभेदद्वयमाह १५-१६.



पंचास्रखेलनंवच्मिबुद्धिकौशल्यकारकम् ॥
एकेनक्रीडनंप्रोक्तंसाक्षिणश्चप्रयोजनम् ॥ २८८ ॥

(अब पंचकोण खेल कहते हैं.) जिस खेलमें बुद्धिकी चातुर्यता मालूम पड़ती है. ऐसे इस खेलमें एक खेले और दूसरा साक्षी होकर बैठे ॥ २८८ ॥

पंचास्रंविलिखेद्रम्यंदशग्रंथिसमन्वितम् ॥
पदातयश्चतावंतोह्येकैकंस्थापयेत्क्रमात् ॥ २८९ ॥

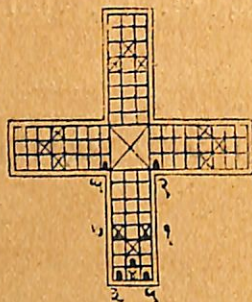
भूमि पर अगर पीठके ऊपर पंचकोण चक्र निकालके दश नरदा अपने पास लेके बैठे. पीछे चक्रमें दशग्रंथियां हैं वहां एक एक ग्रंथिके ऊपर एक एक नरद बिठावे ॥ २८९ ॥

तृतीयेतृतीयेग्रंथौसरलेनहिवक्रके ॥
अथवाचौपटेपट्टेतत्रैकस्मिन्विभागके ॥ २९० ॥

कैसी बिठावे सो कहते हैं--पहिले जिस ग्रंथिके ऊपर नरद बिठाई होवे वहांसे तीसरी ग्रंथिके ऊपर सरल रेखामें रक्खे, टेढ़ी रेखाकी ग्रंथिपर रक्खे नहीं; ऐसी दश नरदा दश ग्रंथिनके ऊपर सरल मार्गसे रक्खे वही बुद्धिका चातुर्य जानना. इसमें खूबी यह है कि एक नरदको तीन तीन गिनके रक्खे परंतु जहां नरद पहिले बिठाई है वह घर गिनतीमें लेके रक्खे तो दश नरदा बराबर बैठेंगी. (अब साक्षीक्रीडाकहते हैं) पहिले चौपटके जो चार भाग हैं उसमेंके एक भागके ऊपर ॥ २९० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

साक्षिक्रीडाका पट्ट.



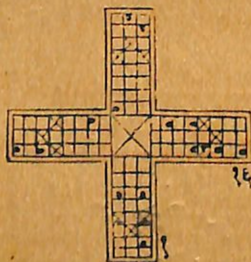
चीलाख्यकोष्टकंद्वंद्वेतस्मात्पंचद्वयेपदे ॥
तृतीयेतृतीयेताभ्यांमध्येतीर्यक्पदेन्यसेत् ॥ २९१ ॥

सात नरदा इस प्रकारसे रक्खे कि दो नरदा चीले ऊपर वहांसे पाँच पाँच घरके ऊपर दो नरदा और चीलसे तीसरे तीसरे घरमें दो नरदा और उन दोनों नरदोंके पासके अंदरके घरमें नरद एक ऐसी सात नरदा बिठायके॥२९१॥

पदातीनांसप्तकंवैह्येकेनरसपातनं ॥
कर्तव्यंपंचपंचभ्यांदशभिर्दशभिस्तथा ॥ २९२ ॥

उसमेंकी एक नरद लेवे उस नरदसे छः नरदोंको मारे. मारनेके दाँव छः हैं-पाँच १ दश २ दो ३ दो ४ दस ५ पाँच ६ ऐसे हैं; परंतु वहां खूबी यह है कि दोनों चीलें ऊपरकी जो नरदा है उसमेंसे एक नरद पहिले उछलके उससे सब नरदा मरेंगी. इसके बिना तीसरी नरद ली तो नरदा मरनेकी नहीं ॥ २९२ ॥

अथपुरुषद्वयसाध्यक्रीडा १७.



द्वाभ्यांद्वाभ्यांचक्रीडेयंसाक्षिक्रीडाद्वितीयका ॥
अथवाचौपटेपट्टेदिगादिपरिसंख्यया २९३

(अब दो आदमीसे खेलनेकी क्रीडा कहते हैं.) पहिले चौसरके पटके ऊपर एक मनुष्य दश दशके अंतरसे या आदि शब्द करके पचीस या बीस या जो अपने दिलमें आवे उस संख्याके घर पर ॥ २९३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पदातयश्चसंस्थाप्याः कोष्ठकेषुमनीषिणा ॥
प्रथमेनततोऽन्येनतत्रदृष्टियुतेनच ॥ २९४ ॥

सोलह नरदा रख देवे सामनेवालेको मालूम न होवे इस तरहसे रखके कहे कि एक नरदसे अमुक संख्या मूजब पंद्रह नरदाको मारो तब दूसरा आदमी नरदा रखते समय दृष्टि रखके ॥ २९४ ॥

आद्येनवांतिमेनापिमारणीयाः प्रयत्नतः ॥
इत्येवंक्रीडनंप्रोक्तंपुरुषद्वयसाधकम् ॥ २९५ ॥

पहिली नरद या अंतिम नरदसे सब नरदा मारे ऐसी दो पुरुषोंसे खेलनेकी क्रीडा हमने कही ॥ २९५ ॥

अथचतुर्विंशतिकोष्टकात्मिकींक्रीडामाह १८



अथान्यच्चप्रवक्ष्यामिखेलनंजिनकोष्टकं ॥
प्रागायताश्चतस्रस्यूरेखास्तिर्यङ्नवस्मृताः ॥ २९६ ॥

(अब चौबीस कोष्टकसे सोलह नरदा खेलनेका मार्ग कहते हैं १८) खड़ी रेखा चार, तीर्यक्‌रेखा नव निकाले तो ॥ २९६ ॥

चतुर्विंशतिकोष्टानिखेलनेमध्यभूमिका ॥
अष्टकोष्टात्मिकातस्याः पार्श्वयोः पादचारिणः ॥ २९७ ॥

चौवीस कोष्टक होते हैं उसके एकतरफ एक अपनी आठ नरदा रक्खे दूसरी तरफ दूसरी अपनी आठ नरदा रक्खे बीचमें घर आठ हैं वह खेलनेकी भूमि है और दोनों तरफ आठ आठ नरदोंका स्थल है ॥ २९७ ॥

स्थलंप्रकल्पयेत्तत्रश्वेतरक्ताः पदातयः ॥
द्वयोश्चखेलनंह्येतन्नन्यूनाधिकयोर्भवेत् ॥ २९८ ॥

आठ नरदा सफेद और आठ नरदा लाल करे यह खेल दो मनुष्योंसे खेलाजाता है कम ज्यादासे नहीं खेला जाता ॥ २९८ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

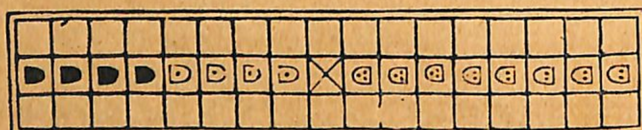
क्रीडारंभेचगमनंनरयोः कोष्टकद्वयं ॥
विज्ञेयंचततः पश्चादासमंतात्पदेककं ॥ २९९ ॥

खेलके आरंभमें दोनों जनोंकी नरदा दो घर पाहिले चलती है बाद चारों तरफसे एक एक घर चलती है ॥ २९९ ॥

पृष्ठेशून्यस्थलंदृष्ट्वाघातयेत्परपक्षगं ॥

और नरदको मारनेका ऐसा नियम है कि जिस नरदाके पीछे खाली जगह होवे उस नरदको मार लेवे.

अथैकपंचाशत्तमकोष्ठकात्मिकांक्रीडामाह १९.



एकपंचाशत्तमैर्वाकोष्ठकैर्यंत्रमालिखेत् ॥ ३०० ॥

अब इक्कावन घरकी क्रीडा कहते हैं—सत्रह घरकी एक पंक्ति वैसीही तीन पंक्तिसे इक्कावन घरका यंत्र निकालके ॥ ३०० ॥

मध्यषोडशकोष्ठेषुपदातीनांस्थलंस्मृतम् ॥
द्वयोःपदातिनोर्मध्येपदैकंरणभूमिका ॥ ३०१ ॥

बीचके घरोंमें सोलह नरदा रक्खै और दोनों रंगके बीचमें एक घर खेलनेके वास्ते खुला रक्खै ॥ ३०१ ॥

खेलनार्थपार्श्वभूमिःशेषंसर्वंपुरोदितम् ॥
यस्यावशिष्यतेसेनाजयंतस्यविनिर्दिशेत् ॥ ३०२ ॥

और दोनों बाजूके घर चौंतीस हैं वे खेलनेके वास्ते हैं बाकी रीति पहिले खेल सरीखी जानै इन दोनों खेलोंमें जिसकी नरद बाकी रहे उसका जय जाने ॥ ३०२ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथद्यूतार्धखेलनमाह २०.

	९	८	३८	
[illegible]	[illegible]	४९	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	२५	[illegible]	[illegible]
[illegible]	१७	२४	[illegible]	[illegible]
	१६	१	२	

चतुरस्रंलिखेच्चक्रंशुंठिकोष्ठैःसमन्वितम् ॥
हंसपादंचतुर्दिक्षुमध्येकुर्याच्चपंचमम् ॥ ३०३ ॥

अब आदा सादेका खेल कहते हैं पच्चीस कोष्ठकका चतुरस्र चक्र निकालके चारों दिशाके मध्य कोष्ठकमें हंसपाद चिह्न करै और पांचवाँ हंसपाद मध्य कोष्ठकमें करै उस घरमें नरदा फिरायके रक्खै ॥ ३०३ ॥

चतुर्भिःखेलनंप्रोक्तंद्वाभ्यांवापिकदाचन ॥
वराटकैश्चतुर्भिश्चनृपसंख्यापदातयः ॥ ३०४ ॥

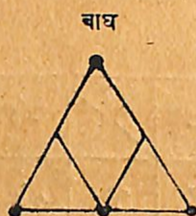
यह खेल चार आदमियोंसे अथवा दो आदमियोंसे खेला जाता है चार कौड़ीसे खेलै. नरदा चार रंगकी मिलके सोलह लेवै ॥ ३०४ ॥

मध्येकोष्ठेपदातीनांगमनांतंहिखेलनम् ॥
स्वस्वदिग्घंसपादाच्चप्रथमंखेलनंभवेत् ॥ ३०५ ॥

खेलमें जीतनेका नियम ऐसा है कि, अपनी अपनी दिशाके हंसपादमें जो नरदा बैठी हैं वहांसे नरद चलाते चलाते बीचके हंसपादमें आयके नरद बैठी तो वह नरद आगे चलावै नहीं तो ऐसी नरदा जिसकी पहिले आई उसकी जय जानै ॥ ३०५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथैकव्याघ्रअजात्रयखेलमाह २१.



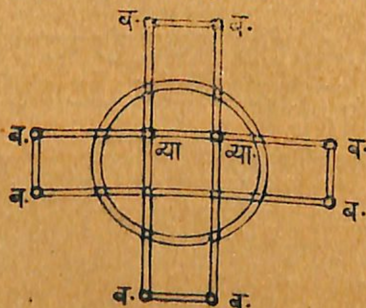
त्रिकोणंविलिखेच्चक्रंमध्येपाशयुगंतथा ॥
ग्रंथयःषट्प्रजायंतेऊर्ध्वेव्याघ्रस्थलंस्मृतम् ॥ ३०६ ॥

अब एक व्याघ्र और तीन बकरीका खेल कहते हैं त्रिकोण चक्र निकालके दक्षिण उत्तर तरफसे दो रेखा पश्चिममें मिलावे तो उस यंत्रमें ग्रंथियां छः होवेंगी तब ऊपरकी ग्रंथिके ऊपर बाघ बिठावै ॥ ३०६ ॥

अधोऽजानांत्रयंस्थाप्यद्वाभ्यांखेलनमीरितम् ॥
अधोमध्यस्थितेव्याघ्रेबंधयेत्तंस्वबुद्धिना ॥ ३०७ ॥

नीचेकी तीन ग्रंथिके ऊपर तीन बकरी बिठायके दो आदमी खेलैं. उसमें बाघ जब नीचेकी पंक्तिके बीचकी ग्रंथिऊपर बैठा होवे और खेल उसका होवे तो बाघ बांधा जावे. इस वास्ते अपनी बुद्धिसे बाघको फिराते फिराते ऊपर कही हुई ग्रंथिके ऊपर लायके बाघको बांधे तो खेल पूरा हुआ बकरीके पीछे घर खाली होवे तो बाघ मार लेवे इस वास्ते बाघके सामने बकरी देखके रक्खै आगे भी तीन खेलमें इसी रीतिसे खेलै ॥ ३०७ ॥

अथाजाष्टकव्याघ्रद्वयखेलनमाह २२.



अष्टास्त्रंद्यूतवत्पट्टंमध्यवर्तुलसंयुतम् ॥
विलिख्यस्थापयेत्तत्रह्यजानामष्टकंतथा ॥ ३०८ ॥

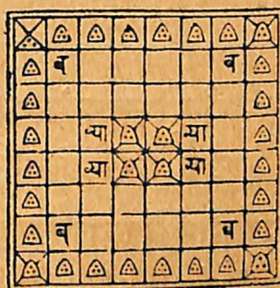
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अब दो बाघ आठ बकरीका खेल कहते हैं-आठ कोने जिसके हैं ऐसा द्यूत सरीखा पट्ट निकालै उसमें वर्तुल निकालके आठ बकरी बाहरके कोने ऊपर बिठावै ॥ ३०८ ॥

व्याघ्रद्वयंचसंस्थाप्यताभ्यांखेलनमारभेत् ॥
व्याघ्रयोर्बंधनंतत्रयथास्यात्तद्वदाचरेत् ॥ ३०९ ॥

दो व्याघ्र बीचकी दो ग्रंथियोंके ऊपर बिठायके दोनों जने खेलैं पीछे दोनों व्याघ्रका जैसा बंधन होवे वैसा खेलते जावें बाघ बांधे उसको जय जानना चाहिये ॥ ३०९ ॥

अथव्याघ्रचतुष्टयअष्टाविंशत्यजाखेलनमाह २३.



चतुरस्रंलिखेच्चक्रंचतुःषष्टिपदान्वितम् ॥
हंसपादाश्चतुष्कोणेमध्यकोष्ठचतुष्टये ॥ ३१० ॥

अब चार बाघ अट्ठावीस बकरीका खेल कहते हैं-पहिले नवरेखाखड़ी नव रेखा आड़ी लिखके चौंसठ घरका एक पट्ट निकालके चार कोनेके ऊपर और बीचके चार कोष्ठकमें हंसपाद निकालै ॥ ३१० ॥

अष्टाविंशत्यजानांतुपदेष्वंतिमपंक्तिषु ॥
स्थलंप्रकल्पयेत्पश्चान्मध्यव्याघ्रचतुष्टयम् ॥ ३११ ॥

पीछे अट्ठावीस बकरियोंको चारों तरफकी अंतिम पंक्तिमें बिठावै और चार व्याघ्रोंको बीचमें बिठावै ॥ ३११ ॥

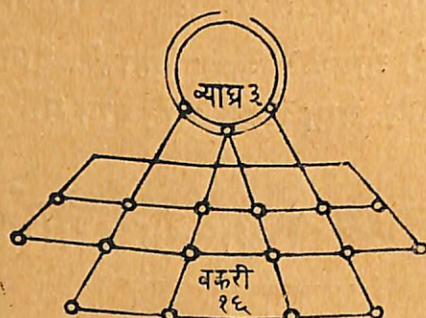
संस्थाप्यखेलनारंभःकर्त्तव्योबुद्धिमत्तरैः ॥
व्याघ्राणांबंधनंकुर्याच्चतुष्कोणेषुबुद्धिना ॥ ३१२ ॥

फिर खेलनेका आरंभ करै बकरीके पीछेका घर खाली होवे तो उस बकरी-को बाघ मार लेवे इस वास्ते अपनी बकरिको बचायके चार बाघोंको चार

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

कोनोंके ऊपर लायके बंद करै. बाघकी गति एक सीधीपंक्तिसे चारों तरफ जितने घर खाली होवें वहांतक जाती है. बकरीकी गति सीधी टेढ़ी एक घरकी है. यह गतिका भेद बाघ बकरीके चारों भेदमें जानै ॥ ३१२ ॥

अथव्याघ्रत्रयषोडशाजाखेलनमाह २४.



प्रथमंवर्तुलंकृत्वातिर्यक्रेखात्रयंतथा ॥
ऊर्ध्वरेखाचतुष्कंवैकृत्वायंत्रंसमालिखेत् ॥ ३१३ ॥
वर्तुलंमस्तकेयोज्यंतिर्यग्रेखाचहस्तवत् ॥
पादवदूर्ध्वरेखाचग्रंथयःपंचविंशतिः ॥ ३१४ ॥

अब तीन बाघ सोलह बकरीका खेल कहते हैं—पहिले एक वर्तुल मस्तक सरीखा निकालके उसके नीचे तीन रेखा हाथ सरीखी उत्तर दक्षिणकी करै और उस वर्तुलको संलग्न करके चार रेखा खड़ी पांव सरीखी करै. नरदां चलानेकी ग्रंथि पच्चीस करै ॥ ३१३ ॥ ३१४ ॥

व्याघ्राणांप्रथमंस्थानंमस्तकस्थपदेषुच ॥
अजानांषोडशानांतुस्थापनंहस्तपादयोः ॥ ३१५ ॥

बाघ बिठानेका स्थान वर्तुल संलग्न जो ग्रंथि तीन हैं वहां करै बकरियोंका स्थान हस्तपादोंकी ग्रंथिके ऊपर करै ॥ ३१५ ॥

खेलनेपूर्ववत्सर्वारीतिरत्रप्रकीर्तिता ॥
एवंव्याघ्रत्रयाणांहिखेलनंपरिकीर्त्तितम् ॥ ३१६ ॥

खेलनेकी सब पहिले तीन खेलमें जो रीति कही है वही जानना चाहिये ऐसा सोलह बकरीका खेल पूरा भया ॥ ३१६ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ लीलावतीखेलमाह २५.

आ·१ लं·२

प·५

उ·४ स·३

कृत्वाषोडशकोष्ठानिप्रतिकोष्ठेपदातयः ॥
पंचपंचचसंस्थाप्यातेष्वैकंधारयेद्धृदि ॥ ३१७ ॥

अब लीलावती खेल कहते हैं पहिले सोलह कोष्ठकनिकालके एकएक कोष्ठकमें पाँच पाँच नरदां रक्खे. चार नरदां चार दिशामें और एक मध्य भागमें इस रीतिसे रक्खे बाद तीन आदमी बैठें पीछे एक कहे कि, हम यहाँसे दूसरी जगह जाके बैठते हैं तुम जो नरद ध्यानमें रक्खोगे वह नरद देखे बिना कह देवेंगे. ऐसा कहके दूसरेस्थलमें जाके बैठे. पीछे दूसरा आदमी जो नरद ध्यानमें लेके पास बैठा है उसको दिखावे ॥ ३१७ ॥

ततोऽन्येनाक्षरवशाद्वक्तव्योहृदिधारितः ॥
आकारोईशकोणेचलकारश्चाग्निकोणके ॥ ३१८ ॥
सकारोराक्षसेवायौह्युकारश्चपकारकः ॥
मध्यभागेचविज्ञेयस्ततोवक्ष्यामिदोहरान् ॥ ३१९ ॥

दोहरा—आरमतछे अक्कलतणी, चतुरतणुछेकाम ॥
एहेसीमाथिएकले,तेनुलीलावतीनाम ॥ ३२० ॥
लंकागडनेगुंदरे,नामकनामेमोर ॥
सीतासरखिसुंदरी,रावणसरखोचोर ॥ ३२१ ॥
उठउठपरिभ्रहमसु, जइअमरापर्वत ॥
पंडचोपुछेपंडितने,तारीकेइउपरछेहद्द ॥ ३२२ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

ससासत्यनछोडिये,सतछोडेपतजाय ॥
सतनिबांधिपृथ्वी,उघाडेपतजाय ॥ ३२३ ॥
पपापीतनरंजनकीजिये,नहिंदासकेदेश ॥
प्रथमपेहेलोसमरिये,गौरीपुत्रगणेश ॥ ३२४ ॥

पीछे देखनेवाला जिस दिशा की नरद ध्यानमें रक्खी होवे उस उस दिशाके अक्षर मूजब गुजराती भाषाके दोहरे बोले. पीछे दूर बैठनेवाला उन दोहरोंके अक्षर मूजब नरद आयके कहे. उदाहरण-किसी पुरुषने यंत्रमें जहां एकका अंक है उस नरदको ध्यानमें रक्खा तब दूसरेने ससा १ उठ २ लंका३ यह तीन दोहरे बोले सो ध्यानमें रक्खी हुई नरदका ज्ञान भया ॥ ३१८ ॥ ॥ ३१९ ॥ ३२० ॥ ३२१ ॥ ३२२ ॥ ३२३ ॥ ३२४ ॥

अथनवग्रामशतकंकरीखेलमाह २६.

लङ्कागढ़

गांव १ गांव२ गांव३ गांव४ गांव५ गांव६ गांव७ गांव ८





जलदुर्ग



गांव८ गांव७ गांव६ गांव५ गांव४ गांव३ गांव २ गांव१



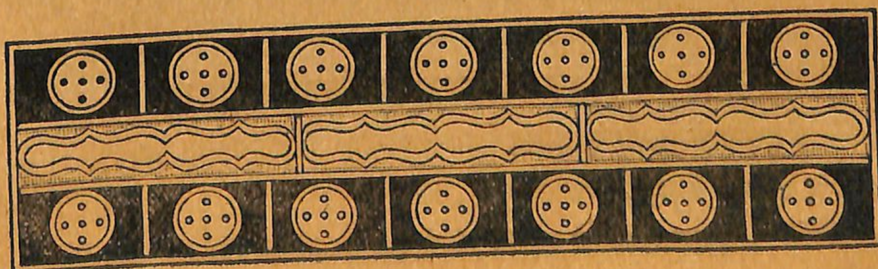
गुर्ज्जरेचप्रसिद्धंवैनवग्रामाख्यखेलनम् ॥
नवग्रामाणिप्रत्येकंप्रत्येकंपंचशर्करा ॥ ३२५ ॥
द्वाभ्यांक्रीडाहिसंप्रोक्ताचैकैकांशर्करांक्षिपेत् ॥
शर्कराहीनग्रामस्यसन्मुखस्थंचयद्भवेत् ॥ ३२६ ॥
ग्रामंतत्रस्थितांसर्वांशर्करांचसमाहरेत् ॥
शर्कराहीनकेग्रामद्वयेप्राप्तेऽन्यखेलनम् ॥ ३२७ ॥
प्राप्यंशेशर्कराधिक्यंयस्यतस्यजयंविदुः ॥
अत्रार्थेकेनचित्प्रोक्तौश्लोकौवैदोहराभिधौ ॥ ३२८ ॥
दोहरा लंकागढ़नेगुंदरे,थैथैनाचेमोर ॥
सीतासरखीसुंदरी,रावणसरखोचोर ॥ ३२९ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

जलकुकडीजलमेंबसे, चंद्रबसेआकाश ॥
तेतेनादिलमेंबसे, चतुरकरोविचार ॥ ३३० ॥

अब सौ कंकरी नव गांवका खेल कहतेहैं-यह खेल गुजरात देशमें प्रसिद्ध है और दो आदमियोंसे खेलाजाताहै एक लंका गढ़के ऊपर बैठे दूसरा जलदुर्गके पास बैठे एकएकके ताबेमें ग्राम आठ आठ करे हर ग्राममें पाँच पाँच कंकरी रक्खे. पीछे एक खेलनेवालोंमेंसे कोईभी एक ग्रामकी पाँच कंकरी उठाके आगेके घरोंमें एकएक रखता जावे. पाँच पूरी होवें तब उसके अगाडीके गाँव एकमेंसे पाँच कंकरी उठाके आगेके गावोंमें पहिले सरीखे रखता जावे. ऐसा करते करते जिस जगह पर हाथकी कंकरी पूरी होवे और आगेका घर भी खाली होवे तो उन खाली गाँवके सामनेके गांवमें जितनी कंकरी होवें वे सब ले लेवे तो वह गाँव जीता कहा जायगा और वे सब कंकरी अपने गढ़में रक्खे बाद और पहिले प्रमाणसे खेलते जावे. परंतु जो जीता हुआ गाँव है उसमें कंकरी रक्खे नहीं. पहिले सरीखा करता जावे ऐसे खेलते खेलते जब इसका दांव बंद होवे तब सामनेवाला दांव लेवे. दांव बंद कब होता है सो कहते हैं. एक गाँव खाली आया उसके आगेकाभी गाँव खाली होवे तब कंकरी भरनेकी जगह रही नहीं और कंकरीभी हाथमें रही न होवे तब दाव बंद हुआ जानै अगर एक ग्राम खाली आया और उसके आगे लंकागढ़ या जलदुर्ग आवे तो भी दांव बंद हुआ जानै अब इन्ही नव ग्रामके खेलमें पहिले लीलावतीका खेल कहा उसी रीतिसे एक सोलह गाँवमेंसे एक ग्राम मनमें धारके रक्खे पास बैठा होवे उससे कहे तब वह जिस गढ़का ग्राम होवे उस गढ़का दोहरा बोले जितनी संख्याका गाँव होवे उतनी चिपटी बजाता जावे और दोहरा कहे तब तीसरा आयके देखेबिना उस दोहरा और चिपटीके अनुसार मनमें धरा हुआ गाँव कह देवे ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥ ३२७ ॥ ३२८ ॥ ३२९ ॥ ३३० ॥

अथनिधिक्रीडामाह २७.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अतःपरंप्रवक्ष्यामिनिधिक्रीडनलक्षणम् ॥
अत्युत्तमेकाष्ठपीठेपार्श्वयोर्मनुगर्त्तकान् ॥ ३३१ ॥

अब गल्लेका खेल कहता हूं. संस्कृतमें गल्लेका नाम निधि है. पहिले काष्ठका पीठक लंबा हाथ १। चौड़ा हात. ॥ बरोबर बनायके उसमें सात घर गोल ऊपर, सात घर गोल नीचे करे बीचमें तीन घर लंबे करे ऐसा उत्तम गल्ला बनावे उसके चौदा, घर हैं ॥ ३३१ ॥

मध्येस्थानत्रयंकृत्वाद्वाभ्यांक्रीडेयमीरिता ॥
उभयोःसप्तसप्तैवगर्त्तकास्तेषुसंक्षिपेत् ॥ ३३२ ॥

उसे दो आदमी खेलें और सात सात घरोंमें अपना अपना द्रव्य रक्खें. द्रव्य राजा वा कोई बड़ा आदमी होवे वह मोती रुपये पावली दोअनी पैसे जो शक्ति होवे वो लेवे. गरीब होवे तो कौड़ी वा इमलीके बीजसे खेले. अब उन घरोंमें पहिले पूर्वोक्त द्रव्य ॥ ३३२ ॥

पंचपंचपदार्थानिरोप्यताम्राद्यथारुचि ॥
स्वभागात्पंचसंगृह्यक्रीडांकुर्यात्ततःपरं ॥ ३३३ ॥

पाँच पाँच रक्खे. दोनों आमने सामने बैठें पहिले एक आदमी अपने तरफका एक गल्ला फोड़के जिसको फोड़ा उसमें नहीं डालना ॥ ३३३ ॥

एकैकंप्रक्षिपेद्गर्तेशून्यगर्त्ताग्रगद्वयोः ॥
पदार्थानिचगृह्णीयात्क्रीडाऽन्यस्यततःपरं ॥ ३३४ ॥

आगेके एकएक घरमें एकएक डाले पाँच पूरे हुए बाद फिर उसके आगेका गल्ला फोडे पहिले सरीखे एकएक डालता जावे. डालते डालते सामनेवालेकी पंक्तिमेंका घर या अपनी पंक्तिमेंका घर खाली आजावे तो उस खाली घरके आगेके घरमेंका और उसके सामनेके घरमेंका ऐसे दोनों दाम उठा लेवे फिर सामनेवाला अपने घरसे चले दाम कम वा जास्ती होवे तो फिक्र नहींहै परंतु पहिलेसरीखी चाल चलते घर खाली आवे तो आगेके आमने सामनेके दोनों घरोंका दाम उठा लेवे ॥ ३३४ ॥

यस्मिन्गर्तेचतुःसंख्यास्तागावःकीर्त्यतेबुधैः ॥
स्वस्वखेलनवेलायांग्रहीतव्याह्यसंशयम् ॥ ३३५ ॥

खेलते खेलते जिस घरमें चार दाम होवें उसको गाय कहते हैं वह गाय जिसके खेलमें आवे वह उसे निःसंशय ले लेवे ॥ ३३५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

शून्येगर्तद्वयेऽन्यस्यखेलनंपरिकीर्तितम् ॥
यस्यपक्षेशून्यगर्ताधिक्यंतस्यपराजयः ॥ ३३६ ॥

और खेलते खेलते जो कभी दो घर खाली आवें तो दांव बंद हुआ. तब सामने वाला खेले. सामनेवालेका खेल पुरा हुए बाद फिर वह खेले इस खेल में सात दांव लेनेमें जीतताहै हारजीत इसतरह है कि जिसका पदार्थ खेलते खेलते पैंतीससे कम होवे वह हारा जास्ती होवे वह जीता कहावेगा परंतु उसे एकही वक्तमें हारा नहीं जानना सो कहते हैं जो हारा है उसके जितना दाम कम होवे उतना पाँचके हिसाबसे घर कमी रखना उस घरको नरककुंड कहते हैं वहां खेलना नहीं ऐसे जो सातों घर हारगया उसे हारा जानना ॥ ३३६ ॥

एकैकस्यपदार्थस्यप्रक्षेपाह्लघुखेलनम् ॥
पंचपंचप्रचिक्षेपात्खेलनंबृहदुच्यते ॥ ३३७ ॥

इस खेलमें जो कभी बड़ा खेल खेलना होवे तो पहिले जिस घरसे उस खेलकी पाँच संख्या हाथमें लेके आगेके घरमें डाले फिर उसके आगेके घरकी पाँच संख्या लेके उसके आगेके घरमें डाले ऐसे डालते डालते जहाँ खाली घर आ जावे तब उस खाली घरपर हाथ फिरायके उस हाथ फिरानेको चाटना कहते हैं आगेके घरकी और उसके सामनेके घरकी सब संख्या जीतलेवे बाद सामनेवाला इस रीतसे खेले पहिले खेलमें नव बार दाँव लेनेसे बीस संख्यापदार्थको जीतता है सामनेवालाभी नवें खेलको बीस संख्यापदार्थको जीतता है ऐसेही तीसरी बारभी नवें दाँवमें दश पदार्थको जीतता है बाद बुद्धिकी चातुर्यतासे जीतना होता है. बाद खेल जब थोड़ा रह जावे तब घर जो फोड़े सो अपनी बाजूका फोड़े सामनेवालेका फोड़े नहीं ॥ ३३७ ॥

अथषट्पंचाशद्भ्रमात्मिकींक्रीडामाह २८

(१)

	४	३	२	१	
१	७	६	५	४	४
२	८	छपन्नके फेरे का यंत्रस्वरूप. बिंदु४०		३	३
३	९			२	२
४	१०	११	१२	१	१
	१	२	३	४	

(२)

	दांवका प्रस्तार १ बिंदु ४४		

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

(३)

दांवका
प्रस्तार २
बिंदु ४८

(४)

दांवका
प्रस्तार ३
बिंदु ५२

(५)

दांवका
प्रस्तार ४
बिंदु ५६

(६)

चौरसीके
फेरेका यंत्र
स्वरूप
बिंदु ६८

अतःपरंप्रवक्ष्यामिषट्पंचाशद्रमात्मिकीं ॥
क्रीडांचतुरशीतिंचचमत्कृतिकरांपराम् ॥ ३३८ ॥
चतुरस्रंलिखेच्चक्रंकोष्ठैर्द्वादशभिर्युतम् ॥
द्रव्यैर्धान्यैःशर्कराभिःतेष्वेकेनचखेलनम् ॥ ३३९ ॥

अब छप्पन्ना फेराका खेल कहता हूं बारह कोठेका चतुरस्र यंत्र निकालके गेहूँ आदि धान्यके कण ५६ लेवे अथवा पैसे रुपये कंकरी जैसी योग्यता होवे वैसा इनमेंसे कोईभी एक पदार्थ ५६ संख्या गिनतीकी लेके खेलकी रचना करे ॥ ३३८ । ३३९ ॥

षट्पंचाशत्प्रसंख्यानैरादौपूर्णाब्धिपूरणम् ॥
ततःषोडशभिःपूर्णकर्तव्यंहिस्वबुद्धिना ॥ ३४० ॥

अब बारह कोठेका जो यंत्र है उसकी दिशामें जो कोठे ८ हैं उनमें पाँच पाँच इस प्रकार रक्खै कि चार कोठोंमें तीन तीन संख्या, चार कोष्ठकोंमें दो दो संख्या, विदिशामें जो कोठे ४ हैं उनमें पाँच पाँच संख्या रक्खै सब संख्या ४० भई बाकी १६ संख्या रहीं उनके विभाग ४ करके रक्खै ॥ ३४० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पंचवारंचतुर्दिक्षुसंख्यापंचदशैवहि ॥
अयमेवचमत्कारोन्यूनाधिक्यंनदृश्यते ॥ ३४१ ॥

अब उन चारों दिशाओंकी समूह पंक्तिमें जिधरसे गिने उधरसे संख्या पंद्रहकी होती है तब ऊपर लिखे हुये विभाग ४ हैं उनमेंका एक विभाग चार संख्याका लेके उन बारह समूहमें एकएकमें एकेक मिलानेसे वह चारका विभाग अंदर मिल जाता है और चारों दिशाकी समूह संख्या पंद्रह रहती हैं ऐसा चारबार खेले तो वे सोलह कंकरी बारह समूहमें मिल जाती हैं. परंतु चारों दिशाकी समूह संख्या पंद्रह रहती है तब यहाँ आश्चर्य यह है कि सोलह मिलानेके पहिले भी चारों दिशाकी समूह संख्या पंद्रह थी और सोलह मिलाये बादभी संख्या पंद्रह भई तब सोलह मिलाये वे कहां गये इसको छपन्नाका फेरा कहते हैं. तैसा संसारमें आयुष्य क्षीण होती है सो मालम नहीं पड़ता है और इसी रीतिसे चौरासीके फेरेकाभी खेल है इस खेलमें चारों दिशाकी समूह संख्या छब्बीस होती हैं. सोलह मिलावै उसका उदाहरण दिखानेके वास्ते ऊपर प्रस्तारचक्र ६ बताये हैं ॥ ३४१ ॥

अथइष्टदेवताप्रदर्शनखेलमाह २९

चक्र १			चक्र २			चक्र ३		
१	२	३	१	२	३	१	२	३
जासूंद सूर्य	बर्वा भैरव	हजारा दत्तात्रेय	गुलखरी राम	रायवेल सरस्वती	कोयल शनि	चंबेली हनुमान	सेवती चंद्र	गुलसोना बुध
चंपा देवी	ऋतवसं· कामदेव	गंदा गुरु	गुलहजा लक्ष्मी ·	कनेर मंगल	बोरसरी पीर	गुलाब विष्णु	केतकी गौरी	कवडा पार्वती
मोगरा कृष्ण	गुलह· लक्ष्मी	गुलखरी राम	मोगरा कृष्ण	गुलाब विष्णु	चंबेली हनुमान	मोगरा कृष्ण	चंपा देवी	जासुंद सूर्य
केवडा पार्वती	गुलदाउ· पित्री	चर्चरी नृसिंह	गंदा गुरु	पोहप नाग	सोंजाय कालिका	बोरसरी पीर	पाठला गणपती	मोरआं· अंबा
केतकी गौरी	कमल शिव	पोहप नाग	ऋतवसं· कामदेव	कमल शिव	पाठला गणपती	कनेर मंगल	कमल शिव	गुलदाउ· पित्री
गुलाब विष्णु	कनेर मंगल	रायवेल सरस्वती	चंपा देवी	केतकी गौरी	सेवती चंद्र	गुलहजा· लक्ष्मी	ऋतवसं· कामदेव	बर्वा भैरव
गुलसोना बुध	मोरआं· अंबा	जुई शुक्र	हजारा दत्तात्रेय	चर्चरी नृसिंह	जुई शुक्र	कोयल शनि	सोंजाय कालिका	जुई शुक्र
सेवती चंद्र	पाटला गणपती	सोंजाय कालिका	बर्वा भैरव	गुलदाउ· पित्री	मोरआं· अंबा	रायवेल सरस्वती	पोहप नाग	चर्चरी नृसिंह
चंबेली हनुमान	बोरसरी पीर	कोयल शनि	जासूंद सूर्य	केवडा पार्वती	गुलसोना बुध	गुलखरी राम	गंदा गुरु	हजारा दत्तात्रेय
गणपती	लक्ष्मी	पद्म	गणपती	पद्म	लक्ष्मी	गणपती	पद्म	लक्ष्मी

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अतःपरंप्रवक्ष्यामिइष्टदर्शनखेलनम् ॥
स्वतःसिद्धानिचक्राणिकुसुमैःपूरितानिच ॥ ३४२ ॥
इष्टदेवसमेतैश्चप्रथमेधारणंह्रादि ॥
द्वयोःप्रश्नप्रयोगेनकथयेद्धृदिसंस्थितम् ॥ ३४३ ॥
दोहा–ग्वाल एक गोपी द्विती, गगन लोकं पलचार ॥
पाप पाँच पगहे छठो, लालसात लप आठ ॥
लागेतो यह जानिये, दीजे नवम बताय ॥ ३४४ ॥

इतिश्री ह. बृ. षष्ठेमिश्रस्कंधेक्रीडाकौ॰षोडश
विधक्रीडानिरूपणंनामप्रकरणम् ॥ ७ ॥

अब इष्टदेव और मनमें धरा हुआ फूल बतानेका खेल कहता हूं आगे जो तीन चक्र लिखेहैं उनमेंके पहिले चक्रमें जो देवता अथवा फूल लिखे हैं उनमेंसे एक मनमें रक्खे फिर दूसरा आदमी उसको पूंछे कि तुमने जो मनमें धरा-है वह इस दूसरे चक्रके कौनसे कोष्ठकमें है सो पूंछके उसे मनमें रक्खे पीछे वैसाही तीसरे कोष्ठकमें भी पूंछके पंक्तिध्यानमें रखके दोहेके प्रमाणसे देव और फूल बतादेवे. उदाहरण. किसी आदमीने सेवतीका फूल मनमें धराहै सो पूंछनेसेदूसरे चक्रमें लक्ष्मीकी पंक्तिमें है तीसरे चक्रमें पद्मकी पंक्तिमें है तब लप आठ ऐसा दोहरेमें लिखा है इस वास्ते आठवीं सेवती मनमें धारी है ऐसा कह देवे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ३४४ ॥

इति सोलह तरहके खेल संपूर्ण भये प्रकरण ॥ ७ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ बुद्धिबलक्रीडामाह।

अतःपरंप्रवक्ष्यामिखेलंबुद्धिबलाह्वयम् ॥
खेलोयंसर्वखेलेषुनृपवदुत्तमोत्तमः ॥ ३४५ ॥

अथ शतरंज ऊर्फ बुद्धिबल खेल प्रकरणम्-बुद्धिबलखेलप्रशंसा. जगत्में मनोरंजन खेल बहुत हैं तथापि ज्ञानकी वृद्धि और स्वाभीप्सित प्राप्तिके विषयमें सदसद्विचार करनेका अभ्यास अनायाससे वृद्धिगत होके विश्रांति होना बहुत उत्तम है ऐसा विचार किये तो यह गुण बुद्धिबल खेलमें बहुत करके देख पड़ता है. इसवास्ते पूर्वकालमें जो बादशाह राजा और विद्यमान जो उत्तम मंडली है उन्होंने विश्रांतिका यही उपाय निश्चय किया है और इसके ऊपर बड़े बड़े ग्रंथभी हैं. जगत्में प्रौढ़ अप्रौढ़खेल बहुत हैं उनमें यह खेल प्रौढ़ है और इसमें बुद्धिकी परीक्षा होती है ॥ ३४५ ॥

दोहरा-कौनघटावेहुनरदश, दशगुणकेतनोगंज ॥
दुःखपर्यायसुबुधबधन, कहोखेलसतरंज ॥ ३४६ ॥

और किसी कविके (दोहरा) हुन्नरको कौन घटाता है ? दशसे दशको गुणित किये तो कितनी राशि होवेंगी? दुःखका पर्यायशब्द कौनसा ? और उत्तम प्रकारसे बुद्धि बढ़ानेको क्या करें ? ऐसे शिष्यने चार प्रश्न पूछे तब गुरु कहते हैं कि, "खेल शतरंज" इन छः अक्षरोंमें उत्तर दे दिये उसका पुनः विस्तार विद्याको कौन घटाताहै? उत्तर--खेल. दशसे दशको गुणित किये तो राशि कितनी भई ! उत्तर-शत. दुःखका पर्याय शब्द कौनसा ? उत्तर--रंज. बुद्धि काहेसे बढ़ेगी उत्तर--खेल शतरंज. तात्पर्य यह कि इस खेलमें बुद्धिकी वृद्धि और बुद्धिकी परीक्षा होती है इस वास्ते यह खेल सबसे उत्तमोत्तम है ॥ ३४६ ॥

अथ बुद्धिबलक्रीडनोत्पत्तिमाह।

पुराश्रीशशिनाथाख्योविद्वान्विप्रःसुबुद्धिमान् ॥
तत्पुत्रोव्रजलालाख्यःपितृवद्गुणवानभूत् ॥ ३४७ ॥

अब इस खेलकी उत्पत्ति और नामका अर्थ कहते हैं बुद्धिबलका खेल किसने उत्पन्न किया इसका शोध करते करते "मतलयलूउलम, व मजमयलूफनून" नाम फारसी ग्रंथमें इसकी उत्पत्तिका विषय सपड़ा उसका भाषांतर यहां लिखता हूं. पूर्वकालमें यह बुद्धिबलका खेल शशिनाथ पिता धर्यनाथ नामका कोई

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

विद्वान् हिंदुस्थान देशमें था उसका पुत्र व्रजलाल नाम करके था उसने यह खेल उत्पन्न किया इसका कारण ऐसा भया कि हिंदुस्थान देशमें कोई चक्रवर्त्ती राजा था. उसने अपनी अवस्था युद्ध प्रसंगमें देश जीतनेमें और शूरत्वमें निकाली.पीछे थोड़े वर्ष पश्चात् शरीरको बड़ा रोग होनेसे पहिले कर्म छूट गये; परंतु उस राजाको शूरत्वका व्यसन था इस वास्ते उस रोगअवस्थामें कालका निर्गम बड़े संकटसे होने लगा तब अपने प्रधान और विद्वान् लोगोंको बुलाकर कहा कि, इस समय शरीरकी रोगअवस्था होनेसे मेरा व्यसन (अश्वारूढ़ होके युद्ध प्रसंगमें जायके शत्रुओंको जीतना)छूट गया उससे काल निर्गम होता नहीं है इस वास्ते कोई ऐसी तरकीब निकालो कि,जिसमें प्रत्यक्ष युद्धविना मेरा व्यसन पूरा होवे ऐसा राजाका वचन सुन व्रजलाल नामक विद्वान्ने वह आज्ञा शिरपै लेके मुजरा करके विनती बहुत की कि,आपने जो विचार किया उसकी युक्ति मेरे पास है ऐसा कह अपने घर आकर स्वकपोलकल्पित जो बुद्धिबलका खेल सो राजाको दिखाया राजा बहुत प्रसन्न होकर उस खेलकी सब रीतियाँ समझके पीछे उस खेलमें अपनी आयु पूर्ण की ॥ ३४७ ॥

तेनेयंनिर्मिताक्रीडाबलाबुद्धिबलाह्वया ॥
नृपस्यराजपत्न्याश्चतुष्टयेनिर्बलाभिधा ॥ ३४८ ॥

राजाके मरे बाद रानीको भी उसखेलमें समझथी सो बुद्धिबल खेलमें अपने दिन निकालतीथी. बाद किसी समयमें रानीका पुत्र युद्धमें गया था बहुतदिनोंसे उसकी कुछ खबर नहीं आई तब रानी चिंता करने लगी. इतनेमें एक विद्वान् ब्राह्मण आकर रानीका वृत्तांत सुनके कहता है कि, हे रानी ! आप सब जानती हो. दिग्विजय करनेमें शरीरको बहुत परिश्रम लेना पड़ता है उसमें रात्रि दिन चित्त रखना ठीक नहीं है इस वास्ते बुद्धिबल शतरंजका खेल एक निर्बली खेलके प्रकार है सो श्रवण करो. तब रानीने उस खेलकी रीति सब सुनके खेलनेका अभ्यास करके उस विद्वान्के साथ खेलते खेलते कुछ दिन बीतनेके पश्चात् एक दिन रानीका खेल बलिष्ठ हुआ तब कहने लगी कि, अब राजाके ऊपर मात होनेका समय आया है. यह रानीका वचन सुन विद्वान्ने कहा कि, आपके मुखसे आज यह बात निकली है तो राजपुत्रको कष्ट प्राप्त हुये बहुत दिन भये हैं. परंतु आपसे प्रत्यक्ष कहनेको किसीकी शक्ति हुई नहीं आज आपके मुखसे बात निकली तब मैंने भी निवेदन किया रानीने पुत्रका वृत्तांत सुनके पुत्र शोकमें भी यह बुद्धिबल शतरंज खेलनेमें अपनी शेष आयु पूर्ण की उस दिनसे भूमिके ऊपर इस खेलकी

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

प्रवृत्ति भई और इस ग्रंथ निर्माण कालका प्रमाण शक संवत्सर मालूम नहीं पड़ता है; परंतु फ़ारसी ग्रंथमें "गुलिस्ताँ" नामक ग्रंथ हिजरी सन् ६५६ में "शेख़शादीशीराजा" ने किया है उस ग्रंथमें भी इस शतरंज खेलका दृष्टांत दिया है और ऐसा एक लेख देखनेमें आया है कि, हिंदुस्थानके एक राजाने यह खेल ईरानके राजाको पठाया उसको १३०० वर्ष भये इस कारणसे यह खेल पुरातन है ऐसा सिद्ध होताहै ॥ ३४८ ॥

अथ शतरंजराज्यवर्णनम्।

एकस्मिन्नगरेनृपौससचिवौवीरौसदासंगरे
हस्त्यश्वोष्ट्रपदातिभिःपरिवृतौपद्भ्यांसदाधावतः ॥
युद्धंतौकुरुतःपरस्परमिदंनित्यंहिशस्त्रंविना
चित्रंतावमरौविचित्रमितियत्सैन्यंमृतंजीवति ॥ ३४९ ॥

अब शतरंजका राज्य वर्णन करते हैं—कोई कवि अद्भुत अलंकारसे बुद्धि बलक्रीडाका वर्णन करता है. अहो यह कितना आश्चर्य है ! कि, एक नगरमें दोनों राजा अपने अपने प्रधान सहवर्तमान युद्धमें बड़े शूर और हाथी घोड़े ऊँट सिपाही पास हैं उनके ऊपर बैठे विना पाँवसे दौड़ते हैं और शस्त्रविना परस्पर युद्ध करते हैं और यह बड़ा आश्चर्य है कि, वे दोनों राजा अमर हैं उनकी मृत सैन्य पुनः जीवित होती है ॥ ३४९ ॥

अथ शतरंजपटादिवर्णनम्।

नृपाहतांराजनीतिमुक्त्वाशंकरनंदनः ॥
श्रीनीलकंठोवदतिक्रीडांबुद्धिबलाश्रिताम् ॥ ३५० ॥

अब शतरंजका पट वर्णन करते हैं—शंकर पंडितके पुत्र नीलकंठ पंडित राजाको मान्य ऐसी राजनीति वर्णन करके अब बुद्धिबलक्रीडा वर्णन करते हैं ॥ ३५० ॥

पट्टेपटेवाभुविवाथकार्यप्रागग्ररेखानवकंतथैव ॥
उदग्दिगग्रंनवकंसमानमेवंचतुःषष्टिपदंहितत्स्यात् ॥ ३५१ ॥

उसमें पहिले पट कैसा करे सो कहते हैं—पट्ट कहिये काष्ठके पीठकके ऊपर अथवा पट कहिये वस्त्रके ऊपर अथवा भूमिके ऊपर पूर्वाग्र रेखा नव करे वैसीही उत्तराग्र रेखा नव करे ऐसा चौसठ कोष्ठकका पट होताहै ॥ ३५१ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

कोणेष्वथोहंसपदैस्तदंकयेत्तत्पंक्तिगंदिक्षुपदद्वयंद्वयम् ॥
मध्येचतुष्कंचसमंक्यतत्रस्थाप्यंचसांग्रामिकसैन्ययुग्मम् ३५२॥

पीछे उस पटके चार कौनेके ऊपर चार हंसपद निकाले और चार दिशामें दोदो हंसपद निकाले बीचके चार कोष्ठकमें चार हंसपद निकाले ऐसा पट सिद्ध करके पीछे दोनों सेनाओंको बिठावे ॥ ३५२ ॥

अंत्येष्वष्टपदेषुमध्यपदयोराजाचमंत्रीतयोरुष्ट्रौपार्श्वगतौतयो-
रपितथाबाहौतयोर्दंतिनौ ॥ तल्लग्नाधरपंक्तिगावसुमितास्था-
प्याबुधैःपत्तयःस्थाप्यंचात्रपरत्रसैन्यमुभयंचैवंरणायोद्यतम् ३५३

पटके अंतके जो आठ घर हैं उनमें दोनों तरफ तीन तीन घर छोडके दक्षिण हंसपादके ऊपर राजाको बैठावे और बाएँ हंसपादके ऊपर प्रधानको बैठावे और राजाके पास ऊंट, ऊंटके पास घोड़ा, घोड़ेके पास हाथी बैठावे. वैसाही प्रधानकी तरफसे ऊंट, घोड़ा, हाथी ऐसे आठों घरोंमें आठ मोहरे बिठायके उनके आगे प्रत्येक घरमें एक एक प्यादा बैठावे. दूसरे खेलने वालेने भी इसी प्रमाणसे बुद्धिबल मांडना तो बत्तीस मोहरे अपनी अपनी जगहोंमें बैठाये जाते हैं ॥ ३५३ ॥

कालिदासः ।

भूपद्वंद्वंसचिवयुगलंवारणाश्वोष्ट्रकाणांयोग्यंयोग्यंकमलनयनेप
त्तयःषोडशैव ॥ तत्रत्यानांस्थलमिभहयोष्ट्रप्रधानप्रभूणांवक्ष्येहं
तेपदगतिगणस्यापियुद्धंगतिंच ॥ ३५४ ॥

ऐसा इस खेलमें राजा २, प्रधान २, हाथी ४, घोड़े ४, ऊंट ४ और प्यादे १६ ऐसे सब मोहरे ३२ होते हैं. अब इनके बैठनेका ठिकाना और चलनेकी गति और युद्धकी रीति सब वर्णन करता हूं ॥ ३५४ ॥

नागौकोणेष्वनुगजपथाश्वौसमीपेतयोष्ट्रौमध्येमंत्रीनरपतिवरौ
पत्तयश्चाग्रभागे ॥ मध्येकोष्ठान्रदपरिमितान्रम्यरूपेविहाय
प्रांतेपंक्तिद्वयमपिपरंसन्मुखंस्यात्तथैव ॥ ३५५ ॥

चार कोनेमें चार हाथी बैठावे हाथियोंके पास घोड़े, उनके पास ऊँट दोनों ऊँटोंके बीच प्रधान और राजा और सबोंके आगे एकएक पैदल बैठावे बीचमें बत्तीस कोष्ठक युद्ध खेलनेके लिये छोड़के सामनेकी तरफ भी इसी प्रकार नरदा बैठावे ॥ ३५५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

नीलकंठः।

अनावृत्तिपरावृत्तिभिदाक्रीडाद्विधेष्यते ॥
पदतत्स्थाप्यभेदेनतत्राप्याद्याद्विधामता ॥ ३५६ ॥

यह क्रीडा दो प्रकारकी है. एक अनावृत्ति कहिये जो मोहरा रक्खे उसको पीछा फिरावे नहीं आगे जावे और एक परावृत्ति कहिये मोहरा जायके पीछा फिरना स्थानकी योजनासे उसमें भी अनावृत्तिक्रीडा दो प्रकारकी है ॥ ३५६ ॥

सचिवाग्रगतौततःपदातीसचिवौतावनुतत्रचालनीयौ ॥
पदयुग्ममितीहसंप्रदायःपदगोन्योपिपरैःप्रवर्त्यतेत्र ॥ ३५७ ॥

सो कहते हैं खेलते समय पहिले दोनों प्रधानके आगे जो प्यादे हैं उनको चलावे बाद प्रधानको चलावे उसमें पहिले दो दो घर चलाना ऐसा एक संप्रदाय है और एकएक घर चलाना ऐसा भी संप्रदाय है ॥ ३५७ ॥

गतागतेहयोष्ट्रयोर्नचांतरानिवर्तकः ॥
पुरःस्थिताहयादयोगजस्यतेनिवर्तकाः ॥ ३५८ ॥

और इस खेलमें ऐसा नियम है कि ऊंट और घोड़ा इन दोनोंको आने जानेमें दूसरा रोकनेवाला नहीं है और घोड़ा आदि सब मोहरे हाथीके आगे रहें तो हाथीको रोक सकते हैं ॥ ३५८ ॥

मंत्रिणःपृष्ठकोणस्थौस्थाप्यौपत्तीस्थिरावुभौ।
तथाक्रमेलकस्यापिपश्चाच्छृंखलगावुभौ ॥ ३५९ ॥

अब दो प्रकारका व्यूह कहते हैं–मंत्रीको आगे बढायके उसके पीछेके दो कोने ऊपर दो प्यादे रक्खै उसी तरहसे ऊंटके पीछे शृंखला सरीखे दोनों प्यादे रक्खे ॥ ३५९ ॥

व्यूहद्वयमिदंचक्रव्यूहवत्परमारणम् ॥
द्वित्रिप्रकारोद्यमनंदुरोखशःप्रकीर्तितः ॥ ३६० ॥

यह दोनों व्यूहसे चक्रव्यूह सरीखा शत्रुको मारनेके वास्ते ऐसे दो तीन प्रकारसे उद्योग करे उसको दुरोखस चाल कहते हैं ॥ ३६० ॥

परस्यराज्ञोभिमुखंद्विपंसंस्थाप्यमध्यतः ॥
स्वीयान्यस्यापसरणात्काटीशःसप्रकीर्तितः ॥ ३६१ ॥

अब काहाढशेहेका लक्षण कहते हैं–सामनेवाले राजाको जैसी किस्तलगे

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

वैसा मोहरा रखके उन दोनोंके बीचमें जो अपना मोहरा है उससे सामने वालेके सबल मोहरेको मारके शहकाढ ऐसा कहे इस खेलको काटीश काहाडशे है ऐसा कहते हैं ॥ ३६१ ॥

नसांग्रामिकःकोपिसंस्थापनीयोविनासंश्रयंसंश्रयोनीचइष्टः ॥
नवैसंश्रयोभूपतेरन्यइष्टोनवामारणंभूपतेस्त्विष्टमेव ॥ ३६२ ॥

इस खेलमें आश्रय विना निर्बल नरद रक्खै नहीं और आश्रय नीचका भी होवे तथापि इष्ट है राजाको किसीका आश्रय अपेक्षित नहीं है और राजाको मारना वह भी इष्ट नहीं है ॥ ३६२ ॥

संरोधनंराजजयोमतोऽत्रतदर्धतैकाकितयाप्रदिष्टा ॥ साचेच्चतुः
षष्टिमिताक्रमेणस्युर्यस्यसोप्यत्रपराजितःस्यात् ॥ ३६३ ॥

इस खेलमें जीतनेका लक्षण कहते हैं—खेलमें सामने वालेके राजाको रोक लिया तो अपना जय हुआ जानै. यदि सब मोहरे मरगये हों केवल राजा अकेला रहगया होवे तो अर्ध जय जानै; परंतु जिसके मोहरे जीवते हैं उस मोहरेकी पदगति संख्या चौसठ होवे तो पराजय जानै ॥ २६३ ॥

राजाविरुद्धेशयुतोनचेत्स्यान्नचास्यपक्षेगतिमान्द्वितीयः ॥
प्रमापयेत्सोथविपक्षपक्षेसमीपगंस्वस्यनिरोधनक्षमम्॥३६४॥

अब जिस खेलमें अपने राजाके साथ सामनेवालेका राजा निकट न होवे और अपना दूसरा मोहरा जो है उसको चलनेकी जगह नहीं है तब अपने राजाको रोकके सामनेवालेके मोहरे जो बैठे हैं और वे बलवान् हैं तथापि उस मोहरेको मारके राजा अपने फिरने की जगह कर लेवे ॥ ३६४ ॥

निरुध्यमानस्यनृपस्यसार्थेशिष्येतयद्येकतरस्तदैव ॥ तत्क्री-
डकःसंगणयेत्प्रतीपांस्तेष्वात्मनोद्वावथतान्द्विनिघ्नान् ॥ ३६५ ॥

अब जिस खेलमें अपना राजा शत्रुसेनामें बंद हो गया है और अपना मोहरा एक बाकी रहा है तब क्रीडा करनेवाला सामनेवालेके जो मोहरे हैं उनकी गतिपद संख्या और अपने मोहरेकी गतिपद संख्या यह दोनों संख्या भेली करके दुपट करै ॥ ३६५ ॥

कृत्वातदंकान्गणयेत्प्रतीपक्रीडाश्चतुःषष्टिमिताःसहीनः ॥
तन्मध्यएवास्यपराजयःस्यात्ततोधिकोसौविपरीतकश्च ॥ ३६६ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पीछे वह संख्यांक जो हुआ वह अंक चौसठके बरोबर होवे तो क्रीडा करनेवाला हीन जानना चाहिये चौसठसे वह संख्या कम होवे तो पराजय जानै और चौसठसे पूर्वांक अधिक होवे तो जय जानै ॥ ३६६ ॥

भूपेदृष्टिर्यस्यकस्यापिकिस्तिःस्यातामन्येशःसमुच्चारयंति ॥
खेलोयस्मादासुरोदिव्यदृष्टेस्तस्मादत्रप्राकृताःसंतिशब्दाः ३६७

राजाके ऊपर जिस मोहरेकी दृष्टि होवे उसको किस्ति कहते हैं कितनेक उसको शह कहते हैं और दिव्यदृष्टि लोगोंके सामने खेल जो है सो आसुर कहा जाता है इस वास्ते इस ग्रंथमें प्राकृत शब्द हैं ॥ ३६७ ॥

पश्चात्तीर्यनसरतिपुरोगेहमेकंप्रयायाद्रोधाभावेपदगतिरहितंहं
तिकोटयोर्यद्दच्छः॥ अश्वःसार्द्धद्वयपदगतिर्हंतिशत्रून्पदस्था-
न्भूपेकिस्तिरचयतिचतुःषष्टिकोणेषुगच्छेत् ॥ ३६८ ॥

अब प्यादेकी गतिका और युद्धका लक्षण कहते हैं—प्यादा जहां बैठा होवे वहांसे पीछेके घरमें और बाईसीधीतरफके घरमें जाता नहीं है केवल आगे एक घर चलता है रोकने वाला नहो वे वहांतक जाता है और शत्रुको सामनेके कोनेके दो घरमें तिरछा मारता है. घोड़ा अढ़ाई घर चलता है और अढ़ाई घरके ऊपर जो शत्रु होवे उसको मारता है राजाको किस्ति देता है चौसठ घर फिरता है ॥ ३६८ ॥

कोणेकोणेष्वसदनगतिश्चेन्नमार्गावरोधोहन्यान्मार्गस्थितमपि
करःकिस्तिमीशेतनोति ॥ दंतीदंतीप्रमितभवनान्येतिचेन्नां
तरायस्तिर्यक्पश्चादभिमुखमरिंहंतिकिस्तिंकरोति ॥ ३६९ ॥

ऊंट चारों तरफके कोनेके घरोंमें तिरछा एक घर से आठ घर तक चलता है. बीचमें रोकनेवाला सबल होवे वहांतक चले और निर्बल होवे तो उसको मारता है राजाको किस्ति देता है. हाथी बीचमें रुकावट न होवे तो आठ घर चलता है और चारों दिशाके चार घर जो बाईसीधी तरफ पीछे आगेके हैं उनमें शत्रुहोवे उसको मारता है राजाको किस्ति देता है ॥ ३६९ ॥

दिक्चातुष्केव्रजतिसचिवःकोणवर्णेपिगेहान्यष्टौऽरोधेसतिरिपुग
णंहंतिकिस्तिंदधाति ॥ किस्तेःपूर्वंक्षितिपतिगतिर्वाजिवच्चैक
वारंपश्चादेकंपदमनुसरेदासनादासमंतात् ॥ ३७० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

प्रधान चार दिशाके और चार विदिशाके जो घर हैं वहां चलता है बीचमें रुकावट न होवे तो आठ घर जाता है शत्रुकी सेनाको मारता है राजाको किस्ति देता है. अब राजाकी गति जहांतक राजाको किस्ति लगी नहीं है वहांतक घोड़े सरीखा अढ़ाई घर एक बार चलता है बाद दूसरी वार चलना होवे तो अपने आसनसे आठों दिशाओंमें एक एक घर चलता है ॥ ३७० ॥

ऊष्ट्रोहस्तीःप्रधानश्चनागगेहानिगच्छति ॥
यावज्जिगमिषूरोधोनोचेदाहुर्मनीषिणः ॥ ३७१ ॥

ऊंट हाथी और प्रधान ये तीनों आठ घर चलते हैं और बीचमें रुकावट न होवे तो जहांतक जीतनेकी इच्छा होवे उतने घर चलते हैं ऐसा बुद्धिमान् पुरुष कहते हैं ॥ ३७१ ॥

अकिस्तिभूपतिर्नूनमासनात्सकृदश्वगः ॥
पश्चादेकपदंगच्छेदासमंतात्स्वभावतः ॥ ३७२ ॥

किस्ति विना राजा एक वार घोड़ेकी गतिसे चलता है पीछे चारों तरफ एक घर चलता है ॥ ३७२ ॥

किस्तौसत्यांव्रजतिनपरःकिस्तिमध्येनभूपोवाशावीशानवल-
वलिनोघ्नंतिभूपोऽसहायान् ॥ तत्साहाय्यंनिजवलजनैःकार्यमादौ
कथंचिन्नोचेद्धन्युःप्रियसखिपरास्तूर्णमेवस्वकीयान् ॥ ३७३ ॥

राजाको किस्ति होवे तो किस्ति निकाले विना दूसरा मोहरा नहीं चल सकता है और किस्तिमें राजा नहीं चल सकता है और राजा निर्बल मोहरे को मारके किस्ति निकाल सकता है. इसवास्ते जिस मोहरेसे किस्ति देना है उस मोहरेको पहिले सबल करे पीछे उससे किस्ति देवे ऐसा न करे तो हे प्रियसखी सामनेवाले शत्रु अपनी सेनाको मारेंगे ॥ ३७३ ॥

सर्वेवीशानभिघ्नंतिविशाददतिभूपतौ ॥
किस्तिजिघांसादिच्छाचेदेतन्नीतिमतांमतम् ॥ ३७४ ॥

और एक मत ऐसा भी है कि राजाको किस्ति लगी है वह किस्ति तोडना होवे तो सबल या निर्बल उस मोहरेको मारके किस्ति छुड़ावे ॥ ३७४ ॥

स्थानंक्षेमंसैन्यकानांविलोक्यस्वानांपश्चाद्योद्धुमिच्छेत्परेण ॥
किस्तेर्मध्येपूरणार्थंप्रदत्तोयःकश्चिद्घातस्ययत्नोविधेयः॥३७५॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

खेलते समय अपनी सेनाका सुख और बैठनेका स्थान देखके पीछे शत्रुके साथ युद्ध करनेकी इच्छा करे और अपने राजाको किस्ति लगी दूर करनेके वास्ते बीचमें जो मोहरा नाकिस्ति करनेके वास्ते रक्खा होवे उसके उठानेका प्रयत्न करै ॥ ३७५ ॥

दृष्ट्वाभूपेमाहतिश्चेत्समीपेकस्माद्धन्यावाहिनीव्यर्थमेव ॥
बुद्धिस्तावन्माहतौयोजनीयायुद्धेबुद्धेर्योजनंव्यर्थमेव॥३७६॥

खेलनेवालेको पहिले राजाके ऊपर मात निकट देखके सेनाको मारना व्यर्थ है इसवास्ते पहिले आरंभ करते ही मात करनेके ऊपर दृष्टि रक्खे युद्ध करनेके ऊपर बुद्धि चलाना व्यर्थ है ॥ ३७६ ॥

पत्तेःकिस्तिर्वाजिनश्चापिकिस्तिर्घातान्नश्येद्भूपतेश्चालनेवा ॥
साचिव्यौष्ट्रीवारणीचापिकिस्तिर्घातोत्थानाऽऽपूरणैर्नाशमेति३७७

प्यादेकी किस्ति और घोड़ेकी किस्ति ये दोनों किस्ति मोहरेको मारनेसे दूर होती हैं अथवा राजाको हटानेसे नाकिस्ति होती है. और प्रधान, ऊंट, हाथी ये तीनों किस्ति मोहरेको मारनेसे दूर होती हैं अथवा राजाको हटानेसे अथवा दोनोंके बीचमें दूसरा मोहरा ईर रखके किस्ति दूर होती है ॥ ३७७ ॥

किस्तौसत्यांभूपतेश्चेन्नमार्गःक्रीडाकारामाहतिंतांवदंति ॥
युद्धेसैन्यंसर्वमापातितंचेत्तद्विद्वांसोबुर्दमाभाषयंति ॥ ३७८ ॥

अब खेलते समय राजाको किस्ति होवे, हटनेकी जगह न होवे तो खेलने वाले उसको मात कहते हैं और युद्धमें मोहरे सब मरगये होवें तो विद्वान् लोग उसको बुर्जिमात कहते हैं ॥ ३७८ ॥

एकःपत्तिश्चेदसौमाहतिःसासर्वेहन्यात्तत्रबुर्दापरस्मिन् ॥
वाहिन्यावाभूपतेर्नोगतिःसाजिच्चिन्नस्यांग्राह्यमेकंपरस्याः॥३७९॥

यदि एक प्यादा बाकी है और राजाको मात भई तो उस मातको भी बुर्जिमात कहते हैं और वह एक प्यादा शत्रुकी सेनाको मारे. अब खेलमें सर्व सेनाको और राजाको चलनेकी जगह न होवे तो उसको जितबाजी कहते हैं दूसरेकी सेनामेंसे एक मोहरा लेवे अथवा एक घर छुड़ा लेवे ॥ ३७९ ॥

यस्यस्थानंपत्तिराप्नोतिगच्छन्तत्रस्वीयःस्थापनीयःसएव ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

मंत्रीमंत्रीशस्थलोपेतपत्तिर्हतानोचेदुत्पतेदेकएव ॥ ३८० ॥

अब अपना प्यादा आगे जाते जाते सामने वालेके हाथी घोड़ा ऊँटके जो छः घर हैं उनमें से जिस घरमें पहुँचा उस घरका मोहरा अपना मरगया होवे तो उसको जीता करके उस घरमें बिठावै अथवा मरा न होवे तो जीता मोहरा उठायके उस घरमें बिठावै और वह प्यादा जो कभी प्रधानके या राजाके घरमें जायके बैठा तो वहां प्रधानको बिठावे एक प्रधानज खड़ा होता है परंतु जिस मोहरेको सजीवन करना होवे उस घरके ऊपर मारनेवाला न होवे ऐसा समय देखके मोहरा सजीवन करे ॥ ३८० ॥

हस्तीवाश्वःप्रियसखिकरोनोतृतीयःकदाचिन्मंत्रीचामीकरगि-
रिकुचेनद्वितीयःकदाचित् ॥ यत्रोपेतःपदगतिरहोवारणादि-
त्वमेतिस्वीयस्तस्मिन्विलसतिमरिंचारुनेत्रेनहन्यात् ॥ ३८१ ॥

और हे प्रियसखि हाथी घोड़ा ऊँट ये दो बार सजीवन होते हैं तीसरी बार नहीं होते हैं मंत्री एकही वार होता है और अपना प्यादा जिस घरमें जायके बैठे उस घरके हाथी आदि मोहरेके अधिकारको पाता है और वह बैठते शत्रुको मारै नहीं ॥ ३८१ ॥

हत्वाकिंचिन्माहतिर्याभवेत्सामाराख्यैवप्रोज्वलःतारहारे ॥
उत्थानेयामाहतिर्मध्यगस्यसाविज्ञेयाकुब्जरूपासुरूपे३८२॥

अब खेलते समय थोड़े मोहरोंको मारनेके पश्चात् जो मात होवे उसको माराख्यमात कहते हैं और उठते समय जो मात होवे उसको कुब्जमात कहते हैं ॥ ३८२ ॥

दीर्घेपत्तेमाहतिःसानिकृष्टाह्रस्वेचौष्ट्रीमाहतिर्दुःकरैव ॥
साचिव्यैभीतौरगीमाहतिर्यासाविज्ञेयाहीनरूपाक्रमेण ३८३॥

दूरके प्यादेसे जो मात करना कठिन है और ऊँटकी मात नजीकसे होना बहुत कठिन है. और प्रधानसे हाथीसे घोड़ेसे जो मात करना यह तीन मात हीन कही जाती हैं ॥ ३८३ ॥

किंचित्कर्तुंनैवशक्तोतिकश्चित्सेनाधीशेमाहतिंवाथबुर्दम् ॥
श्रीभद्रांकेयामिनीशोपमास्येधीमंतस्तांकायमांव्याहरंति ३८४॥

जिस खेलमें राजाके ऊपर कोई भी मोहरा मात या बुर्जिमात करनेको समर्थ नहीं है उसको बुद्धिमान् पुरुष कायमबाजी कहते हैं ॥ ३८४ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

यस्माच्छःस्यात्तत्तदेवप्रचाल्यंबालेसास्यादस्तमोरेतिनीतिः ॥
यत्रन्यस्तंयत्तुतत्रैवतत्स्यान्नीतिर्बालेसानुखानापुरेति ॥ ३८५ ॥

हे बाले! हे स्त्रि! इस खेलमें नीति दो हैं सो कहते हैं-जैसी जैसी राजाको शह लगती जावे वैसा वैसा राजाको हटाते जावे इसको अस्तमोरा नीति कहते हैं और राजाको एकही ठिकाने बिठायके शहको नाशह करै आगे दूसरे मोहरे खेलते जावे उसको सानुखाना नीति कहते हैं ॥ ३८५ ॥

नीतिद्वंद्वंयत्रपूर्वंप्रयुक्तंसासंज्ञास्यादस्तुखानापुरेति ॥
नीत्यापूर्वंखेलनादुत्तमैवनीतिर्नोचेद्बाधकंनैवकिंचित्॥३८६॥

और जिस खेलमें पूर्वोक्त दोनों नीति चल रही हैं उस नीतिको अस्तुखाना पुरा कहते हैं. इस खेलमें नीतिपूर्वक खेलनेसे उत्तम नीति जानै और नीति बिना खेले तो उसमें बाधक नहीं है ॥ ३८६ ॥

पश्चाद्दिक्कोणतिर्यङ्नोगच्छेत्पदगतिःसदा ॥
पुरोऽरुद्धंपदंयायात्कोटचोर्हंताचकिस्तिकृत् ॥ ३८७ ॥

प्यादा पश्चिम दक्षिण उत्तर तरफ और तिर्यक् कोणेके घरोंमें जाता नहीं है. केवल आगे जो कभी रुकावट न होवे तो सामनेका एक एक घर चलता है और कोणेके दो घरोंमें शत्रु निर्बली होवे तो उसको मारता है और किस्ति देता है ॥ ३८७ ॥

अथ राजगुणनिरूपणं-नीतिशास्त्रे।

ऋजुवक्रगतिर्ज्ञेयोधीरोधीमान्प्रतापवान् ॥
प्रजापालनसंपन्नकीर्त्यामरसमःप्रभुः ॥ ३८८ ॥

इस खेलमें मोहरेकी चाल और रीतिकी योजना की है वह नीतिशास्त्रके सानुकूल केवल राजनीतिका गर्भार्थ लेके की है इसमें पहिले गतिकी योजना प्रधानकी गति वक्र और सरल, ऊँटकी वक्र, हाथीकी सरल, राजाकी वक्र, सरल यह सब किस हेतुसे हैं वह सब निरूपण करताहूं. राजा कैसा होवे इसके ऊपर राजनीतिकार कहते हैं-राजा किसी जगहमें सरल चले किसी जगहमें वक्र चले धैर्य, बुद्धि, प्रताप रक्खै; प्रजा पालन करै; कीर्त्तिसे देवतुल्य मरणरहित रहै वही राज्य पदवीके योग्य है. यह नीति दिखानेके वास्ते खेलमें राजाकी वक्र और सरलगति रक्खी है और सर्व मोहरे मरगये

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

तो भी राजा धैर्य रखके अपने बचाव करनेके वास्ते धीरतासे उद्योग करै खेल बंद करै नहीं ॥ ३८८ ॥

येनयुद्धप्रसंगस्तुनश्रुतोनावलोकितः ॥
सधीरोवासदाशूरःपरत्परिगणंकिल ॥ ३८९ ॥

जिसने युद्धप्रसंग न कभी सुना और न कभी देखा है, परंतु जिसका स्वभाव जन्मसे धीरपनेका और शूरत्व का है तो वह राजा विचार न करके एकदम युद्धमें जायके पड़ता है तो प्रथम राजाके ऊपर शत्रुकी मार पड़ती है ॥ ३८९ ॥

नगणस्याग्रतोगच्छेत्सिद्धेकार्येसमंफलम् ॥
यदिकार्यविपत्तिःस्यान्मुखरस्तत्रहन्यते ॥ ३९० ॥

इस वास्ते राजा एकाएकी युद्धमें आगे जायके पड़े नहीं कारण, कार्यसिद्धि हुई तो दो पाँव आगे गये अथवा दो पाँव पीछे रहे तो भी यशप्राप्ति समान है. यह नीति समझनेके वास्ते प्रथम राजा घोड़े सरीखा उडै और राजा पहिले खेलै नहीं आगे निकला तो मार खावेगा ॥ ३९० ॥

अथ प्रधानगुणनिरूपणम् ।

ऋजुवक्रगतौप्राज्ञोदूरद्रष्टाहितेरतः ॥
शूरश्चप्रभुभक्तोऽसौराजमंत्रीप्रकीर्त्तितः ॥ ३९१ ॥

राजाका प्रधान कैसा होना चाहिये कि जो सरलमार्ग और टेढ़ा मार्ग चलना जानता हो, जिसकी दूरदृष्टि हो और राजाका हित करनेवाला, राजाका भक्त, शूर होवे तो ऐसा मनुष्य प्रधान गादीऊपर योग्य है. यह नीति दिखानेके वास्ते प्रधानकी गति सरल वक्र रक्खी है. दूरद्रष्टा कहिये जितने घर अपेक्षित होवें उतने घर चले. 'हितेरतः' इस विशेषणसे राजाके ऊपर दाँव आवे तो प्रधान समेत सर्व ईरमें आयके अपना प्राण गमायके राजाका बचाव करैं यह रीति रक्खी है ॥ ३९१ ॥

सानुकूलेसुकालेचविपत्कालेसमःसुधीः ॥
नभ्रमोजायतेयस्यसपार्थपुरुषोत्तमः ॥ ३९२ ॥

अब प्रधान अकेला रहा तो भी उन्मत्त करै नहीं उसका क्या कारण सो कहते हैं—उत्तम अनुकूल समय आया होवे अथवा विपत्तिकाल आवे तो भी जिसकी वृत्ति समान रहती है कालपरत्व करके जिसको भ्रम होता नहीं है

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

इसे उत्तम पुरुष जानना. यह नीति दिखानेके वास्ते प्रधानको संकटके समय भी उन्मत्त होना नहीं चाहिये ऐसा निर्बंध बांधा है ॥ ३९२ ॥

अथ उष्ट्रगुणनिरूपणम्।

वपुर्विषमसंस्थानंकर्णज्वरकरोरवः ॥
करभस्याशुगत्यैवाच्छादितादोषसंततिः ॥ ३९३ ॥

जिसका शरीर चारों तरफसे वक्र है और जिसका शब्द कर्णको त्रास देनेवाला ऐसा यद्यपि ऊँट है तथापि उसका सत्वर गतिरूप गुणसे सर्व दोष समुदाय अस्त होगया;है क्योंकि एक सबल गुणसे सब दोष गुप्त होते हैं ऐसा कविताका तात्पर्य है. इस वास्ते ऊँटकी गति वक्र है. परंतु दूर पर्यंत वेध करनेवाली है. त्वरित गतिरूप गुणसे दूषण आच्छादित होकेर बडप्पन मिलता है. यह नीति दिखानेके वास्ते ऊँटको राजा और वज़ीरके पास घर दिया है ॥ ३९३ ॥

अथाश्वगुणनिरूपणम्।

बहुभिःपशुभिःकिंवैविनाचैकेनवाजिना ॥
येनोड्डानवतायुद्धेविजिताःशत्रुपंक्तयः ॥ ३९४ ॥

हस्ति आदि बहुत पशु हैं तथापि उनका उपयोग नहीं है कारण कि घोड़ेके उड्डान वगैरह गुणोंसे शत्रुके समुदाय जीते जाते हैं. इस श्लोकमें सर्व पशुओंमें घोड़े का उड्डानगुण अधिक वर्णन किया. सब शूरोंको भी शत्रुसेनाके ऊपर तलवारका घाव करते वक्त घोड़ा उड़ायके करना होता है इसवास्ते घोड़ेमें उड्डानगुण विशेष है ऐसा समझके घोडेकी गति अढ़ाई घरकी रक्खी है. घोड़ा जन्म होतेही जन्मस्थानसे अढ़ाई घरपे उड्डान करके स्थिर होता है यह सब मोहरेसे विशेष योजना काहेके वास्ते करी है सो शंका मात्र रहती है; परंतु घोड़ेकी चंचलतासे यह गुण दिखाया ऐसा मालूम पड़ता है. घोड़ेका माल चंचलपनेपर है ॥ ३९४ ॥

दोहा ॥ चंचल चाल चमक्कनी, अतिभोजन अतिरोष ॥
यह गुण तुरय बिसाहिये, यह तिरियाके दोष ॥ ३९५ ॥

इसके ऊपर किसी कविने हिंदुस्थानी भाषाके दोहेमें घोड़ेका गुण और स्त्रियोंका दोष वर्णन किया है. चंचल चाल और चलते चलते बिचकना और बहुत आहार करना तथा बहुत क्रोध होना यह सब घोड़के गुण और स्त्रियोंके

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दोष हैं. तात्पर्य चंचलपना घोड़ेका मुख्य गुण है वह दिखानेके वास्ते जन्म होतेही जन्मस्थानसे उड्डानकी योजना दिखाता है ॥ ॥ ३९५ ॥

अथ हस्तिगुणनिरूपणम् ।

वक्रत्वंसरलत्वंचस्वभावादसतांसताम् ॥
गतिर्नागस्यसरलावक्राहेर्जन्मतःकिल ॥ ३९६ ॥

वक्रत्व और सरलत्व, यह दुष्ट और सत्पुरुषोंका स्वाभाविक गुण है. इसपर दृष्टांत जन्मसे हस्तीकी गति सरल और सर्पकी गति वक्र होती है इसमें किसीका वाद नहीं है स्वभावसे हस्तीकी गति सरल है उसको टेढ़ा फिरना नहीं आता इस वास्ते हस्तीका जो साटमारी खेल है सो हस्तीको जर्जरीभूत करता है और घोड़ेसवार हाथीको चिढ़ायके निकल जाते हैं यह प्रत्यक्ष अनुभव है ॥ ३९६ ॥

अथ पदातिगुणनिरूपणम् ।

ऋजुचित्तेनयद्वाक्यंप्रोक्तंदुःखंददातिन ॥
वक्रीभूतःप्रहारोसौखड्गस्याशुनिकृन्तति ॥ ३९७ ॥

अब पदातिके गुण कहते हैं–सरल चित्तसे किसीने तीक्ष्ण भाषण किया तो दुःख देता नहीं है. इसपर दृष्टांत टेढ़े हाथसे जैसा खड्ग प्रहार करना काम आता है वैसा खडी तरवारका घाव बरोबर लगता नहीं है ॥ ३९७ ॥

दोहा–सज्जनसेसीधेरहे, बांकोअरिसोहोय ॥
यहमनुष्यकीरीतिहै, सरलपनोमतखोय ॥ ३९८ ॥

जो सज्जन है उससे सरलपनेसे रहना और जो वक्र गतिसे चलता होवें उससे टेढ़े रहना यह मनुष्यकी रीति है इसवास्ते मनुष्यको एक शत्रु बिना किसीसे भी टेढ़े रहना नहीं चाहिये ॥ ३९८ ॥

वही सिपाही बोलिये, सन्मुख सहे जो घाव ॥
ज्यों प्यादाशतरंजका, पीछेरखेनपाव ॥ ३९९ ॥

शूर उसको कहना चाहिये जो सन्मुख होकर शत्रुका घाव सहन करता है. इसका दृष्टांत शतरंजका प्यादा जैसे अपने पाँव पीछे नहीं रखताहै. यह तीन सुभाषित के अनुसार प्यादेकी गति आदिक लक्षण स्थापन किये हैं॥ ३९९ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

श्लोक—सहसाविदधीतनक्रियामविवेकःपरमापदांपदम् ॥
वृणुतेहिविमृश्यकारिणंगुणलुब्धाःस्वयमेवसंपदः ॥४००॥

अथ महाराष्ट्रभाषामध्येबुद्धिबलक्रीडावर्णनम् ।

श्लोक ॥ जीच्याजाणपटासतुंदरवरेंअष्टाष्टचारींमुखें, झालींतीं गणितांसमस्तहिचतुःषष्टीगणावींसुखें ॥ मध्येंदोनघरेंतयास कटतेकेलेचहूंबाजुला, तेंसिंहासनचिह्नहोयपटमीसांगीतला हातुला ॥४०१॥ गीति ॥ गजअश्वउष्ट्रअसती, दोनतसेअष्ट तेपदातीरे॥एकप्रधानराजा, मुख्यतयालागिंसंपदातीरे ॥४०२॥ क्रीडाकरितीदोघे, प्रत्येकालासमानहींमोहरीं ॥ सामग्रींतन सेत्या, दोघांलान्यूनतीळवामुहरी ॥ ४०३॥ मध्येंदोनकटांव र, उजवेबाजूसबैसवींराजा॥डावीकडेप्रधाना, बैसविण्यालागिं सुस्थळींयोजा ॥ ४०४ ॥ राजाचेशेजारीं, उंटबळीनेंचअश्वह त्तींतो ॥ तैसेचसव्यभागीं, प्रधानसन्नीधबैसवीतीतो॥४०५॥ पुढल्याघरींबळीनें, एकेकाचेपुढेंपदातींस ॥ बसवावेंदोघांनीं मोहोरींझालींसमस्तबत्तीस ॥४०६॥श्लोक॥हस्तीनीटउभात थाहिअडवाचालेपटींनिर्भय, उष्ट्राचीगतिवक्रातिर्कसघरेंघो डाहिसार्धद्वय॥हस्त्युष्ट्रापरिचालतोसचिवतोप्यादाग्रएकग्रहा, चालेभूपतिसर्वचालिसपरीएकाग्रहातेंपहा ॥ ४०७ ॥ विशे षतायांतवदेनसारी, पदातिवक्रैकघरांतमारी॥अचक्रविद्धप्रभु अश्वचाल, सकृत्वरीचालतसेपहाल ॥ ४०८॥ गजापुढेंजोअ सतोपदाती, सकृत्गृहेंदोनचिचालवीती ॥ प्रधानराजापुढला शिपाई, तैसाचचालेसमजोनघेई ॥ ४०९ ॥

कोई भी काम एकाएकी करना नहीं कारण यह कि अविचार बड़ी विपत्तिकी जगह है कारण गुणके विषे लुब्ध ऐसी संपत्ति विचारशील पुरुषको वरती है कहेते प्राप्त होती है. तात्पर्य शतरंजके खेलमें विचार किये बिना मोहरा उठा-यके रक्खे तो उसमें आगे संकट पडेगा और विचार करके खेले तो आपही

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

आप जयरूपी लक्ष्मीकी प्राप्ति होवेगी ॥ ४०० ॥ ४०१ ॥ ४०२ ॥ ४०३ ॥
॥ ४०४ ॥ ४०५ ॥ ४०६ ॥ ४०७ ॥ ४०८ ॥ ४०९ ॥

असोनसोपृष्ठिंसभूपमंत्री, गृहद्वयींचालवितीस्वतंत्री ॥
परंतुहत्तीनसतांस्वपृष्ठीं, नपाहिलाचालवितांस्वदृष्टीं ॥ ४१० ॥

हस्ती, राजा और वजीर इन तीनोंके आगेका सिपाही एक बेर अपनी चालसे दो घर आगे चलता है, परंतु उसमें इतना विशेष है कि हाथी पीछे होवे तो हाथीके आगेका सिपाही दो घर एक बार चलता है. राजा और प्रधान इन्होंके आगेका सिपाही राजा, प्रधान पीछे न होवे तथापि एक बार जब चाहो तब दो घर चलता है ॥ ४१० ॥

बळाविणेंजोप्रथमप्रसंगीं, करीलराजाप्रतिविद्धअंगी ॥
उडूनघोड्यापरिभूपजाणा, वधीलघोड्यासमनांतआणा ॥ ४११ ॥

कोई बल न होते पहिले घोड़ेका शह राजाको दिया तो राजा घोड़े सरीखा अढाई घर उड़के घोड़को मारेगा ॥ ४११ ॥

जेंप्यादेंघरएकएकक्रमतांज्याच्याघरापावतें ।
तेंहोतेंमोहरेंसजीवसमजाजन्मींतिथेंराहतें ॥
घोडेंनिश्चयजन्मतांचउडतेंयाकारणेंतोनडे ।
जन्मस्थानिंअसेलमारअथवाज्याज्याघरींतोउडे ॥ ४१२ ॥

प्यादा आगे कहे हुये प्रमाणसे चलते २ जिस मोहरेके घरमें पहुँचेगा वह मोहरा जीता होवेगा और उस दाँवको जन्मस्थान कहते मोहरा उसीघरमें रहता है, परंतु घोड़ा जीता होतेही अढ़ाईघर उड़के वही दाँवमें अपने उड्डानकी जगहोंमें जायके बैठता है इसवास्ते जन्मस्थान और जहां उड़के बैठे वह स्थान इन दोनोंस्थानोंके ऊपर मार होवे तो वह जीता भया हुआ घोडा मारा जावेगा इस वास्ते अन्य मोहरेको जीता होनेके घरमें मार लगता है घोडेको जीता होनेके घरमें और उड्डानके घरमेंभी मार लगता है ॥ ४१२ ॥

प्यादाजरींअश्वकरावयाला, अश्वस्थळासन्निधजाणआला ॥
कांहिंनसेआडघडेलघोडा, राजानउड्डाणगृहांतसोडा ॥ ४१३ ॥

खेलते समय पूर्वोक्त रीतिकरके घोड़ा जीता होनेका समय आवे उस समय घोडेके उड्डाणके घरोंमें राजाको रक्खे नहीं ॥ ४१३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम सकल सैन्यें चालती एक राजा,
निजगृह नच सोडी निश्चयो हा करा जा ॥
अखिलहि जन आदौ खेळती चार डाव,
परि नच कधिं घेई मोहरें एक धांव ॥ ४१४ ॥

पहिले दाँवमें सर्व मोहरे चलते हैं इसवास्ते खेलने वालेके ध्यानमें आवे वह मोहरा चलावे परंतु राजा मात्र पहिले नहीं चलता है और पहिले चार दाँव खेले ऐसा नियम है, परंतु एक मोहरा एक दाँवसे अधिक दाव खेल नहीं सकता. चार मोहरेसे चार दाँव लेवे ॥ ४१४ ॥

जरी मोहरें एक डावांत राहे, तरी माजतें त अशी चाल आहे ॥
जरी राहिला एकटाही प्रधान, न होईलतो मत्तअन्यासमान॥४१५॥

प्यादेकी गणना मोहरेमें नहीं है इस वास्ते प्यादे थोड़े या बहुत रहें परंतु मोहरा एक रहा तो वह मोहरा उन्मत्त होता है. अपने जीवपर उदार होके सामने वालेका जो मोहरा उसके रस्तेमें आवे उसको मारताहै, परंतु बड़ा खिलाड़ी बुर्जी मात विना बड़े दाँव करनेकी अपेक्षासे मारता नहीं है और सर्व मोहरे मरगये होवें एक प्रधान रहा होवे तो दूसरे मोहरे सरीखा वह प्रधान उन्मत्त नहीं होता है ॥ ४१५ ॥

गीति ॥ प्यादीं ज्या मोहऱ्याचे गेलीं घरिं जरि परंतु मोहरीं तीं॥
असलीं पटांत तरि तीं टाकिति काढोनि ही असेरीती ॥ ४१६॥

प्यादा आठ घर फिरते फिरते किसी एक मोहरेके घरमें पहुँचे और उस घरका मोहरा संग्रहमें होवे तो वह प्यादा खेलमेंसे निकाल डाले, ऐसी रीति है॥४१६॥

परि जे कुशल खिलाडी ते मानिति खेळ तो असे काचा ॥
प्यादें मारुनि घ्यावें युक्त्या अडवोनि डाव लोकांचा ॥ ४१७॥

परंतु वह खेल अच्छे खिलाड़ी लोग उत्तम नहीं मानते हैं इस वास्ते ऐसा करते हैं कि वह प्यादा उस स्थानपर अड़चन करता होवे तो किसी युक्तिसे मारडाले ॥ ४१७ ॥

अथवा मोहरें घ्यावें मारुनि तें अन्यनिज उपायानें ॥
मोहरें दुजें करावें त्याजागीं पावल्या शिपायानें ॥ ४१८॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथवा मोहरा मारके उस प्यादेसे दूसरा मोहरा जीता करावे यह खेल प्रशस्त है ॥ ४१८ ॥

श्लोक ॥ राजाचे घरचा शिपाइ क्रमितो षष्ठ गृहातें तदा ॥
होई निश्चय तो प्रधान समजा ही रीति चाले सदा ॥४१९॥
आहे ज्या घरचा जिवंत करभ क्रीडा कराया तरी ॥
होईना दुसराहि त्याच घरचा उष्ट्रेति चित्तीं धरीं ॥ ४२० ॥
गीति ॥ दुसरीं मोहरीं होण्या ऐसा प्रतिबंध करभसम नाहीं ॥
मोहरें होतें जातां प्यादें दोहोंतुन घरांत एकाही ॥ ४२१ ॥

राजाके घरका प्यादा छः घर गये बाद वजीर होता है. जिस मोहरेका प्यादा छः घर क्रमसे गया तो वह मोहरा जीता होता है, परंतु जिस घरका ऊँट जीता है उस घरका दूसरा ऊँट जीता नहीं होता है कारण कि दोनों ऊँटोंके पद भिन्न भिन्न होते हैं वैसा दूसरे मोहरेका नहीं है इस वास्ते दूसरे मोहरे दो घरमेंसे किसी एक भी घरमें प्यादा गया तो वे मोहरे जीते होते हैं ॥ ४१९ ॥ ४२० ॥ ४२१ ॥

श्लोक ॥ आहे जें मोहरें बलिष्ठ तरि तें मारूंनये निश्चयें
मारावें जरि सर्वथैव बुडतो डाव प्रसिद्धीकर ॥
किंवा जेंबळतें इरेस पडलें तें मोहरें मारिती
राजा काढ शहांत येइल तरीही मारणें निश्चितीं ॥ ४२२ ॥

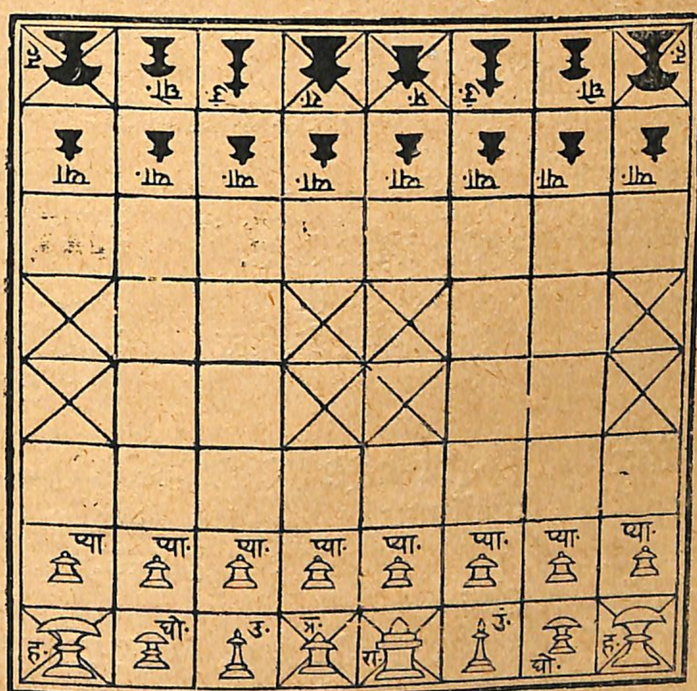
और इस खेलमें राजाका मरण नहीं है खेलमें राजाको प्रतिबंध होवे अथवा सब मोहरे मरगये बाद राजा अकेला रहे तो खेल समाप्त भया जाने और इस खेलमें एक निर्बली नामका प्रकार है उसका नियम बताते हैं जिस मोहरेको बल होवे उसको मारै नहीं यह साधारण निर्बली खेलका सिद्धांत है, परंतु बल होवे तथापि मोहरेको मारते हैं,सो कब कि जब अपने ऊपर उसी दाँवमें मात होनेका समय है तो बलिष्ठकोभी मारै. यदि एकाध मोहरेको बल है, परंतु राजाके इरमें फँसा है अथवा कौनसेभी मोहरेको बल बहुत है. परंतु राजाको उसी दाँवमें काटशह लगा होवे तो बलके ऊपर दृष्टि न रखके वह बलिष्ठ मोहराभी मारा जावेगा ॥ ४२२ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

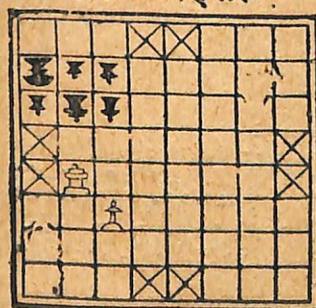
अथवा जरि एक मोहरें उरलें मारिल निश्चयें खरें ॥
न गणा मुहऱ्यांत प्यादि तीं आहे निर्बळिची अशीरीती४२३

सर्व मोहरे मरके एक मोहरा बाकी रहा हो तो वह उन्मत्त होके बलवान्को भी मारेगा. परंतु प्रधान उन्मत्त नहीं होता प्यादेकी गिनती मोहरेमें नहीं की जाती. कदाचित् उसीदाँवमें मातका समय होवे तो प्रधान उन्मत्त होवेगा ॥ ४२३ ॥

अथ शतरंजखेलके पट्टका यंत्र.



खेल पहिला.



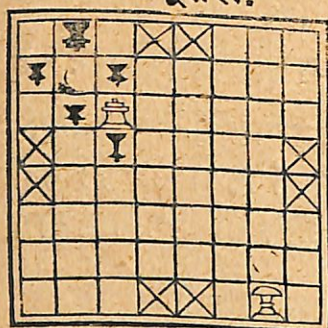
सुपेद पहिले खेलकर तीसरे दाँवमें कालेके ऊपर बुरजी होतीहै.

दाँवका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ ऊँटका शह.	१ प्रधान ईरमें
२ ऊँट प्रधानकुमार. श.	२ राजा प्र. उठके पाचवें घर.
३ ऊँट हस्तिको लेके बुरजी	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

खेल दूसरा.

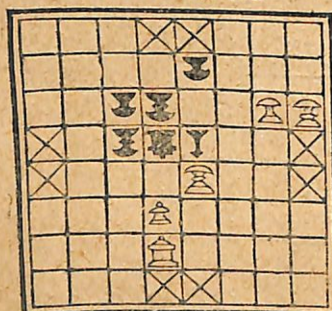


सुपेद पहिले खेलकर कालेके ऊपर मार मात फकीरी होती है.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ हाथीका शह.	१ ऊँट ईरमें.
२ हाथी ऊँटको लेताहै.	
मार मात फकीरी.	

खेल तीसरा.

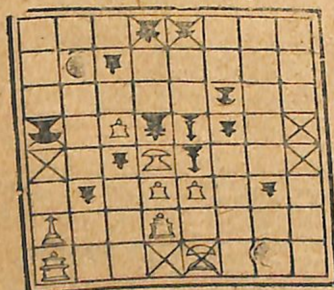


सुपेद पहिले खेलकर कालेके ऊपर चौथे दाँवें मात होती है.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ हस्ती ऊँटको लेके शह.	१ घोड़ा हस्ति. ले.
२ घोड़ाघोड़ेको ले. श.	२ रा. प्रधानके चौथे घरमें ग.
३ हाथीको ले. श.	३ हाथी प्रधानके पांचवें घरमें.
४ हाथीहाथीको ले. मात	

खेल चौथा.



सुपेद पहिले खेलके कालेके ऊपर चौथे दाँवमें मात.

दाँवका खुलासा.

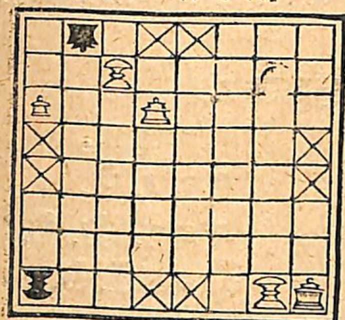
सुपेद	काला.
१ प्या. प्या. लेता है श.	१ रा. प्र. ऊँ. चौथे घर प्या ले.
२ प्र. रा. ऊँ. छठे घर. श.	२ रा. प्र. पाचवें घर
३ प्र. प्या. ले. श.	३ राजाप्यादेको ले.
४ प्र. रा. घो. पाचवें घरमें जा. मात.	

दूसरा प्रकार.

१ प्या. प्या. ले. श.	१ रा. प्र. ऊँ पांचवें घरमें प्यादेको मार.
२ प्र. रा. घो. पाचवें घरमें जायके मात.	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

खेल पांचवां.

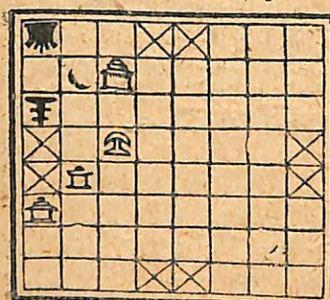


सुपेद पहिले खेलके कालेके ऊपर चौथे दाँवमें प्यादे मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ हा. रा. ऊँट. आठवें घर और प्र. शह.	१ रा. प्र. हा. आठवें घर.
२ प्र. रा. ऊँ. तीसरे. घर शह.	२ रा. प्र. घो. आठवें घर.
३ हा. रा. घो. आठवें घ. शह.	३ हा. हा. ले.
४ प्या. प्यादेमात.	

खेल छटवां.

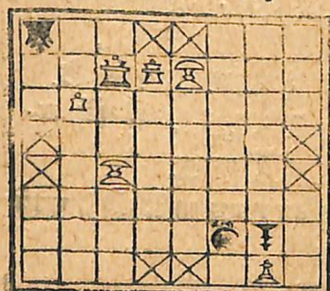


सुपेद पहिले खेलके कालेके ऊपर चौथे दाँवमें प्यादे मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ घो. रा. घो. दूसरे घर.	१ राजा खे.
२ प्यादा आगे जाताहै.	२ राजा खे.
३ प्र. प्र. ऊँ. घो. श.	३ राजा खे.
४ प्या. श. प्यादे. मात.	

खेल सातवां.



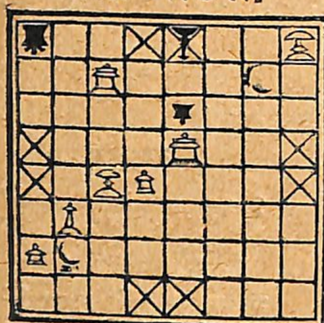
सुपेद पहिले खेलके चौथे दांवमें कालेके ऊपर दुचमल्ली मात.

दावका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ प्र. श. ऊँ. तीसरे घर शह.	१ ऊँ. प्र. ले.
२ हा. प्र. घर. श.	२ ऊँ. ह. ले.
३ हा. रा. हा. पांचवेंघर श.	३ ऊँ. ह. ले.
४ प्यादे दुचमल्ली मात.	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

खेल आठवां.

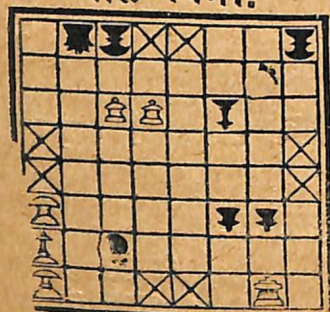


सुपेद पहिले खेलकर चौथे दाँवमें कालेके ऊपर प्याद मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ प्या. रा. चौथेघर.	१ प्या. ले.
२ रा. रा. पांचवें घर.	२ प्या. घो. ले.
३ रा. रा. ऊँ. छठे घर.	३ प्या. ऊँ. ले.
४ प्र. रा. हा. चौथे घर शह.	४ राजा.
५ प्या. प्या. ले हुचमल्लीका प्यादाहो.	

खेल नवमाँ.

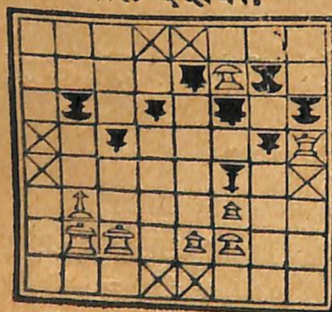


सुपेद पहिले खेलकर कालेके ऊपर चौथे दावमें मात होती है.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ हस्ति शह.	१ राजा हाथीकोलेता है
२ ऊँट राजाके चौथेघ-रमें जाता है और हस्ति शह हुई	२ राजा राजाघोड़के १ घरमें जाता है.
३ प्यादा राजा ऊँटके दूसरे घरमें (मात)	

खेल दशवां.



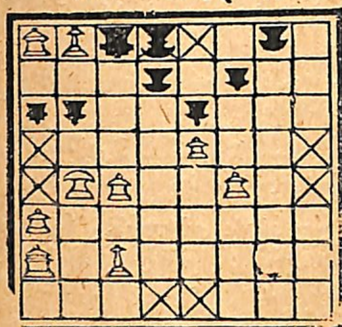
सुपेद पहिले खेलकर चौथे दावमें कालेके ऊपर मात होती है.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ प्रधानप्रधानऊँटके चौथे घरमें शह.	१ राजा प्रधान ले.
२ घोडाघोडेको ले. श.	२ रा. रा. पांचवें घ-रमें गया.
३घो.प्र.घो.पाचवें घरमें शह	३रा.प्रधानके चौथे घरमें
४ घो.प्र.ऊँटके चौथेघर मात.	

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

खेल ग्यारहवां.



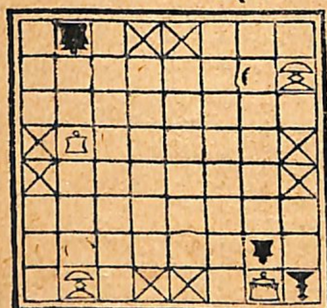
सुपेद पहिले खेलके कालेके ऊपर पाँचवें दाँवमें मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद	काला.
१ घोडाराजाके चौथेघर	१ घोडा ऊँटले.
२ घोडा प्यादाकोलेता है शह ल.	२ रा. प्र. ऊँ ७ वें घरमें
३ प्रधान रा. हा. दूसरे घरमें शह	३ रा. प्र. ऊँ छठे घर.
४ घो. रा. हा. पहिले घर	४ मनमें आवे वहां चले.
५ प्र. रा. ऊँ. दूसरे घरमात.	

अथवा ऊँ. रा. हा. पांचवें घर. मात.

खेल बारहवां



सुपेद पहिले खेलके चौथे दाँवमें काले ऊपर प्यादे मात.

दाँवका खुलासा.

सुपेद.	काला.
१ घो. रा. ऊँ. छठेघर.	१ रा. प्र. ऊँ. ८ घर.
२ घो. रा. चौथे घर.	२ रा. अपने घरमें.
३ घो. प्र. ऊँ. तीसरे घर.	३ रा. प्र. ऊँ. ८ घर
४ घो. प्र. घर. ॥ ५ घो. रा. ऊँ. दूसरे घर ॥६ घो प्र. तीसरे घर. ॥ ७ घो. रा. घर. ॥ ८ घो.रा. घो७ घर ॥ ९ घो. रा. ३घर.॥ १० घो. प्र. ८ घर ॥ ११ घो. प्र. ह. ७ घर ॥ १२प्यादा॥ १३ घो. प्र. ऊँ. ३ घ. शह. ॥ १४ प्या. प्यादिमात.	४ रा. अपने घरमें ५ रा. प्र. ऊँ. ८ घर. ६ रा.प्र. घो. ८ घर. ७ रा. प्र. ऊँ. घर. ८ रा. प्र.घो.८घर॥ ९रा.॥१०रा.॥११रा. ॥१२रा.१३रा.दिलमें आवे वहां रक्खे

(अथ यवनलोकानां पद्धतिमाह.)

गीति ।। यवनक्रीडा सारी स्वकीयलोकांसमान समजा ती ॥
यास्तव खेळा तेसे खेळति जैसी स्वदेशसम जाती ॥४२४॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अब मुसल्मान लोकोंमें जो शतरंज खेलनेकी पद्धतिहै सो कहतेहैं–मुसल्मान लोगोंमें बहुत करके अपनेसरीखीही रीति है ॥ ४२४ ॥

परिभेदाकिंचिताहे कथितोंतुजसर्वहीविलोकींतो ॥
जोमीशोधुनिकथिला समजायास्तवस्वदेशलोकींतो ४२५॥

परंतु थोड़ासा भेद है उसका शोध करके अगले श्लोकमें विशेष कहता हूं ॥ ४२५ ॥

श्लोक ॥ यवनांतविशेषहापहा हुचमल्लीप्रतिमोहरींसहा ॥
मोहरींपरिपांचराखितां म्हणतितेउभयींसमानता ॥ ४२६ ॥

इन लोगोंमें हुचमल्ली करनेका विचार होवे तो पटके ऊपर दोनोंके मिलके मोहरे छ रखना. कारण कि पांच मोहरे दोनोंके रहे तो पांच मोहरेका दाँव समान हुआ इस वास्ते खेल बंद रखते हैं इससे कुछ विशेष नहीं है ॥४२६॥

गीति ॥ मातप्रतिबन्धम्हणा लुंठनबुर्जीह्मणूनआणावी ॥
मृत्युंजयहुचमल्ली परिभाषामनांतआणावी ॥ ४२७ ॥
प्यादेमातम्हणावी पदातिबंधासजाणधीभूषा ॥
मारेमातफकीरी लुंठनबन्धप्रसिद्धपरिभाषा ॥ ४२८ ॥

इस खेलमें विजय कितने हैं उनके नाम और संस्कृत पर्याय कहते हैं इस खेलमें पांच प्रकारके विजय हैं. उनके संस्कृत नाम ऐसे हैं कि (प्रतिबंध) कहे मात. (लुंठन) कहे बुर्जी . (पदातिबंध·) कहे प्यादेमात. (मृत्युंजय) कहे हुचमल्ली और (लुंठनप्रतिबंध) कहे मारमात फकीरी इस प्रमाणसे पांच प्रकारके विजय हैं. मात--इस विजयका स्वरूप ऐसा है कि अपने मोहरेसे राजाको कैद करना. बुर्जी–इस विजयका स्वरूप ऐसा है कि जिसमें सर्व मोहरे मरगये बाद राजा अकेला रहे. प्यादेमात–प्यादेसे राजाको कैद करना. हुचमल्ली–अपने और सामनेवालेके सर्व मोहरे मारके अपना ऊँट और प्यादा और प्रतिस्पर्धिकाभी प्यादे विना वही मोहरा रखके राजाको प्यादेसे कैद कराना. मारेमातफकीरी– प्रतिस्पर्धिका एक मोहरा रहा होवे उसको मारके उसी दाँवसे राजाको कैद करना. बुर्जी और मात एक समयावच्छेदसे करना. ऐसा पांच प्रकारके मातके भेद कहे यवन लोगोंमें एक शुतरगस्ती नाम करके दाँव खेलते हैं वह ऐसा है कि

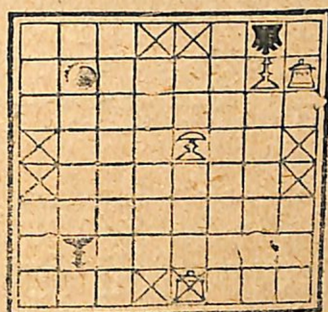
CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

राजाके तरफसे ऊँटको प्रदक्षिण चार पांच बार करवाना बाद होवे वो दाँव चलाना. इस दाँवको शुतरगस्ती कहते हैं इसका उदाहरण पट आगे लिखाहै ॥ ४२७ ॥ ४२८ ॥

इति यवन लोक प्रशस्ति।

अथ हूणदेशीयलोकानां खेलनपद्धतिमाह·

शुतरगस्तीका उदाहरण।



श्लोक ॥ इंग्रेजलोकांत अशी प्रवृत्ती गृहद्वयें चालविती पदाती ॥
परंतु ही एकचि खेळचाल ते चालती निश्चयें रूपबोल ॥ ४२९ ॥

अब अंगरेज लोगोंमें जो शतरंज खेलनेकी पद्धति है सो कहते हैं अंगरेज लोगोंमें ऐसी चाल है कि सब प्यादे दोघर एक वख्त चलाते हैं उसके पीछे मोहरा रहे या न रहे ॥ ४२९ ॥

प्रधानाचे स्थानीं जरि करि पदाती गमन तें
तरी होती अश्वादिक सकल इच्छील मन तें ॥
तसागेला अश्वादिक गृहिं शिपाई तरि तिथें
करावें मंत्र्याला सुलभ सहज स्वीकृतपथें ॥ ४३० ॥

और प्रधानके घर पर जो कभी प्यादा आवे तो प्रधान जीता होताहै वह तो ठीक है, परंतु जो मनमें इच्छा होतीहै वह मोहरा खड़ा करते हैं और अश्वादिक अन्य मोहरेके घरमें प्यादा जा पहुँचा तो वह मोहरा अथवा इच्छा होवे तो प्रधान भी खडा होता है ॥ ४३० ॥

राजा हत्तिमध्यें नसेल मोहरें दूजें तरी भूपती
हत्तीच्यास्थळिं ठेविती गज तसा भूपस्थळीं आणिती ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी चाल अहे परंतु बसला नाहीं प्रभूला शह
तेव्हां योग्य पुढें प्रवृत्ति मग ती सर्वांसिही दुःसह ॥ ४३१ ॥

और राजा हस्ति इन दोनोंके बीचमें ऊँट अथवा घोड़ा न होवे तो हाथीको राजाके घरमें और राजाको हाथीके घरमें उलटापुलटा करके रखते हैं, परंतु यह उलटापुलटी राजाको शह लगनेके पहिले होती है पीछे नहीं होती है ॥ ४३१ ॥

ज्याज्या घरींजाइलतोपदाती तींतींवरी मोहरें सिद्ध होती ॥
परंतु भूपस्थळिंचा शिपाई इच्छाअसेत्यामोहऱ्यासदेई ॥ ४३२ ॥

जिस मोहरेके घरमें प्यादा पहुँचे उस घरका मोहरा अथवा प्रधान होता है. इसी रीतिसे राजाके घरमें प्यादा पहुँचे तो इच्छामें आवे वह मोहरा खड़ा करते हैं ॥ ४३२ ॥

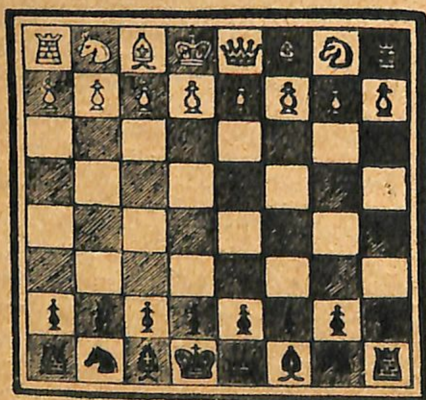
राजाआणिसचीवहेपटिंवरेठेऊनियांसन्मुख ॥
तज्जातीयसमस्त लोक करिती क्रीडाघडायासुख ॥
नाहीं भेददुजासमानहिविती सारींदुजीं मोहरीं
चित्तीं ठेउनिक्रीडका मगतिथें तूंहीतसेंस्वीकरीं ॥ ४३३ ॥

राजा और प्रधान पटके ऊपर परस्पर सन्मुख बिठाते हैं ॥ ४३३ ॥

एकाचिडावा प्रथम प्रसंगीं तूंखेळशिष्टोक्तिकदानभंगी ॥
असो नसो पृष्टिंशिमोहरींतीं देएकदां दोन घरें पदाती ॥ ४३४ ॥

और जैसा अपनेमें पहिले चारदांव खेलते हैं वैसी उन लोगोंमें प्रवृत्ति नहीं है. आरंभसे लेके एक एक दाँव खेलनेका संप्रदाय है ॥ ४३४ ॥

आंग्लशातरंजपट ।



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

राजादिकोंके आंग्लनाम.

किंग	राजा.
क्वीन वा मिनिस्टर	प्रधान.
रुक् अथवा क्यासल	हस्ती.
विशप	ऊँट.
नाईट	घोडा.
पॉन अथवा फुट सोल्जर	प्यादा.
चेस	शतरंज.
चेसबोर्ड	पट.
चेक्	शह.
डिस्कवर्डचेक्	काटशह.
चेकमेट्	मात.
क्यासलिंग	राजा और हाथी.

राजा और हाथी इनके बीचमें दूसरा मोहरा न होवे राजाकी जगहपर हस्ती और हस्तीकी जगह पर राजाको रखते हैं उसको क्यासलिंग कहते हैं.

महत्पुरुषसंगेन क्रीडनंचयदा भवेत् ॥
तदातुदशमर्यादापालनीयाविशेषतः ॥ ४३५ ॥
इति बुद्धिबलप्रथमप्रकारः समाप्तः ॥

यह शतरंज खेलने आनेसे बडे बडे सरदार लोगोंसे प्रेम संपादन होता है. इसवास्ते " मतलय उल्लुम " और " मजमय लुफ़नून " नामके ग्रंथ करनेवालेने दश मर्यादा खेलनेकी बांधी हैं सो आगे लिखते हैं ॥ ४३५ ॥

शिक्षा दशकम् ।

१ प्रथम मर्यादा–शतरंज खेलनेके प्रारंभके समय दूसरेको कौनसा रंग प्रिय है यह अपनेको मालूम नहीं है तो दूसरेने मोहरा उठाया नहीं तबतक आपने भी उठाना नहीं. उन्होंके एक रंग लिये बाद आप दूसरा रंग लेना अगर उसने प्रथम अपनेको कहा कि तुम रंग लेव तब आप सबसे हलका रंग लेना.

२ दूसरी मर्यादा–खेलनेके समय पहिले आप प्रारंभ नहीं करना और जो कभी उसनेही कहा कि तुम खेलो तो फिर आप प्रारंभ करना.

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

३ तीसरी मर्यादा–खेलनेमें सामनेवालेके मनमें दुःख होवे ऐसा अमर्याद और निरर्थक भाषण करना नहीं और खेलनेको उदास होवे ऐसा मौनभी धरके बैठना नहीं.

४ चौथी मर्यादा–दूसरा दाँव खेलनेवाला अवकाशसे खेलने लगा तो उसको जलदी खेलनेके वास्ते उपद्रव देना नहीं. आप मात्र वह राह न देखे वैसा जलदीसे दाँव खेलना.

५ पांचवीं मर्यादा–दूसरेसे अपनेको अधिक खेलना आता होवे तथापि अपनी स्तुति और दूसरेकी निन्दा करना नहीं.

६ छठी मर्यादा–कोई पास देखनेको बैठा हुआ आदमी अच्छा दाँव लेनेका विचार दूसरेको बतावे तो उसके ऊपर आप क्रोध और उसको प्रतिबन्ध करना नहीं और देखनेवालोंकोभी यह योग्य है कि जहां दोनोंजने खेल रहे हैं वहां वह स्वस्थ बैठकर देखता रहे पर दोनोंमेंसे एकका भी हिताहित दाँव बतावे नहीं दिखानेवालेका व्यर्थ अपमान होता है और पुरातन राजा लोगोंमें भी ऐसी नीति थी कि जिसको बडा अधिकार देना है उसकी बुद्धि पराक्रम धैर्य गम्भीर उदारताकी परीक्षा करनेके वास्ते शतरंज खेलमें परीक्षा करते थे.

७ सातवीं मर्यादा–सत्यतासे खेलनेका स्वभाव रखना प्रतिस्पर्धिने कदाचित् बुद्धि पुरस्सर अथवा विस्मरणसे खोटा दाँव लिया तो भी उसको हलका शब्द कहना नहीं सूचना करनी है तो ऐसा कहना कि भाई यह दाँव भुलावेसे लिया गया है सो विचार करना अवश्य है तथापि न माने तो आग्रह छोड देना.

८ आठवीं मर्यादा–जो कभी दूसरे खेलनेवालेने पहिले एक खेल खेलके पुनः दूसरा विचार खडा रह्या तो वह खेल फिरायके दूसरी रीतिसे खेलेगा तो उसको प्रतिबन्ध न करना अपना मात्र देखके चलना.

९ नववीं मर्यादा–आठवीं मर्यादामें खेल फिरानेकी आज्ञा दी परन्तु यह बात दोनोंको योग्य नहीं है पहले जिस मोहरेको हाथ लगायके दाँव लिया वह दाँव फिराना नहीं क्योंकि चलाया हुआ दाँव फिरानेसे कलहकी जड होती है और अपनी तरफ हलकापन होता है.

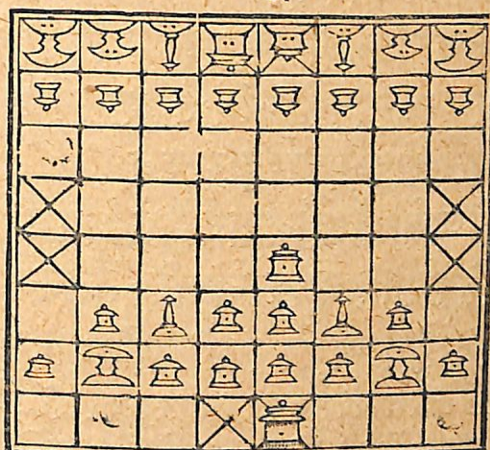
१० दशवीं मर्यादा–कितने एक लोगोंकी ऐसी चाल है कि अपने मरे हुए मोहरेको कभी कभी पीछे मांगते हैं, परन्तु यह रीति बहुत हलकी है इस वास्ते मांगना नहीं जो मात होनेका समय आया होवे और मैं दाँव

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

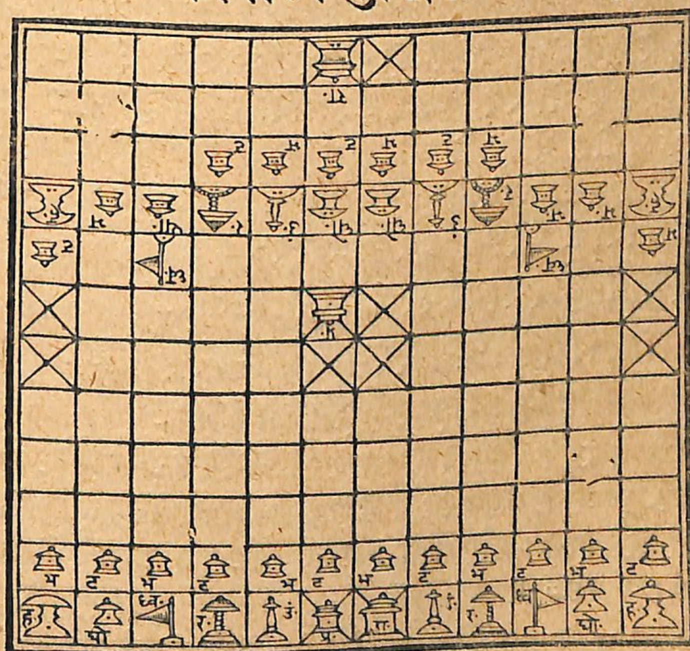
बचायके दूसरा चलाताहूं ऐसा कहे तो वह मोहरा पीछा देना यह बात दोनोंको योग्य है दशवीं मर्यादाका सारांश यह है कि उत्तरोत्तर स्नेहकी वृद्धि होवे ऐसा मार्ग स्वीकार करना ॥ ४३५ ॥

इति बुद्धिबलक्रीडामें प्रथमप्रकार संपूर्ण ॥

अथ बुद्धिबल व्यूहरचना भेद ।



अथ १४४ घरवाला बुद्धिबलका व्यूहपट्ट ।



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ द्वितीयंबुद्धिबलक्रीडनमाह ।

द्वितीयंसंप्रवक्ष्यामिखेलंबुद्धिबलाह्वयम् ॥
त्रयोदशोर्ध्वगारेखास्तिर्यग्रेखास्त्रयोदश ॥ ४३६ ॥

अब शतरंज खेलमें दूसरा भेद बताते हैं तेरह रेखा खडी और तेरह रेखा तिरछी निकालना ॥ ४३६ ॥

एवंकोष्ठानिजायंतेवेदाब्धींदु १४४ मितानिच ॥
नृपादीनांस्थलान्यत्रखेलनंगतिलक्षणम् ॥ ४३७ ॥
विज्ञेयंपूर्ववत्सर्वंविशेषंप्रवदाम्यहम् ॥
द्वौ द्वौ रथौध्वजौ द्वौद्वौभटानामष्टकंमिथः ॥ ४३८॥
मिलित्वाधिक्यमेवात्रसेनायांपरिकीर्तितम् ॥
रथस्यगजवज्ज्ञेयाध्वजस्यकरिवद्गतिः ॥ ४३९ ॥

उससे एकसौ चौवालीस कोष्ठकका चतुरस्रपट्ट होता है—अब इस पट्टके खेलमें राजा, प्रधान, ऊँट, घोडा, हस्ति, प्यादे इन सबकी जगह और इनके खेलनेका मार्ग तथा इनके चलनेकी गतिका लक्षण यह सब पहिले खेलके सरीखा जानना. अब इसमें जो विशेष है सो कहता हूँ. इस खेलमें दोनों तरफ दो दो रथ और दो दो ध्वजा तथा चार चार प्यादे अधिक हैं जो रथ ध्वजा सामने खडे हैं केवल पहिले खेलमें दोनोंके मिलके बत्तीस मोहरे थे और इस पटमें सब मिलके अड़तालीस हैं. रथके चलाने और बलाबल लेनेकी रीति हाथी सरीखी तथा ध्वजाकी रीति ऊँट सरीखी जानना ॥ ४३७ ॥ ४३८ ॥ ४३९ ॥

उष्ट्रस्यनिकटेस्थानंरथस्यपरिकीर्तितं ॥
तत्समीपेध्वजस्थानमश्वस्थानंततःपरम् ॥ ४४० ॥

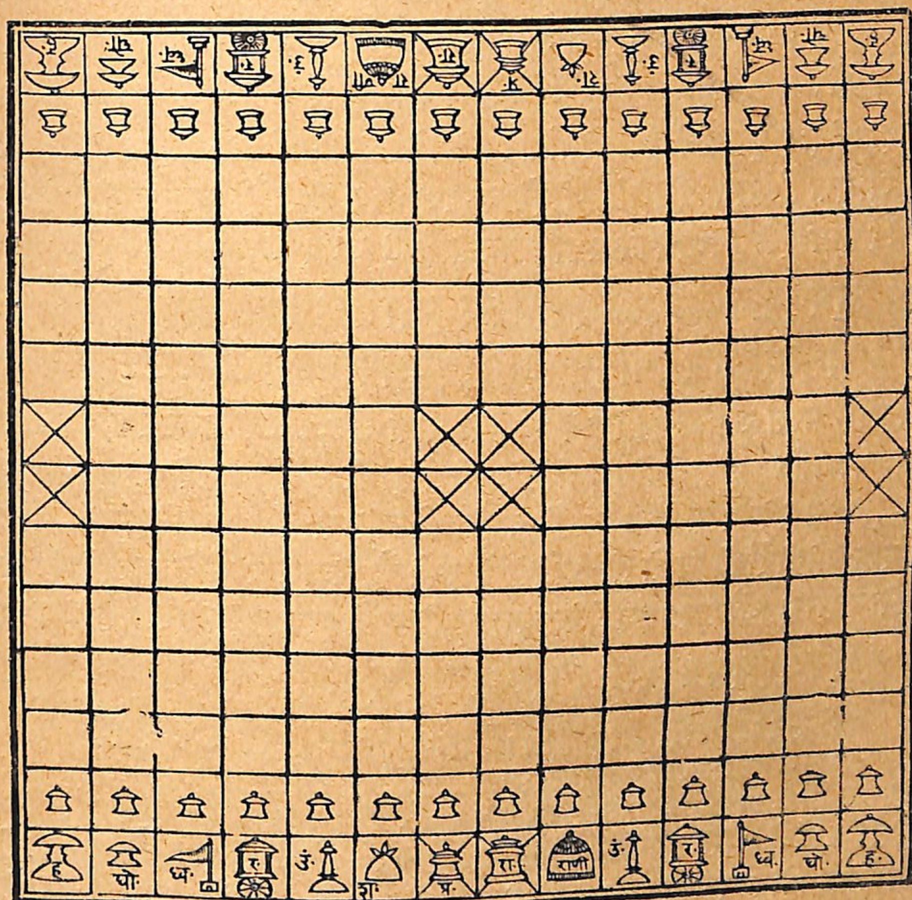
इति बुद्धिबलद्वितीयप्रकारः ।

अब पटमें प्रथम रथके बिठानेको स्थान ऊँटके निकट कहा है. रथके निकट ध्वजाका स्थान, ध्वजाके निकट घोडेका, घोडेके निकट हस्तिका स्थान जानना. बाकी खेलनेकी रीति मात वगैरह और शह लगानेकी सब पहिले सरीखी जानना ॥ ४४० ॥

इति दूसरे प्रकारका शतरंजका खेल संपूर्ण भया.

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ १९६ घरका बुद्धिबल खेलका पट।



अथ तृतीयप्रकारेणबुद्धिबलक्रीडनमाह।

तृतीयंसंप्रवक्ष्यामिखेलंबुद्धिबलाह्वयम्॥
ऊर्ध्वरेखाःपंचदशतीर्यग्रेखास्तथैवच॥ ४४१॥

अब तीसरी तरहका बुद्धिबलका खेल कहता हूँ. पहिले खडी रेखा पँद्रह निकालके आड़ीरेखा पंद्रह करना॥ ४१॥

कर्तव्यास्तत्रजायंतेकोष्ठानिषण्णवत्यपि॥
शताधिकानिसेनांगंपूर्ववत्सर्वमादिशेत्॥ ४४२॥

तो उस चतुरस्र पट्टमें एकसौ छियानवे कोष्टक होतेहैं. अब इस पट्टमें राजा

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

प्रधान उट रथ ध्वज घोडा हाथी प्यादे यह सब पहिले सरीखे सरीखे बिठाना ॥ ४४२ ॥

विशेषंचात्रवक्ष्यामिद्वेराज्ञौद्वौकुमारकौ ॥
चत्वारश्चभटास्त्वेवंगतिस्थानेवदाम्यहम् ॥ ४४३ ॥

यहां विशेष इतना है कि दोनों तरफके मिलके रानीदो शाहाजादे दो प्यादे चार अधिक हैं सब मिलके मोहरे छप्पन ५६ होते हैं. अब इनके चलनेकी गति और पहिले बिठानेका स्थान कहताहूँ ॥ ४४३ ॥

नृपस्यनिकटेराज्ञीप्रधानस्यकुमारकः ॥
राज्ञागतिः स्वपतिवत्कुमारस्यप्रधानवत् ॥ ४४४ ॥

राजाके पास रानीको बिठावे;रानीके पास ऊँट, ऊँटके पास रथ,रथके पास ध्वजा, ध्वजाके पास घोड़ा, घोडेके पास हाथी इसी क्रमसे प्रधानके पास शाहाजादा उसके पास ऊँट आदि करके बिठावे सबोंके सामने प्यादे बिठावें और सब मोहोरोंकी गति तो पहिलेही कही है. केवल रानीके चलानेकी गति राजाके समान और शाहजादेके चलानेकी गति प्रधान सरीखी है ॥ ४४४॥

एवंभेदद्वयेनैवखेलनंपरिकीर्तितम् ॥
अत्रसर्वाणिमार्गाणिपूर्वोक्तानिसमाचरेत् ॥ ४४५ ॥

इति तृतीयप्रकारेण बुद्धिबलक्रीडनम् ।

जैसा पहिले चौसट घरका खेल कहा है उसी रीतिसे एकसौ चौवालीस घरका खेल और एकसौ छियानवे घरका खेल वर्णन किया.इन दोनों खेलोंमें केवल मोहरे ज्यादा हैं. बाकी सब रीति पहले सरीखी है उसी मार्गसे चले ॥ ४४५ ॥

इति तीसरा भेद संपूर्ण भया ॥

अथाग्रे अश्वगतिभेदानाह ।

(कर्नाटकविषयाधिपोश्रीकृष्णभूपतिः)
महाबलगिरिंद्रजाविमलपादपंकेरुह-
प्रपूजनपरायणप्रचुरमानसःकृष्णराट् ।
समस्तनृपमण्डलीमुकुटरत्ननीराजित-
स्फुरच्चरणपल्लवःप्रथयतिप्लुतिंवाजिनः ॥ ४४६ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अब आगे शतरंजके खेलमें सब मोहरेमें घोड़ेकी गुणाधिक्य प्रशंसा बहुत है इस वास्ते घोड़ेकी गति चलानेके भेद वर्णन करते हैं. कर्णाटक देशमें महिषासुर पत्तन उर्फ महेशूर पुरमें श्रीचामुंडेश्वरीके चरणारविंदकी पूजामें रातदिन जिनका अंतःकरण तत्पर है और संपूर्ण राजमंडलके मुकुटके जो रत्न हैं उस रत्नसहित प्रणाम करनेसे जैसा नीराजन करते होवे इससे प्रकाशित दीखते हैं चरण कमल जिनके ऐसा कृष्णराजा जो है वह घोडेकी चातुर्य गतिके भेद प्रकट करता है ॥ ४४६ ॥

वेदवारिंधितारेशसदनेचातुरंगके ॥
विज्ञेयागर्भचक्राद्यैर्यश्चैकाश्वगतिःशुभा ॥ ४४७ ॥

एकसौ चवाँलीस १४४ घरके पटमें प्रथम गर्भचक्रबंधमें उत्तम अश्वगति चलाई है ॥ ४४७ ॥

गर्भैंगामरभेदाढ्यापूर्णैंन्यासेभभेदयुक् ॥
आहत्यरसरूपार्कभेदयुक्ताहयप्लुतिः ॥ ४४८ ॥

इस पटमें गर्भके नवकोष्ठकके सब अंक मिलके ३६३ तीनसौ त्रेसठ संख्या होती हैं उसको अंगामर भेद तथा अमरभी कहते हैं. तीसके बीचमें छः बिठाना और उसका पूर्ण न्यास करनेसे इस चक्रके बारहसौ सोलह १२१६ भेद उत्पन्न होते हैं ॥ ४४८ ॥

वीथीबोधकरास्त्वाद्याद्वितीयागृहबोधकाः ॥
सर्वेसंख्यारत्नकोशप्रोक्ताःशब्दास्तथात्रहि ॥ ४४९ ॥

अब आगे जो अश्वगतिके चक्रोंके उद्धारांक लिखे हैं उसमें पहिले अंक वीथि पंक्तिके बोध करनेवाले कहते हैं और दूसरे अंक घरके बोध करनेवाले हैं उन घरोंमें एक दो तीन ऐसे क्रमसे लिखते जावे. अब इसमें जो अंकके नाम लिखे हैं " मंडलाश्वोधरालक्ष्मी " इत्यादि उनका प्रमाण देखना होवे तो रत्नकोशमें लिखा है ये शब्द यहां लिखे हैं ॥ ४४९ ॥

मंडलाश्वोधरालक्ष्मीकरभाषाब्धिमातृका ॥
प्राणकांतारामरसोभुजलक्ष्मीःक्षमाबलम् ॥ ४५० ॥
नेत्रवर्णोरूपनेत्रंरामचन्द्रःकरेगुणः ॥
विराड्रूपंलिंगपाणिर्वेदव्यूहोवधूबलम् ॥ ४५१ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

युगलक्ष्मीर्द्वंद्ववाजीभूमिकन्यागुणांबुधिः ॥
चन्द्रमूर्तिर्नेत्ररूपंरामलिंगंकरेशरः ॥ ४५२ ॥
सोमवारःशक्तिलक्ष्मीर्बाणाद्रिर्गणकावधूः ॥
मदांबुधिर्मुनिकरोबाणलिंगंकृतेशिखा ॥ ४५३ ॥
तर्कशास्त्रंवाजिगजोगजशास्त्राद्रिगोस्तनौ ॥
लक्ष्मीकरोजीवरूपंवेदपक्षःशरांबुधिः ॥ ४५४ ॥
वेदशास्त्रंरसनदीगजलक्ष्मीस्वरेबलम् ॥
जीवसिद्धिर्हस्तिशैलोवारकन्याबलेषणम् ॥ ४५५ ॥
पक्षिरूपंवेदभाष्यंरामबाणःक्षमांबुधिः ॥
कुचग्रहणकेंद्रंद्वेश्याक्षिवसुचंद्रमाः ॥ ४५६ ॥
अश्वमूर्तिर्वधूनेत्रंद्वीपचंद्रोरमागुणः ॥
रसवार्धिर्नागकन्याहर्यश्वःकोशभार्गवी ॥ ४५७ ॥
वेदनादःशास्त्रशिवोयुगाकोंबाणनंदनः ॥
गिरीश्वरोमातृभावोजीवाशासागरेनिधिः ॥ ४५८ ॥
रामेश्वरश्चन्द्रसूर्यः कर्णपुत्रोयुगेश्वरः ॥
नेत्रभावश्चन्द्रवनंलिंगांकस्तनशंकरः ॥ ४५९ ॥
क्षमारत्नंरामपुत्रःशरवीरोनदीसुतः ॥
जीवराशिर्भैरवेशोदिशासूर्योऽर्कशंकरः ॥ ४६० ॥
शिवनन्दोभानुवारःशिवस्त्रीरत्नसागरः ॥
शिवरामःसूर्यचन्द्रोवनदृक्सूर्यमण्डलम् ॥ ४६१ ॥
शिवरूपंवीरबाहुःपुत्रव्यूहोघनेरसः ॥
वनलक्ष्मीः शम्भुपुत्रोमासार्कोवनशंकरः ॥ ४६२ ॥
नागकूटोमेघनादोहयांकोवीरभार्गवी ॥
चुम्बनांगंभावकन्यारुद्राश्वःसूर्यधान्यकम् ॥ ४६३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

शिवशंकरनन्दाकौंदोहलाशारमामणिः ॥
मेघस्वरोवनेदुर्गाभावलक्ष्मीःशिवेबलः ॥ ४६४ ॥
सूर्येकेंद्रंवनेकन्याभावोर्मिःशिवसागरः ॥
सूर्यग्रहणपुत्रेंदूधेनुशक्तिः शिवेकरः ॥ ४६५ ॥
रत्नभूमिस्नानसंध्यावीरकन्यावनाचलः ॥
ग्रहरत्नंशिवेलक्ष्मीर्भानुपुत्रःशिवार्यमा ॥ ४६६ ॥
चोलेश्वरःशैलराशिर्लक्ष्मीपुत्रोरसेघनः ॥
बाणेश्वरोलिंगराशिर्भूमीशोभुजनायकः ॥ ४६७ ॥
एकत्वाद्याःक्रमात्संख्याःपूर्वोक्तेषुचसद्मसु ॥
लिखेद्यदितदासिध्येद्विचित्राश्वगतिःशुभा ॥ ४६८ ॥

(इन्द्रवज्रावृत्तम्)

दृग्भ्यांगजैर्भूपतिभिर्जिनैश्चदंतैश्चतंत्रैर्दगगैर्युगेंद्रैः ॥
एकत्वसंख्यापृथगत्रचक्रेसंयोजितान्ज्ञेयमनूनधीभिः ॥४६९॥

अब आगे अंकोंका बयान किया जावे तो ग्रंथ बहुत बढ जायगा इस वास्ते श्लोक मात्र दिखाये हैं. यह आगे जो अश्वगतिके गर्भचक्रादिबंध हैं उसमें पहिला दूसरा तीसरा ऐसे क्रमसे घोडेको चलावे परंतु इस खेलमें खूबी यह है कि पत्र न देखते घरोंके ऊपर ध्यान न रखके दिलमें आवे वैसा आकार खड़ा करे यह बुद्धिका चमत्कार है. उसके सब श्लोक ५२७ तक हैं चक्रबंध सब ८२ तरहके हैं इति ॥ ४५० ॥ ४५१ ॥ ४५२ ॥ ४५३ ॥ ४५४ ॥ ४५५ ॥ ॥४५६ ॥ ४५७ ॥ ४५८ ॥ ४५९ ॥ ४६० ॥ ४६१ ॥ ४६२ ॥ ४६३ ॥ ॥४६४ ॥ ४६५ ॥ ४६६ ॥ ४६७ ॥ ४६८ ॥ ४६९ ॥

श्रीचामुंडाकृपाभाजाश्रीचामेंद्रतनूभुवा ॥
श्रीकृष्णनृपचन्द्रेणश्रीहरिस्तुतिरीरिता ॥ ४७० ॥
चामुंडाचरणाब्जपूजनपरःश्रीकृष्णभूवल्लभ-
श्चक्रेवाधिकृतेंदुसद्मकलितेश्रीचातुरंगेशुभे ॥
संचारंतुरगस्यसाधुतनुतेपूर्णाश्वलक्ष्मीमितासंख्या
भास्करवीथिकास्वपिसमास्यादंडतःपार्श्वतः ॥ ४७१ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

वीथीनांबोधकास्त्वाद्याद्वितीयागृहबोधकाः ॥
शब्दाःसंख्यारत्नकोशस्थिताःसर्वत्रकीर्तिताः ॥ ४७२ ॥
पादनेत्रंवार्धिचंद्रोरामलिंगंक्षमांबुधिः ॥
नेत्रभाषावेदकन्यामंडलाइवःक्षमारमा ॥ ४७३ ॥
लोकनायकभूपुत्रौद्वंद्वभावोयुगेश्वरः ॥
जीवपुत्रोवधूराशिस्तांडवेशोरमामणिः ॥ ४७४ ॥
वनारण्यंरत्नराशिःशिवेशोभावनायकः ॥
शिवाचलोभानुकन्यासुतांगंवीरभैरवः ॥ ४७५ ॥
हयस्वरःकोशलक्ष्मीर्बलांगंनागकन्यका ॥
स्वरमंडलबाणाब्धीशास्त्रदृग्वसुचंद्रमाः ॥ ४७६ ॥
वीररामःशिवकृतंसूर्यदृक्वनचन्द्रमाः ॥
शिवशक्तिःसूर्यचंद्रोदिशाक्षिमणिसागरः ॥ ४७७ ॥
नागनेत्रंजीवरूपंबाणाग्निर्व्याधसागरः ॥
लक्ष्मीबलंजीवकन्याशिखाइवोहरिभार्गवी ॥ ४७८ ॥
वीरतांडवपुत्रार्थौसूर्यांगंशिवभार्गवी ॥
भानुपुत्रोरुद्रभावोवीरेशोवननायकः ॥ ४७९ ॥
रमात्मजोघोटकार्कःप्राणेशोजीवनायकः ॥
वार्धिपुत्रोमण्डलार्कोभूमीशोभुजनायकः ॥ ४८० ॥
चन्द्रस्वरःशक्तिलक्ष्मीर्वेदशास्त्रंकरेशरः ॥
कृतेयुगंलिंगपाणिश्चंद्ररूपंकरेगुणः ॥ ४८१ ॥
वेदपाणिःपाणिचंद्रश्चंद्रनाडीगुणांबुधिः ॥
भूमिकन्यारामजीवोवार्धिःश्रीपक्षघोटकः ॥ ४८२ ॥
चन्द्रधान्यंविभूतीशोवेदार्कोलोकनंदनः ॥
कन्यारत्नंबलशिवोलक्ष्मीभावोद्रिनंदनः ॥ ४८३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

ग्रहरत्नंपुत्रशिवोराश्यर्कःशिवनन्दनः ॥
भावलक्ष्मीरुद्रबलंवीरकन्यावनाचलः ॥ ४८४ ॥
गजलक्ष्मीर्बलगिरिर्बाणकन्यानदीबलम् ॥
गजव्यूहोबलगुणःशरचन्द्रःस्वरायनम् ॥ ४८५ ॥
मेघचन्द्रोदिशाशक्तिः कूटाब्धिःशिवलोचनम् ॥
दिशाव्यूहःसूर्यमूर्तिःशिवेंदुर्वीरलोचनम् ॥ ४८६ ॥
वारचन्द्रोबाणपाणी रसाब्धिर्नागमंडलम् ॥
शैलकन्याप्राणबलंबलश्रीर्गजघोटकः ॥ ४८७ ॥
वनलक्ष्मीर्धेनुबलंशिवार्थोभावतांडवः ॥
शिवनंदःकूटशिवोवनार्कोनन्दनन्दनः ॥ ४८८ ॥
अश्वरत्नंभैरवेशोजीवराशिर्वधूसुतः ॥
रामेश्वरश्चन्द्रसूर्यःकर्णपुत्रोब्धिनायकः ॥ ४८९ ॥
भुजलक्ष्मीर्वेदगिरीरामबाणःक्षमाबलम् ॥
द्वंद्ववेदश्चंद्रकरोरामचन्द्रोब्धिमंडलम् ॥ ४९० ॥
एकत्वाद्याःक्रमात्संख्याःपूर्वोक्तेषुचसद्मसु ॥
लिखेद्यदितदासिद्धचेद्विचित्राश्वगतिःशुभा ॥ ४९१ ॥
श्रीचामुंडादयापात्रकृष्णराजमहीभुजा ॥
रचिताप्राज्ञमोदायजीयादासूर्यचन्द्रभम् ॥ ४९२ ॥
चामुंडापदभव्यभक्तिभरितःश्रीकृष्णभूपालक-
श्चक्रेतन्त्रगृहान्वितेवितनुतेसातिष्ठतिंसुंदराम् ॥
वीथीबोधकरास्तुपूर्वमुदिताःपश्चाद्गृहाबोधकाः
संख्यारत्नसुकोशगाश्वसकलाःशब्दाःप्रयुक्तास्त्विह ॥४९३॥
रामलिंगंनेत्ररूपंध्रुवशक्तिर्गुणायनम् ॥
ध्रुवचन्द्रःपाणिलिंगंरामचन्द्रःक्षमाकरः ॥ ४९४ ॥
युग्मवेदोभूमिरसोभुजलक्ष्मीर्गुणेबलम् ॥
भूमिकन्यापक्षवाजीरामबाणःक्षमांबुधिः ॥ ४९५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पादनेत्रंवेदमूर्तिःकन्यारूपंनदीकरः ॥
गजव्यूहोजीवशक्तिर्वेदाब्धिःकरपल्लवः ॥ ४९६ ॥
सोमवारःशक्तिलक्ष्मीर्वेदशास्त्रंशिखागजः ॥
गुणस्वरोभूमिलक्ष्मीर्नेत्रांगंवार्धिकन्यका ॥ ४९७ ॥
बाणलिंगंभाष्यवेदः कन्यार्थोमातृकाश्रुतिः ॥
लक्ष्मीकरःशास्त्ररूपंवेददृष्टिःशरांबुधिः ॥ ४९८ ॥
तर्कशास्त्रंवेदगिरीरसश्रीर्गजघोटकः ॥
शैलकन्यारमामूर्तिर्द्वीपभूमिर्वधूस्तनः ॥ ४९९ ॥
अंगवेदोनागकंचद्वीपाश्वोलोहकारकम् ॥
वेदलक्ष्मीर्जीववारोगजलक्ष्मीर्नदीरसः ॥ ५०० ॥
वधूस्वरोद्वीपगजोगंधांगंजीवकन्यका ॥
हरिमूर्तीरमारूपंवेश्याक्षियुगचंद्रमाः ॥ ५०१ ॥
एकत्वाद्याःक्रमात्संख्याःपूर्वोक्तेषुचसद्मसु ॥
लिखेद्यदितदासिद्धचेद्यश्वैकाश्वगतिःशुभा ॥ ५०२ ॥

(इन्द्रवज्रावृत्तम्)

दृग्भ्यांगजैर्भागवतैर्जिनैश्चदंतैश्चतालैर्वसुगोस्तनैश्च ॥
हालास्यलीलाभिरपिक्रमात्स्यादेकत्वसंख्याग्रथितात्रचक्रे ५०३

जायंतेबलदेवांकचक्राणिप्रमुखानिच ॥
यन्त्रचक्रेगजार्कांकाश्वैकैकस्मिन्निदाःक्रमात् ॥ ५०४ ॥
श्रीचामुंडाकृपापात्रश्रीकृष्णेंद्रमहीभुजा ॥
रचिताप्राज्ञमोदायजीयाद्धरिगतिश्चिरम् ॥ ५०५ ॥
श्रीमच्चामुंडिकांबाचरणसरसिजद्वंद्वपूजाधुरीणः
श्रीमान्कृष्णक्षितीशःश्रुतिमतसदनैर्भूषितेचातुरंगे ॥
चक्रेऽस्मिन्घोटकस्यप्लुतिमपितनुतेपूर्णताराढ्यसंख्या
प्रत्येकंसर्वपंक्तिष्वपिभवतिसमादंडतःपार्श्वतश्च ॥ ५०६ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

वीथीनांबोधकास्त्वाद्याद्वितीयागृहबोधकाः ॥
शब्दाःसंख्यारत्नकोशस्थिताःसर्वत्रकीर्तिताः ॥ ५०७ ॥
राममूर्तिःकेंद्रचंद्रःपाददृष्टिःक्ष्मांबुधिः ॥
शक्तिकन्याचंद्रबलंभुजश्रीर्वार्धिघोटकः ॥ ५०८ ॥
बाणकन्याबलगिरिर्गजलक्ष्मीर्नदीरसः ॥
वसुव्यूहोबलगुणोवधूरूपंस्वरायनम् ॥ ५०९ ॥
बाणलिंगंजीवरूपंसिद्धिदृष्टिस्वरांबुधिः ॥
रमाबलंद्वीपगजोबाणाद्रीरसकन्यका ॥ ५१० ॥
वेदशास्त्रंशक्तिलक्ष्मीः सोमवारोंघ्रिपल्लवः ॥
वेदवर्णोभाष्यकरोध्रुवेंदुस्तनमंडलम् ॥ ५११ ॥
भूमिकन्यापक्षवाजीकृतसिद्धिर्गुणेबलम् ॥
नेत्रवर्णश्चंद्रकरोरामचन्द्रोब्धिमंडलम् ॥ ५१२ ॥
रसव्यूहोवधूनेत्रंद्वीपचन्द्रोरमागुणः ॥
शैलकन्याहस्तिगिरिरससिद्धिर्वधूर्बलम् ॥ ५१३ ॥
द्वीपवाजीकोशलक्ष्मीर्वैश्यांगंभोगिकन्यका ॥
नदीसंध्यासिद्धिरूपंतर्कपक्षोर्थसागरः ॥ ५१४ ॥
युगपक्षःपक्षचंद्रोभूलोकोगुणगोस्तनः ॥
करभाषाक्ष्मालक्ष्मीर्मंडलाश्वोब्धिकन्यका ॥ ५१५ ॥
एकत्वाद्याःक्रमात्संख्यालिखेत्पूर्वोक्तसद्मसु ॥
पूर्णताराकल्पतरुचक्रंसिध्येत्तदाध्रुवम् ॥ ५१६ ॥
श्रीचामुंडा कृपापूर्णकृष्णराजमहीभुजा ॥
रचितं प्राज्ञमोदाय जीयादाभूरवींदुभम् ॥ ५१७ ॥

इस प्रकारसे १२८ भेदचक्र उत्पन्न होते हैं और इस पूर्ण तारा कल्पतरु चक्रमें जगह जगहमें विचित्र जैसी होवे वैसी समानता समानता होयके आठ आठ गृहोंकी संख्या एकत्र किये तो २६० संख्या होतीहैं और देखने वालेकी बुद्धिकौशल्यता बलवान्होती है. ऐसे अनेक प्रकारसे पूर्वोक्त संख्या २६०

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

जैसी आवे वैसा चित्त देके एकाश्वगति दिखाई है और चित्रगोल गृहोंमें तथा चतुरस्र गृहोंमें चमत्कार रीतिसे ४ घरमें १३० आठ घरोंमें २६० सोलह घरोंमें ५२० बत्तीस घरोंमें १०४० चौंसठ घरोंमें २०८० जैसी संख्या आवे वैसी अश्वगति दिखाई है ॥ ५१६ ॥ ५१७ ॥

(अथाश्वद्वयगमनप्रकारःसिंहलद्वीपराज्ञःश्लोकौ)

सिंनहीवनिचप्रज्ञा पाकंश्रीदेमनोविल ॥
वाहलश्मह्नूनंतंतिमेवेतुणपधाजिकु ॥ ५१८ ॥
श्रीसिंहणमहीपालमंधाविकुतुकंबहु ॥
पदेनवाजिनोज्ञातं चलनंप्रतिवेश्मनि ॥ ५१९ ॥

यहां चौंसठ घरका पट निकालके वह नैर्ऋतिकोणसे आरंभ करके सिंनहि इत्यादि श्लोकाक्षर लिखे बाद श्री अक्षरके घरमें पहिले घोडा रखके अढाई घरके प्रमाणसे श्री सिंहण यह श्लोक बाँचके घोडा चलावे ॥ ५१८ ॥ ५१९ ॥

'शंकरभट्टकृतश्लोकौ निनाशंत्रिसमेजह्वकत्सद्मभिद्यणा-
स्वशरानिरोतिषभूरानिवाष्प्रहानाष्टिहंयगे ॥ ५२० ॥
नारायणाह्वरामेश भूजनिः प्रातिसद्मनि ॥
निनायशंकरोवाहंस्वगेहात्सात्रिषष्टिभित् ॥ ५२१ ॥ (?)'

इस श्लोकका विभावार्थ यह है कि पूर्वोक्त रीतिसे पटमें निनाशं इत्यादि अक्षर लिखे बाद नारायणाह्व इत्यादि श्लोकाक्षर प्रमाणसे दोनोंजने अपने अपने घोडे चलावें ॥ ५२० ॥ ५२२ ॥

(नीलकंठकृतश्लोकौ)

आद्यंवस्वेकमष्टद्विशिखिविधुपदंवह्निजंनंदिसंज्ञं
नन्देकंपंचयुग्मंशरहरनयनंखाशुगंत्रित्रियुक्तम् ॥
अश्वद्विव्योमचंद्रंयुगमितिमुरुराडक्षिषड्ग्नित्रिपंचो-
र्पात्येवस्वाब्धिभूमिज्वलनमुदधिकुद्वैरदंत्रिद्विषष्टम् ॥ ५२२ ॥
षट्चंद्रंनेत्रयुग्मंमुनिजमुदधिहृङ्गंदवन्ह्याशुगाब्धि
व्योमर्त्वब्धीषुवेत्थंपुनरयनयादितिवाजिनंनीलकंठः ॥ ५२३ ॥

इस पटमें नीलकंठ कविने अंक संख्या प्रमाणसे घोडा चलाया है ॥ ५२३ ॥ ५२४ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

गर्भचक्रबंधचक्र १.

इस १४४ घरकेबुद्धिबल पटमें गर्भचक्रारवंडैकाश्वगति चमत्कारसे चलाई है. इसके श्लोकरीतिसें १२१६ भेदउत्पन्न होते है.

१०३	८८	१३५	११२	११९	९०	१२३	११०	१२१	९६	१२५	९४
१३६	११३	१०२	८९	१३४	१११	१२०	९१	१२४	९३	१२८	९७
८७	१०४	११५	११८	१०१	१३२	१०९	१२२	९९	१३०	९५	१२६
११४	१३७	१०६	१३३	१०८	११७	१००	१३१	९२	१२७	३८	१२९
१०५	८६	१३९	११६	४३	४६	३५	६२	२९	६०	३७	५६
१३८	६९	८४	१०७	३४	६३	४४	४७	३६	५७	३०	५९
८५	६६	७१	१४०	४५	४२	३३	२८	६१	४८	५५	३८
७०	१४१	६८	८३	६४	२७	१६	५	४०	३१	५८	४९
६७	७६	६५	७२	१७	४	४१	३२	१५	५०	३९	५४
१४२	७३	८२	७९	२६	१	६	५३	२०	२३	१४	११
७७	८०	७५	१४४	७	१८	३	२४	९	१२	५३	२२
७४	१४३	७८	८१	२	२५	८	१९	५२	२१	१०	१३

श्रीपाकाश्वगतिबंधचक्र २.

इस १४४ घरकेबुद्धिबल पटमें ३२ घर छोडके बीचमें श्री पाकाश गृह १ यह अंक कु ८ तरफ क्रमसे १४ का पाडा प्रमाण ताला डालके चित्रैकाश्वगति चलाईहै.

पा	त्र	३५	१००	४९	९४	५१	६४	१०३	९२	नू	भु
या	द्	४८	९५	५२	९९	१०२	९३	७४	६५	त	वा
४७	३४	ड़ा	३६	१०१	५०	७५	१०४	६३	द्रू	९१	६६
२०	३७	९६	तु	९८	५३	५८	७७	भं	७३	६२	८९
३३	४६	२१	५४	चा	७६	१०५	चा	५९	९०	६७	७२
२२	१९	३८	९७	४४	श्री	श्री	५७	७८	७१	८८	६१
३९	३२	४५	२४	५५	श्री	श्री	१०६	८७	६०	७९	६८
१८	२३	३०	४३	कृ	२५	५६	पा	७०	८१	८६	८३
३१	४०	७	षा	२९	४२	१०७	१२	का	८४	६९	८०
६	१७	भू	४१	२६	१३	१०	९	११०	श्व	८२	८५
जा	भु	५	८	१५	२८	३	१०८	११	११२	गु	ह
प्रो	त्का	१६	२७	४	९	१४	१११	२	१०९	कु	ति:

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पूर्णाश्व लक्ष्मी संख्यादंडबंधचक्र ३

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें चमत्कारसे पूर्णाश्व लक्ष्मी संख्या दंड और पार्श्वांत अंदर आयेसरी धीं एकाश्व गति चलाई है.

९१	१२६	५३	२०	९३	१२४	५१	२२	१०७	११०	३५	३८
५४	१९	९२	१२५	५२	२१	९४	१२३	३४	३७	१०८	१११
१२७	९०	१७	५६	१२१	९६	२३	५०	१०९	१०६	३९	३६
१८	५५	१२८	८९	२४	४९	१२२	९५	४०	३३	११२	१०५
८७	१३०	५७	१६	९७	१२०	४५	२८	१०१	११६	४१	३२
५८	१५	८८	१२९	४८	२५	१००	११७	४४	२९	१०४	११३
१३१	८६	१३	६०	११९	९८	२७	४६	११५	१०२	३१	४२
१४	५९	१३२	८५	२६	४७	११८	९९	३०	४३	११४	१०३
८३	१२	६१	१३६	७९	१३८	६७	६	६९	१४४	७३	२
६२	१३३	८४	९	६६	७	७८	१३९	७६	३	७०	१४३
११	८२	१३५	६४	१३७	८०	५	६८	१४१	७२	१	७४
१३४	६३	१०	८१	८	६५	१४०	७७	४	७५	१४२	७१

दंडबेरीजबंधचक्र ४.

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें दंडरीतिसे ८७० की बेरीज होवे इस रीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

६२	२१	८२	१२५	६६	१९	७८	१२७	७६	१७	७२	१२९
८३	१२४	६३	२०	७९	१२६	६७	१८	६९	१२८	७५	१६
२२	६१	१२२	८१	२४	६५	१३२	७७	१४	७३	१३०	७१
१२३	८४	२३	६४	१२१	८०	१३	६८	१३१	७०	१५	७४
६०	२७	८६	११९	५८	२५	८८	१३३	५६	११	९०	१३५
८५	११८	५९	२६	८७	१२०	५७	१२	८९	१३४	५५	१०
२८	४१	११६	१०७	३०	४५	१३८	९३	८	५३	१३६	९१
११७	१०६	२९	१०२	११५	१०८	७	५२	१३७	९२	९	५४
४०	३५	४२	१०९	४४	३१	४६	१३९	९४	३	५०	१४३
१०५	११०	१०३	३६	१०१	११४	९९	६	५१	१४४	९५	२
३४	३९	११२	४३	३२	३७	१४०	४७	४	९७	१४२	४९
१११	१०४	३३	३८	११३	१००	५	९८	१४१	४८	१	९६

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पार्श्वबेरीजबंधचक्र ५

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें पार्श्व रीतिसे ८७० की बेरीज होवे इस रितिसे एकाश्व गति चलाई है.

५४	१९	९२	१२५	५२	२१	९६	१२१	४८	२५	९८	११९
९१	१२६	५३	२०	९३	१२४	४९	२४	९७	१२०	४७	२६
१८	५५	१२८	८९	२२	५१	१२२	९५	२८	४५	११८	९९
१२७	९०	१७	५६	१२३	९४	२३	५०	११७	१००	२७	४६
५८	१५	८८	१२९	३८	३५	११२	१०५	४४	२९	११६	१०१
८७	१३०	५७	१६	१११	१०८	३७	३४	११३	१०४	४३	३०
१४	५९	१३२	८५	३६	३९	१०६	१०९	३२	४१	१०२	११५
१३१	८६	१३	६०	१०७	११०	३३	४०	१०३	११४	३१	४२
६२	१३३	८४	९	६६	७	७८	१३९	७६	३	७०	१४३
८३	१२	६१	१३६	७९	१३८	६७	६	६९	१४४	७३	२
१३४	६३	१०	८१	८	६५	१४०	७७	४	७५	१४२	७१
११	८२	१३५	६४	१३७	८०	५	६८	१४१	७२	१	७४

कोणद्वयबेरीजचक्र ६

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें कोण द्वयमें वि ८७० की बेरीज होवे इसरीतिसे अखंडैकाश्व गति चलाई है.

११०	११९	१०६	१२१	९८	१२३	७६	१२७	१३०	८१	७८	२९
१०५	१००	१०९	११८	१०७	१२६	१३१	८२	७७	३०	१२९	८०
११६	१११	१२०	९९	१२२	९७	१२४	७५	१२८	७९	२८	३१
१०१	१०४	११७	१०८	१२५	१३६	८३	१३२	५३	७४	५१	१४०
११२	११५	१०२	९१	९६	८९	१३४	७३	५६	१३९	३२	२७
१०३	९४	११३	८८	१३५	८४	१३७	५४	१३३	५२	१४१	५०
११४	६५	९२	९५	९०	८७	७२	५७	१३८	५५	२६	३३
१३	६८	४१	६२	८५	७०	३९	६०	३७	५८	४९	१४२
४२	७	६४	६९	४०	६१	८६	७१	४८	१४३	३४	२५
६५	१८	६७	८	४५	१६	४७	३८	५९	३६	१३	१४४
६	४३	२०	१७	४	९	२२	१५	२	११	२४	३५
१९	६६	५	४४	२१	४६	३	१०	२३	१४	१	१२

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सरोवरबंधचक्र १५

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ७२ घर छोडके ७२ घरमें सरोवरके आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	:	:	:	:	४०	४५	..	..	:	:	:
:	:	:	:	४६	४९	७२	३९	:	:	:	:
:	:	:	५०	४१	४४	३७	४८	३१	:	:	:
:	:	६६	५९	६४	४७	३२	४३	३८	३५	:	:
:	५८	६३	६८	५१	·	:	३६	३३	३०	२५	:
७०	६७	६०	६५	·	..	..	·	२४	२१	३४	२९
५७	६२	६९	५२	·	..	..	·	१७	२६	२३	२०
..	७१	५६	६१	५४	·	·	१५	२२	१९	२८	..
..	..	५३	७२	७	१०	१३	१८	२७	१६	..	..
..	..	..	५५	१२	३	६	९	१४	..	..	..
..	..	..	..	१	८	११	४	..	..	..	..
..	..	..	..	..	५	२	..	..	..	..	..

अष्टोत्तरीबंधचक्र १६

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें घर ३६ छोडके बाकी १०८ घरमें अंबा अष्टोत्तर रीतिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

१७	..	७७	७२	..	१४	६९	..	६३	१२	..	१०
..	७३	१८	१५	७६	७१	१०२	१३	६८	९	६२	..
१९	१६	७५	७८	१०१	·	·	७०	६१	६४	११	८
७४	७९	१००	९१	·	१०३	९६	·	९४	६७	६०	६५
..	२०	८१	·	९७	९०	९३	१०४	·	५८	७	..
८०	९९	·	८३	९२	..	..	९५	५६	·	६६	५९
२१	८२	·	९८	८९	..	..	८६	१०५	·	५७	६
..	४५	५०	·	८४	८७	१०६	५५	·	३५	३२	..
४१	२२	४३	८८	·	५४	८५	·	१०७	३०	५	३४
४४	२५	४६	५१	४०	·	·	५३	३६	३३	२	३१
..	४८	२३	४२	२७	५२	३९	१०८	२९	४	३७	..
२४	..	२६	४७	..	४९	२८	..	३८	१	..	३

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

नवसरोवरसहितअष्टोत्तरीबंधचक्र १७

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ३६ घर छोडके बाकी १०८ घरमें अष्टोत्तरी रितिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

·	·	४७	३६	४९	··	··	७६	७९	७४	·	·
·	·	४२	५१	४६	··	··	७३	६८	७७	·	·
३९	३२	३५	४८	३७	५०	८५	७८	७५	८०	६७	७०
३४	४३	३८	४१	५२	४५	६२	८७	७२	६९	६४	८१
३१	४०	३३	४४	६१	८६	५७	८४	६३	८२	७१	६६
··	··	३०	५३	५८	·	·	९३	८८	६५	··	··
··	··	२५	६०	२९	·	·	५६	८३	९०	··	··
२०	२३	१६	२७	५४	५९	९४	८९	९२	१०१	९६	९९
१५	२६	२१	२४	१७	२८	५५	४	९५	९८	९१	१०२
२२	१९	१४	९	१२	३	६	१०५	१०८	१०३	१००	९७
·	·	११	१८	७	··	··	२	५	१०६	·	·
·	·	८	१३	१०	··	··	१०७	१०४	१	·	·

पूर्णाश्वद्वयगतिबंधचक्र. १८

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें अश्व द्वय गति चलाई है.

४३	४३	६	६	४१	४१	१	१	३९	३९	३५	३५
७	७	४२	४२	५	५	४०	४०	७२	३६	३८	३८
४४	४४	८	८	७०	७०	२	२	७२	३६	३४	३४
९	९	४५	४५	४	४	७१	७१	३३	३३	३७	३७
४६	४६	१०	१०	६९	६९	३	३	६६	६६	३२	३२
११	११	४७	४७	१४	१४	६७	६७	३१	३१	६५	६५
४८	४८	१३	१३	६८	६८	१५	१५	६३	६३	३०	३०
१२	१२	४९	४९	१७	१७	६२	६२	२९	२९	६४	६४
५०	५०	१८	१८	६१	६१	१६	१६	५९	५९	२८	२८
१९	१९	५१	५१	२२	२२	६०	६०	२७	२७	५८	५८
५२	५२	२१	२१	५४	५४	२४	२४	५६	५६	२६	२६
२०	२०	५३	५३	२३	२३	५५	५५	२५	२५	५७	५७

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चित्राश्वद्वयगतिबंधचक्र १९

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें २४ घर छोडके बाकी १२० घरमें चित्राश्व द्वय गति चलाई है

..	..	१३	१३	५२	५२	१७	१७	५०	५०	..	..
..	..	५३	५३	१४	१४	५१	५१	१८	१८	..	..
५४	५४	१२	१२	५९	५९	१६	१६	४९	४९	१९	१९
११	११	५८	५८	१५	१५	६०	६०	२०	२०	४८	४८
५५	५५	१०	१०	·	३१	३१	·	४७	४७	२१	२१
९	९	५७	५७	३२	..	..	३०	२२	२२	४६	४६
५६	५६	८	८	३२	..	..	३०	४५	४५	२३	२३
७	७	३३	३३	·	२९	२९	·	२४	२४	४४	४४
३४	३४	६	६	३८	३८	२७	२७	४३	४३	२५	२५
५	५	३५	३५	२८	२८	३९	३९	२६	२६	४२	४२
..	..	४	४	३७	३७	२	२	४१	४१	..	..
..	..	३६	३६	३	३	४०	४०	१	१	..	..

पुष्पकविमानबंधचक्र २०

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ५८ घर छोडके बाकी ८६ घरमें पुष्पक विमान रीतिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	..	..	१	६	..	..	..	..	..
..	..	..	..	..	८	८५	..	..	..	..	..
..	..	..	..	८६	५	२	७	..	..	..	..
५७	..	..	४	१	६६	७५	८४	११	..	..	१८
५०	४१	५८	५५	४८	३	१०	६७	७६	१७	१२	७९
५९	५६	४९	४२	६५			७४	८३	७८	१९	१६
४०	५१	४४	४७	५४			७७	६८	१५	८०	१३
४५	६०	५३	६४	४३			२२	७३	८२	६९	२०
५२	३९	४६	६१	३४	६३	७२	२९	७०	२१	१४	८१
..	..	..	३८	२७	३६	२५	३२	२३	..	..	..
..	..	..	३५	६२	३३	२८	७१	३०	..	..	..
..	..	..	..	३७	२६	३१	२४	..	..	..	..

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

शिवाकारबंधचक्र. २१

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ३६ घर छोडके बाकी १०८ घरमें लिंगाकार शिवाष्टान्तर शत रीतिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	..	४६	३१	१४	५७	..	..	..	..
..	..	..	३०	१३	५८	४७	३२	१५	..	..	..
..	..	..	४५	५४	६७	५६	५९	३४	..	..	..
..	..	८९	१२	२९	६०	३३	४८	६९	१६	..	..
९०	२७	४४	५३	६६	५५	६८	६१	३८	३५	१००	९७
..	८८	९१	२८	४३	६२	५१	७०	४९	९८	३७	१०२
..	..	२६	२३	५२	६५	४२	३९	३६	१०१	..	९९
..	२२	८७	७४	२५	४०	६३	५०	७१	७८	१०३	..
..	..	२४	२१	६४	७३	७६	४१	१०४	३		..
..	१०	१३	८६	७५	२०	१७	७२	७७	१०८	७९	..
१२	८५	८	१५	१८	८३	६	१०५	२	८१	४	१०७
९	१४	११	८४	७	१६	१९	८२	५	१०६	१	८०

वृषभाकारबंधचक्र २२

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ४२ घर छोडके बाकी १०२ घरमें वृषभाकार रीतिसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	१०१	..	..	..	..	..	..	..	..
:	:	१	४	९९	:	:	:	:	:	:	:
२	५	१००	१३	१०२	:	:	:	:	:	:	:
१७	१४	३	६	..	९८	११	:	:	:	:	:
:	७	१६	११		९	६०	:	:	:	:	:
९५	१८	६५	८	५९	२०	१७	१०	२३	३४	१५	
७२	६७	७०	६३	६	६१	४६	२१	९६	४१	२४	३३
..	६४	७३	६६	६९	५८	५३	४०	४५	२२	३५	९४
७४	७१	६८	५७	६२	५५	४४	४७	४२	३९	३२	२५
..	८२	८५	७६	७९	५०	८९	५२	३१	२८	५३	३६
८४	७५	८०	८७	८८	७७	४८	४३	३६	९१	२६	२९
८१	८६	८३	७८	४९	८८	५१	९०	२७	३०	३७	९२

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

नागपाशबंधचक्र २३

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ४४ घर छोडके बाकी १०० घरमें सर्प बंधाकार से चित्रै काम्व गति चलाई है..

४६	४१	४४	..	४८	६१	६०	९५	..	९१	८८	९३
४३	..	४७	..	८१	..	..	६२	..	९४	..	९०
४०	४५	४२	४९	६०	६३	८२	७१	९६	८९	९२	८७
.	.	५१	.	२१	.	.	६४	.	८६	.	.
५२	३९	२२	५९	५०	६५	२०	८३	७८	९७	७२	८५
२३	.	५३	.	१९	.	.	६६	.	८४	..	९८
५४	.	३८	.	५८	.	.	७७	..	७१	..	७३
३७	२४	५५	१८	३५	७६	५७	१०	६७	७४	९९	७०
.	.	३६	.	५६	.	.	७५	.	६९	.	.
२५	३०	२७	३४	१७	१४	११	६८	१	२	५	१००
२८	..	३२	:	१२	.	.	१५	..	७	..	३
३१	२६	२९	..	३३	१६	१३	८	..	४	९	६

फणिधरबंधचक्र २४

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ५८ घर छोडके बाकी ८६ घरमें फणिधर बंधरीतिसे चित्रै काम्व गति चलाई है.

:	:	:	:	७४	६७	८०	६३	:	:	:	:
:	:	:	६६	८५	६४	७३	६८	८१	:	:	:
:	:	८६	:	:	७५	८४	७१	६२	:	:	:
:		:	:	६५	७२	७७	८२	६९	:	:	:
:	१ :	:	१३	७६	८३	७०	६१	७८	:	:	:
:	१२	:	२	७१	५८	५३	५६	:	:	:	:
:	३	:	११	१४	५५	६०	४१	४४		:	:
:	१०	:	४	५९	५२	५७	५४	३९	४२	३७	..
:	५	२०	९	२८	१५	४०	४३	३६	४५	३२	..
:	८	१७	६	५१	२४	२७	:	३३	३८	३५	:
:	१९	५०	२१	१६	२९	४८	२३	२६	३१	४६	..
:	:	७	१८	४९	२२	२५	३०	४७	३४	.	..

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

कल्पवृक्षबंधचक्र २९

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें ७० घर छोडके बाकी ७४ घरमें वृक्षाकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	:	:	१३	४६	२५	५४	१७	४८	:	:	:
:	:	४५	२८	५५	१४	४७	२०	३५	५०	:	:
:	२७	१२	२५	६०	५३	१६	४९	१८	३१	३६	:
:	४४	५०	५६	१५	२४	६१	३८	५१	३४	१९	:
:	११	२६	४३	५८	३९	५२	२१	६२	३७	३२	:
:	:	५७	१०	२३	४२	६३	४०	३३	३०	:	:
:	:	:	:	:	९	२२	:	:	:	:	:
:	:	:	:	:	६४	४१	:	:	:	:	:
:	:	:	:	:	७३	८	:	:	:	:	:
:	:	:	:	६५	४	६९	७४	:	:	:	:
:	:	:	५	७२	६७	२	७	७०	:	:	:
:	:	:	६६	३	६	७१	६८	१	:	:	:

कामधेनुबंधचक्र २६

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमे ४२ घर छोडके बाकी १०२ घरमें कामधेनु आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	३	८	५	:	:	:	:	:	३७	४०	:
:	[illegible]	[illegible]	:	:	:	:	:	२९	४२	३३	३६
:	९	४	०	:	:	:	:	४४	३५	३८	४१
:	१२	९	१०	:	:	४५	:	:	३२	४३	३४
[illegible]	७३	७८	७५	:	७१	८०	:	:	:	:	३१
१३	१०२	९७	७२	७९	७६	५७	४६	८१	३०	२७	:
८६	९९	७४	७७	७०	६७	४८	५१	२८	५५	८२	२५
१०१	१४	९५	६८	४९	५८	६५	५६	४७	२६	२१	[illegible]
[illegible]	:	१००	१५	६६	६१	५०	५९	५२	६३	२४	८३
४०	:	९३	९०	:	:	:	:	६१	८४	५३	६०
९२	:	९६	११	:	८९	६०	२१	:	८७	६२	:
:	१८	९१	:	:	२०	:	८८	:	२२	८५	:

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

हस्तिबंधचक्र २७

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ५६ घर छोडके बाकी ८८ घरमें गजके आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	:	:	:	:	:	:	:	:	७	२	१
:	:	:	:	:	:	:	:	:	१०	:	६
:	:	:	:	:	:	:	:	:	३	८	९
:	:	:	:	:	:	:	७८	११	१४	५	१६
:	:	५२	६३	७६	६५	८४	८१	४	१७	८६	१३
५१	६२	४९	६६	५७	८२	७७	७०	७९	१२	१५	:
४८	५३	५८	७५	६४	८५	८०	८३	१८	८७	:	:
६१	५०	४७	५६	६७	७४	७१	८६	६९	२०	:	:
४६	३७	५४	५९	७२	३३	६८	१९	२६	३१	:	:
३९	६०	३५	४४	५५	४२	७३	३२	२९	२४	२१	:
३६	४५	३८	४१	३४	:	:	२५	२२	२७	३०	:
:	४०	:	:	४३	:		२८	:	:	२३	:

अश्वबंधचक्र २८

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ७० घर छोडके बाकी ७४ घरमें अश्वाकारसे चित्रैकाश्वगति चलाई है.

:	४	७	..	..	..	..	..	..	..	..	..
:	१	१०	५	८	..	..	..	..	..	..	..
:	६	३	७४	२३	..	..	..	..	..	..	..
२	११	..	९	२६		..	..	..	..	..	..
:	:	:	२२	७३	२४	२७	३०	४७	६८	३५	..
:	१५	१२	२५	६२	३१	७२	६१	३४	२९	४६	४९
१९	:	२१	१४	७१	६४	३३	२८	६७	४८	५७	३६
१६	१३	१८	६३	३२	६१	७०	६५	६६	५१	५०	४५
:	२०	:	:	:	:	५६	६०	५३	६६	३७	५८
:	१७	:	:	:	:	:	:	३८	:	४४	५९
:	:	:	:	:	:	३१	५४	४३	५२	:	:
:	:	:	:	:	:	४२	:	४०	:	:	:

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

हंसबंधचक्र २९

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ५२ घर छोडके बाकी ९२ घरमें हंस आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	६८	:	:	:	:	९	६	:	:	:	:
:	६५	७०	:	:	:	:	९१	१०	७	:	:
६९	५८	६७	६४	:	:	:	८	५	९२	:	:
६६	७१	६०	५७	:	:	:	११	९०	:	४	१
५९	५६	६३	८२	:	:	:	८४	३	:	:	:
७२	६१	५४	:	:	८३	८०	८९	१२	१९	२	:
५५	४६	:	६२	८१	७८	३१	७६	८५	१६	१३	१८
४८	७३	५०	५३	३२	७५	८६	७९	८८	२५	२०	१५
४५	३४	४७	७४	५१	३०	७७	२६	२१	१४	१७	:
:	४९	५२	३३	४२	२७	२२	८७	२४	३९	:	:
:	४४	३५	:	२९	:	३७	४०	:	:	:	:
:	:	:	४३	३६	४१	२८	२३	३८	:	:	:

मयूरबंधचक्र ३०

इस १४४ घरके बुद्धिबलपटमें ४६ घर छोडके बाकी ९८ घरमें मयूराकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

:	:	९८	:	:	:	८८	९५	७४	६३	७२	:
:	:	७	२	:	९६	७९	९०	८७	९४	७५	६४
:	१	:	९७	:	८९	८६	९३	७६	७३	६२	७१
:	८	३	६	:	७८	९१	८०	८३	७०	६५	६८
:	५	३६	:	:	८५	८२	७७	९२	६७	५६	६१
:	१२	९	४	३५	:	:	८४	८१	५२	६९	६६
:	३७	४०	११	४८	३१	३४	:	:	५७	६०	५५
:	१०	१३	४२	३९	४६	४९	३२	५३	२२	५१	५८
:	४१	३८	४७	३०	३३	२४	२१	५०	५९	५४	:
:	:	४३	१४	४५	१६	२७	१८	२३	२०	:	:
:	:	:	:	:	२९	:	२५	:	:	:	:
:	:	:	४४	१५	२६	१७	२८	१९	:	:	:

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

राजाद्यष्टगतिबंधचक्र ३१

इस १४४ घरके बुद्धिबल पटमें राजा पताका अश्वमंत्री गज भट रथ उष्ट्र सहित क्रमसे १८ आवर्तनसे राजाद्यष्ट गति चलाई है.

१०७	११०	१०४	१०५	१२६	१३८	१४२	१२७	८९	८८	९४	९१
१०२	१०८	१०९	१०३	१२५	१२४	१४१	१४०	८७	९८	९२	९३
१०१	१०६	१२०	१२१	१२३	१४४	१३९	१३७	१३६	१००	९०	९६
११८	१११	११४	११९	१३४	१३०	१४३	१३५	९९	८२	९५	९७
११२	११७	११६	१३२	१३३	१२२	७५	७९	८६	८४	७८	६३
११३	११५	१२८	१२९	१३१	७६	८०	८१	८३	८५	७७	४६
३	६	२०	१	३४	३१	४४	७४	७१	६४	६५	४५
५	४	३५	१९	३८	४३	४१	३९	५६	७१	५५	६२
८	२	३३	३६	३७	१८	४०	६०	६६	७३	६१	४७
९	७	३२	२२	४२	३०	२३	२६	७०	५८	६७	५०
११	१४	२१	१७	१५	२७	२९	५६	५९	६८	५४	५२
१३	१२	१०	१६	२४	२५	२८	५७	४८	४९	५१	५३

राजाद्यष्टसमष्टिगतिबंधचक्र ३२

इस १४४ घरके बुद्धिबलके पटमें राजादिकोंकी गति चलाई है.

१९	१८	१६	२२	२१	६	५	११	१०	५	४	२
१७	२१	२३	१	२०	८	१४	७	२०	१	३	६
१५	१०	२२	८	४	१८	९	१३	१२	८	७	१३
१३	१२	१५	३	२	८	११	१६	१५	९	११	१२
११	२६	४	९	३	१७	२	१	१	१६	१४	१०
२४	२३	१८	७	१२	४	७	६	५	१९	३	८
१६	१९	२७	६	३	३	२	३	२	११	६	७
१७	२१	९	२८	१	४	५	१२	१	१०	९	४
१३	२२	२०	१	३२	२५	२४	१७	१६	९	८	१
१५	१४	१०	३	२९	३१	२१	२३	१३	१५	५	७
५	१२	८	७	२७	३०	१९	२२	११	१४	३	६
११	४	६	२	२०	२६	२८	१८	४	१०	१२	२

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

श्रीकृष्ण उलूखल बंधचक्र ३३.

इस १४४ घरके बुद्धिबलके पटमें ३६ घर छोडके बाकी १०८ घरमें श्री कृष्ण उलूखलाकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	१०५	९८	१०६	१००	१०३	९६	९३	८४	८९	८२	७९
..	१०८	..	१०४	९७	९४	१०१	९०	७७	८०	८५	८८
..	..	१		१०२	..	९२	९५	८६	८३	७८	८१
..	१०	१	६	..	..	..	..	९१	७६	८७	..
	५	८	११	२	..	..	..	७०	६७	..	..
९	१२	३	१६	७	..	..	६८	७५	७२	..	..
४	१७	१४	२१	२६	१९	२४	७१	६६	६९	..	..
१३	२२	२५	१८	१५	४६	२७	३२	७३	५८	६५	५४
..	..	३८	२३	२०	३३	३०	५९	६४	५५	६०	५७
..	३४	३५	४२	४५	२८	४७	६२	३१	५०	५३	..
..	३९	४४	३७	३४	४१	६०	२९	४८	६३	५६	५१
..	३६		४०	४३	..	..	..	६१	५२	४९	..

सर्वतोभद्र बंधचक्र ३४.

इस १४४ घरके पटमें बीचमें १६ घरमे बेरीज ३५४ होना उसके बाहर चारो तरफके वर्तुलाकार चार चार घरोमें बेरिज २८२ होना पीछे उसके बाहर दोदो पंक्तिमे चारचार घर मिलके बेरीज २८२ होना इस रीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

८६	६५	२०	१११	८४	६७	२२	१२९	८२	४९	२४	१२७
१९	११२	८५	६६	२१	११०	८३	४८	२३	१२८	८१	५०
६४	८७	३८	७	१४०	९९	६८	५	१३०	१०१	१२६	२५
११३	१८	१३९	९८	३७	६	१०९	१००	४७	४	५१	८०
८८	६३	८	३९	१०८	१४१	३६	६९	१०२	१३१	२६	१२५
१७	११४	९७	१३८	७१	३४	१४३	१०६	३	४६	७९	५२
६२	८९	४०	९	१४२	१०७	७०	३५	१३२	१०३	१२४	२७
११५	१६	१३७	९६	३३	७२	१०५	१४४	४५	२	५३	७८
९०	६१	१०	४१	९४	१३५	३२	४३	१०४	१३३	२८	१२३
१५	११६	९५	१३६	११	४२	७३	१३४	१	४४	७७	५४
६०	९१	११८	१३	५८	९३	१२०	३१	५६	७५	१२२	२९
११७	१४	५९	९२	११९	१२	५७	७४	१२१	३०	५५	७६

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

आद्यंतसंबंधबंधचक्र ३५

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें १ से ६४ का सबंध करके एकाश्व गति चलाई है.

५५	४४	५९	५०	२१	४६	३७	६२
५८	५१	५६	४५	३६	६१	२०	४७
४३	५४	४१	६०	४९	२२	६३	३८
२८	५७	५२	३५	४०	३३	४८	१९
५३	४२	२७	३२	२३	१८	३९	६४
२६	२९	१२	१५	३४	१	४	७
११	१४	३१	२४	९	६	१७	२
३०	२५	१०	१३	१६	३	८	५

पंचसरोवरबंधचक्र ३६

इस ६४ घरके बुद्धिबलके पटमें २४ घर छोडके बाकी ४० घरमें चित्रैकाश्व गति चलाई है.

०	०	११	३४	९	१६	०	०
०	०	८	१७	१२	३५	०	०
२१	१८	०	१०	३३	०	१५	३६
४	७	२०	..	..	१३	३२	२९
१९	२२	५	..	..	३०	३७	१४
६	३	०	२५	४०	०	२८	३१
०	०	२३	२	२७	३८	०	०
०	०	२६	३९	२४	१	०	०

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पूर्णताराकल्पतरुबंधचक्र ३७

इस ६४ घरके बुद्धिबलपटमें दंड और पार्श्वमें २६० का मिलान होवे उस रीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

११	४६	२१	५२	१३	४४	१९	५४
२२	४९	१२	४५	२०	५३	१६	४३
४७	१०	५१	२४	४१	१४	५५	१८
५०	२३	४८	९	५६	१७	४२	१५
३५	८	२५	६४	२९	४०	५७	२
२६	६३	३६	५	६०	१	३०	३९
७	३४	६१	२८	३७	३२	३	५८
६२	२७	६	३३	४	५९	३८	३१

पार्श्वबेरीजबंधचक्र ३८

इस ६४ घरके बुद्धिबलपटमें पार्श्वरीतिसे २६० का मिलान होवे उस रीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

५४	४३	२२	११	५२	४५	१८	१५
२३	१०	५३	४४	१९	१६	४९	४६
४२	५५	१२	२१	४८	५१	१४	१७
९	२४	४१	५६	१३	२०	४७	५०
३०	५७	२८	५	४०	३	३४	६३
३५	८	३१	६०	३३	६४	३७	२
५८	२९	६	२७	४	३९	६२	३५
७	२६	५९	३२	६१	३६	१	३८

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दंडबंधचक्र ३९

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें दंडरीतिसे २६ कामिलान होवे उसरीतिसे एकाश्व गति चलाई है.

४२	५५	२४	१९	४०	७	२६	५९
२३	२०	४१	५६	२५	५८	३९	६
५४	४३	१८	२१	८	३७	६०	२७
१७	२२	५३	४४	५७	२८	५	३८
५२	४५	१६	९	३६	३	३२	६१
१५	१२	५१	४८	२९	६४	३५	४
४६	४९	१०	१३	२	३३	६२	३१
११	१४	४७	५०	६३	३०	१	३४

पूर्णताराचतुष्कोणबंधचक्र ४०

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें पूर्णतारादिखे वैसी एकाश्व गति चलाई है.

५०	३३	४८	५९	५६	६१	४४	३९
४७	५८	५१	३४	४५	३८	५५	६२
३२	४९	४६	५७	६०	३५	४०	४३
२५	१४	३१	५२	३७	४२	६३	५४
३०	५	२६	१५	१०	५३	३६	४१
१३	२४	२९	६	१९	१६	९	६४
४	२७	२२	११	२	७	२०	१७
२३	१२	३	२८	२१	१८	१	८

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

द्वात्रिंशत्तारकाबंधचक्र.४१

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें ३२ घरमें चित्रैकाश्व गति चलायके ३२ घरमें चित्र सरीखी एकाश्व गति चलाई है.

२१	३८	५७	१०	१९	४६	५५	१२
५८	७	२०	४७	५६	११	१८	४५
३९	२२	३७	२८	९	४२	१३	५४
६	५९	८	४१	४८	२९	४४	१७
२३	४०	२७	३६	४३	१६	५३	१४
६०	५	६२	१	२६	४९	३०	३३
६३	२४	३	५०	३५	३२	१५	५२
४	६१	६४	२५	२	५१	३४	३१

एकाश्वगतिबंधचक्र ४२

इस ६४ घरके पटसे एक १ से १३ तक ६४ से ५२ तकसंबंध करके एकाश्व गति चलाई है.

५१	५४	३९	२६	६१	१४	४१	२४
३८	२७	५२	११	४०	२५	४	१५
५३	५०	५५	६२	१३	६०	२३	४२
२८	३७	१२	५९	१०	३	१६	५
४९	५६	२९	३६	६३	६	४३	२२
३०	३३	५८	९	४६	१९	२	१७
५७	४८	३५	३२	७	६४	२१	४४
३४	३१	८	४७	२०	४५	१८	१

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

चौसरबंधचक्र ४३

इस ६४ घरके पटमे नरदोंके पटप्रमाण आकारसे एकाश्वगति चलाई है.

२२	२५	२०	२७	५४	३१	३४	२९
१९	५६	२३	४२	४७	२८	५३	३२
२४	२१	२६	५५	६२	३३	३०	३५
५७	१८	४१	४६	४३	४८	६१	५२
४०	४५	५८	६३	६०	५१	३६	४९
१७	१२	१५	४४	३७	८	५	२
१४	३९	१०	५९	६४	३	५०	७
११	१६	१३	३८	९	६	१	४

जवनिकाबंधचक्र ४४

इस ६४ घरके पटमें २४ घर छोडके बाकी ४० घरमें परदेके आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	३१	१०	..	१८	१३	..
..	९	२८	..	१४	११	..	१९
२७	३०	..	३२	१७	..	१५	१२
६	..	८	२९	..	३५	२०	..
..	२६	५	..	३३	१६	..	३६
४	७	..	२३	४०	.	३४	२१
२५	..	३९	२	..	२२	३७	..
..	३	२४	..	३८	१	..	..

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सरोवरबंधचक्र ४५.

इस ६४ घरके पटमें २८ घर छोडके बाकी ३६ घरमें सरोवरके आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	..	१९	१६	..	..	..
..	..	१५	१०	२५	१८	..	..
..	११	४	१७	२०	३१	२६	..
५	१४	९	..	..	२४	२१	३०
१२	३	६	..	..	२७	३२	२३
..	८	१३	३६	३३	२२	२९	..
..	..	२	७	२८	३५	..	..
..	..	..	३४	१	..	..	..

राजाश्वगतिद्वयबंधचक्र ४६

इस ६४ घरके बुद्धिबल पटमें राजा और घोडा दोनोंकी गति चलाई है. इसमें १।३।५ इत्यादि विषमांक घोडोंके और २।४।६ इत्यादि समांक राजाके जानना.

२७	३०	२९	३२	४१	४८	५१	४६
२८	३३	३४	३१	४२	४७	५२	४५
२५	२६	३७	४०	३९	४४	४९	५०
२२	२१	३८	३५	५६	४३	५४	५३
१७	२४	१९	३६	५५	६२	५९	६०
१८	२३	२०	५७	५८	६१	६४	६३
१३	१६	१५	१०	५	८	७	२
१४	११	१२	९	६	३	४	१

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

मंत्र्यश्वगतिद्वयबंधचक्र ४७

इस ६४ घरके पटमें मंत्री और घोडा दोनोकी गति चलाई है.

२१	२७	२९	४४	३८	३१	३३	४८
२८	२२	४३	३०	३२	३७	४७	३४
२६	२०	४१	२४	४५	३९	४९	३६
१९	२५	२३	४२	४०	४६	३५	५०
९	१६	१८	५९	६१	५१	५३	६३
१५	१०	६०	१७	५२	६२	६४	५४
१३	८	६	११	५८	४	२	५६
७	१४	१२	५	३	५७	५५	१

उष्ट्राश्वगतिद्वयबंधचक्र ४८

इस ६४ घरके पटमें ऊट और घोडा दोनोकी गति चलाई है.

२८	३४	३६	२६	२४	३८	४०	४५
३३	२७	२५	३५	३७	४४	४६	२९
४	२९	३१	५३	४७	१३	११	४१
३०	३२	५८	४८	५४	५२	५०	१२
२३	५	४३	६१	५१	४९	६३	१०
१७	१९	२१	५९	६२	५५	९	६४
२०	२२	१५	४२	६०	५७	७	२
१४	१६	१८	५६	६	३	१	८

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

गजाश्वगतिद्वयबंधचक्र ४९

इस ६४ घरके पटमें हाथी और घोडा दोनोंकी गति चलाई है.

३२	४६	३०	२२	४१	१०	१७	२
३१	४५	२९	४७	४२	२३	१८	११
२८	३३	२७	४८	१९	४०	३	१६
४४	५१	५२	४३	२६	३९	८	१५
५३	५४	४९	५०	३७	२४	७	१२
३५	५९	३६	२१	३८	९	१४	५
५७	६०	५५	६२	२५	६४	१३	६
५८	३४	५६	६१	२०	६३	४	१

भटाश्वगतिद्वयबंधचक्र ५०

इस ६४ घरके पटमें प्यादा और घोडा दोनोंकी गति चलाई है

६२	५०	६४	६०	५२	५६	५८	५४
४९	६१	६३	५१	५९	५५	५३	५७
४६	३४	४८	४४	३६	४०	४२	३८
३३	४५	४७	३५	४३	३९	३७	४१
३०	१८	३२	२८	२०	२४	२६	२२
१७	२९	३१	१९	२७	२३	२१	२५
१४	२	१६	१२	४	८	१०	६
१	१३	१५	३	११	७	५	९

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अश्वद्वयगतिबंधचक्र ५१

इस ६४ घरके पटमें दो घोडोंकी गति चलाई है.

२८	९	२९	७	५	५	१७	१७
२८	९	२९	७	१६	१६	४	४
१०	२७	८	३०	६	६	१८	१८
१०	२७	८	३०	१५	१५	३	३
२६	११	२४	१४	३१	३१	१९	१९
२६	११	२४	१४	२२	२२	२	२
१२	२५	१३	२३	३२	३२	२०	२०
१२	२५	१३	२३	२१	२१	१	१

अश्वत्रयगतिबंधचक्र ५२

इस ६४ घरके पटमें ४ घर छोडके बाकी ६० घरमें चित्रत्रयाश्वगति चलाई है.

१५ .	६ .	१७ .	११	१३ .	८ ...	१७ ...	१३
१८ .	१०	१४ .	७ ...	१८ ...	१२	१२ ...	९ ...
५ ...	१६ .	१९ ...	१२ .	११ ...	१४ ...	१४	१६ ...
९	१९ .	४ ...	..	..	११ .	१० ...	१३ ...
३ ...	२० ...	८	..	..	१७	१५ ...	१५
२० .	२० ..	२ ...	४	७	५ .	१० .	७ .
१ ...	५	२	२ .	१८	६ .	१६	४ .
१	१ .	१९	६	३	३ .	६ .	९

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अश्वचतुष्टय गतिबंध चक्र ५३

इस ६४ घरके पटमें चार घोडोंकी गति चलाई है.

१४	१४	१३	१३	१०	१०	९	९
१४	१४	१३	१३	१०	१०	९	९
१५	१५	१२	१२	११	११	८	८
१५	१५	१२	१२	११	११	८	८
१६	१६	३	३	४	४	७	७
१६	१६	३	३	४	४	७	७
१	१	२	२	५	५	६	६
१	१	२	२	५	५	६	६

शिवाकारबंध चक्र ५४

इस ६४ घरके पटमें २४ घर छोडके बाकी ४० घरमें लिंगाकारसे अश्वगति चलाई है.

..	..	..	२६	३५	..	..	..
..	..	..	३१	२४	..	..	..
..	..	२५	३४	२७	३६	..	..
..	१७	३०	३७	३२	२३	२८	३९
..	..	३३	१८	२९	३८	..	२२
..	७	१६	५	१२	२१	४०	..
..	४	९	४	१९	२	११	..
८	१५	६	३	१०	१३	२०	१

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

वृषभाकारबंधचक्र ५५

इस ६४ घरके पटमें २४ घर छोडके बाकी ४० घरमें वृषभाकार से अश्वगति चलाई है.

..	..	..	..	..	..	..	..
..	..	१६	७	..	..	..	..
१७	६	३५	२०	..	..	..	..
..	१५	१८	..	८	..	..	..
५	३६	२१	३४	१९	२८	९	२४
..	३३	१४	२९	२२	२५	४०	२७
३७	४	३१	१२	३९	२	२३	१०
३२	१३	३८	३	३०	११	२६	१

हस्त्याकारबंधचक्र ५६

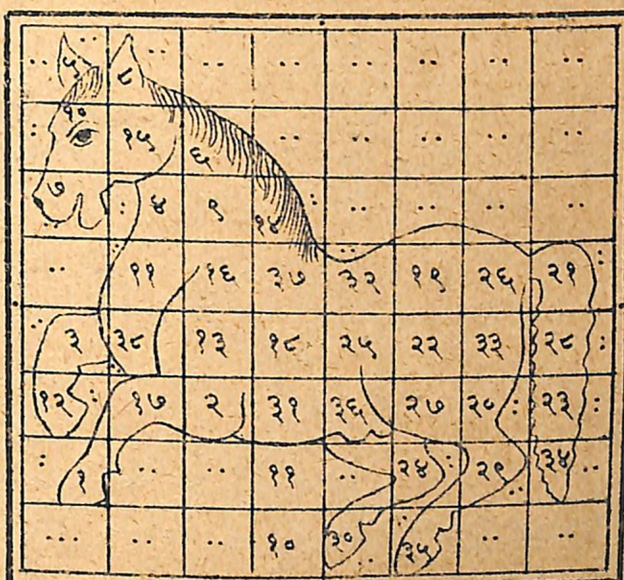
इस ६४ घरके पटमें २२ घर छोडके बाकी ४२ घरमें हाथीके आकारसे अश्व गति चलाई है.

..	..	..	..	..	३	६	..
..	३०	२९	..	..	..	९	४
४०	..	..	..	..	५	२	७
३९	३८	३१	४२	३५	८	१९	१०
३२	४१	३६	२५	२०	१	१४	..
३७	२८	२१	३४	१५	१८	११	..
२२	३३	२६	..	२४	१३	१६	..
२७	..	२३	..	१७	..	..	१२

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

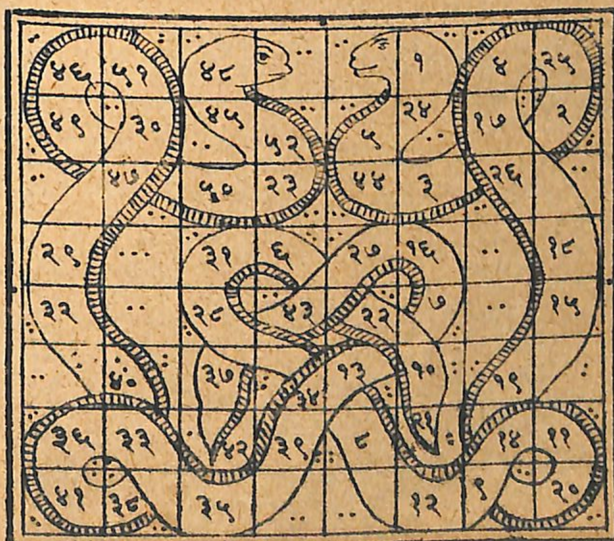
अश्वाकारबंधचक्र ५७

इस ६४ घरके पटमें २६ घर छोडके बाकी ३८ घरमें घोडेके आकारसे चित्रैका गति चलाई है.



सर्पद्वयबंधचक्र ५८

इस ६४ घरके पटमें १२ घर छोडके बाकी ५२ घरमें सर्पबंधाकारसे चित्रैकाश्वगति चलाई है.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

फणिधरबंधचक्र ५९

इस ६४ घरके पटमें २० घर छोडके बाकी ४४ घरमें फणि धरके आकारसे चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	३०	४३	२८	३९	..	..
..	४४	..	४०	३१	४२	..	..
..	..	..	२९	३८	२७	..	..
१	..	५	३२	४१	२२	..	..
४	..	२	३७	२६	३३	१८	१५
११	..	९	६	२१	१६	२३	३४
८	३	१२	२५	३६	१९	१४	१७
..	१०	७	२०	१३	२४	३५	..

भेरुंडबंधचक्र ६०

इस ६४ घरके पटमें २२ घर छोडके बाकी ४२ घरमें भेरुंडाकार चित्रैकाश्व गति चलाई है.

..	..	१	४	९	६	..	..
..	..	..	७	२	..	..	..
..	४२	३	१०	५	८	३५	..
..	११	१६	४१	३४	२७	२४	..
१५	४०	३१	२६	२३	२०	३३	३६
..	१७	१२	२१	३२	२५	२८	..
..	१४	३९	३०	१९	२२	३७	..
..	..	१८	१३	३८	२९	..	..

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दशोत्तरवृद्धिबंधचक्र ६१

इस ६४ घरके पटमें १ एकको दशोत्तर वृद्धिसे ८ दिशामें संबंध लगायके अखंडाश्वगति चलाई है

१६	३७	४६	४३	४८	२७	५२	५५
४५	४२	१५	३८	५१	५४	५९	२६
३६	१७	४४	४७	२८	४९	५६	५३
४१	१४	५	५०	३९	६०	२५	५८
१८	३५	४०	२९	६	५७	६४	६१
१३	३२	२१	४	१	६२	९	२४
३४	१९	३०	११	२२	७	३	६३
३१	१२	३३	२०	३	१०	२३	८

पंचवृद्धिबंधचक्र ६२

इस ६४ घरके पटमें बीचके ८ घरमें पाचकेपाहाडेकी रीतसे वृद्धि करके बाकी ५६ घरमें अखंडैकाश्व गति चलाई है.

३८	४३	१८	२१	१६	४५	५२	४९
१९	२२	३७	४४	५१	४८	१३	४६
४२	३९	२०	१७	३६	१५	५०	५३
२३	३४	२९	४०	२५	१२	४७	१४
२८	४१	२४	३५	३०	६१	५४	११
३३	२	५	२६	७	१०	५७	६०
४	२७	६४	३१	५८	५५	६२	९
१	३२	३	६	६३	८	५९	५६

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

त्रिसंख्योत्तरपंचोत्तरवृद्धिबंधचक्र ६३

इस ६४ घरके पटमें त्रिसंख्योत्तर वृद्धिकी पंक्ति १ पंचोत्तर वृद्धिकी पंक्ति १ यह दो मिलायके अखंडैकाश्वगति चलाई है

५४	४९	५८	६३	२८	३३	४४	३९
५७	६२	५५	५०	४५	४०	२७	३२
४८	५३	६४	५९	३४	२९	३८	४३
६१	५६	५१	४६	४१	३६	३१	२६
५२	४७	६०	३५	३०	२५	४२	३७
१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२
८	११	२	५	२४	२१	१४	१७
३	६	९	१२	१५	१८	२३	२०

विचित्राश्वगतिबंधचक्र ६४

इस ६४ घरके पटमें ८ घर छोडके बाकी ५६ घरमें विचित्राश्वगति चलाई है.

१८	३५	३२	२३	१६	५३	३०	२५
३३	·	१७	५४	३१	२४	·	५२
३६	१९	३४	१५	२२	५५	२६	२९
१३	४२	२१	·	·	२८	५१	६
२०	३७	१४	·	·	७	५६	२७
४३	१२	४१	८	१	४८	५	५०
३८	·	१०	४५	४०	३	·	४७
११	४४	३९	२	९	४६	४९	४

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

त्रिसंख्योत्तरवृद्धिबंधचक्र ६५

इस ६४ घरके पटमें तीनकेपाह्राडेकी एक पंक्ति सहित अश्वगति चलाई है.

४३	३८	६१	५६	४९	३६	२९	५४
६२	५७	४२	३७	६०	५५	५०	३५
३९	४४	५९	४८	३३	३०	५३	२८
५८	६३	४६	४१	२६	५१	३४	३१
४५	४०	२५	६४	४७	३२	२७	५२
२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३
१७	१४	२३	२०	१	४	११	८
२२	१९	१६	१३	१०	७	२	५

द्वादशकोष्ठबंधचक्र ६६

इस ६४ घरके पटमें बीचमेंके १२ घरमें चमत्कारसे घोडेको चलायके चारों तरफ ५२ घरमें अश्वडैकाश्व गति चलाई है.

२०	२३	४२	२७	५२	५५	४४	२९
४१	२६	२१	५४	४३	२८	५१	५६
२२	१९	२४	७	१०	५३	३०	४५
२५	४०	५	१२	३	८	५७	५०
१८	१३	२	९	६	११	४६	३१
३९	६२	१५	४	१	३४	४९	५८
१४	१७	६४	३७	६०	४७	३२	३५
६३	३८	६१	१६	३३	३६	५९	४८

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अष्टवृद्धिकर्णबंधचक्र ६७

इस ६४ घरके पटमें एक कोनेमें ८ के वृद्धिसे ६४ तक अखंडेका अश्वगति चलाई है.

५३	२०	५१	३६	५५	६०	४५	६४
३४	३७	५४	१९	४६	६३	५६	६१
२१	५२	३५	५०	५९	४८	१	४४
३८	३३	१८	४७	४०	३१	६२	५७
१७	२२	३९	३२	४९	५८	४३	२
१०	७	२४	५	१४	४१	३०	२७
२३	१६	९	१२	२५	२८	३	४२
८	११	६	१५	४	१३	२६	२९

सव्यापसव्यप्रदक्षिणाबंधचक्र ६८

इस ६४ घरके पटमें चारों तरफकी दो पंक्तिमें सव्य प्रदक्षिणा और पुनः अपसव्य प्रदक्षिणासे अश्वगति चलाई है.

२०	७	३०	४७	१८	९	३२	४५
२९	४८	१९	८	३१	४६	१७	१०
६	२१	५०	५९	५४	५७	४४	३३
४९	२८	५३	५६	५१	६२	११	१६
२२	५	६०	६३	५८	५५	३४	४३
२७	३८	२५	५२	६१	६४	१५	१२
४	२३	४०	३७	२	१३	४२	३५
३९	२६	३	२४	४१	३६	१	१४

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

राजाश्वगजगतित्रयबंधचक्र ६९

इस ६४ घरके पटमें ४ घर छोडके बाकी ६० घरमें राजा और घोडा और गज यह तीनोंकी गति चलाई है.

२१	२२	२०	३२	३३	३०	३५	३६
१७	२४	२५	२३	३४	३१	४१	३७
१८	१९	२७	२८	२६	३८	४५	३९
१५	१६	१४	..	..	२९	४६	४०
८	१०	९	..	..	५३	४९	४८
५	१३	१२	५९	५५	५४	४४	४७
६	७	११	६०	१	५०	५२	५१
३	४	२	५७	५८	५६	४२	४३

राजाश्वगजमंत्रिगतिचतुष्टयबंधचक्र ७०

इस ६४ घरके पटमें राजा घोडा हाथी प्रधान इनचारोंकी गति चलाई-है.

३९	४१	३७	३५	२५	२३	१९	२१
३८	४०	३६	४२	२४	२२	१८	२०
४९	४७	४४	४५	३३	२६	१४	१६
४८	४६	५०	४३	३२	३०	१५	१७
५९	६१	५८	३४	२८	३१	१२	१३
५७	६०	६३	६२	२९	२७	१०	११
५६	५२	५३	६४	४	२	६	८
५४	५५	५१	१	५	३	७	९

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

राजादिपंचगतिबंधचक्र ७१

इस ६४ घरके पटमें कोणेके ४ घर छोडके बाकी ६० घरमें राजा अश्व मंत्री गज उष्ट्र इन पांचोकी गति चलाई है.

·	१५	१६	२६	२५	२९	२८	··
१४	१२	२३	३८	३९	२७	३६	३१
१३	१७	२४	२२	३७	४०	३५	३०
११	२१	१८	४५	४६	४१	३२	३४
१०	२०	४४	४३	५१	५०	४७	३३
६	९	१९	८	४२	५४	५२	४८
५	२	७	६०	५७	५३	५५	४९
:	४	३	१	५९	५८	५६	··

राजादिषट्गतिबंधचक्र ७२

इस ६४ घरके पटमें कोणेके घर ४ छोडके बाकी ६० घरमें राजा अश्व मंत्री गज उष्ट्र भट यह छै गति चलाई है

·	४९	४८	३२	५५	२५	२४	··
४२	४७	३३	५२	५४	३१	२३	२६
४३	४१	५०	५६	५३	३०	२७	२८
४०	३९	४४	५१	५७	५८	२९	६०
१८	१९	३८	४५	४६	९	५९	१
१७	२१	३४	३६	३७	१०	८	३
२०	२२	१४	३५	१२	६	२	४
·	१५	१६	११	१३	७	५	··

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

राजादिसमष्टिगतिबंधचक्र ७३

इस ६४ घरके पटमे राजादि षट् समष्टि गतिचलाइ है.

१४	५	४	११	५	१	९	३
६	३	४	१	६	७	५	२
१३	२	७	१२	१०	३	४	१
११	८	८	९	२	६	८	४
१०	१२	३	१	१५	१४	२	१
१६	९	७	१५	१३	९	२	४
५	६	२	१८	१२	१०	६	७
३	४	१७	१	११	५	८	३

शराकारसर्वतोभद्रबंधचक्र ७४

इस ६४ घरके पटमे चतुः शराकार ८ घरमें एक पंक्ति को २७६ काजोड बीचके १६ घरमे १५४ काजोड चारोंतरफ २ पंक्ति के घर ८मे २४४ का जोड चारकोणमे ४ घरमे सर्वतोभद्रसरीखी १२ जोड होवे ऐसी अश्वगति चलाई है.

३६	७	५६	२३	३८	५	५४	२५
५७	२२	३७	६	५५	२४	३९	४
८	३५	१४	४७	३०	६३	२६	५३
२१	५८	३१	६२	१५	४६	३	४०
३४	९	४८	१३	६४	२९	५२	२७
५९	२०	६१	३२	४५	१६	४१	२
१०	३३	१८	४९	१२	४३	२८	५१
१९	६०	११	४४	१७	५०	१	४२

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

मनोरंजनबंधचक्र७५

इस ६४ घरके पटमें बीचके १६ घरमे दंड पार्श्व काजोड १५० होताहै. चारकोणोंक घरोमें १२ काजोड होवे एसीरीतिसे एकाम्च गति चलाई है.

२४	७	३६	५३	२२	९	३४	५५
३७	५२	२३	८	३५	५४	२१	१०
६	२५	४६	२९	६२	१३	५६	३३
५१	३८	६१	१४	४५	३०	११	२०
२६	५	२८	४७	१२	६३	३२	५७
३९	५०	१५	६०	३१	४४	१९	६४
४	२७	४८	४१	२	१७	५८	४३
४९	४०	३	१६	५९	४२	१	१८

जगन्मोहनबंधचक्र७६

इस ६४ घरके पटमें बिचमें १६ घरमें दंडपार्श्व इत्यादि ५६ प्रकारसे बि १५४ का जोड होवे चारों तरफ २ पंक्ति मिलके १२ खंडमें चार-चार घरमे १२२ कीजोड होवे इसरीतिसे चित्रविचित्राम्च गति चलाई है.

१८	७	६०	३९	२८	५	५०	४१
५९	३८	१७	६	४९	४०	२७	४
८	१९	४८	६१	१६	२९	४२	५१
३७	५८	३१	१४	६३	४६	३	२६
२०	९	६२	४७	३०	१५	५२	४३
५७	३६	१३	३२	४५	६४	२५	२
१०	२१	३४	५५	१२	२३	४४	५३
३५	५६	११	२२	३३	५४	१	२४

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सिंहलनृपकृतअश्वगतिबंधचक्र ७७

इस ६४ घरके पटमें श्लोकाक्षर क्रमसे अश्वगति चलाई है.

सिं	न	ही	ब	नि	च	प्र	ज्ञा
पा	कं	श्री	दे	म	नो	वि	ल
वा	ह	ल	श्म	हु	नं	तं	ति
मे	वे	तु	ए	प	धा	जि	कु
कु	जि	धा	प	ए	तु	वे	मे
ति	तं	नं	हु	श्म	ल	ह	वा
ल	वि	नो	म	दे	श्री	कं	पा
ज्ञा	प्र	च	नि	ब	ही	न	सिं

श्रीसिंहणमहीपालमेधावीकुंजकबहु ॥) सं० श्लो० ५२९
पठेनवाजिनाज्ञां चलनंप्रतिचक्रमीति ॥ } ५३०

शंकरभट्टकृतअश्वगतिबंधचक्र ७८

इस ६४ घरके पटमें श्लोकाक्षर क्रमसे अश्वगति चलाई है.

नि	ना	शं	त्रि	स	मे	ज	ह्व
क	त्स्व	ध्व	भित्	य	ए	स्व	श
रा	नि	रो	ति	ष	भू	रा	निः
वा	श्र	हा	ना	ष्टि	हं	य	गे
गे	य	हं	ष्टि	ना	हा	श्र	वा
नि	रा	भू	ष	ति	रो	नि	रा
श	स्व	णा	य	भित्	ध्व	त्स्व	क
ह्व	ज	मे	स	त्रि	शं	ना	नि

नारायणाख्यरामेशशंभूजानिःप्रतिसध्वनि ॥) सं० श्लो० ५३१
नित्यायशंकरोबाहंस्यगांधास्त्रिषशिषिमत् ॥ } ५३२

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

नीलकंठकृतअश्वगतिबंधचक्र ७९

इस ६४ घरके पटमें अंक क्रमसे अश्वगति चलाई है अपने बुद्धिकौशल्यसे इस कोठेके घरोमें अंक लिखना.

हरिकृष्णकृतअश्वद्वयगतिबंधचक्र ८०

इस ६४ घरके पटमें श्लोक क्रमसे दो घोडे की गति चलाई है.

श्री	म	ह	वा	त्य	म	कृ	रो
योः	नं	गो	ग	रि	त्य	रो	नं
त	जः	कु	त्र	जि	ष्णः	क	रि
लो	द्व	म	कृ	त्र	ह	वा	क
त्म	ति	त्प	नो	ग	ष्णः	त	जः
न्नो	त्प	ति	क	र्व्यं	त्म	योः	जि
र्वित्	टा	ज्यो	लो	द्व	गो	क	म
न्नो	ज्यो	र्व्यं	र्वित्	टा	कु	नो	श्री

श्रीगोलसमकुलोत्पन्नो ज्योतिर्वित् त्र्यंकटात्मजः ॥
हरिकृष्णः कृतपत्रगमनं वाजिनोर्द्वयोः ॥ ५२५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अक्षरावलिबंधचक्र ८१.

इस ६४ घरके पटमेंकखघङ ऐसे बत्तीस अक्षरके क्रमसे दो अश्वगति चलाई हैं.

के	श	झं	ना	ग	भ	ट्टा	य
ते	ध	खे	व	भ	रा	घ	बे
षा	जे	था	ढे	पं	च	मी	ढे
दा	णे	स	छ	ल	डा	फ	ङ
ङ	फ	डा	ल	छ	स	णे	दा
ढे	मी	च	पं	ढे	था	जे	षा
बे	घ	रा	भ	व	खे	ध	ते
य	ट्टा	भ	ग	ना	झं	श	के

सतरंजअश्वगतिबंधचक्र ८२.

इस १०० घरके सतरंज पटमें एक अंकसे १०० अंकतक क्रमसे एकाश्वगति चलाई है. इसके भेद बहुत होते हैं.

१	३२	९९	४८	१५	३०	६३	४६	१३	२८
१००	४९	१६	३१	९८	४७	१४	२९	६२	४५
१७	२	३३	५०	८७	६४	९७	९४	२७	१२
३४	५१	७६	६५	९६	९३	८६	७१	४४	६१
३	१८	७९	८८	७७	७२	९५	९२	११	२६
५२	३५	६६	७५	८०	८३	७०	८५	६०	४३
१९	४	८९	७८	७३	६८	९१	८२	२५	१०
३६	५३	७४	६७	९०	८१	८४	६९	४२	५९
५	२०	५५	३८	७	२२	५७	४०	९	२४
५४	३७	६	२१	५६	३९	८	२३	५८	४१

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ १०० घरका सतरंजक्रीडापट.

रुखरथ	घोडा	फिल हाथी	कोत वाल	बाद शाह	साह जादा	वजीर	फिल हाथी	घोडा	रथरुख
प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	उर्दा बेगिनी	उर्दा बेगिनी	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा
				घोडा	घोडा				
				घोडा	घोडा				
प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	उर्दा बेगिनी	उर्दा बेगिनी	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा
रथरुख	घोडा	फिल हाथी	वजीर	साह जादा	बाद शाह	कोत वाल	फिल हाथी	घोडा	रुखरथ

अश्वद्वयगमनप्रकारमाहहरिकृष्णः ।

चतुःषष्टिकोष्ठात्मकेपट्टेईशानारभ्यनैर्ऋत्यंतं
श्रीआदिअक्षराणिविलिखेदक्षराणियथा
श्रीमद्दवात्यमकूरोयोःनंगौगरित्यरोनंतजः
कुत्रजिष्णः करिलोर्द्धमकूत्रहवाकत्मति-
त्पनेगिष्णः तजभ्नींत्पत्तिकव्यंत्मयोःजि-
वितटाज्योलोर्द्धगौकमन्नोंज्योव्यांवितटाकु-
नोश्री ततःवक्ष्यमाणश्लोकरीत्याश्वौचालनीयौ ॥
श्रीगौतमकुलोत्पन्नोज्योतिर्विद्व्यंकटात्मजः ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

हरिकृष्णःकरोत्यत्रगमनंवाजिनो-
र्द्वयोः ॥ ५२४ ॥

इस चौंसट घरके पटमें ईशान कोणसे लेके नैर्ऋत तक श्री महवा इत्यादि अक्षर लिखने बाद दोनों जनोंने अपने अपने श्रीकार घरसे 'श्री गौतम कुलोत्पन्न' यह श्लोकपढ़ दोनों घोडे चलाना ॥ ५२४ ॥

अथाक्षरावलिबन्धेऽश्वद्वयगतिप्रकारमाह.

केशझंनागभट्टायतेधखेवजराधवे ॥
षाजेथाढे पंचमीढे दाणेसछलडाफङ ॥ ५२५ ॥

इस चौंसट घरके पटमें 'केशझं नागभट्टाय' यह अक्षर बत्तीस लिखे बाद पश्चिम तरफसे वही अक्षर लिखे दोनों जने घोडे चलानेके समय 'क ख ग घ ङ' ऐसे बत्तीस अक्षरके अनुसार अश्व चलावें ॥ ५२५ ॥

शतरंजाभिधेपट्टे चैकादिशतकांतके ॥
कोष्ठकेऽश्वंनयेद्धीमान् नानागतिविशारदः ॥ ५२६ ॥

इस सौ कोष्ठकके पटमें १ से लेके सौ घर पर्यंत अढाई घरके शुमारसे घोडा चलावें ॥ ५२६ ॥

अथ बुद्धिबलखेलचतुर्थप्रकारमाह.

अतःपरंप्रवक्ष्यामिखेलं बुद्धिबलाह्वये ॥
अतरंजमितिख्यातं चतुर्थशतकोष्ठकम् ॥ ५२७ ॥
अत्रसेनाभिधानंचस्थानंचगतिलक्षणम् ॥
पूर्वोक्ताद्यद्विशेषंच तदेवप्रोच्यतेऽधुना ॥ ५२८ ॥
पटेपूर्वापरस्थानेसेनायाःपरिकल्पयेत् ॥
बादशाहस्यनिकटेकोतवालस्यसंस्थितिः ॥ ५२९ ॥
तदंतिकेगजस्थानंतत्समीपेश्वसंस्थितिः ॥
अश्वस्यनिकटेस्थानंरथस्यपरिकल्पितम् ॥ ५३० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

नृपस्यवामभागेतु पुत्रस्थानं ततः परम् ॥
प्रधानश्वगजाश्वौचरथस्थानंततःक्रमात् ॥ ५३१ ॥
उभयोः सेनयोर्मध्ये ह्यष्टौ ह्यष्टौ पदातयः ॥
पुत्रपित्रोरग्रभागे ह्युर्दावेगिनिकाद्वयम् ॥ ५३२ ॥
तयोरग्रेस्यंदनौद्वावेवंसैन्यव्यवस्थितिः ॥
अथैषां गतिभेदं च प्रवक्ष्यामि विशेषतः ॥ ५३३ ॥

अब इस बुद्धिबल खेलमें एक अतरंज नाम करके चौथा भेद है सो कहताहूं. इस खेलका जो पट है उसमें सब कोष्ठक १०० हैं ग्यारह रेखा खडी करे ग्यारह रेखा आडी करै तौ सौ कोष्ठक होते हैं और शतरंजमें जो नरदाहै वही इसमें है, परन्तु उसके सिवाय इस अतरज खेलमें प्रत्येक दो तरफ छः छः नरदा ज्यादा हैं उन ज्यादा नरदोंका वर्णन करते हैं–कोतवाल १, शाहजादा १, उर्दा बेगनी २, घोडे २, उर्दा बेगनीको कोई कोई किल माकनीभी कहते हैं. अब मोहोरोंकी जगह कहते हैं राजाके सीधिबाजू पर कोतवाल हाथी घोडा रथ बिठावे राजाके दहिनेबाजू शाहजादा फरजी हाथी घोडा रथ क्रमसे बिठावे दोनों सेनामें रथ घोडा हाथी कोतवाल फरजी इनके आगेके घरोंमें एकेक प्यादा रक्खे बादशाह शाहजादा इनके आगे उर्दा बेगिनी दो बिठावें उर्दा बेगिनीके आगेके दो घरोंमें दो दो घोडे बिठावे ऐसे दोनों बाजूमें सेना बिठावे. अब इनकी चालका भेद बताते हैं ॥ ५२७ ॥ ५२८ ॥ ॥ ५२९ ॥ ५३० ॥ ५३१ ॥ ५३२ ॥ ५३३ ॥

नृपाश्वरथहस्तीनांप्रधानस्यपदातिनः ॥
गतिःपूर्वोक्तसदृशावेगिन्यानृपवद्गतिः ॥ ५३४ ॥

राजा घोडा रथ हाथी वजीर प्यादा इन छः मोहरोंकी गति पहिले खेलोंमें कहीहै वही रीति जानना चाहिये ॥ ५३४ ॥

गजाश्ववद्गतिर्द्वेधाकोतवालस्यकीर्तिता ॥
नृपपुत्रस्यचगतिःसर्ववत्परिकीर्तिता ॥ ५३५ ॥

कोतवालकी गति घोडा और हाथी इन दोनोंके सरीखी है. कौर शाहजादेकी गति सब मोहरोंके सरीखी है. बाकी खेलनेकी रीति सब पहिले सरीखी जानना चाहिये ॥ ५३५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ दिवानेबादशाहखेलनेका पट ।

रथ	घोड़ा	हाथी	बाद शाह	वजीर	हाथी	घोडा	रथ
प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा	प्यादा
			×	×			
			×	×			
				बाद शाह			

अथ चित्तभ्रमनृपस्यखेलनंनामपंचमप्रकारमाह ।

चतुःषष्टिपदेपट्टेखेलनंचात्रनिर्दिशेत् ॥
एकभागेस्थितंसर्वंसनृपंसर्वसैनिकम् ॥ ५३६ ॥
तेषांगत्यादिकंसर्वंपूर्ववत्परिकीर्तितम् ॥
द्वितीयेसंस्थितोराजासतुचित्तभ्रमात्मकः ॥ ५३७ ॥
एकाकीसर्वसेनांगगतिगः परिकीर्त्तितः ॥
निर्बलीमारणेशक्तः नृपांतिगमनंनहि ॥ ५३८ ॥
शहदानेसमर्थश्चस्वस्योपरितदागमः ॥
समर्थोमातकरणेकदाचिद्धात्यतेपरैः ॥ ५३९ ॥

अब बुद्धिबल खेलमें पांचवाँ भेद बताते हैं इस शतरंजमें एक खेल दिवाने बादशाहका है इस खेलके पटमें एक तरफ सब नरदा रहती हैं एक तरफ केवल अकेला बादशाह रहता है वह दिवाना सब मोहरेकी चाल चलता है

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

और निर्बली नर्दको मारताहै शह देता है शह उसको लगती है. मात होती है मात करता है परन्तु बादशाहके पासकी शह देना नहीं ॥ ५३९ ॥

(प्राचीनपद्धतिग्रन्थे)

सांप्रतंपूर्वदेशके उष्ट्रस्यगणना-
नास्तिमरुधन्वादिकल्पिता ॥ ५४० ॥

इ० ह० कृ० बृ० ष० मि० क्री० बु० खे० ना० प्रकरणम् ॥ ८ ॥

अब शतरंज पटमें रथ और ऊंटका निर्णय कहते हैं संस्कृतमें चतुरंगिणी सेनामें हाथी १, घोडा २, रथ ३, पैदल ४, यह चार चीजें हैं. उसी तरह शतरंजभी चतुरंगिणी सेना माफक है शतरंजकी प्राचीन जो किताबेंहैं शतरंज दीपक १ गदाधरशास्त्रीकृत विक्रम शके १६२१ में निर्माण किया हुआ शतरंजतसनीफ २ नबाब खानखानाकृत हिजरी सन ९७७ में किया हुआ चीस बुक ३ विलियम साहेब पादरी कृत ईसवी सन् १७४५ में किया हुआ विनोद शतक४देवदत्त कवि कृत सवत्१८७२में बनाया हुआ इत्यादि अनेक किताबें हैं उनमें शाबित है. परंतु अब कहीं कहीं शतरंजमें कराम हाथीको ऊंट कहते हैं और जो करीम रथ है उसको हाथी कहतेहैं. न मालूम ऊंट किसने पैदा किया पूर्वदेश अयोध्या काशी प्रांतोंमें किसी मोहरेको ऊंट नहीं कहते हैं बहुत करके ऊंटका रिवाज मारवाड़ मालवा महाराष्ट्र गुजरात इत्यादि देशोंमें ज्यादा है उससे ऐसा मालूम होताहै कि मारवाड़ी खिलाड़ीने ऊंट पैदा किया है ॥ ५४० ॥

इति शतरंजका भेद संपूर्ण भया. प्रकरण ॥ ८ ॥

अथ बालाद्यवस्थाक्रीडामाह ।

श्रीमद्भागवतप्रोक्तं खेलं वक्ष्याम्यतः परम् ॥
बालादीनां खेलनार्थं दृष्टांतं रामकृष्णयोः ॥ ५४१ ॥

अब बाल्यादिक अवस्थाकी क्रीडा कहते हैं--श्रीमद्भागवतपुराणमें श्रीरामकृष्णके जो क्रीडा कही है दृष्टांतसे वही क्रीडा मैं यहाँ कहताहूँ ॥ ५४१ ॥

कौमारं पंचमाब्दातं पौगंडं दशमावधि ॥
कैशोरमापंचदशयौवनंतुततःपरम् ॥ ५४२ ॥

एक वर्षका, बालक कहा जाताहै. पांच वर्ष तक कौमार अवस्था कही जातीहै. छः वर्षसे दश वर्ष तक पौगंड अवस्था कही जातीहै. ग्यारहसे

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पंद्रह तक किशोर अवस्था कही जातीहै. उसके ऊपर यौवन अवस्था जाननी चाहिये ॥ ५४२ ॥

तत्रादौपालनेबालः शायितः क्रीडते स्वयम् ॥
दृष्ट्वावस्त्रमयानूर्ध्वंपक्षिणोघूघरादिकान् ॥ ५४३ ॥

एक वर्षका बालक पालनेमें झूलताहै वहाँ कपड़ेके सींयेहुये पक्षिआदिकोंको देखके मनमें खेलताहै और काष्ठके घूघरे टाचके धावणि आदि पदार्थसे खेलताहै ॥ ५४३ ॥

कालेनव्रजताल्पेनगोकुलेरामकेशवौ ॥
जानुभ्यांसहपाणिभ्यांरिंगमाणौविजह्रतुः ॥ ५४४ ॥

तावंघ्रियुग्ममनुकृष्यसरीसृपंतौघोषप्रघोषरुचिरंव्रजकर्दमेषु ॥
तन्नादहृष्टमनसावनुसृत्यलोकंमुग्धप्रभीतवदुपेयतुरंतिमात्रोः ५४५

पीछे थोड़ेही दिनोंमें घुटण टेकके चलना पाँवके घूंघरेके शब्दसे आनंद पाना किसी समय डरपेसरीखे होयके भयसे माके पास जाना ॥ ५४४।५४५॥

यर्ह्यंगनादर्शनीयकुमारलीलावंतर्व्रजे तदबलाप्रगृहीतपुच्छैः॥वत्सैरि-
तस्ततउभावनुकृष्यमाणौप्रेक्षंत्यउज्झितगृहाजहृषुर्हसन्त्यः॥५४६॥

किसी समय गायके वत्सकी पूंछ पकड़के उसके पीछे खैंचे हुये जाना ॥ ५४६ ॥

अघृष्टजानुभिः षड्भिर्विचक्रमणकन्ततः ॥
स्तेयंभक्ष्यपदार्थानामकाले वत्समोचनम् ॥ ५४७ ॥

पीछे थोड़ेही दिनोंमें पाँवसे चलना खानेके पदार्थोंको चुराके लेना मनमें आवे उसी समय गोवत्सोंको छोड़ना ॥ ५४७ ॥

हस्ताग्राह्येविधिंतत्रकरोत्युलूखलादिभिः ॥
धाष्ट्यंर्चस्थितिःकदाचिद्वैकदाचिन्मृदभक्षणम् ॥ ५४८ ॥

ऊँचे रक्खे हुये पदार्थोंको अनेक तरहसे लेना ढीठ होके खड़े रहना मृत्तिका खाना ॥ ५४८ ॥

कलवाक्यैः स्वकालेनवत्सपालौबभूवतुः ॥
चारयामासतुर्वत्सान्नानाक्रीडापरिच्छदौ ॥ ५४९ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

थोड़े थोड़े हरफोंसे भाषण करना गोवत्सोंको चराना अनेक प्रकारसे वहाँ खेलना ॥ ५४९ ॥

क्वचिद्वादयतोवेणुंक्षेपणैः क्षिपतः क्वचित् ॥
क्वचित्पादैः किंकिणिभिः क्वचित्कृत्रिमगोवृषैः ॥ ५५० ॥
वृषायमाणौनर्दंतौयुयुधातेपरस्परम् ॥
अनुकृत्यरुतैर्जन्तूंश्चेरतुः प्राकृतौयथा ॥ ५५१ ॥

वेणु बजाना गेंद आदि पदार्थोंको फेंकना गाय बैल सरीखे शब्द करना कुश्ती खेलना पक्षियोंके शब्द सुनके उनके सरीखे शब्द निकालना ५५०।५५१

फलप्रवालस्तवकसुमनः पिच्छधातुभिः ॥
काचगुंजामणिस्वर्णभूषिताअप्यभूषयन् ॥ ५५२ ॥

फल फूल मोर पिच्छ गेरु कांच गुंजा मणि सुवर्ण इत्यादि पदार्थोंस शरीरको भूषित करना ॥ ५५२ ॥

क्वचिद्वनेभोजनंवैचक्रतुर्बालकैःसह ॥
मुष्णंतोऽन्योन्यशिक्यादीन् ज्ञातानाराच्चचिक्षिपुः ॥५५३॥

वनमें भोजन करना एकेकके पदार्थोंको चोरना मालूम पडे तो दूर फेंकदेना ॥ ५५३ ॥

तत्रत्याश्चपुनर्दूराद्धसंतश्चपुनर्ददुः ॥
यदिदूरंगतः कृष्णोवनशोभेक्षणायतम् ॥ ५५४ ॥
अहंपूर्वमहंपूर्वमितिसंस्पृश्यरेमिरे ॥
केचिद्वेणुंवादयंतोध्मांतः शृंगाणिकेचन ॥ ५५५ ॥

दूरसे आदमी वहाँसे लेके और उससेभी दूर डालना हँसना पीछे देना ऐसे दौड़ते दौड़ते कृष्ण दूर गये ता दूसर बालकम पहिले जायके स्पर्श करता हुआ तुम स्पर्श करतेहो ऐसा कहके खेलना वेणु बजाना शृंग बजाना ५५४॥५५५॥

केचिद्भृङ्गैः प्रगायन्तः कूजन्तः कोकिलैः परे ॥
विच्छायाभिः प्रधावन्तोगच्छन्तः साधुहंसकैः ॥ ५५६ ॥

भ्रमर सरीखा गायन करना कोकिला सरीखा नाद करना पक्षीकी छायाको देखके उसके साथ दौड़ना हंस सरीखा चलना ॥ ५५६ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

बकैरुपविशंतश्चनृत्यंतश्चकलापिभिः ॥
विकर्षंतः कीशवालानारोहंतश्च तैर्द्रुमान् ॥ ५५७॥

बगुल सरीखा बैठ रहना मोर सरीखे नाचना वृक्ष ऊपर बैठे हुये वानरोंकी पूँछ नीचे लटकरही है उनको धरके वृक्ष ऊपर चढ़ना ॥ ५५७ ॥

विकुर्वंतश्चतैः साकंप्लुवन्तश्चपलाशिषु ॥
साकंभेकैर्विलंघन्तः सरित्प्रस्रवसंप्लुताः ॥ ५५८ ॥

वानरोंके साथ चेष्टा करना मेंढक सरीखे उड़ना ॥ ५५८ ॥

विहसन्तःप्रतिच्छायाः शपंतश्चप्रतिस्वनान् ॥
एवंविहारैःकौमारैःकौमारंजहतुर्व्रजे ॥ ५५९ ॥

छाया देखके हँसना गिरिगफा गंमजगहके शब्दोंको सुनके प्रत्युत्तर देना ॥ ५५९ ॥

नीलायनैःसेतुबन्धैर्मर्कटोप्लुवनादिभिः ॥
ततस्तौरामकृष्णौचपौगण्डवयसिस्थितौ ॥ ५६० ॥

आँख मिचौनीके खेल जल प्रवाहके सेतु बांधके जल रोकना वानर सरीखे कूदना ॥ ५६० ॥

गाश्चारयंतौ सखिभिः नद्यद्रिकाननेषुच ॥
मेघगम्भीरयावाचा नामभिर्दूरगान्पशून् ॥ ५६१ ॥

अब पांच वर्षकी उमरके ऊपर वनमें गाय चराना दूरसे गायोंके नाम लेके बुलाना ॥ ५६१ ॥

क्वचिदाह्वयसिप्रीत्यागोगोपालमनोज्ञया ॥
चकोरक्रौंचचक्राह्वभारद्वाजांश्चबर्हिणः ॥ ५६२ ॥
अनुरौतिस्मसत्त्वानां भीतवद्व्याघ्रसिंहयोः ॥
क्वचित्पल्लवतल्पेषुशयनंश्रमयोगतः ॥ ५६३ ॥

पक्षियों सरीखे शब्द करना घास पत्तोंकी शय्या करके सोना ५६३।५६२॥

नर्तनंगायनंक्वापि वल्गनंयुद्धखेलनम् ॥
फलानांपातनंचैव कन्दमूलफलाशनम् ॥ ५६४ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

नाचना गाना आलिंगन करना लडना वृक्षोंके ऊपरसे फल गिराना कंद मूल फल भक्षण करना ॥ ५६४ ॥

प्रवालबर्हस्तबकस्रग्धातुकृतभूषणम् ॥
वेणुपाणितलैःशृंगैरन्यैर्वाद्यविवादनम् ॥ ५६५ ॥

ताली बजाना अनेक तरहके दूसरे वाद्य बजाना ॥ ५६५ ॥

भ्रामणैर्लंघनैःक्षेपैरास्फोटनविकर्षणैः ॥
क्वचिद्बिल्वैः क्वचित्कुंभैः क्वचामलकमुष्टिभिः ॥ ५६६ ॥

एकेकका हाथ धरके फिराना उसके ऊपरसे कूदना दंड ठोंकना खेंचना बीज फलादिकोंसे खेलना ॥ ५६६ ॥

अस्पृश्यनेत्रबंधाद्यैःक्वचिन्मृगखगेहया ॥
क्वचिच्चदर्दुरप्लावैर्विविधैरुपहासकैः ॥ ५६७ ॥

हरिण सरीखे और पाक्षि सरीखे खेल खेलना ॥ ५६७ ॥

कदाचित्स्यंदोलिकयाकर्हिचिन्नृपचेष्टया ॥
एवंलोकप्रसिद्धाभिः क्रीडाभिश्चेरतुर्वने ॥ ५६८ ॥

किसी समय वृक्षके ऊपर डोरीका झूला बांधके खेलना किसी समय राजा प्रधान चोपदार सिपाही चोर ऐसे बनके खेल खेलना. ऐसे २ लोगोंमें अनेक प्रसिद्ध खेल हैं ॥ ५६८॥

अथ वाह्यवाहकक्रीडामाह ।

श्रीभागवते । तत्रोपहूयगोपालान् कृष्णः प्राह विहारवित् ॥
हेगोपाविहरिष्यामोद्वन्द्वीभूय यथायथम् ॥ ५६९ ॥

अब वाह्य वाहक खेल कहते हैं--एक समय श्रीकृष्णभगवान् खेलनेके वास्ते गोपालोंको बुलायके कहने लगे कि अपन जुगल होयके खेलेंगे ॥ ५६९ ॥

तत्रचक्रुःपरिवृढौगोपारामजनार्दनौ ॥
कृष्णसंघट्टिनःकेचिदासन्रामस्यचापरे ॥ ५७० ॥

तब वे सब अच्छा कहके राम और कृष्ण इन दोनोंको नायक बनायके कितनेक कृष्णके तरफ भये कितनेक रामके तरफ भये ॥ ५७० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

आचेरुर्विविधाःक्रीडावाह्यवाहकलक्षणाः ॥
यत्रारोहंतिजेतारोवहंतिचपराजिताः ॥ ५७१ ॥

पश्चात् खेलको आरंभ किया जिस खेलमें जीताहुआ आदमी कांधे ऊपर बैठताहै हाराहुआ आदमी अपने कांधे ऊपर बिठाताहै उसकी हार जीतका लक्षण कहतेहैं एक दीवारके निकट सात गर्त्त छोटे करे उसको प्राकृतमें अगेल कहतेहैं पीछे एक तरफके आदमी हाथमें गेंद लेके उन सातों गर्तमें डाले जहां सातोंमें गेंद पड़चुका वह जीता वह सामनेवाले आदमीके कांधे ऊपर बैठकर जहांतक नियम किया होवे वहाँतक लेजावे बाद वह गेंद डाले ॥ ५७१ ॥

रामसंघट्टिनोर्यहिंश्रीदामावृषभादयः ॥
क्रीडायांजनितस्तांस्तानूहुःकृष्णादयोनृप ॥ ५७२ ॥

रामके तरफके जब जीते तब कृष्णादिक सब उनको कांधेपर बिठाते भये ॥ ५७२ ॥

उवाहकृष्णोभगवान्श्रीदामानंपराजितः ॥
वृषभंभद्रसेनस्तु प्रलंबोरोहिणीसुतम् ॥ ५७३ ॥

अब काष्ठ स्पर्शकी क्रीडा कहतेहैं--एक आदमी पहिले छूटा खड़ा रहे और सब लकड़ेको स्पर्श करके खड़े रहें और फिरते जावे लकड़े केरी बंबं ऐसा कहते जावे पीछे छुटे आदमी जो काष्ठ स्पर्श रहित होवें उनमेंसे एकतो स्पर्श करे तो उसके शिरपरका राज्य उसके शिरपर जाताहै. और यह पहिला काष्ठ स्पर्श करके रहे ॥ ५७३ ॥

अथ काष्ठस्पर्शक्रीडा।

काष्ठस्पर्शमयीक्रीडाकाष्ठस्पर्शाज्जयोमतः ॥
यःकाष्ठस्पर्शरहितः राज्यंतन्मस्तकोपरि ॥ ५७४ ॥

अथ काष्ठकीलक्रीडा।

हस्तमात्रेणदण्डेन चतुरंगुलकीलकम् ॥
गृहीत्वाभूमिगर्त्ताच्चयावत्सत्त्वंहिनिक्षिपेत् ॥ ५७५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पश्चात्परेणतत्कीलंगृहीत्वापूर्वगर्तके ॥
निक्षेपणीयमाद्येनदण्डेनगणनंपुनः ॥ ५७६ ॥
कीलगर्तांतरालेवैगणनादशकावधि ॥
दशकांतेकीलकस्यताडनंदूरगंभवेत् ॥ ५७७ ॥
यावच्चदशगावृद्धिस्ताडनंतावदेवहि ॥
संघट्टिभिश्चकर्तव्यं तदन्तेचपराजितैः ॥ ५७८ ॥
गृहीतकीलैर्गंतव्यंयावद्गर्तेहिशीघ्रतः ॥
श्वासेनैकेनचतथाश्वासभंगे पुनः पुनः ॥ ५७९ ॥
संघट्टिभिस्ताडनंचानयनंचपराजितैः ॥
यावद्गर्तेकीलकेऽस्यनस्पर्शस्तावदेवहि ॥ ५८० ॥

अब गिल्ली दांडूका खेल कहता हूँ—यह खेल जगत्में प्रसिद्ध है सब छोकरे खेलते हैं इस वास्ते वर्णन नहीं किया।५७४।५७५।५७६।५७७।५७८।५७९।५८०॥

बीडुखो खेलनं चैव ह्यष्टाधिकनरैर्भवेत् ॥
द्वाभ्यांचैवसमूहाभ्यां स्थितिभ्रमणयोगतः ॥ ५८१ ॥

अब बिडुखो नामकरके जो खेल है सो आठ आदमियोंसे जितने ज्यादाहों उन सबसे होताहै आठ आदमियोंसे कम होवे तो नहीं होताहै और इसमें दो नायक होते हैं उसमें एक बाजूके आदमी पंक्तिसे बैठें एक स्पर्श करनेके वास्ते फिरे अब सामनेवाले जिसमें उसका स्पर्श न होवे इस रीतिसे वे पंक्तिके चारों तरफ फिरे ॥ ५८१ ॥

सर्वेषां स्पर्शयोगेनमारणत्वाज्जयो मतः ॥
तथैवगुटिकाखेलो भूमिगर्तद्वयान्वितः ॥ ५८२ ॥

जब एकको स्पर्श होवे तब खो पकती कहतेहैं जो बीचमें बैठेहैं उनमेंसे एकको "बिडुखो" ऐसा कहके उसको फिराने लगें आप बैठें जितने आदमियोंको स्पर्श किया उतने मरे जाने. एक रहा होवे तो बलिबकरा जानके छोड़ देवे ऐसेही सबोंको स्पर्श करनेसे जय जानना चाहिये. ऐसा गुटिका खेल कहते मंजोका खेल खेलतेहैं उसमें दो अगेला कहते जमीनमें छोटे गढ़े करतेहैं जिसने अपने मंजेसे दूसरेके मंजेको चोट मारी वह जीता ॥ ५८२ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

कंदुकक्रीडनंचैवसमूहाभ्यांहिसंस्मृतम् ॥
सतेष्टिकासमूहस्यपातनाच्चपराजयः ॥ ५८३ ॥

अब गेंदका खेल कहते हैं—दोनों जुगस आदमी आमने सामने खड़े रहके बीचमें ईटानंग ७ का एकेकके ऊपर एक ऐसा निंगोरचा रखके हाथमें कपड़े-का गेंद लेके उस निंगोरचेको गिरानेके वास्ते बड़े जोरसे गेंदको सात वार फेंके सामने वाले गेंद देते जावे सात बारमें निंगोरचा न गिरातो सामने वाले सात बार गेंद फेंके जिसके तरफसे निंगोरचा गिरा उस तरफके मनुष्य उस गेंदको पाँवसे दूर फेंकते जावे और उनका एक आदमी निंगो-रचा रचना गेंद निंगोरचे खड़े करनेतक पास न आवे तो खेल जीता जानै और जो कभी निंगोरचा गिरा तो उसी समय गेंद सामने वाला निंगोरचेके पास लाया तो खेल हारा जाने ॥ ५८३ ॥

यदितेनैवचपुनःसमूहः स्थापितस्तदा ॥
जयस्तस्यविनिर्देश्योदंडाभ्यांखेलनं तथा ॥ ५८४ ॥

जो खेल दूसरा खेलें गेंद डाले और एक खेल दंडोंसे विद्याशालाके छोकरे खेलतेहैं वह खेल श्रावण भाद्रपद महीनेमें और गणेशचतुर्थीके दिन प्रसिद्धहै ॥ ५८४ ॥

मल्लक्रीडाखेलनार्थकार्यामल्लसभाशुभा ॥
रंगैर्नानाविधैरम्यारंगद्वारः सुशोभितः ॥ ५८५ ॥

अब मल्लकुश्ती खेलनेके वास्ते उत्तम सभास्थल बनावे नाना प्रकारके रंगोंसे दीवार पै चित्र निकाले मल्लसभाका जो दरवाजाहै उसकोभी सुशो-भित करे ॥ ५८५ ॥

मंचाश्चालंकृताः स्रग्भिः पताकाचैलतोरणैः ॥
स्थापनीयामल्लगर्तस्यासमंतात्सुशोभनाः ॥ ५८६ ॥

लोगोंके बैठनेके वास्ते काष्ठके कोंच अथवा कुर्सियां रक्खें मंचोंको पुष्प-माला पताका वस्त्रके तोरणसे सुशोभित करके कुश्ती खेलनेकी जगहके चारों तरफ रक्खें ॥ ५८६ ॥

चतुरस्रोमल्लगर्त्तः नृपहस्तामितः स्मृतः ॥
तन्मध्येवालुकारम्याक्षेपणीयाऽतिसूक्ष्मका ॥ ५८७ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अब कुश्ती खेलनेका जो गर्त्तहै सो सोलह हाथका लंबा चौड़ा कर उसमें बारीक रेती बिछावे ॥ ५८७ ॥

गर्त्तांतिभागेस्थाप्यानिमल्लोपकरणानिच ॥
बाहुवज्रमयौकर्त्तुंमुद्गरौद्वौस्वयोग्यकौ ॥ ५८८ ॥
पादयोर्निश्चलत्वेनस्थितिंकर्त्तुं करेलकम् ॥
अष्टांगदमनार्थंवैमल्लस्तंभः सुशोभनः ॥ ५८९ ॥

और कुश्तीकी जगहके पास मल्ल खेलके पदार्थ रक्खे सो कहतेहैं. काष्ठ-की जोडियां फिरानेके वास्ते जिनके फिरानेसे बाहु वज्र सरीखे होतेहैं. काष्ठ-के करेल जिनके फिरानेसे पाँव मजबूत जमावटसे रखनेकी सामर्थ्य होती है मल्लस्तंभ जिसके ऊपर आडे टेढे चढ़ने उतरनेसे शरीरके आठ अंगकी नसें खुली होतीहैं जिससे कुश्तीमें शत्रु अपना शरीर दबावे तो भी उसको इजा होवे नहीं और पकड़नेकी सामर्थ्य होतीहै ॥ ५८८ ॥ ५८९ ॥

लोहमयीशृंखलाचकाष्ठदंडेनसंयुता ॥
शत्रुगणस्यनाशार्थंकाष्ठयुग्मंसगोलकम् ॥ ५९० ॥

और केवल हाथोंकी नसें खुली करनेके वास्ते लोहेकी रेजम रक्खे और छडि पट्टा खेलनेके वास्ते दो लकडियाँ उसके दोनों मुँहपर कपड़ेका गेंद लगाया हुआ होवे ॥ ५९० ॥

ग्रीवाबलसमृद्ध्यर्थंचक्रं पाषाणसंभवम् ॥
मध्यच्छिद्रेणसंयुक्तं तथागोलश्चतन्मयः ॥ ५९१ ॥

गर्दन और खवेकी बलवृद्धि होनेके वास्ते पत्थरका चाक रक्खे. गोला, पत्थरका या लोहेका बनायके रक्खे जिस गोलेको जमीनपर फेंकनेसे आदमीके सामर्थ्यकी परीक्षा होतीहै ॥ ५९१ ॥

सर्वनाडिसमूहस्य बलंकर्तुंविशेषतः ॥
द्वेचेष्टिका स्थापिनीयाभूमिगर्तेनसंयुता ॥ ५९२ ॥

सब शरीरमें सामर्थ्य लानेके वास्ते जमीनमें गढा करके दो बाजू हाथ रखनेके वास्ते ईट रक्खे ॥ ५९२ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

एवमादिरनेकानिमल्लोपकरणानिच ॥
स्थापनीयानिपश्चाद्धैमल्लक्रीडांसमारभेत् ॥ ५९३ ॥

ऐसे दूसरे अनेक पदार्थ रखके तत्पश्चात् वस्तादको सलाम ऊर्फ नमस्कार करके कुश्ती खेले ॥ ५९३ ॥

तदुक्तं श्रीभागवतेभगवान्मधुसूदनः ॥
आससादाथचाणूरंमुष्टिकंरोहिणीसुतः ॥ ५९४ ॥

उस कुश्तीके जो दाँव पेचहैं सो श्रीभागवतमें कहेहैं कंसराजाकी मल्ल-सभामें श्रीकृष्ण चाणूर मल्लसे बलराम मुष्टिक मल्लसे मल्ल कुश्ती करते भये ॥ ५९४ ॥

हस्ताभ्यांहस्तयोर्बध्वापद्भ्यामेवचपादयोः ॥
विचकर्षतुरन्योन्यंप्रसह्यविजिगीषया ॥ ५९५ ॥

उसका वर्णन--हाथोंसे हाथोंकी गांठ बांधके पाँवोंसे पाँव भिड़ायके पर-स्पर जीतनेके वास्ते खेंचने लगे ॥ ५९५ ॥

अरत्नीद्वेह्यरत्निभ्यां जानुभ्यांचैव जानुनी ॥
शिरःशीर्षोरसोरस्तावन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥ ५९६ ॥

लंबे हाथ करके कनिष्ठांगुलीसे कनिष्ठांगुली मिलाने लगे घूटनसे घूटने भिड़ाने लगे मस्तकसे मस्तक छातीसे छाती भिड़ायके परस्पर मारने लगे ॥ ५९६ ॥

परिभ्रामणविक्षेपपरिरंभावपातनैः ॥
उत्सर्पणापसर्पणैश्चान्योन्यंप्रत्यरुंधताम् ॥ ५९७ ॥

कभी कभी हस्तादिक धरके चारों तरफ फिराते कभी विक्षेप कहे सामने हटाने कभी परिरंभ कहते दोनों हाथसे दबाते कभी अवपातन कहते नीचे गिराते कभी उत्सर्पण कहते शत्रुको छोड़के आगे खड़े रहते कभी अप-सर्पण कहते शत्रुके पीछे जायकें खड़े रहते इन उपायोंसे परस्पर रोकने लगे ॥ ५९७ ॥

उत्थापनैरुन्नयनैश्चालनैःस्थापनैरपि ॥
परस्परंजिगीषंतावपचक्रतुरात्मनः ॥ ५९८ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

और किसी समय उत्थापन कहते घूटन और पाँव इन दोनोंको मिलायके नीचे गिरायके उठाना किसी समय उन्नयन कहते दो हाथसे उठायके ले जाना चालन कहते कंठ धरा होवे वहांसे छुड़ाना स्थापन कहते हाथ पाँवका गोला करना ऐसे अनेक प्रकारसे परस्पर जीतनेके वास्ते देहको कष्ट देते भये ॥ ५९८ ॥

आस्फोटनं प्रकुर्वंतौ वारं वारमनेकधा ॥
एवंसंक्षेपतः प्रोक्ता मल्लक्रीडाऽतिगह्वरा ॥ ५९९ ॥

और वारंवार अनेक प्रकारसे बाहुके ऊपर दूसरे हाथके तलसे शब्द करते भये जिसको प्राकृतमें खंभ ठोंकना कहतेहैं. ऐसी संक्षेपसे मल्लक्रीडा मैंने वर्णन की इस क्रीडाके दूसरे अनेक भेद बड़े कठिन हैं ॥ ५९९ ॥

अथ चौरपालवनक्रीडा ।

कदाचिद्बालकाः सर्वे भ्रमंतश्चाद्रिसानुषु ॥
चक्रुर्नीलायनक्रीडाश्चोरपालापदेशतः ॥ ६०० ॥

अब वनक्रीडा कहते हैं. किसी समय सब बालक वनमें पशु चरानेके लिये नदी पर्वत शिखरोंके ऊपर फिरते २ चोर मालिक इस निमित्तसे निलायन कहे छुपनेकी क्रीडा करने लगे ॥ ६०० ॥

तत्रासन्कतिचिच्चोराः पालाश्चकतिचिन्नृप ॥
मेषायिताश्च तत्रैके विजह्रुरकुतोभयाः ॥ ६०१ ॥

तब उसमें कितनेक चोर भये कितनेक पालक भये कितनेक बकरे आदि पशु भये पीछे ये चोर बकरेको चोरने लगे मालिक ढूँढतेहैं ऐसा चोरका खेल करते भये ॥ ६०१ ॥

अथ जलक्रीडामाह ।

प्रोत्फुल्लोत्पलकह्लारकुमुदांभोजरेणुभिः ॥
वासितामलतोयेषु कुजन्द्विजकुलेषु च ॥ ६०२ ॥

अब जलक्रीड़ा कहतेहैं--जहां प्रफुल्लित कमोदनी कमल कल्हार कुमुद आदि अनेक सुगंधवान् पुष्पोंके केसरोंसे सुगंधित भयाहै जल जिनका और अनेक पक्षीगण जहां विचित्र २ शब्द कररहेहैं. ऐसे तालाब सरोवर कुंड नदी

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

इत्यादि स्थलोंमें यदि ऐसा जलाशय अनुकूल न होवे तो अपन बगीचोंमें अच्छे रंगका जल बनायके उसमें सुगंधित पदार्थ डालके बड़े बड़े पात्र भरके रक्खे अथवा चूनके बँधाये हुये हौदोंमें (ऊर्फ कोठी फ़वारा जिसको कहते हैं) ऐसा जल बनायके ॥ ६०२ ॥

विजहारविगाह्यांभोह्रदिनीषु महोदयः ॥
कुचकुंकुमलिप्तांगः परिरब्धश्चयोषिताम् ॥ ६०३ ॥

पीछे नदी तालाव गहरा होवे तो उसमें प्रवेश करके स्त्रियोंके साथ खेले जैसे श्रीकृष्ण भगवान् गोपियोंके स्तनपै जो केशर लगाहै सो स्त्रियोंके आलिंगन करनेसे वह स्तनका केशर जिनके शरीरको लिप्तमान भयाहै ऐसे होकर क्रीडा करतेभये ॥ ६०३ ॥

सिच्यमानोऽच्युतस्ताभिर्हसंतीभिः स्मरेचकैः ॥
प्रतिसिंचन् विचिक्रीडेयक्षीभिर्यक्षराडिव ॥ ६०४ ॥

और हास्य करती जातीहैं हाथमें पिचकारी लेके गोपियां जल सिंचनकरतीहैं जिनके ऊपर. और भगवान्भी उन स्त्रियोंके ऊपर सिंचन करते भये ॥ ६०४ ॥

ताः क्लिन्नवस्त्रविवृतोरुकुचप्रदेशाः
सिंचंत्यउद्धृतबृहत्कबरप्रसूनाः ॥
कांतंस्मरेचकजिहीर्षतयोपगूह्य
जातस्मरोत्सुकलसद्वदनाविरेजुः ॥ ६०५ ॥

पीछे जिनके सब वस्त्र भीग गयेहैं उससे स्तन ऊरू जिनके शैत्यसे संकुचित होगयेहैं जिनके केशसे पुष्प बिखर रहेहैं और श्रीकृष्णके आलिंगन करनेसे जिनका मुखारविंद प्रसन्न भयाहै ऐसी गोपियाँ जलक्रीडाके समय शोभने लगीं ॥ ६०५ ॥

कृष्णश्चतत्स्तनविषज्जितकुंकुमस्रक्
क्रीडाभिषंगधुतकुंतलवृंदबंधः ॥
सिंचन्मुहुर्युवतिभिः प्रतिषिच्यमानो
रेजेकरेणुभिरिवेभपतिः परीतः ॥ ६०६ ॥

और श्रीकृष्णभी गोपियोंके स्तन संलग्न केशरसे पुष्पमाला जिनकी रक्त भई हैं आलिंगनसे केशसमूह जिनके कंपित भयेहैं वारंवार स्त्रियाँ जिनके

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर जलसिंचन करती हैं ऐसे भगवान् शोभते भये और जलक्रीडा करते भये ॥ ६०६ ॥

नटानांनर्तकीनांचगीतवाद्योपजीविनाम् ॥
क्रीडालंकारवासांसि कृष्णोदात्तस्यचस्त्रियः ॥ ६०७ ॥

इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मितेक्रीडाकौशल्याध्याये
बालकौमारपौगंडकैशोरावस्थाक्रीडाभेद-
वर्णनं नामप्रकरणम् ॥ ९ ॥

जलक्रीडा करनेके पश्चात् श्रीकृष्ण और गोपियाँ सबोंने उस क्रीडाके वस्त्र नटादिकोंको दे दिये ॥ इति जलक्रीडा भेद वर्णन पूरा भया ॥ ६०७ ॥

इति बाल कुमार पौगंड किशोर अवस्थाके जो क्रीडाके भेदहैं
सो संपूर्ण भये. प्रकरण ९ ॥

अथ रासक्रीडामाह ।

भगवानपितारात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ॥
वीक्ष्यरंतुंमनश्चक्रेयोगमायामुपाश्रितः ॥ ६०८ ॥

अब रासक्रीडा कहते हैं--भगवान् श्रीकृष्ण शरदृतुकी रात्रियोंको मल्लिका पुष्पसे प्रफुल्लित देखके योगमायाका आश्रय करके रासक्रीडा खेलनेका आरंभ किया अर्थात् रासक्रीडा जो है सो शरदृतुकी रात्रियोंमें बहुत आनंदकारक दीखतीहै इस वास्ते सांप्रत कालमें भी आश्विन शुद्ध १ से रास पौर्णिमा पर्यंत सबस्त्री पुरुष अपने समूहमें रासक्रीडाके ठिकाने गरभा गाते हैं ॥ ६०८ ॥

नद्याः पुलिनमाविश्यगोपीभिर्हिमवालुकम् ॥
रेमेतत्तरलानंदीकमलामोदवायुना ॥ ६०९ ॥

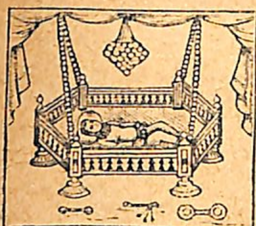
अब श्रीकृष्ण यमुनाजीके तटपर उत्तम रेती बिछी हुई है. जहां कमलका सुगंध वायु चल रहाहै वहां गोपियोंके साथ ॥ ६०९ ॥

तत्रारभत गोविंदो रासक्रीडामनुव्रतैः ॥
स्त्रीरत्नैरन्वितः प्रीतैरन्योन्याबद्धबाहुभिः ॥ ६१० ॥

परस्पर हाथ धरके रास क्रीडाका आरंभ करते भये ॥ ६१० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

बाळपाळना.



बाळक्रीडा.



गोवत्सपुच्छाकर्षण क्रीडा.



चौर्यक्रीडा.



पशुवत् गमन क्रीडा.



नृत्यादि क्रीडा.



बाह्यवाहक क्रीडा.



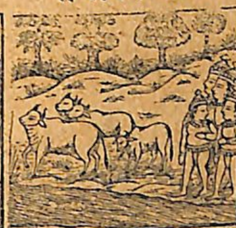
वानरपुच्छग्रहणक्रीडा.



निलायन क्रीडा.



गोचारण क्रीडा.



पक्षिवत् नादादिक्रीडा



बिडूखो खेल.



गिल्लि दांडूका खेल.



आंदोलन क्रीडा.



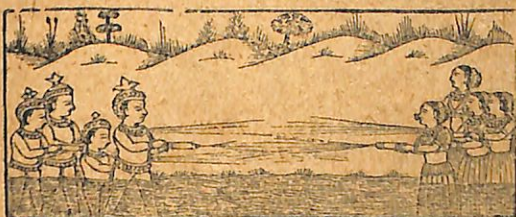
नृपवत् क्रीडा.



कंदुक क्रीडा.



जल क्रीडा.



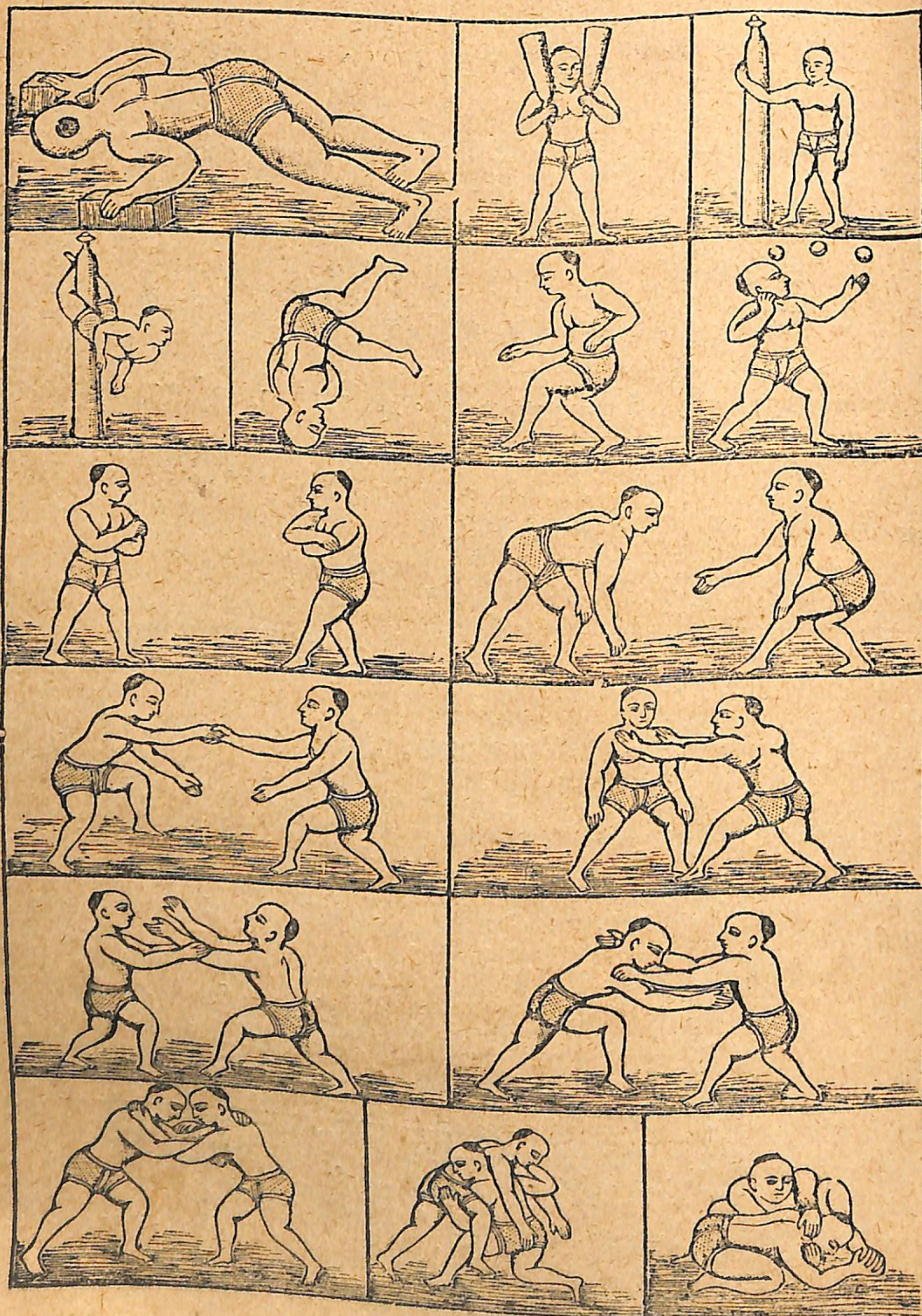
मल्लोपकरणानि.



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

क्रीडाकौशल्य ।

मल्लक्रीडा (कुस्तीके दाँव.)



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

रासोत्सवः संप्रवृत्तो गोपीमंडलमंडितः ॥
योगेश्वरेणकृष्णेनतासांमध्येद्वयोर्द्वयोः ॥ ६११ ॥

वह कैसा रास था कि, जितनी गोपियोंकी संख्या उतनेही स्वरूप भगवान्ने धारण करके ॥ ६११ ॥

बाहुप्रसारपरिरंभकरालकोरुनीविस्तनालभननर्म-
नखाग्रपातैः ॥ क्ष्वेल्यावलोकहसितैर्व्रजसुंदरीणा-
मुत्तंभयन्रतिपतिंरमयांचकार ॥ ६१२ ॥

पीछे अपना हाथ लंबा करके स्त्रियोंको आलिंगन करना, उन्होंके हाथ केश जांघ कटि व स्तनोंको स्पर्श करना, विनोदका भाषण करना, नखके अग्र भाग चूमना, क्रीडासे देखना, हँसना इत्यादि चेष्टासे स्त्रियोंके कामदेवको जागृत करके क्रीडा करते भये ॥ ६१२ ॥

पादन्यासैर्भुजविधुतिभिः सस्मितैर्भ्रूविलासै-
र्भज्यन्मध्यैश्चलकुचपटैः कुंडलैर्गंडलोलैः ॥
स्विद्यन्मुख्यः कबररशनाग्रंथयः कृष्णवध्वो
गायंत्यस्तं तडितइवतामेघचक्रे विरेजुः ॥ ६१३ ॥

अब क्रीडाका स्वरूप कहतेहैं—पाँव नचाके रखते जाना, हाथ नचाना, हास्य सहित भृकुटी नचाना, कटिसे लचकना, स्तनोंके ऊपरका वस्त्र निकालना, गालपर कुंडल हिलाना, ऐसे ऐसे नृत्य और गायन करतीहैं. ऐसी गोपियां शोभती भई ॥ ६१३ ॥

कर्णोत्पलालकविटंककपोलघर्म-
वक्त्रश्रियो वलयनूपुरघोषवाद्यैः ॥
गोप्यः समं भगवता ननृतुः स्वकेश-
स्रस्तस्रजो भ्रमरगायकरासगोष्ठ्याम् ॥ ६१४ ॥

और कानमें कमलपुष्प धारण कियेहैं केशोंका समूह गालके ऊपर जो पसीना आया था मुखकी शोभा और कंकण पाँवमें जेवर पहिनेहैं उन्होंका शब्द इत्यादि प्रकारसे भगवान्के साथ सब गोपियाँ नृत्य करने लगीं ॥ ६१४ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

उच्चैर्जगुर्नृत्यमानारक्तकंठ्योरतिप्रियाः ॥
कृष्णाभिमर्शमुदिता यद्गीतेनेदमावृतम् ॥ ६१५ ॥

कृष्णस्पर्शसे आनंदित भई गोपिकायें नृत्य करती जातीहैं और उच्च-स्वरसे गायन करती जातीहैं ॥ ६१५ ॥

काचित्समं मुकुंदेन स्मरजातीरमिश्रिताः ॥
उन्निन्येपूजितातेनप्रीयतासाधुसाध्विति ॥ ६१६ ॥
तदेवध्रुवमुन्निन्ये तस्यै मानं च बह्वदात् ॥ ६१७ ॥

उस समय श्रीकृष्ण उनको बहुत सन्मान देते भये और ध्रुव ताल गाते भये ॥ ६१६ ॥ ६१७ ॥

अतः परं महाराष्ट्रभाषाप्रबंधेनाटिपरीगोपद्वयक्रीडामाह ।
टिपरी १ली गजाननाची करुन स्तुती,खेळखेळती मंदगती॥
गजाननातें आधिनमुनी, जायपदांबुजवंदोनी ॥ ६१८ ॥
गोपीम्हणतीएकमेकीला, गुणरूपेंहरिभुलवीला ॥
राधाचिमणीठकीसगुणी, खेळखेळती कुंजवनीं ॥ ६१९ ॥
चक्राकारेंनित्यनाचती, चक्रधराचेंयशगाती ॥
गोपीम्हणतीएकमेकीला, अम्हांधीनहाहरिझाला ॥
शालुनेसुनी अंजरी, कृष्णवाजवीखंजरी ॥ ६२० ॥
टिपरी दुसरी—धिन्नक धिन्नक धिन्नाधिन्न् ॥
धिन्नकधिन्नकधिन्नाधिन्न् ॥ ६२१ ॥ धृ० ॥
पुनरपिघेउनगोपिहरी, रासानंदें क्रीडाकरी ॥
कायवर्णुत्यासुखराशीं, रास खेळती कृष्णाशीं ॥ ६२२ ॥
आनंदझालामानसीं, हरिकृपेनें सर्वांसीं ॥
सहामहिन्याची रात्रकरी, गोपिहेतुन मूरारी ॥ ६२३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सुगंधद्रव्यअपरमित, गुलालगोपी उडवीत ॥ ६२४ ॥
टिपरीतिसरी–एक टिपरींचे दुसरिसमारगे ॥
तिसरिस देउन चवथी फिरगे ॥
पांचविसदेउन सहाविसमारगे ॥
सातवी बदल ॥ ६२५ ॥ धृ० ॥
हरिसिखेळतां आनंदचित्ता हरिगुणगातां अगणितरे ॥
लिहावयाधरणीनपुरे अशि हरि माया ॥ ६२६ ॥
ऐकतांचिकानिंमधुरमधुरध्वनी वादन करि ॥
प्रेमभरें भुलल्यागोपीगोपसारे अशि हरिमाया ॥ ६२७ ॥
टिपरी–चवथी–व्रजयुवतीटिपऱ्याखेळती॥हरिपाहती आनंदेंनाचती
आनंदितहरिगुणगाती॥ धन्यजयाचीहरिसंगती ॥१॥६२८॥
डाविकडेजातीरागावतीअती ॥
हरिहंसतीमगरागसोडिती ॥
त्यासुमतीगोविंदेंप्रीतीनाचती ॥
अतित्यागजगतीहरिपाहुनत्याहीहंसताती ॥ ६२९ ॥
हरिपायींमनकेलेंअर्पण ॥ नकोआम्हांधनयाविण ॥
आवडेहाचिमान॥ हानिश्चयआमुचाजाण॥ ६३० ॥
इंद्रादिकानतेआम्हांसाधन॥कृपाघनजाणोनिमन ॥
आनंदघनशांतवीमन ॥ कुंजवनरमणीयघन ॥ ६३१ ॥
नंदवनयाहुनिव्रजयुवती० ॥ १ ॥

अब टिपरी कहतेहैं हाथमें दंडे लेके खेले उसको महाराष्ट्र भाषामें टिपरीका खेल कहतेहैं वह टिपरीका खेल ऐसाहै कि दोनों हाथोंमें एकेक दंडा लेके मंडलाकार खड़े रहकर मुखसे गायन करते जावें पांवसे नाचते जावें हाथसे निकट वाले आदमीके दंडेसे अपना दंडा बजाते जावें दूसरे चार आदमी बीचमें बैठकर मृदग ताल मुरज वाद्य बजाते जावें इसको टिपरीका खेल कहतेहैं अब यहां प्राकृत भाषाका गायन रक्खा संस्कृत नहीं किया इसका

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

ारण यह कि राग गानेको संस्कृत पद्यमें बड़ा कठिन पड़ताहै इस वास्ते एक महाराष्ट्र भाषामें गायन बताया वैसाही अपनी अपनी देश भाषामें गायन समझ लेना ॥ ६१८ ॥६१९॥ ६२० ॥६२१॥६२२॥ ६२३ ॥ ६२४ ॥ ॥६२५॥ ६२६ ॥ ६२७ ॥ ६२८ ॥ ६२९ ॥ ६३० ॥ ६३१ ॥

अथ गोपक्रीडा ।

नमुनीहारीवदतिकुमारी॥ लाजभारीखेळतीपोरपोरी ॥ ६३२ ॥
सोडुनिलाजेलाकसादंगझाला ॥
हरिलाचुकलामुकळामुलला ॥ नमु० ॥ १॥६३३ ॥
गुराखिपोरेमोठींचतुरें ॥धीटफारदेतीमारजार॥नमु०॥२॥६३४॥
जासिखेळतोतोगुरेंराखि ॥
सदाचारिततसाचयेतपीत ॥ नमु० ॥ ३ ॥ ६३५ ॥
घाणेरडे हिंगटपोर॥उचमळरे दुरसरे जारेसारे॥नमु० ॥ ६३६ ॥
तुम्हांसमोदयेतमिलिंदा॥परगंधफिरवितमंदमंदा॥नमु०॥६३७॥
हातपायवांकडेशेंबडेचिकडे ॥
चुकतीगडेपलिकडे इकडे तिकडे ॥ नमु० ॥६३८॥
असोअळअमुचेकायहोतुमचे ॥
परवयाचेआंजिवज्याचेंत्याचें॥ नमु० ॥ ७ ॥६३९॥

गोपदुसरा ।

लालपदरआम्हीहातिंधरितों ॥ गोपानेपहाकसाजातों ॥
गंडेरिगोपातेंकरितों॥तुम्हींअपसव्य करुनीचाळा॥नमु०॥१॥६४०॥
सफेतआमुचाकरिपदर ॥ जातोआंतुनपणलागेनजर ॥
पहाकसेआमुचेपदर॥असाजाचुकूनकाघराला॥नमु०॥ ६४१ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

दिमाकडगीचयापोरास ॥ कोणघेतहोते खेळास ॥
हरिनें आर्जविलेंआह्मांस।म्हणूनव्यर्थराहणें आह्मांला॥नमु०॥६४२॥
कायपोरेंआम्हांखेळानव्हतीं ॥ आम्हांसिबहुहरिआर्जविती॥
म्हणुनीधरिलीतुमचीसंगती ॥ कृष्णाकडेपाहणेंआम्हाला ॥६४३॥
कसाआवडतोनकळेहरी ॥ पोरेंआठाँठायींवांकडीं ॥
हरिसमजुतकरिएकपरी ॥ शेंबडी लेंबडी पोरेंखेळायाला ॥ ६४४ ॥

गोफतीसरा ।

दुरंगकट्यारीगोपकरायालाशिकलोंआम्हींनी ॥
तुम्हींकितीचुकवितांपरिनचुकूंसुंदरी ॥ ६४५ ॥
कृष्णाकडेपाहुनभुलल्या चित्तनाहींटिपरीवरी ॥
टिपऱ्यामारतांतुम्हींआमुच्याहातावरी ॥ ६४६ ॥
लटकेचआळघालितांतुम्हींगोपानो आम्हांवरी ॥
दांडगाई धक्केसोसावेकितीतरी ॥ ६४७ ॥
शेंबडेघाणेरडे गोपआम्हांपाहुनयेतओकारी ॥
कसेंरहावें कृष्णाचियेशेजारीं ॥ ६४८ ॥
विष्णुदासम्हणेऐकुनिगोपीरागवल्याभारी ॥
घेऊननिघाल्याकृष्णातेंघरीं ॥ ६४९ ॥ दुरंगकटचारी० ।

अब गोफका खेल कहतेहैं—ऊँचे मंडपके मध्यभागमें लाल, सपेद, पीत, हरितादिवर्णोंके रज्जुके मुख एक ठिकाने बांधके बाद जितने रंगकी रज्जु हैं उतनीही स्त्रियोंके हाथमें रज्जुका छेडा देके नमुनी हारी वदती कुमारी यह महाराष्ट्र भाषाके ध्रुवपदके गायन रीतिसे गोफकी गुँथावन आवे उस रीतिसे गायन करते जावे और फिरते जावे उससे ऊपर गोफ तय्यार होता आवे उसको गोफकी क्रीडा कहते हैं यहां गायन महाराष्ट्र भाषामें बताया है स्वस्व देशका गायन इसी प्रकार निकाललेना ॥ ६३२ ॥ ६३३ ॥ ६३४ ॥ ६३५ ॥ ६३६ ॥ ६३७ ॥ ६३८ ॥ ६३९ ॥ ६४० ॥ ६४१ ॥ ६४२ ॥ ६४३ ॥ ३४४ ॥ ६४५ ॥ ६४६ ॥ ६४७ ॥ ६४८ ॥ ६४९ ॥

इति गोफक्रीडा ।

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri





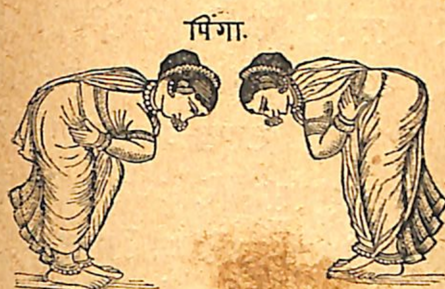








CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri









स्त्रीखेल फुगडीखेलस्त्रिविधः परिकीर्तितः ॥
प्रथमास्थितिरूपाच हस्तैकेनद्वितीयका ॥ ६५० ॥

अब और स्त्रियोंके खेलमें फुगडी नाम करके जो खेलहै सो तीन प्रकार-काहै एक बैठीफुगडी, दूसरी परस्पर एक हाथ धरके फिरना ॥ ६५० ॥

तृतीयादंडरूपाच ह्येकीबेकीतथापरः ॥
कुक्कुटाख्यस्तथाखेलः झटीझुन्नातथैवच ॥ ६५१ ॥
पिंगाझीमाऽथगरबाः पाचिकाख्योहलूरकः ॥
हंबोडाख्यस्तथाखेलः सर्वेगानसमन्विताः ॥ ६५२ ॥

तीसरी दो हाथ धरके फिरनेकी फुगडी. एकीबेकीकाखेल-यह खेल बहुधा गुजराती लोगोंमें शादी करके घरमें आये बाद कुलदेवताके सामने वर कन्या दोनों खेलते हैं. उसका कारण यह है कि, उस खेलमें जो जीता वह संसारमें जीतेगा यह परीक्षाहै. इस वास्ते दोनोंजने द्रव्यकी थैली अपने पास जुदी जुदी रक्खैं बाद उसमें से मुष्टि भरके लेवे और सामनेवालेको पूँछे कि एकी है या बेकी ? तब सामने वालेने दोमेंसे एक बात कही उसी प्रकार मुष्टिमें से निकला तो वह ले जावे फिर मुष्टी बांधके खेले और विपरीत निकला तो जितना द्रव्य निकला होवे मुष्टिमें से उतना

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पनदेवे दाँव जो जीता वही खेल और गायन करके खेलनेकी क्रीडा कुकडा, झटी, झुन्ना, पिंगा, झीमा, गरबा आदि बहुत हैं ॥ पाचिकाका जो खेलहै सो पाँच या सात नंग या नव लाखके या कोई भी सोना रूपा धातु इत्यादिके बनाये हुये चतुरस्र लेके उससे दोजने खेलतेहैं उसमें पहिले एक व पाचिके दो हाथोंसे उछालके जमीनपर डालना पीछे जमीनपरसे एकेकलेते जाना उसके जो १७ शब्द हैं सो गुजराती भाषामें लिखते हैं अन्य भाषा अपनी अपनी जान लेना. अब वो पाचिकुं काके नाम १ चकली, २ बीयाबली, ३ तिल्लातली, ४ चारचंगोटी, ५ पाँचे पडिया, ६ छःका दाँव नहींहै, ७ सातवां इसेजा, ८ आठवां इरेजा, ९ ओंग-नगोटी, १० बीस बाईमोटो, ११ वीसपरएक, १२ गंगागणेश, १३ गंगानि-माटि, १४ केसरछाटि, १५ बहुरे बहु, १६ कोटिमानाघड, १७ कोटिमानाघड तोसडीगया १८ बहुना कुळाबळीगयाऐसे १७ शब्द हैं वहांतक खेलनेसे दाँव पूरा हुआ जानना यह खेल राजमान्य है. काय सोजेविवाह शादिमें वरके घरसे रूपे सोनेके पाचिके बनायके वधूके घरको भेजतेहैं. अब हलूराका जोखेलहै सो ऐसा कि, आमने सामने स्त्रियोंका समूह पंक्तिरूप खडे रहके गाते गाते एक पंक्तिने दूसरेके सामने आयके मिलापकरके पीछेके पाँवसे गाते गाते अपनी जगहपर जायके खडे रहना बाद दूसरी पंक्तिकी स्त्रियोंने भी इसीरीतिसे करना. अब हंबोडाखेल–यह खेल दोनों स्त्रियोंने आमने सामने दोहाथसे दोहाथपर ताली मारते जाना गाते जाना कूदते जाना यह सब स्त्रियोंके खेलहैं गायन सहितहैं ॥ ६५१ ॥ ६५२ ॥

गायनं देशभेदेन बहुधा परिकीर्तितम् ।
तस्मादत्रनवक्ष्यामिग्रंथबाहुल्यकारणात् ॥ ६५३ ॥

इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मितेक्रीडाकौशल्याध्यायेस्त्रीक्रीडाभेदव-र्णनंनामदशमंप्रकरणम् ॥ १० ॥

अब गायनके प्रकार देशभाषाके भेदसे बहुतहैं सो ग्रंथविस्तार भयसे यहां नहीं लिखताहूं ॥ ६५३ ॥

इति स्त्रीक्रीडाके भेद संपूर्ण भये प्रकरण ॥ १० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथ जूवाँ खेलनेका पट.



अथ लंका खेलखेलनेका पट.



अथ तीन फाँसेके खेलमें फाँसेके २० दाँवके चिन्ह.

पूर्व भागके दाँव ५		दक्षिण भागके दाँव ५	
५	यह पांचके दाँवमें फाँसे-का चिन्ह पू० १	६	यह छके दाँवमें फाँसेका चिन्ह द० जानना. ६
९	यह नवके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पू० २	१०	यह दसके दाँवमें फाँसेका चिन्ह द० जानना. ७
९	यह नवके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पू० ३	१०	यह दसके दाँवमें फाँसेका चिन्ह द० जानना. ८
१३	यह तेराके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पूर्वमें जान० ४	१४	यह चौदाके दाँवमें फाँसे-का चिन्ह द० जानना. ९
१३	यह तेराके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पू० जानना ५	१८	यह अठारहके दाँवमें फाँ-सेका चिन्ह द० जानना. १०

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पश्चिम भागके दाँव ५

३ यह तीनके दाँवमें फाँसेका चिन्ह प० जानना. ११

७ यह सातके दाँवमें फाँसेका चिन्ह प० जा० १२

११ यह ग्यारहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह प० जा० १३

११ यह ग्यारहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह प० जा० १४

१५ यह पंधराके दाँवमें फाँसेका चिन्ह पश्चिममें जानना. १५

उत्तर भागके दाँव ५

८ यह आठके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उत्तम जानना. १६

८ यह आठके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उ० जा० १७

१२ यह बारहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उ० जा० १८

१२ यह बारहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उत्तरमें जा० १९

१६ यह सोलहके दाँवमें फाँसेका चिन्ह उ० जा० २०

अथ गिर्दि खेलनेके दाँव १० का चिन्ह.

यह दोनों दाँव जीतनेके जानना.

१२ ८

यह दोनों दाँव हारनेके जानना.

६ २

यह छः दाँव निरर्थक जानना.

४ ५ ७ ७ ९ १०

अतःपरंप्रवक्ष्यामिद्यूतखेलंदुरोदरम् ।
दुरोदरोद्यूतकारेपणेद्यूतेदरोदरम् ॥ ६५४ ॥

अब स्त्रीक्रीडा होने बाद जूवेका खेल कहताहूं जिसको शास्त्रमें दूरोदर कहते हैं। दूरोदरकहते दुष्ट कपटरूपहै उदर अंतरभाग जिसका उसको दूरोदर कहतेहैं. दूरोदर जूवेका नामहै अर्थात् बाजी लगानेकानामहै और

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

जूवा खेलने वालेकाभा नाम है परंतु जूवेके ठिकानेपर नपुंसक 'दूरोद शब्दहै बाकी पुल्लिंग है ॥ ६५४ ॥

बहवोद्यूतभेदाश्वतत्राद्यंप्रवदाम्यहम्।
पाशकत्रयसंसाध्यपाशकाभ्यांद्वितीयकम् ॥ ६५५ ॥

जूवेके खेलनेके प्रकार बहुतहैं उसमें तीन फाँसेसे जो खेलसो पहिला, दो फाँसोंसे खेलनेका खेल दूसरा ॥ ६५५ ॥

अंगुलीपर्वमात्रस्यचतुर्थांशेनसुंदरम् ।
चतुरस्रंपाशकंवैकुर्याल्लक्ष्मचपूर्ववत् ॥ ६५६ ॥

अब जूवाखेलनेका फाँसा कैसा करना सो कहते हैं अपनी अंगुलिका जो पर्व है उसके चतुर्थभाग जितना लंबा चौंडा शोभायमान फाँसा करना उसके चारों तरफ जो चिह्न करे सो प्रथम द्यूत प्रकार जो कहाहै उसमें जो दो फांसेकी क्रीडामें फांसा कहाहै उसी तरह चिह्न करे ॥ ६५६ ॥

पाशकद्वयक्रीडोक्तंखेलनार्थंसुयंत्रकम् ॥
वर्तुलंतत्रकुर्वीत तुर्यभागसमन्वितम् ॥ ६५७ ॥

अब तीन फांसेकी क्रीडा खेलनेके वास्ते बड़ा उत्तम वर्त्तुलाकार यंत्र निकाले पीछे उस वर्तुलमें चार भाग दिखानेके वास्ते विदिशासे चार रेखा खेंचे ॥ ६५७ ॥

पाशकत्रयक्रीडायांडावाविंशतिसंख्यया ॥
यथाभागंचतुर्दिक्षुडावसंख्यांविनिर्दिशेत् ॥ ६५८ ॥

अब इस तीन फांसेकी क्रीडामें जो दाँव लेनेके हैं सो बीस तरहसे हैं जादा कम नहीं होतेहैं सो बीस दाँव चार भागमें पाँच पाँच विभाग करके यंत्रमें लिखदेवे ॥ ६५८ ॥

विश्वौद्वौपंचनंदौद्वौपूर्वभागेस्थिताइमे ॥
अष्टादशमनुस्कंददिग्द्वयंदक्षिणेइमे ॥ ६५९ ॥

अब चार विभागमें कौनसे दाँवहैं सो कहतेहैं पूर्व दिशाके भागमें १३। १३। ५। ९। ९ यह पाँच दाँव लिखे. दक्षिणदिशाके भागमें १८। १४। ६। १०। १० यह पाँच दाँव लिखे ॥ ६५९ ॥

त्रिसप्ततिथिरुद्राश्वतथारुद्राश्वपश्चिमे ॥
द्वौवसूद्वौरवीचैवनृपसंख्यातथोत्तरे ॥ ६६० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

पश्चिम दिशाके भागमें ३ । ७ । १५ । ११ । ११ यह पाँच दाँव लिखे उत्तर दिशाके भागमें ८ । ८ । १२ । १२ । १६ यह पाँच दाँव लिखे॥६६०॥

संस्थाप्यैवंवेददिक्षुप्रसंख्यांपश्चात्कार्यासंस्थितिस्तेषुसर्वैः ॥
स्वंस्वंद्रव्यंस्थापयेत्स्वस्वभागेपाशानादौप्रक्षिपेदुत्तरस्थः ॥६६१॥

इस रीतिसे चार दिशामें बीस दाँव लिखके एक एक विभागमें एक एक पुरुष बैठके अपना अपना जो हारने जीतनेका धन होवे वह अपनी दिशाके विभागकी रेखाके भीतर रक्खे रेखासे लगावे नहीं, लगाया तो दूसरेका भाग लागू होता है बाद पहिला फांसा उत्तर दिशाका डाले पूर्व दिशा छोड़के उत्तर दिशासे पहिले चले इसका कारण यहहै कि यह खेल धनलोभ का है और उत्तर दिशामें कुबेरके नवनिधिहैं सो पहिले उनका आवाहन कियाहै ॥ ६६१ ॥

पाशप्रक्षेपणेजातेयदंकास्तत्रचाग्रतः ॥
तद्विभागस्थितेनैवपुरुषेणविशेषतः ॥ ६६२ ॥

अब फांसे तीन डाले तब जो दाँवका अंक आया तीन फांसे मिलके वह अंकसंख्या जिसके विभागमें होवे उस विभागमेंके बैठने वाला आदमी॥६६२॥

पाशप्रक्षेपकथनंसर्वंग्राह्यमसंशयम् ॥
यदिप्रक्षेपकस्यैवडावस्तत्रपतेत्तदा ॥ ६६३ ॥

फांसे डालनेवालेके घरमें ऊर्फ विभागमें जितना धन रक्खा होवे वह सब लेजावे उसमें संशय नहीं है और जो कभी जिसने फांसेडाले उसके घरका दाँवका अंक आया तो ॥ ६६३ ॥

चतुर्भागस्थितंद्रव्यंसर्वंग्राह्यमसंशयम् ॥
फकिनीवर्त्तिकाख्यौद्वौ खेलौचात्रप्रकीर्तितौ ॥ ६६४ ॥

वह चारोंभागमें चारों जनोंने जो द्रव्य रक्खाहै सो सब द्रव्य ले लेवे उसमें संशय करे नहीं अब इस तीन फांसेके खेलमें एक फकिनी खेल है फकिनी खेलका निर्णय ऐसाहै कि, जिसके दिलमें आवे वह चार घरमेंसे कोई भी एक घरमें जितना दिलमें आवे उतना धन फेंकै बाद फांसेमें घरका दाँव आवे तो फाँसे खेलने वालेके पाससे उतनीसंख्या तुल्य धन लेवे और जो कभी दूसरे घरका दाँव पडा तो उतना धन देवे परंतु जिसके घरमें इसने धन फेंकाहै उस घरवालेसे बोल चाल कर लेवे अथवा घरवाला बंदरहे

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अथवा दोनों अपने अपने समान धन लेवें देवें. अब वर्त्ति खेलका निर्णय ऐ कि वर्त्तिका दाँव खेलनेका कारण यहहै कि, धन बहुत लेनेकी इच्छा वास्ते अगर चार आदमी अथवा पाँच पचीस आदमियोंकोभी खेलना हो तो वर्त्तिका डाव खेलैं. वर्ति का लक्षण ऐसाहै कि, आप जिस घरमें बैठो वहाँ भी धन रक्खे और दूसरेको भी कहे अथवा मैं तुम्हारे तरफसे अर्थात् तुम्हारे वर्त्ति तुम्हारे घरमें बैठाताहूं बाद दाँव पडे वैसा लेना देना जानना एक घरमें दो चार ऐसे भागीदार होसकते हैं ॥ ६६४ ॥

अथ द्वितीयोद्यूतखेलः ।

गिर्दिखेलोद्वितीयस्तुपाशकाभ्यांप्रकीर्तितः ॥
क्रीडाकर्तुर्नसंख्यात्रद्वौडावौजयकारकौ ॥ ६६५ ॥

अब जुवा खेलनेका दूसरा भेद बताते हैं इस दूसरे खेलका नाम गिर्दि है यह खेल दो फाँसेसे खेला जाताहै और इस खेलमें खेलनेवाले परुषों की संख्याका कुछ नियम नहींहै जितने खेलना चाहे उतने खेल सकतेहैं और इस गिर्दि खेलमें जीतनेके दो दाँव हैं ॥ ६६५ ॥

पराजयकरौद्वौचशेषाः सर्वेनिरर्थकाः ॥
षट्कद्वयंचतुःसंख्याद्वयंचेमौजयावहौ ॥ ६६६ ॥

हारनेके दाँव दो हैं. बाकी सब दाँव पड़े तो व्यर्थ जानै उसका वर्णन दोछक्के बारहका ? दोचौवे अठ्ठाका? ऐसे यह दो दाँव जीतनेके जानै॥ ६६६ ॥

त्रित्रिसंख्यायुतंचैकंह्येकेकेनद्वितीयकम् ॥
एतौपराजयकरावूर्ध्वपाशोद्वयोः समः ॥ ६६७ ॥

अब तीन तान छक्का एकेकसे दूवा ऐसे यह दोनों दाँव हारनेके जानै अब जो कभी एक फाँसा जीतनेका या हारनेका पड़े और एक फाँसा खडागिरै तो दूसरे के समान जानै हारनेमें हार सरीखा और जीतनेमे जीत सरीखा जानै दोनों खड़े गिरें तो दूसरी बार दाँव डालै ॥ ६६७ ॥

पाशप्रक्षेपसमयेवक्तव्यंस्पष्टभाषया ॥
अहंतवधनंजेतादास्येइतितथापरः ॥ ६६८ ॥

फास डालतेसमय बडेशब्दसे स्पष्टमालूम होवे वैसा सामने वाले को जतावे कि यह तेरा धन मैं जीतता हूं तब उस धनका मालिक कहे कि मैं हारताहूं बाद फांसा डालै उसमें जो जीतका दाँव आवे तो वह सब धन

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

देना अगर हारका दाँव आया तो जितना धन उसने रक्खा है उतना धन अपने पाससे देना और जो फालतु दाँव पडे तो लेना देना कुछ नहीं पीछे दूसरेने फाँसाडालना. फाँसा सबोंने डालना परंतु हारजीतका शब्द स्पष्ट कहदेना मुख्यममें फासा डालना नहीं ॥ ६६८ ॥

चर्मपट्टिकयाचैवंखेलश्चैवतृतीयकः ॥
एवंद्यूतविभेदाश्चबहवः संतिभूतले ॥ ६६९ ॥

अब जूवेके खेलमें एक तीसरा भेद है—चमडेकी लम्बी पटा कपडे सरीखी बनायके उसको गुन करके बीचमें दूसरेके हाथसे शलाका रखवायके दोनों छेडे समान करके वो शलाका को चर्मपट्टीका बत्तीसरीखा बल देना बाद सामनेवालेको फँसाना होवे तो खोलनेके वक्त शलाका पट्टीके अन्दरलना. छोडदेना होवे तो शलाका पट्टीसे बाहर निकालना. यह खेल सब वो छेडेके वहाँ ध्यान रखना मुख्य है. यह कपटरूप खेल है ऐसे जगत् में बहुत खेल हैं ॥ ६६९ ॥

तेसर्वेकपटप्रायाः पूर्वौद्वौसत्यरूपकौ ॥
पाशकांस्तत्रकुर्वंतिकृत्रिमान्केपिदुर्जनाः ॥ ६७० ॥

वे सब कपटरूप हैं और यह तीन फाँसेका जूवा दो फाँसेका गर्दिजूवा सत्यरूप है यहाँ हारना जीतना फाँसेके आधीन है परंतु इसमेंभी कितनेक दुर्जन लोक पारा भरके कृत्रिम फाँसे बनायके अपने पास रखते हैं जीतने के वक्त किसीको न मालूम होवे वैसी तजवीज से कपट का फाँसा निकाल के डालते हैं ॥ ६७० ॥

लंकाखेलंप्रकुर्वंतिद्यूतवत्केपिमानवाः ॥
मुष्टेः प्रयोजनंतत्रचैकद्वित्रिचतुर्थकैः ॥ ६७१ ॥

जूवे सरीखा एक लंका नामका खेल कितनेक लोक खेलते हैं इस खेल में फाँसेका प्रयोजननहीं है मुष्टि भरके कोईभी पदार्थ लेके चारके सामने मठि छोडना ऐसा मुष्टिका प्रयोजन है ॥ ६७१ ॥

शेषकैः स्वस्वभागस्थपुरुषाच्चधनंहरेत् ॥
लंकादूवातथातीयापटश्चैवचतुर्थकः ॥ ६७२ ॥

इति श्रीहरिकृष्णविनिर्मितेक्रीडाकौशल्याध्यायेदुरोदरद्यूत
वर्णनंनामएकादशप्रकरणंसंपूर्णम् ॥ ११ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

उसका बयान प्रथम जूवेके खेल सरीखा चार विभागसहित वर्तु निकालके उसके चारविभागमें पूर्वमें लंका, दक्षिण में दूवा, पश्चिम में ती उत्तर में पट ऐसा लिखके चार आदमीने चार ठिकाने ऊपर बैठना. दो अग तीन आदमीसे खेलना मध्यम है. अब पहिले अपनी अपनी धनकी थैली भरके अपने अपने पास रखना बाद चारोंमें से कोईने विबोधन जो रुपये पैसे कवडियाँ बदाम कंकरी होवे उसमें से मूठीभर लेके बीचमें रखनी बाद तीनों जनोंने दिलमें आवे उस घरमें बैठना परंतु एकघर खाली रखना बाद मुठी खोलना एक निकले तो लंकास्थान में बैठाहुवा जीतिगा कहते वो स्थान में जितना धन रक्खा होवे उतना धन मुष्टि भरने वालेके पाससे लेना बाद मूठी उसने भरना वैसा मूठीमें से २ अगर ३ निकले तो लंकास्थान सरीखा जानना और जो कभी मूठिमें से ४ निकले तो पट की जगे ऊपर जिसने दाँव रक्खाहोवे वो जीते. अगर पटकी जगे ऊपर किसीने भी दाँव न रक्खा होवे तो मुठीभर नार अदमी सबोंके दाँवका रक्खाहुआ धन जीत लेजावे. अब मुष्टि में से ५। ९। १३। १७ २१। २५। निकले तो लंकावाला लेवै, मुष्टिमें से ६। १०। १४। १८। २२। २६ निकले तो दूवा वाला लेवे, मुष्टिमें से ७। ११। १५। १९। २३। २७ निकले तो तीये वाला लेवे, मुष्टिमें से ८। १२। १६। २०। २४। २८ निकले तो पटवाला लेवे अर्थात् चारका भाग देवे इस खेलमें जिसका धन खूट गया उसे हाराजानै ॥ ६७२ ॥

इति क्रीडाकौशल्याध्यायमें जुवेंका खेल संपूर्ण भया. प्रकरण ॥ ११ ॥

अथ द्यूतसमाह्वयविधिनिषेधप्रकरणम् ।

तत्रद्यूतसमाह्वयस्वरूपं मिताक्षरायां नारदः ।

अक्षबन्धशलाकाद्यैर्देवनंजिह्मकारितम् ॥
पणक्रीडावयोभिश्चपदंद्यूतसमाह्वयम् ॥ ६७३ ॥

अबद्यूत और समाह्वयका स्वरूप लक्षण कहतेहैं व अक्ष कहते पाशक;बन्ध कहते चर्म पट्टिका; शलाका कहते हाथी दाँतादिककी कीहुई लंबी चतुरस्र शलाका आदि शब्द करके हाथी घोडा, रथ, वाघ और बकरी इत्यादि क्रीडापदार्थ इन प्राणरहित पदार्थोंसे जो पण बांधके कपटपूर्वककी जो क्रीडा उसको द्यूतक्रीडा कहते हैं और वयोभिः कहते पक्षियोंसे कबूतर कूकडे आदि पक्षियोंसे चशब्द से मल्ल मेषादिकसे जो पण बांधके क्रीडा किये उसकोसमाह्वयक्रीडा कहते हैं ॥ ६७३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

मनुना अध्याय ९ श्लोक २२३

अप्राणिभिर्यत्क्रियतेतल्लोकेद्यूतमुच्यते ॥
प्राणिभिःक्रियमाणस्तुसविज्ञेयः समाह्वयः ॥ ६७४ ॥

प्राणरहित पदार्थोंसे जो क्रीडा करते हैं उसको लोकमें द्यूत कहते हैं और प्राणसहित मेषकुक्कुटादिकों से जो क्रीडा करैं उसको समाह्वय जानै ॥ ६७४ ॥

अथद्यूतसमाह्वयनिषेधः मनुराह अध्याय ९ श्लोक २२१

द्यूतंसमाह्वयंचैवराजाराष्ट्रान्निवारयेत् ॥
राजांतकरणावेतौद्वौदोषौपृथिवीक्षिताम् ॥ ६७५ ॥

अब द्यूत समाह्वय इन दोनोंका निषेध कहतेहैं. द्यूतका खेल और समाह्वयका खेल इन दोनोंको राजा अपने राज्यमेंसे निकालदेवे कारण यह कि, दोनों राजाके विनाश करनेवाले हैं ॥ ६७५ ॥

प्रकाशमेतत्तास्कर्यंयद्देवनसमाह्वयौ ॥
तयोर्नित्यंप्रतीघातेनृपतिर्यत्नवान्भवेत् ॥ ६७६ ॥

और यह द्यूतसमाव्हय दो खेल प्रत्यक्ष चौरकर्म हैं इस वास्ते राजा इन दोनोंके निवारण करनेमें प्रयत्न रक्खै ॥ ६७६ ॥

द्यूतंसमाह्वयंचैवयः कुर्यात्कारयेतवा ॥
तान्सर्वान्घातयेद्राजाशूद्रांश्चद्विजलिंगिनः ॥ ६७७ ॥

द्यूतसमाव्हय यह दोनों खेल जो आदमी स्वतः करताहै अथवा द्यूत सभाध्यक्ष होयके दूसरे लोगोंके हाथसे करवाताहै और जो शूद्र ब्राह्मणका वष लेके फिरतेहैं इनसब लोगोंको राजा दंड देवै ॥ ६७७ ॥

तत्रकारणमाह—एतेराष्ट्रेवर्तमानाराज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः ॥
विकर्मक्रिययानित्यंबाधंतेभद्रिकाः प्रजाः ॥ ६७८ ॥

दंड देनेका कारण यहहै कि, ऐसे लोग गुप्तचोर होयके राजाके राज्यमें रहेंगे तो वे अपने कपटरूपी कर्मसे जो सज्जन सात्विक लोगहैं उन्होंको दुःख देवेंगे ॥ ६७८ ॥

द्यूतमेतत्पुराकल्पेदृष्टंवैरकरंमहत् ॥
तस्माद्द्यूतंनसेवेतहास्यार्थमपिबुद्धिमान् ॥ ६७९ ॥

यह द्यूत अतिनिषिद्धहै ऐसा नहीं है; किंतु पूर्व कल्प कहते पूर्वयुगमें भी

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

द्यूत खेल वैर करनेवालाहै ऐसा देखा इस वास्ते बुद्धिमान् पुरुष हास्य दमें भी द्यूतका सेवन न करैं ॥ ६७९ ॥

प्रच्छन्नंवाप्रकाशंवातन्निषेवेतयोनरः ॥
तस्यदंडविकल्पः स्याद्यथेष्टंनृपतेस्तथा ॥ ६८० ॥

जो कोई पुरुष द्यूतकर्मको गुप्तरीतिसे अथवा प्रकटरूपसे सेवनकरेगा तो उसको राजाके दिलमें जो आवे वह दंड होवेगा ॥ ६८० ॥

अथद्यूतसभाधिकारिणोवृत्तिमाह व्यवहाराध्याये याज्ञवल्क्यः-

ग्लहेशतिकवृद्धेस्तुसभिकः पंचकंशतम् ॥
गृह्णीयाद्धूर्तकितवादितराद्दशकंशतम् ॥ ६८१ ॥

खेलनेमें दोनों जनोंने परस्पर संमतिसे जयका जो पण बांधा उसको ग्लह कहते हैं और खेलने वाले मनुष्योंको बैठनेके वास्ते सभास्थान जिसका है उसको सभिक कहते हैं और खेलनेके फाँसे आदि जो पदार्थ हैं उनका संपादन करनेसे जो अपनी उपजीविका चलाताहै, उसको सभापति कहतेहैं इस वास्ते द्यूत सभापतिकी वृत्ति कहते हैं--सभापति जो आदमी सौ रुपया अथवा सौसे ज्यादा पण जीते तो उसके पाससे वीसवाँ भाग लेवे और जो सौ रुपया के अंदर जीताहोवे उसके पाससे दशवाँ भाग लेवे॥६८१॥

क्लृप्तवृत्तिना सभिकेन किंकर्तव्यंतत्राह-

ससम्यक्पालितोदद्याद्राज्ञेभागं यथाकृतम् ॥
जितमुद्ग्राहयेज्जेत्रेदद्यात्सत्यंवचः क्षमी ॥ ६८२ ॥

सभापति भाग लेके क्या करै सो कहते हैं--राजा, खेलनेवाले जो कपटी लुच्चे घातकी होवें उन लोगोंसे सभापतिका रक्षण करै सभापति राजाको यथायोग्य द्रव्यांश देवे और जो आदमी हाराहै उसके पाससे अनेक प्रकारसे द्रव्य वसूल करके जो आदमी जीताहै उसको दिलवावे और द्यूत खेलनेवाले मनुष्यों को विश्वासके वास्ते अपना सत्य वचन देवे और क्षमा रक्खे ॥ ६८२ ॥

अथयदापुनः सभिकोदापयितुंनशक्नोतितदाराजादापयेदित्याह ।

प्राप्तेनृपतिनाभागेप्रसिद्धेधूर्तमंडले ॥
जितंससभिकेस्थानेदापयेदन्यथानतु ॥ ६८३ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

...व जो कभी हारनेवाला आदमी धूर्त्तहै पणकिया हुवा द्रव्य देता नहीं ...भापति भी दिलानेको समर्थ नहींहै तो राजा वह धन दिलवावे परंतु ...हे खेल जो प्रकट होवे और सभापति की मार्फतसे राजाको उसमें का द्रव्य भाग मिलता होवे तो राजा जीतने वाले आदमी हों उनको द्रव्य दिलवावै और जो कभी वह खेल गुप्त करते होवें, सभापतिकी साक्षी न होवे, राजाको भाग मिलता न होवे तो राजा द्रव्य दिलवानेका प्रयत्न करै नहीं, उलटा दोनोंको दंड देवे ॥ ६८३ ॥

अथजयपराजयविप्रतिपत्तौ निर्णयोपायमाह ।

द्रष्टारोव्यवहाराणांसाक्षिणश्चतएवहि॥
राज्ञासचिह्नंनिर्वास्याः कूटाक्षोपधिदेविनः ॥ ६८४ ॥

द्यू के देखनेवाले और उसमें हार जीतकी साक्षी देनेवाले उन्हीं लोगोंको करै वहाँ श्रुताध्ययन संपन्न लोगोंका प्रयोजन नहीं है और जो कोई मणि मंत्र औषधादिकसे दगा करके खेलतेहैं उन लोगोंको शरीरके ऊपर श्वपदादिकसे चिह्न करके अपने राज्यमें से निकाल देवे ॥ ६८४ ॥

नारदेननिर्वासने विशेषउक्तः ।

कूटाक्षदेविनः पापान्राजाराष्ट्राद्विवासयेत् ॥
कंठेक्षमालामासज्यसह्येषांविनयः स्मृतः ॥ ६८५ ॥

राज्यमें से निकालते समय उन धूर्त खेलने वाले मनुष्योंके गलेमें रुद्राक्ष माला पहनायके निकाल देवे वह उनकी नम्रता कही जाती है ॥ ६८५ ॥

याज्ञवल्क्यः ।

द्यूतमेकमुखंकार्यं तस्करज्ञानकारणात् ॥
एषएवविधिर्ज्ञेयः प्राणिद्यूतेसमाह्वये ॥ ६८६ ॥

द्यूतजो खेलै वह राजसाक्षि पूर्वक जो सभाहै उसमें खेलै कारण कि जो खेलनेमें हारताहै वह द्रव्य लाताहै सो चोरी करके लाताहै अथवा अपना पैदा किया हुआ द्रव्य लाताहै उसका ज्ञान होनेके वास्ते एक मुख द्यूत करै और सभापतिका जो भाग पहिले कहा है कि बीसवाँ भाग तथा दशवाँ भाग सभापति द्यूत क्रीडामें लेवे वही भाग मल्लमेषादि क्रीडामें लेवे ॥ ६८६ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

साक्षिणांपरस्परविरोधेनिर्णयमाह-बृहस्पतिः

उभयोरपि संदिग्धौकितवास्युः परीक्षकाः ॥
यदा विद्वेषिणस्तेतुतदाराजाविचारयेत् ॥ ६८७ ॥ इति ।

द्यूत खेलमें जयाजय निर्णय के समय द्यूत करनेवाले मनुष्य साक्षी देवें और जो कभी उसमें द्वेषके लिये कोई सत्य भाषण न करे तो पीछे राजा वहां विचार करै ॥ ६८७ ॥

मेषकुक्कुटादीनांजयपराजयौ तत्स्वामिनोरित्याह ।

द्वंद्वयुद्धेनयः कश्चिदवसादमवाप्नुयात् ॥
तत्स्वामिनापणोदेयोयस्त्वत्रपरिकल्पितः ॥ ६८८ ॥

पशुपक्षीके यद्धमें जो जय पराजयका पण लेवे देवे व उसके स्वामीका अधिकार है ॥ ६८८ ॥

परिहासकृतंयच्चयच्चाप्यविदितंनृपे ॥
तत्रापिनाप्नुयात्काममथवानुमतं तयोः ॥ ६८९ ॥ इति ॥

अब जो खेलनेमें हास्य करके पण बांधा होवे तो वह पणका द्रव्य प्राप्त होता नहींहै ॥ ६८९ ॥

ननुद्यूतंसमाह्वयंचैवयः कुर्यात्कारयेतवाइति १ हास्यार्थमपिबुद्धिमान्इति १ प्रच्छन्नंवाप्रकाशंवाइत्यादिवचनैर्मनुनासर्वप्रकारेण द्यूतसमाह्वययोर्निषेधः प्रतिपादितः। किंचदापयेदन्यथानतुइति १ एषएवविधिर्ज्ञेयः प्राणि द्यूतेसमाह्वये इत्यादिवचनैः १ श्रीयाज्ञवल्क्येनद्यूतसमाह्वययोविधिर्दर्शितःतत्रविधिनिषेधयोर्निर्णयमाह यानिनिषेधपराणिमनुवाक्यानितानिकूटाक्षदेवनविषयतयाराज्ञाध्यक्षसभिकरहिततयावायोज्यानिअतएवबृहस्पतिः—

द्यूतंनिषिद्धंमनुनासत्यशौचधनापहम् ॥
अभ्यनुज्ञातमन्यैस्तुराजभागसमन्वितम् ॥ ६९० ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

सभिकाधिष्ठितंकार्य्यंतस्करज्ञानहेतुकम् ॥ ६९१ ॥

इतिहरिकृष्णविनिर्मितेक्रीडाकौशल्याध्यायेद्यूतसमाह्वय विधिनिषेधवर्णनंनामद्वादशप्रकरणं संपूर्णम् ॥ १२ ॥

अब यहां शंका ऐसी होतीहै कि मनुस्मृतिमें तो द्यूतादि क्रीडाको किसी प्रकारसे न करै और न करवावै ऐसा कहाहै और याज्ञवल्क्यस्मृतिमें द्यूत सभापतिकी साक्षीसे द्यूत करना राजाको भाग देना. राजा पणका द्रव्यदि-लवावे ऐसी विधि कहीहै तब यहाँ निर्णय कैसा करै इसके ऊपर बृहस्पति स्मृतिमें कहाहै कि सत्यता शुद्धता और धन इन्होंका नाश करनेवाला द्यूतहै इस वास्ते करै नहीं ऐसा मनुने निषेध किया और दूसरे ऋषियोंने सभा-पतिकी मार्फतसे राजभाग सहित द्यूत करना ऐसी आज्ञा रूप विधि कहीहै उसका कारण यह है कि इस खेलके करनेसे अपने राज्यमें चोर कौनहै और शाहकौन है उसका ज्ञान होताहै. इसवास्ते द्यूतका विधि बताया ॥ ६९० ॥ ६९१ ॥

इति द्यूतसमाह्वयविधिनिषेधप्रकरणम् ॥ १२ ॥

मेषादिकांनांराशीनांपत्रक्रीडासुशोभना ॥
दशावतारवत्सातुविज्ञेयाबुद्धिमत्तरैः ॥ ६९२ ॥

मेषादि बारह राशिका जो गँजीफाका खेल है सो दशावतारी खेल सरीखा जानै ॥ ६९२ ॥

मल्लक्रीडाविशेषश्चतथान्येपिविशेषकाः ॥
ग्रंथगौरवभीत्यात्रनमयाप्रतिपादिताः ॥ ६९३ ॥

और इस ग्रंथमें मल्लक्रीडा मैंने थोडेमें वर्णन कियाहै. इसका दूसरा विशेष भेद अन्य ग्रंथमें बहुतहै. वैसेही दूसरे खेलोंके भेदभी बहुतहैं परंतु ग्रंथ बहुत बडा होनेके कारण वे विशेष मैंने यहाँ प्रतिपादन नहीं किये ॥ ६९३ ॥

एवंनानाविधाक्रीडाभेदाः संतीहभूतले ॥
कुर्वंतिकारयिष्यंतिकरिष्यंतितथापरे ॥ ६९४ ॥

ऐसे क्रीडाके भेद जगतमें बहुतहैं और लोग नवीन खेल बना रहेहैं पंच खेल गंजीफा वीर विनोद शतरंज इत्यादि और कितनेक लोग आगे अपनी बुद्धिसे खेल बनावेंगे ॥ ६९४ ॥

अत्रावशिष्टोयः कश्चित्क्रीडाभेदः सुशोभनः ॥
ज्योतिषार्णवशेषाख्यग्रंथेपूर्णोभविष्यति ॥ ६९५ ॥

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

अब इस क्रीडाध्यायमें जो कोई क्रीडाका उत्तम भेद रहगया होवे वह भेद ज्योतिषार्णव शेष नाम करके ग्रंथमें संपूर्ण होवेगा ॥ ६९५ ॥

अथ ग्रंथालङ्कारः ।

श्रीमद्वाजसनेय गौतम कुलोत्पन्नोतिविद्यावतां
मान्यो गुर्जरपंडितोपपदकौदीच्यः सहस्राह्वकः ॥
जोतिःशास्त्रविशारदोति मतिमान् श्रीवेङ्कटाख्योद्विज-
स्तज्जोहं हरिकृष्ण संज्ञिक इमं चक्रे विदांप्रीतये ॥६९६॥

अब ग्रंथकर्त्ता पुरुषका वंशादिक और ग्रंथ निर्माण काल और मूल श्लोक संख्या कहते हैं-श्रीमच्छुक्ल यजुर्वेदीय वाजिमाध्यंदिनी शाखामें गौतम गोत्रोत्पन्न विद्वान् लोगोंको मान्य गुर्जर देशके ब्राह्मण पण्डित जिनकी अवटंक है, अवटंक कहते उपपद है. ऐसे ज्योतिष शास्त्रमें बडे कुशल बुद्धि-मान् वेंकटराम करके ब्राह्मण भये उनका पुत्र हरिकृष्ण नाम करके मैं विद्व जो ज्ञानी हैं उनकी प्रीतिके वास्ते इयं कहिये यह क्रीडाध्याय करताहूं ॥ ६९६ ॥

दक्षिणेषु महाराष्ट्रदेशेस्ति नगरं बृहत ॥
औरंगाबाद नाम्ना वै ख्यातं तत्र जनिर्मम ॥ ६९७ ॥

मेरा जन्म दक्षिण महाराष्ट्र देशमें औरंगाबाद करके बडा शहर है वहाँ भया है ॥ ६९७ ॥

ज्योतिषार्णव मध्यस्ये षष्ठे मिश्राख्यसंज्ञके ॥
अध्यायशतसंयुक्ते स्कंधे वै परमाद्भुते ॥ ६९८ ॥

और मैंने जो बृहज्ज्योतिषार्णव अष्टस्कन्धात्मक बनायाहै उसमें परमअद्भुत पदार्थ वर्णन किये हैं. और अध्याय जिसके १०० हैं ऐसा जो छठा मिश्रस्कंध है ॥ ६९८ ॥

तत्र विंशतिमेऽध्याये क्रीडाकौशल्य निर्णयः ॥
संपूर्णतामगाच्छाके शालिवाहन संज्ञके ॥ ६९९ ॥

उसके बीसवें अध्यायमें खेलनेकी कुशलता का निर्णय बताया है.

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

ध्याय शालिवाहन शके १७९३ के माघ मास कृष्णपक्ष तिथि ८ के दिन भया है ॥ ६९९ ॥

त्रिनंदमुनिचंद्रेच (१७९३) माघकृष्णाष्टमी दिने ॥
गणिता मूलपद्यानां संख्या सप्तशतानि च ॥ ७०० ॥

इस अध्यायमें केवल मूल श्लोक संख्या ७०० है भाषाटीका संख्या है ॥

इति श्रीमज्ज्योतिर्वित्कुलावतंसश्रीवेङ्कटरामात्मज हरिकृष्ण विनिर्मिते बृहज्ज्योतिषार्णवे षष्ठे मिश्रस्कंधे विंशतिमे क्रीडाकौशल्याध्याये ग्रंथालंकारवर्णनं नाम विंशतितमोऽध्यायः ॥ २० ॥

समाप्तोऽयं क्रीडाकौशल्याध्यायः ।

इति श्रीहरिकृष्णकृत बृहज्ज्योतिषार्णवमिश्रस्कंधमें खेलनेका निर्णयाध्याय २० वाँ समाप्त भया ॥



CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

वैदिकधर्मशास्त्र ज्योतिष आदिशास्त्रोंके ज्ञाता और बृहज्ज्योतिषार्णव ग्रंथके रचयिता पण्डितवर्य हरिकृष्ण वेङ्कटरामजीसंगृहीत.

नाम.	की. रु. आ.
दुर्गासप्तशती सप्तटीका १–दुर्गाप्रदीप २–गुप्तवती ३–चतुर्धरी ४–शान्तनवी ५–नागोजीभट्ट ६–जगच्चन्द्रिका ७–दंशोद्धार समेत	३–०
दुर्गोपासनाकल्पद्रुम	३–८
बृहज्ज्योतिषार्णव संहितास्कंध अ० ४	३–०
उपोद्घातशिवालिखित	०–९
भूबलाध्याय सटीक	०–१०
युद्धे मंत्र यंत्र तंत्र बलाध्याय	०–६
सेनाव्यूह लक्षणाध्याय	०–४
राजनीति राजधर्माध्याय	१–०
छाया पुरुष लक्षण	०–१॥
उदकार्गलाध्याय भाषाटीका	०–४
वर्णसंकरजाति विवेकाध्याय	१–४
देवतावास निरूपणाध्याय	०–२
बालशिक्षाध्याय	०–॥
बालग्रहनिरूपणाध्याय	०–१४
विवेकाध्याय	०–१
औषधी कल्पाध्याय	१–८
प्रशंसाध्याय	१–४
समस्या प्रहेलिका अपह्नुती संग्रहाध्याय तीन	०–३
कूटश्लोक संग्रहाध्याय सटीक	०–५
क्रियागुप्त चित्राख्यान अन्तर्बहिर्लापिकाध्याय चार	०–४
सदाचाराध्याय	०–१
जातिनिरूपणम्	०–१
धर्मवृत्ति निरूपणम्	०–१
पापवृत्ति निरूणम्	०–१
अन्योक्ति संग्रह	१–०

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

जाहिरात।

	की. रु. आ.
[damaged] कौतुक वर्षचर्या	०-१
[damaged]चर्या	०-१॥
[damaged]नचर्या	०-१२
रात्रिचर्या	०-४
ताम्बूल वर्णन	०-१॥
गंधयुक्ति भाषा समेत	०-॥
शयनासन भाषासमेत	०-१॥
सौभाग्यवर्णन भाषासमेत	०-॥
मासस्तवक-जिसमें चैत्र वैशाखादि बारह महीनेका माहात्म्य और पुरुषोत्तममासमाहात्म्य सात पुराणकाहै	६-०
ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तंड हिंदी भाषानुवाद सहित	३-८
क्रीडाकौशल्याध्याय सचित्र भाषानुवाद सहित इसमें शतरंज, गंजीफा, चौपड़, तास आदि नानाप्रकारके खेल कई प्रकारोंसे खेलनेकी क्रिया समेत वर्णित हैं	१-८
भद्रमार्तंड सचित्र (सर्वतोभद्रादि चक्रोंसमेत)	१-०
भड्डलीमत ज्योतिषाध्याय	०-८
मंगलाष्टकाध्याय	०-२॥
पीठकलक्षणं भाषासमेत	०-॥
छत्रचामर लक्षणं भाषा	०-॥
कांदर्पीकाध्याय भाषा	०-॥
दीपदन्तकाष्ठ लक्षणम्	०-१
मंत्रशास्त्र प्रारंभाध्याय (३)	१-०
गुरुपासना कल्पद्रुम	१-८

सम्पूर्ण पुस्तकोंका "बड़ा सूचीपत्र" अलगहै आध आनेका टिकट भेजकर मँगालीजिये।

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना, खेतवाड़ी-मुंबई.

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri

CC-0 Pulwama Collection. Digitized by eGangotri